

प्रसादनाः

प्रसादनाः

प्रमादनाः

अापणा आर्प टोकोमां सोळ संस्वारों छे तेमां विवाह सैस्कार प्रधान अने पता उपर आखा संसारनो आधार रह्यो छे. मार्चीन का- १००० आपणा आर्प टोकोमां सोळ संस्वारों छे तेमां विवाह सैस्कार करवामां आवतो इतो, परंतु काले करीने ए संस्कारों वंध पढी है हमां दूर एक संस्थार के आतिने के समये कहीं होण ते समये वे संस्कार करवामां आवतो इतो, परंतु काले करीने ए संस्कारों वंध पढी है हमारे वे स्वाह संस्कार करवामां आव के ते पण याप्री विधिधूर्वक कराननामां आव-🔖 कारण छे. एक तो यमपानमं विधिपर्वक विवाह संस्कार करवा सरफ ओछं चश्य, अने वीर्ख प्रसिरितोनी कर्मकांहमां ओछो अभ्यास यजपान 🔆 🔖 ह्यातिभोजन करवा पाउळ, मंहपनी स्रोमानां हद्धि करवा पाउळ तथा वर घोडा विगेरे कार्यमां तथा परोणानी सेवा चाकरी करवा पाउळ 👺

े जिटलं सहय आप है तेहलं लक्ष्य विवाह संस्कार करामवामां आपता नथी. गोर ( गुरु ) नो पोटो भाग कियाकांड के जेना उपर पोतानी 💸 🛂 आर्जीविका चाले छे तेनो संपूर्ण अभ्यास करता नथी; केटलाएक तो पोताना यजमानने त्यां शुभाशुभ प्रसंग आवे छे त्यारे बाहुवी 🔯 े बाद्यणोने टर्ड भर्डने कर्मकांट करावे छे. आवां कारणोथी बैडम स्था शक्षियोमां विवाह संस्कार जे ममाणे यत्री जोहर ते ममाणे घीलकुछ 🖓

िंथतोज नधी अने यश्रमाने खर्चेला पैसा व्यर्थ जाप छे. बाह्मणो विवाहने विषे पणो समय केवळ ब्रावि रिवान प्रमाणे आप छे। ें ्री करवाना संपद्दायोधां जगाळे छे. वाणीया तथा सत्रियोनी अतिमां पणाक आञ्चनिक नधीन केळवणी लड्देने विद्वान थया छे, इंटरें विक्की है ज्यां तेभे एक विश्वह जेशे उत्तम संस्कार शितानी जातियां गमे ते रीते थाय ते चालता दे, ए केशी खेदनी वात छे. ये नानी वसमांधी ज है वेशा व्ययन करीने नारा पूर्वजीनी याजन अध्यापननों कर्म स्थीनवार्ष छे अने गीरपूर्व पण कर्ष छुं. तेथी वारंतार पने पारा वंधुओनी साधे अ दियह संस्कारण त्रसंग पड़ना जाणो, ते उपस्थी विवाह संस्कारने पाटे एक सारो पद्धतिनों ग्रंथ होशे जोइये, आयो पारा सनमां विचाह अख्योः तेम केटलाएक मुहस्योती पण मेरणा धरीते उत्तरी में पणी तिवाद संस्कारनी माधीन कद्वतिओं जीईने तथा प्रपुत्तक अत्युत्तपताने पान पत्र हेतुथी बीना जनेक ग्रंथीतं अवलोकन करी तेषांना घटका ग्राह्मणों मूकीने आ विवाद काँमुदी नामनो विवाद संस्कारतो प्रथ गुजराती भाषामां सीने समज पडे ते त्रमाण रचयो छे. आ श्रंथमां विवाद संस्कारमां के मुख्य तथा गीण कर्यो करपामां आने छे ते सर्वे हैं। यंत्रार्थ रिते छक्षत्रामां आज्य हे. सम्पति गण्यारी उनके हैं जा श्रंथमां विवाद संस्कारमां के ने मुख्य तथा गीण कर्यो करपामां आने छे ते सर्वे हैं। यशर्थ रीते छलपामां आत्मा छे. गणपति पूजनयी आरंभी ब्रह्मवह संपूर्ण सभी ब्रह्मकरूप नामतुं मधम मकरण तथा कन्याना छलपायी छेक चतुर्थी कर्म वर्षत क्यार विथि नापतं वीशुं मकरण तथा देरशुद्धियी आरंपी देवता विसर्जन छगी उयापन विथि नामतुं नीशुं मकरण प्रम है सर्वे कर्षों स्पष्ट गूनराती सममण साथ छल्पां छे, ने अनुप्रमणिका वांचवायी स्पष्ट मणाणे. संस्कृत भाषायी अक्षात एवा नैक्यों तथा सात्रियो पण आ निवाद कौमुदी वांचवाथी विवादना सर्व विभिने सारी रीते समजी शके, एवी ग्रंथनी रचना करवामां आवी छे- माटे मत्पेक रिवा ्रहरेथे आ ईपनी पोवाना वरानं संत्रह करीने पोवानी शादिक विकास स्थान करवामां अवस्य करवा पत्री हुं आशाराखे हुं.

## अथ विवाहकौमुचनुक्रमणिका ॥ पत्र पृष्ठ वंक्ति.

खिपय.

ग्रहस्थापनपंदलम

( मुखप्रहेषु )

सर्वतोभद्रमंडस्य (रेखात्मकम् २३)

प्रथमं ब्रह्यज्ञप्रकरणम् ।

चनुःपष्टिपद्वास्तुदेवता मण्डलम्

पुरुषोत्तमयंत्रम् .... ....

यन्थप्रणेतुर्मगढाचरणम्

ग्रहयहशास्त्रार्थे तत्रेपास्तं

फछश्रुतिब

प्रस्पज्ञ: तत्र विधिः .... ....

थौतवस्त्रपसारभए ....

वर्ज्यवस्त्राणि तिकद्भधारणम् ग्रहवञ्चस्यावस्यकताः तत्कालश्च व

पत्न्युपवेश्वमय

कर्मारम्भे नमस्करणम्

कर्माही ब्राह्मणाः

निषिद्धवस्ताणि

ब्रह्यशस्माऋ कर्तुभेक्षणादाव-

निविद्धाः पदार्थाः ....

पत्र पृष्ठ पंक्ति.

साष्ट्रांगनगरकारस्थापम कर्मान्ते आचमनम् .... आचपनस्य फर्छ लेक्षणं आद-

विषय .

के**क्रम**विलक्षकरणम्

यजपानस्य कर्माहस्यम्

आचमनं प्राणायामश्र

प्रधानसंबरूप:

तरकारणं तदावश्यकत्वं च

**मगस्त्रमाद्यप**रक्षणम् देव-ब्राह्मणपादाभिवन्दर्भ ३

· ,	•				s	_	42-	. विषय.	977	क्या र्	ife- i	अनु॰
বি কৌ০	्रें विषय.	4.	त्र पृष्ठ	वैक्ति.	विषय. प्रज	पृष	पैकि.					
44,	र्रे - संकल्पाकरणे कर्पणो	वैवर्श्य			शिखाबन्धनं तदुपदेश विधिश्व ६	ર	ં	ंकरोद्धतेनशास्त्रायेः			. <b>%</b>	
ૈાસા	वाद्विभित्र	(		१०					₹ ₹	3	<b>१</b> 0 3	
0.40	ृ तद्गसंकल्पः	****	; ;	٠,	क्काच) ६		લ	पत्रपुष्पफछानां समर्पण-			3	
}		• .	• •	,	कल्डास्थापनम् (तस्मिन्	•		विधिः	₹₹	3	₹0 \$	
- 3	विरमस्यान्त्रापञ्च 🔧	•••	۹, ۱	₹		,	او	( कुरुवडी तथा भंडप			3	
	अधिकारवाचनम्	1	<b>₹</b> ₹	8	100-401 47	•		मुहर्तनो विधि )	58	ş	٤ ک	
12	कर्माधिकारसि <i>च्</i> यर्थ	î			पञ्चमञ्चुकरणम् ू ७	•		मण्डपमातृकास्थापनम्	१५	Ą	₹ 3	<b>.</b>
}	भाजापत्यसंकल्पः	••••	६ १	8	पञ्चगव्येककरणे विचारः,			तत्र काखार्थः ( तेनो बिर्धि	1		- 1	<b>&gt;</b>
įš	आसनशुद्धिः	1	Ę ?	٩	सद्भागक्षता विधिश्व ८	₹				3	6	•
18	<b>म</b> ऋस्तर्भगम्	8	३ १	१२	गणपतिचूजनम् ८	₹		भाषायां ) गीर्यादिमानृस्थायनम्	80	,	•	\$
8	कर्मानईगासनम्	. 6	<b>₹</b> ?	१३				तत्र शासार्थसविधिः, मानुः	. •	•	* 14	<b>&gt;</b>
Ċ	`	1	<b>a</b> ?	વ	स्याबस्यऋतं सच्छास्रार्थेश ८	*				•		
<u>د</u> ا	दिग्रक्षणं तस्मिन् क				अन्युत्तारणं माणम-	•	` `	प्रमाणं च	, (w	'	* ;	
ۆ <u>ا</u>							_	नौर्यादिदेवमातरः बाह्या	<b>4</b> -			ર્ મરા
0  0	ता प	٠ ا	ष् र	9	'तिष्ठाच ५	3	, ,	' महुप्यपातस्य	१७	,	٠	è
1è												

***	ž e	į.	38 88	***	in	मृद्धिस्य मृद्धिस्य	1 8	ì	68	ी :मिट्टि :मर्जेड्डस डिगहरू	2	ž	88	****	१९१८ है। इस्तान	±k:
\$ \$ \$ \$	8	. <u>}</u>	\&& 28	(Pi	क्रकेक	raviis ) ipryyvi : poplibyż	<b>a</b>	દ	ĄĄ	नायक्षितं अप्रिपृत्ते विद्यार्थः	ن. نه <sub>الا</sub> ر	ور در در	42 42 42	इ-  झिरुर्गात्	पिरक्षायुक्तम् तुम्मे विशेषः ने पोहवायुद्धः	<u> 512</u>
40000	•	ì	28	n ipi	म्रीप्राप्त भाषः )	ड्रेडाम्स्री सर्वेशीम्ब्र	ž   📆	¥	<b>≒</b> R	-ागणाकोत्तम् व्याद्यकृ व्यक्ति वृद्यकृष्ट स्टिशक्रिके	6	۶	£R.	)	ระทางรถก กระจักจักก	क्रि
****	8		2ጸ ኖጸ ኖጸ	• • •	भारंग	क्तान्द्रम्भारः कर्नुजीम्द्रप्र हाक्तिम्बर्ग	10.5	ė	<u></u> አጸ አጸ	դրժրբ դրթքերինը	ارير الاي 0 <i>4</i>	\$ & &	35 35 35	HH	क्षाकातकृत्व १४अतक्ष्मेत्री इस्टाइस्टाइस	P7R
4	R k	ì	es.	••••		हारहत्या। अहारीमा न्याणम	3	è	કર કર	( Þ महाम् :मिसीम र्शमर्थाणस्र -मार्थाणसम्बद्ध	33 35	"	66 66 5.00	****	दिहिबस्यतः ( इन्सामि इन्सामि	ρ)
4	FFI	ВЬ			,ppŕ	- 10	- DF	, 93		, <b>F</b> 7F)	. <sup>[55]</sup>	ė El	Eb Eb	rams El	,प्रमृष्टी भारतक्ष्यक्षीर्द्धी	2.11

11 ž 11	000000000000000000000000000	ار ان ان		6 " # " 6 6 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7	 чьэ <i>ўў</i> ігчьэ	Perutisar Perutisar	6 x & x & x & x & x & x	ر فعر فد فعر مد فعر مد في المه	: 변화 기술 등 등 등 등 등 등 등 등 등 등 등 등 등 등 등 등 등 등 등	 op op fil fil fil fil fil fil fil fil fil fil	 मेनाप्तव मेन्द्रित्ता श्रीह्माम मान्द्रीह्म मान्द्रीह्म मेन्द्रित्ता	Perezes Per	2 2 2 2 2 2 2 4 4 4 4 4	٤	* * * * * * * * * * * * * * * * * * *		मेरकुरू विकास अन्तरिक्सम् त्याविकस्यान त्याविकस्या त्याविकस्य त्य	# P		
v <u>ě</u> k		8 R ク 理	`è è À ĀBĀ	フモ フモ		निवस्य देवी: जासद्यन्तम् अरहरायनम्	ક	<i>ક</i> ડે દિવ	25)	<u>र्यक्रम</u>	गुमाम:	र कंद्रग्रम्हेक इंक्रुड	,	i i i	• }	-फ्रही	विष्य. स्वस्थित्रवनम्बद्धः स्वाप्तः विषय-स्	3	ofæe <b>e</b> 11 를 11	
	000		•			•		•			,						·	\$ \$ \$ \$		•

	વિષય,	पत्र	वृष्ट वी	वेत.	विषय.	43	पृष्ठ वं	नेत.	। ध्विपय.	पत्र	प्रष्ट वं	क्ति.
	तत्रापवादः	ξą	\$	₹	मासेर्विचारः		5	₹	दीपवर्तिमपाणम्	e ja	ş	<u>ال</u> الا
	<b>वरकन्यकयोग्ने</b> हबलम्	53	3	ć	भारक्षे विवाहादौ जनन	गे-			विवाहादी स्थानानि	ĘIJ	ঽ	· vili
	न्त्रियां संस्काराद्विजस्वम	द्दर	₹	ŧ	रजोदोपे मासे श्रीकार्त	ति:६३	. 3	ą	विष्टर-मध्यर्कयोदिचारः	90	₹	ξ ;
1	नान्दीआहे कृते आहा	ਰ-			गौर्यादिकन्याविवाहे			٠.	मधुपर्कः	છર	3	z  ;
	कर्मणां निवेधः	ξą	3	8	गुम्बलविचारः	Ę\$	5	ے	गवार्रुभनम् ,,,,	ψŧ	7	. ર ¦ે
	विवाहदू ईविपिडदाने				मातापिशोरभावे विचार	: <b>\$</b>	į	3	गवारुंभनविचारः	७३	3	વ∦
l	निपेषः	द्द	ર	હ	कन्यादानुष्रशस्त्रिः	83	•	8	कन्यादानम्	ઝ્	*	9
	पुत्रोद्वाहादृध्वे पुत्रीविष	T-			वेदिनिर्माणम	43	,	ş	कन्यादानविचारः	19.9	8	3
	उनावादारूच्य उनाच्य * हनिषेषः	६२	ą	4				•	कन्यादानर्सकल्पः	as	₹	<b>३</b>
ł	आवइयके कमीण गुरू-	4.	•	٠,	विवाहे वर्कृत्यम्	६४	<b>3</b> ~	२	दानश्कारः	७३	₹	છ
					विवाहकर्मारंभः	<b>वै</b> ४	\$	6	अक्षतारोपणम्	99	₹	ે <b>વ</b> ાર
1	्र शुकास्तविचा <b>रः</b>	ξş	ર	3	तत्र शांतिपाठः	विश्व	3	3	स्वस्तिवाचनप्रयोगः	49	7	<b>Q</b>
	विवाहभारंभाद्ध्वं स्कृतः	6-			ं वाग्दानम्	5.5	ŧ	(g	अभिपेक मंत्राः	હ્	<b>ર</b>	4
•					·		•			•	·	

उत्ते शर का क्षित्र क
---

पत्र पृष्ट पंक्तिः । विषय. विषय. पत्र पुष्ट पंक्ति. दिपय. सांगतासिङ्धर्थ ब्राह्म-आचार्य**स्त्रणम्** |आज्येन पंचाहुतयः ९२ १ वैष्णवधाद्वम गेभ्यो दक्षिणादिवानम् ९५ ९८ ∳्रे| स्विष्ठकृत्योमः नवाद्यतपश्च९२ १ पात्रापात्रलक्षणम् .... १९ कंसारभक्षणम् .... ९२ २ ५ यथादानं तथाफलम् 66 अपुत्रायाः कल्यायाः गृहे उद्यापनावीधिः प्रायश्चित्तसंकल्प: भोजननिपेधः अन्यायोपात्रितद्रव्यस्य धर्मकर्मणि मयाणपंत्राः (भाषार्थेश ) ९२ २ देहशुष्टिप्रयोगः माणायामञासार्थः तदावस्य-निषेषः .... विवाहोत्साहे वरवन्वोरेकपात्र-ও ও भेर्जनादिनिर्णयः .... ९३ एकस्मिन्पाञ्चे देपानि मानायापलक्षणम थरवध्योः प्रतिज्ञामंद्राः दानानि .... .... १०० द्रव्यतिग्रहनिपेधः ' (भाषायाम्).... गोरुक्षणम् .... दुष्प्रसिग्रहदोपनिवारणम् 96 स्रीभिर्गगराष्म् .... ९४ २ दुःखद्मनानिषेधः ब्राह्मच्यार्थेना अभिवादनशीलस्य दृद्धोप-सेविनश्र फलम् .... ९४ मतिगृहीनु**पर्पाः** विमानुज्ञया मायश्रिषा-करणम् .... .... केशांदीनां त्रपनम् .... १०० ९८

विषय पत्र पृष्ठ पंक्ति. विषय. पत्र पृष्ठ पंक्ति. विषय. पत्र प्रष्ठ प्रकार प्राचित्र विषय. विषयः विष्यः विषयः विषय	ě								1				•	Ş
विवाहसंस्थारः  ( विवाहसंस्थारः  ( विवाहसंस्थाः ८० १ २ ८ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १		विषय.	93	पष्ट पं	दित.	विषय.	দল :	मु प	वित.	विषय.	पन्न	प्रष्ट पं	क्ति.	•
तिवाहहोसा) ८० १ २ दशमंत्राः ८६ १ १ सायलपूजमम् ८८ १ ४ सायलपूजमम् ८८ १ ४ सायलपूजमम् ८८ १ १ सायलपूजमम् ८५ १ १ सायलपूजम् ८५ १ १ सायलपूजमम् ८५ १ १ सायलपूजम् ८५ १ सायलपूजम् ८५ १ १ सायलपूजम् ८५ १ सायलपूजम्	40 4			•		अभ्यातानसंज्ञिकाः	अद्या-		í	ब्रह्मन्वारब्धहोमः	66	ঽ	3	ò
जा विचारः	. 3	( विवाहहोमः)	40	3	₹			₹	3	सप्ताचलपूजनम्	ሪሪ	₹	8	흿
प्रमाणमशः (नरावाश) ४१ १ तत्र शासाधेः ८६ १ ६ वरण्यारिभिपेकः ९० २ १ अष्टाहृत्तयः आज्येन ८६ २ ४ अम्प्रदक्षिणाः अमिप्रदक्षिणाः प्रमाधः ९० २ ७ तत्र शासाधेः ८४ १ १ तत्र शासाधेः ८४ १ १ तत्र शासाधेः ८५ १ १ १ तत्र शासाधेः ८५ १ १ तत्र १ १ तत्र शासाधेः ८५ १ १ तत्र १ तत्र १ १ तत्र	11 6		€0	3	6	अग्निसंज्ञकाः	. ८३	?	3		৫	₹	৩	Š
अष्टाहुत्तयां आज्येत ८३ २ ४ तत्र शासाथैः ८६ १ ६ व्यव्यारा अप्यक्षः ९० २ १ अप्रिमदक्षिणाः ८४ ४ १ तत्र शासाथैः ८४ ४ १ तत्र शासाथैः ८४ १ १ तत्र शासाथैः ८७ २ ४ दितीयमंगलम् ८७ २ ४ व्यत्याता त्रहोसः ८४ २ १ वृत्तीयमंगलम् ८७ १ ८ वृत्तीयमंगलम् ८७ १ ८ वृत्तीयमंगलम् ८७ १ ८ वृत्तीयमंगलम् ८७ २ ६ वृत्तीयमंगलम् ८७ २ ६ वृत्तीयमंगलम् ८७ २ ६ वृत्तीयमंगलम् ८७ २ १ वृत्तीयमंगलम् ८५ १ १ वृत्तीयमंगलम् ८७ २ १ वृत्तीयमंगलम् ८५ १ १ वृत्तीयमंगलम्	ě	मपाणपंत्राः (नंत्रायश्चि )	68	ş	3	राजाहोम <u>ः</u>	ረኝ	3	3			3	٩	Š
र ताहरेखां ८४ ४ १ तत्र प्रथमभंगलम् ८७ २ ४ व्यास्थां ८४ २ १ तत्र प्रथमभंगलम् ८७ २ ४ व्यास्थां ८४ २ १ व्यास्थां ८४ २ १ व्यास्थां ८७ १ १ व्यास्थां ८४ २ १ व्यास्थां ८७ १ ८ व्यास्थां ८५ २ १ व्यास्थां ८७ २ ६ व्यास्थां ८५ १ १ व्यास्थां ८७ २ ६ व्यास्थां ८५ १ १ व्यास्थां ८७ २ ६ व्यास्थां व्यास्थां ८५ १ १ व्यास्थां ८७ २ १ व्यास्थां व्यास्थां ८५ १ १ व्यास्थां ८७ २ १ व्यास्थां व्यास्थां ८५ १ १ व्यास्थां ८५ १ व्यास्थां ८५ १ १ व्यास्थां ८५ १ व्यास्यां ८५ १ व्यास्थां ८५ १ व्यास्थां ८५ १ व्यास्थां	è			3	'n	तत्र"श्रास्त्रार्थः	ሪፂ	3	٩	वरवःबारभिपेकः	60	3	3	ķ
तत्र प्राथमभग्छम् ८७ २ ४ वित्रीयमंगछम् ८७ २ ४ वित्रीयमंगछम् ८७ १ १ वित्रीयमंगछम् ८७ १ १ वित्रीयमंगछम् ८७ १ १ वित्रीयमंगछम् ८७ १ ८ वित्रीयमंगछम् ८७ १ १ वित्रीयमंगछम् ८५ १ १ पाणिमहणम् ८७ २ १ वित्रीयमंग्वरामं ८६ १ १ वित्रीयमंग्वरामं ८६ १ १ वित्रीयमंग्वरामं ८६ १ १ वित्रीयमंग्वरामं ८६ १ १ वित्रीयमंग्वरामं ८५ १ १ वित्रीयमंग्वरामं ८६ १ १ वित्रीयमंग्वरामं ८५ १ १ वित्रीयमंग्वरामं ८६ १ १ वित्रीयमंग्वरामं ८६ १ १ वित्रीयमंग्वरामं ८६ १ १ वित्रीयमंग्वरामं ८५ १ १ वित्रीयमंग्वरामं ८५ १ १ वित्रीयमंग्वरामं ८५ १ १ वित्रीयमंग्वरामं ८५ १ १ वित्रीयमंग्वरामं ८६ १ १ वित्रीयमंग्वरामं ८६ १ १ वित्रीयमंग्वरामं ८५ १ १ वित्रीयमंग्वरामं ८५ १ १ वित्रीयमंग्वरामं ८६ १ १ वित्रीयमंग्वरामं १ वित्रीयमंग्यामं १ वित्रीयमंग्वरामं १ वित्रीयमंग्वरामं १ वित्रीयम	ó		-	8	ě	अभिप्रदां	क्षिणाः	•	•					ě
द्वितीयमंगलम् ८७ १ १ मुन्ताः । श्रासः । श्रामः । श्	4	, n - m		9	٠ و ج	तत्र प्रथममंगलम्		3	૪			₹	છ	•
े त्र-हातार्थः ८४ २ १० महीतायस्थालम् ८७ १ ८ आसप्रण च ९१ १ १ महीतायस्थालम् ८७ १ ८ कल्/रपपानास्त्रपपाशितं ९१ २ १ अञ्चातानहोसः ८५ १ १ पाणिम्रहणस् ८७ २ ६ भगणिर्वतः (भैनापीःश्च अञ्चातानहोसः ८५ १ १ पाणिम्रहणस् ८७ २ ११ भगणिर्वतः (भैनापीःश्च आस्त्रातानहोसः ८५ १ १ पाणिम्रहणस् ८७ २ ११ भगणिर्वतः (भैनापीःश्च	٥	1 -	-		a	द्वितीयमंगलम् ं	৫৩	\$	3					ě
अन्यातानहोमः ८५ १ १ पाणिम्रहणस् ८७ २ ६ १ छुन्। भराणस्त्राहणक्षेत्रः १ १ पाणिम्रहणस् ८७ २ ११ मराणस्त्राः (भेत्रायोध्यं भाषायं भाषायं भाषायं । ११ ३ २	ò		- •	,	7 0	भृतीपूर्मगरुम्	. ८७	₹	6			ţ	3	ě
्रे अन्यातानहोत्तर्मनार्गा पाणिप्रहणमंत्राः (अर्थेष्ठ भाषार्थं) ९१ ३ ३	٥		-	•	,-		८७	3	વ		63	ર	?	•
1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1	٥		દષ	1	•		e 2	٦	55					0
्रों निगयः ब्रह्मस्थ ८५ १ ७ भाषाया) ८८ १ २ चतुर्धीकर्म ९२ १ २	*	1					भि		i	માષાવાં )	९१	₹	₹	ò
	÷	ानणयः तास्त्राधेश्र	24	4	છ	भाषाया)	66	ŧ	3	चतुर्धीकर्म	63	₹	ર	Ġ

٥	विषय, पत्रु	पृष्ठ वंक्ति.	विपय.		ष्ठ पंक्तित.	{ <i>विषय</i> , ⋅	पत्र	वृष्ठ ह	वित.
ě	तदंतुर्गेतो नित्यस्तान-		भोमधंस्तान	११४	२ १	दानविधिः १	18	7	27
1	मिधिः ११६	ર ૪	र्वचगड्यस्नानं	113	२ ३	औपधिस्नानं	? ? 🤄	?	9
	दानस्य वैधम्येवैफल्ये		गोरजस्नानं	118	ર ૪	हिरण्यस्नानं	14	9	. રા∛
Ì	अद्धा ११३	२ ५	धान्यस्मानं	158	ર ૬		10	9	3 ا ج
	गुप्ताध्ययन-दान-पूजानां		फल्स्नानं 🐪	\$ \$ Y	२ ६	भस्मस्नानाञ्चावे वैद्याचा			1
	शर्शसा र १३	२ ६	मीदपादस्य कर्माण			मां कुशोदकस्नानं १		•	š
	याचितं अपाचितं च दानं ११३	₹ ₹	निषेधः	118	<b>₹</b> ७	स्नानांते सत्येदापूजनं	996	š	
	मृत्तिकास्नानं ११४	\$ \$	मीरपादस्य रूप्तपुम्	\$ \$ \$	ર ૭			•	``
Ì	भस्म स्नानं, ११४	२ ८	जलस्थलयोः कर्पकर्तु			कर्तुर्तियमाः		7.	٩
5	' यहादिकर्मेणिकतुनियमाः ११४	<b>? 9</b>	शुष्काईबह्मपोर्निपेधः	118	ર ૮	दानपात्रस्य असमियाने	११५	٠,	٩.
:	पवित्रतारहितस्य कर्पनि-		वस्त्रधारणनियमः	818	२ ९	दानपात्रामाने मतिनिधिः ।	११५	१	. રુક }ે
Ì	प्फळत्बप् आश्रपनरहिते		दर्भोदकशैनामां संध्याद	T-		दृश्यपात्रयोगभावे प्रतिनिर्देश	36	•	١
4000	कर्माणि वैपर्ध्वम् ११४	1 11	नानां निष्फलस्वम्	113	२ १०				8
***	तदंतर्गतो नित्यस्तान- विधिः ११६ हानस्य वैधर्म्यवैद्यत्त्ये अद्धा ११६ ग्रुप्ताध्यय-दान-पूजानां भशंसा ११३ याचितं अपाचितं च दानं ११३ म्हित्त्रकास्तानं ११४ भरस स्तादेकर्मणकतृनियमाः ११४ पवित्रतारहितस्य कर्णनि- प्रान्यस्त्र प्राम्यस्तिहेते कर्माणि वैपर्यम् ११४	t	दर्भोदकशैनामां संध्याद		₹ १०	द्रव्यपात्रयोरभावे शतिनिधिः	११५	Ŕ	•

	क्षिय.	पत्र पृष्ठ पंक्ति.	विषय.	पत्र पृष्ठ पंतित.	( विपयः	9 <b>3</b> '	पृष्ठ पंक्तित	. <u>Ş</u>
ò		179 1 4	शुद्धोदकस्नानं	05 9 883	मंत्रपुष्पांजालः १		1 (	네첾
0	अंगन्यासः	१२० १ १०	अंगपूजा	१३५ १ ९	अंखोदकेन प्रोक्षणम् १		₹ .	네웨
Š	र्पचांगन्यासः	१२९ २ ४	कुंकुमादिस <b>प</b> र्यणफलम्	१३५ १ १२	<b>पं</b> यखार्थे नीराजनपंत्राः १	₹९,	٤ .	네헮
3	महापातकहरन्यासः	१२९ २ ६		१३५ २ २	( days 11 a	\$9	₹ (	네쇎
1	अंगांगन्यासः	१३० १ १	तुळसीपत्रसम्पर्णप्रशंसा	१३६ १ ७	विष्णोश्वरणोदकपाञ्चनम् १	্ব•	₹ .	
*	एकादशस्यासः		द्शांगभूपृष्शंसा		तत्र शास्त्रार्थः ?		₹ ∢	되었
l III	करन्यासः	१६० २ ६		।:१३७ % ९	विशेषार्घःं १	80	5 5	
ģ	देवन्यासः	१३० २ ५	नेवैद्यशेषे वैष्णवादीनां		चरणतीर्थमात्राने फल-		-	Š
	पूजनं	१३१ १ व	भागः	११७ २ ५		9.	٠.	
	अभिषेकः	8 8 888	नैकेशविधिः	१३७ २ ५	ું સુતિઃ ર		, ,	내웨
ķ	<del>Language Total</del>		आरार्तिक्यं	१३८ १ ६	आयसादि-निविद्यभागन			131
*	चण्डाबादनकालः	•••	आर।तित्रयत्रशंसा	116 1 11	चरणोदकग्रहणे निषेधः १			( (2)
	तरफलं च	१९२ १ ११	नीराजनप्रशंसा	१३८ १	चरणतीर्थब्रहणे शासार्थः १	ጸቀ	\$ 8	ا¦ااٍ ا
18	;							Š.
	:							13

बि॰कौ॰ ॥ ७ ॥	चतातियमः ११५ २ अ जाज्ये मुम्बाचछोत्तर्म ११६ १ १ क्रांचे मुम्बाचछोत्तर्म ११६ १ विधिः ११६ १ जवदिशिसेनीएवीतिना च कर्माचरणे निषयः ११६ २ जाचममयोगनम् ११७ १ तत्र मधानसंकरणः ११७ २ नहंनासंकरणः मधादिवेच-	शिषा - वत्र वृध पंतित,  झस्मायाचाहितदेवता- नां पूजनं	13/ 3 70 Y
-----------------	---	--	------------

000	विषय.	षत्र पृष्ठ पंतित.	विषय.	पत्र पृष्ट पीषेत्र,	दिपय.	पन्न पूछ वंश्ति.	***
0	घण्टापूजर्न	१२९ १ इ	ग्रुद्धोदकस्मानं	138 1 60		१३९ १ ५	Š
	अंगन्यासः	. १२५ १ १०	अंगपूजा	११५ १ ९		१३६ १ ८	S,
÷	पंचांगन्यासः	१२६ २ ४	कुंकुपादिसम्पेणफलम्	१३५ १ १२	मंगलार्थं नीसमनमंत्राः	रेश्य र ८	ģ
00000000	महापातकहरन्यासः	१२९ २ इ		१६५ २ २	स्तुतिपाठः	१३९ २ ६	2
100	अंगांगन्यासः	. <del>१</del> ३० १ १	तुरुसीपत्रसम्प् <b>रणम</b> शंसा	१३६ १ ७	विष्णोधरणोक्षकपायनम्	<b>१३० २ ८</b>	2
\$		. १३० १ १०	द्रशांगवूष्मशेसा			१३९ २ ८	Ž.
	करन्यासः	. {३० २ ३		१ ६ थहरू	विकेपार्वः	180 ? 6	š
S	देवन्यासः	. १३० २ ५	नेवैद्यक्षेपे वैष्णवादीनां		चरणतीर्थमाराने फल-	`` ` ]	o i
8	पूजनं	. १३१ २ ३	भागः	१३७ २ ५	į.		
ķ	अभिपेकः	. १३१ १ ४	नैनेचविधिः	१३७ २ ५	,	580 5 €	\$
ģ	' वं <del>च</del> ाप्रतस्मानफलम्	. 148 1 9	आरार्तिक्यं	१३८ १ इ	अधिसादि-निषिद्धभानम		ő
0000	पण्यवादनकास्त्रः			186 1 18	चरणोद्ऋग्रहणे निषेधः	\$80 50 \$	2
13	सरपर्ल च	11 5 555	नीराजनपर्शसा	136 1	चरणतीर्धवहणे ज्ञासार्थः	१४० १ १०	;
8			-				3
0000						ļ	

	तिईष्यतसेनादित्योज्यस्त प्रहंण निषेषः १४० -तीर्षग्रहणपंत्रः तस्य रिष्यं- गर्तं च १४० आज्ञीर्वादमञ्जाः १४० द्वितीयदियसम्ब्रह्मं १४	2	गोपपश्रहणम् १ इविट्रेच्यत्यागसंकल्पः १ प्रधान देखताहोमः । शेमात्री पक्ताश्च विक्रिः । जन्मादि परिवार देवता- शेमः	84 2 84 2 842 2	0, 8, 9 \ 8 \	अपूपवायमदानमपोग इष्ट्रव्हाणम् वृतेव्हाणम् कर्मणां सफरुतं मिष्करुतं च विष्कापित-कर्मणां	१४६ १ १४६ १ १४६ २	, 9 7 4 4 9	अ <b>स</b> ॰
\$4000			॥ इत्यनुक्रमणिका	समाप्त	n	¥	••		<b>*</b>

अथ साहित्यनी यादी-द्य दहीं मंडपस्तंभ, नराज, चार पंथवर,

वीगरे तैयार करी मांडवा महर्व कर्खः ग्रह क्यांतिमां - चंकु, नाळीयर, सी-

पारी, पान, अवीक, मुलाक,सिंद्रु, भूपसळी, नाडु, कोपरानी वाटी, खारिक, द्रास, एलची, छर्वीम, समलकाकडी, गुग्गुल, सरसव सर्वोपधि,

साकर, मीढळ, ग्रुखड, सफेतककडो, राती-क्दडो, रेशमी ककडा, धोतियां, रिकमो वधारानी छेती. मोगरेळ, बानो, आंदाना

तळमब, केशर, कपूरकाचळी, यउंछा, कपूर, दक्ष, मध, स्थंड, धी, मोळ, चोला, वडं, ्र्रं (रक्तमं नेपापनी स्त्रां, गानरेस्त, बाना, आवाना । दश्रा, मघ, खाड, घा, गाळ, इ.पाना, सिंहर, समदीत स्नक्ष्यं, रातो करूडो, । तुस्वनी दाळ, कार्न्यमान,

जनरुख, नारंगी, दाडम, वीजोरु, फ्रस्टहार, 🖒 दुर्वो, सर्वीध, आकडो, सासरी, सेर. ( जॉजोटी, पीएको, उपरहो, शामी ) ऍच- 🕏 पळ्ळ ( पीपळो, उभरहो, पीपळी, आंबो, 🗳 वड ) तांदाना करूश, तांदाना करभाणां. 🎼 आक्यस्याकी, चरुस्याली, कांसानी थाकी, कांसानी वाडकी, तांबानी बादकी, तांबानी 🖧 होटी, **संदानी तरभाणी, सोनानी मृति,** 🖔 ह्मपानीमूर्ति स्वीचडी, सेक, पाटका, बाजट, पंखा, आचमनी, पबाळा, तरभाणा, सुसदा, 🔯 चाकळीओ, दर्भ, पांयगाटलां, भागनं मूत्र, स्रुवो,

गायमुं छाण, पीळी मटोडी, चेरडी, केळा.

अध कुरवडीनी साहिस्य-वंकु, नार्जीयर, सोपारी, पान, अवील, गुलाल, सिंध्र,हळ्व, भूपसळी,भीडळ,गोळ,भाणा,पुर-वीपा, नाड, यी,पुरं,वडीनो कीट, कार्जुभात, पापडनो लीट, फूल, हार, दूर्यो, पाजठ, सफेत वकडो, पृजाने पाटे तरभाणुं, आचमनी, पंचरान, दीपानं कोर्डायुं, पाठला केंद्र वदी पापडनो छोट सिवाय नीचेनी

पारका, तरपाण, साम्रकस्त्रा, रातो ककडो | बदाय चारोळी परितां जायफळ आवंत्री सु-खड सफेक्ककडा लालकडा रेशमीककडा 🖔 केणवार्थ कोडर्षि, सपेनी, पश्च, चारणी धर्ड. धोतीया दूध दही मध खांड घी मोळ चोसा 🖔 वरफी, वींगरे साहित्व तेगार करवी. वरने आपवाने-शेवधि, पीताम्बर, सीनान्द्रपानी विद्यि, सामखोतरणी, दांतखोत-वर्ड क्षुबरेनीदाळ, कांचुभात, गोमय गोमूत्र लग्नमो साहित्य--कंदु, कार्युगतः रणी, अर्लकार (कन्यानेपाटे) किदिया-अरदी केळा जपरुस दाइप नारंगी वानीक 🏻 नार्कीकेर, सोपारी, पान, अवीच, मुलाल, सेर, पानेतर, आभूषण ( चुडी, कांक्रण, फुल हार दुवी जुलसी समीध, आकड़ो 🞖 सिंदुर, भूगसळी, दुईा, मध, धी, खांद, तेहा, वाकी) वीतीवारनं कब होय सो स्रोक केळना स्थंभ क्षेरण, दडीयानीसीकी-कांसानी बादको, कांसानी थाळी, मुख्सी, फुळ, बसोइ, रतन दिवडो, पॉकणा, रज्यना पगठं बीगेरे छावतं ॥ म्बान्वरो म्बेर झींझोटो--पीपरडी र्माडीयाः अंतर्पटनोककडो, विष्टर, नाइ, उद्यापनमां---कंकु, नाळीयरे, सोपारी उमरडो समी पंचपहरूव, पिपळो उमरडो रायपात्र, अर्थपात्र, आचमतीय पात्र, पान, अबीक, गुलाछ सिंभून, भूपसळी, नाडु, बिपिळी आंबी वड वीगेरेना पांतरा माटोडी— कोएरानी वाटी, खारेक, द्रास,प्रख्वी, रुवंग, ( चोडानी, हाथीनी, राफडानी, संगय इस्पै, गोळ, याणा, भावनी भाणी, पा-रडी, सुपदुं, कंसार, कक्रश, मृत्यय, कंसार कपलकाकरी, गुगुल, सरसव,सर्वापधी, तल, ( नदी सगुत्र मुख्या होय त्यांनी ) तळावती पान, सम्रक्षा, वरवेडीयां, श्रीत्म, पाची, जन केन्द्रर कपुरकापकी कपुर चर्चला,साक्कर | राजद्वारनी गौबालानी, एउला स्थान परची |

साहित्य-धोतीया रुपानी, अलंकार, गुंबा ( चणोठीनी ) माळा मटोडी ऋवदी, धउं, चोखा, पग, चणा, आसन गोमुखी पाळा, दीवीयो, अहद, सांवाना कलग्र, सांवानी लोटी सांवाना अधि-जनोइना जोटा छत्री चोडो फेपबाई कोडीयुं मनी, पवित्रीओ, तस्भाषा, पदाका, वरफी, तरभाण तांदानी सरभाणी मध्यकलक्ष त्रांदानी चावणी, सपेलु, मुरहवो पदाला चाकळी तनापर तरभाणुं कांसानी थाळी, कांसानी वाडकी प्रांतानीवाडकी ( पर ) थाळी, वा वैंडा कीपरापाक गोविचंदन चरणामृत साल कोडीआ भारली सुदळी काळोरंग चाक वीथोंदक परीयाळीदाणा. गर्भांथी-वाजेड उपापाहेश्वरबस्त घोतीयुं घटन अंग-वीगर पादका अध्यक्ती पदाला हरभाणाः हैं हको, टोटो, सोनानी मुरति, रुपानी मुस्ती छावडी, कांसकी, आस्ती, चांछा, खुटो, रखो पीछोडी पाघडी चोळी, चणीओ, पुजाने माटेजोइए आसन माळा गंगाजळ साडी, आरसो, दीजणी, सुखद्मस्या, पुरु-जमनाजल रमणरेती विगरे यथावती श्रद्धा-्राध्याः कासकाः आरसाः, चाह्याः, चुटाः, साद्राः, आरसाः, बीज्ञणं क्षेपाञ्जेवेरः, रुपार्तुं जनोदः, रुपार्तुं छत्रः, पादुकाः | पोत्तयः सदस्रनापावळोः भगाणे लावनो इति साहित्य प्रकर्णप्र. 000000000000

## निवेदनाष्टकं ॥

वे०की०

113011

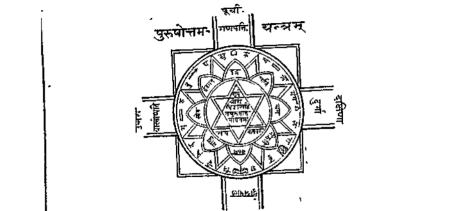
वैदो हि भूछं निश्चित्रस्य क्रिशतस्य सर्वत्र प्रसिद्धमेतत् ॥ तत्भोक्तसंस्कारवर्वा प्रसृतिर्थयमा भवत्ययः न वात्त्यतास्ति ॥ १ ॥ 🖟 बलुर्मित्रार्वं मुनिपिनिवदं पीराजसंतं नहि वेदिभक्षम् ॥ श्रुवेरिकार्यसम्बर्णनगन्छज्ञगाद चैवल्तिक काव्विद्रासः ॥ २ ॥ कळाविदानीवनवैश्वसंद्या युनानुसारेण हि लुप्तवमीः ॥ मा भूवनित्यथे घहतदृष्पैः प्रोत्साहितीःश्क्ववीममं प्रवंशम् ॥ ३ ॥ तेवां तु नामानि ददाम्ययो वन्क्रतप्रदा स्यातिगता तु सान्त्री ॥ वदान्यवर्षाः सङ् पौर्वभारा विषक्षिना याज्ञविनामयेषाः ॥ ४ ॥ तेपाविदानी 🙎 किल भोरमध्यागग्रेसरोऽसी कृत राजमान्यः ॥ त्रिजुवनारूयो भरदेहजन्या समाध्यं यः मधनं ददी मे ॥ ५॥ पिकृव्यको पनपतिः प्रवसूत तस्य प्रगारवासो वित्रभूषणात्वसः ॥ तस्यारमञौ हो सुशिस्त्री बदान्यौ मनूनटू चामनी संद्रधानौ ॥ ६ ॥ ताषाश्रयं मे ददतुश्र सम्यक् रूस्मीस्तया ्री तस्परिपालिका थ ॥ वेलास्यदासस्य व या सुवत्नी साध्वी बदान्या पददौ समाध्यम् ॥ ७ ॥ रंगीस्थ्दासो निमात्पणस्तथा सुरारजनमा जवकुम्पदासः ॥ तंत्रक्रमापारिक्वसन्तेऽन्यो दायारय-कारापणहासजातः ॥ ८ ॥ एतं वदान्याः किछ सूर्यपत्तने वसंति ते मे दाददन् समा-

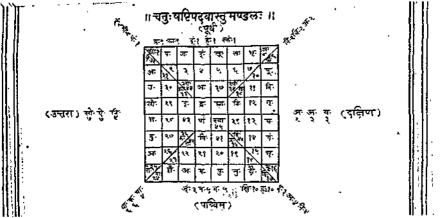
ने टोबीए वेहेंडाभी आ प्रेथमा आग्रफ आपेडो तेपना नागे प्रंथ रहे त्या पुर्धा अनळ रेहेंबा पदारते करीने पुर्वयाजे. धुर्भ भवतु ११

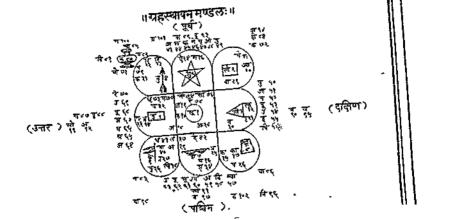
थयम् ॥ सदाथयान्मुद्रिवकौसुरीयं तमोतु ऋर्पाणि शुभानि छोते ॥ ९ ॥

Hotell

`	a temporal		_	. "	* 1		_	•		7	₹.	¥	7												П	Т
Ì	मिस है।	г	П	119	1	2	12	2	Ŧ	10	4	1	Π	峥	14	1	7	4		7	11"	匚	ľ	জন ক	١Į	.I
Į		Н	100	H	μ,	λ	1	•	4	ij	Г	Г	Г	Т	Ιd	4	7	7	Ł	14	4	ď,		] {		ıl
ı		l I	fĸ	ž	18.	Ŀ	ì.	4	ij.	Ι-	Г	_	Г	⇈	Г	1	Į.	Α	阜	₩	₩.	1	4	I f		ı
Į		7	13	苍	3	4	邛	Ь	_	г	Ė		Г	<del>  -</del>		Ŧ,	Þ	4	1	₹	16.	セ	F		ı	ıl
ì		7	1	ď,	ĸ	1	15.	m		ij.	1-	П	┢	Н	167	Ĭ	į.	4	-36	.4	ΙE	F	₩.	1 3	1	ıl
1		17	4	4	1	Ġ	Н	H.	13		<u> </u>		<del> </del> -	逦	63	19	In	ź		÷					ш	ıl
1		7	-	- 3	*	ă	X	7	7	7	-	1	h	i ik	Ҡ	1	Ė	1	Ě		Į.			1 '%		ıl
ı	· Æ	-3	1	-a	-	4	-	174	**	1	굯	1		i,	17	<u>,</u>	'n	Ŧ	÷		ļ			1 3 1		ıl
ı	780	1		-	Π	,	臣	7	-3	ű.	#	12	12	¥	7	E	Ų.	16	Æ	۴	-	Ē	=	1 3\ I	Ц	ı.
ı	<b>%</b>	놼	15	-	Н	7	_	í			<u> "</u>	Н	⊢	₩,		Ē			31	⊢	Н	TE	45	1 32 1	1	11.
ì	. A≊	多	1_	L	-		T	4		N.	┡	₩	<b>├</b> -	⊢				100	Н	Н	Н	⊢	125	1 'E 1		ı
1		L	Ļ.	Ц			╙	4	Ħ	١.	-	١-	⊢	╄	⊢	ψĒ	_	⊢		۱.		-	Н	द्राविण दण्ड		Į.
ı	ादा जन्तर	L	L	L	Ц	_	Ц	1	4	<u> </u>	丄	ᆫ	L.	ļ	Ļ.	47		L	Ľ	L	L.	_	١,,	1 3,7,3 3.4	u	11
1		욢	1			_	ø	4	∌		Ļ	L	L			45			Ш	L.,	Ц	<u>L</u>	7	1 1	1	. (
l,		¥		Ŀ	ш	2	4	-	₹		迚	L	싵			þ	Ы	ψ	15	L		蚼	笙	i f	Н	11
1	١.	4	4	, h	4	4	4	र्भ	Ť	₹					₹	₹	₩.	栓	#	₱	#=	÷	ν,		1	ıl
ŀ	-	14	14	Į.	4	4	4	4	क	4	Ŧ	4	4	-	41	1	÷	ŵ	łs	\$	٩f	ь.	W	]	1	/1
Į		ļa	A	ᄺ	4	4	•>	4	त्ये	វា	-3	,-	1	1	ı£,	·A	4	Ţ.	4	45	¥	Ł	Į,	1 1		ıl
ı	•	74	4	3	4	Ň	4	16	4	ŵ	T	r	Г	۳	1		Æ	नी	4	4	ij.	¥	'n	1 • 1		ıl
ì		74	3	4	8	4	ल	4	Ť	Ť	1	Ι-	┲	⇈	t	4			4		4		L.	1 I	1	íł –
١		À	事	ě,	4	_			4	T	т	T	T	✝	Ι		_	Ŧ		4				i I	ı	11
ľ	l	г	ⅳ	4	4	ŧ	₹		Ť	λī	Т	т	T	<del>[</del>	4	Ť		_	-			衣	46	l l		ł I
١	, and an	г		16,						तो		╆	⊢	त			÷			₹		4	Н	<u> </u>	1	ıł
t	शकु दा	ᆫ	٠_		÷	_	•	÷			_	٠.	٠.		1.24	٠.	<u> </u>	∸.		•		ш		किस		11







🛂 सिन्धुरास्थो विद्युपसुस्तुतो योऽर्च्यते कर्मणोऽये । यन्माता रोलपुत्री प्रणमति सततं शास्दाम्बावरो या साप्पर्धांगी 🍪 🕼 यदाया प्रभवति यदि चेद्रामदृतः स चन्द्यः ॥ १ ॥ ं वसन्ति वसंघातले विस्रघमंडलीनिर्मिताः सहस्रकृतयः परं 🔀 ्रीन किल संक्रार्यक्षमाः ॥ विलोक्प सदहं मुद्रा विरचपामि रम्पामिमां विवाहपदप्रविकां स्रगमशैलिकां िकोसुदीम् ॥ २ ॥ त्रणम्येष्टं रामदूतं स्वयुष्तं कर्मयान्यिजाव । विवाहः ौसदीमेतां करोमि मूलशंकरः ॥ ३ ॥ ज्यानंदस्य पुत्रोऽहं श्रीमाली एजेरी दिजः । वालवोधार्यमेषो मे प्रतिष्ठार्थं न वै श्रमः ॥ ४ ॥ श्रीसूर्यजा- श्री

श्रीगणेशायनमः ॥ अथः मंगलाचरणं ॥ रामात्मा विष्णुरासीदितिजनविदितं ह्यांजनेयः शिवोमुखस्पूतः।

ज्यर्थ-सहत्व नेशक जनो आर्यवाह्मना दरेक श्रंवारंभमां मंगल करवानी रही शेवले.तेवां वण प्रणाखरा श्रंवारंभमां गणेशनं स्तवन होयले. प स्पष्ट है. भंगल करवानुं कारण निविद्यता साथे मतिकार्यनी समाप्ति धवी जोहप्, एज गुरूव हेतु छे. मंगल करवाथी ते ते देवतानी 🔆 है आर्शियोद रुद्द ते ते शुभक्तमां मध्य धर्यु, ए आपगुं कर्तव्य होवाथी, प्रथकतो पर्यभक्त शिरोमाण श्रीरामदतनेज संगल कार्यमां बंदन ्रे करे हैं. कारण के-सर्वे पर्द हस्तिपदे निगर्व-ए न्याये करीने श्रीहनुसानजीनी अंदर सर्वे देवतानी मसजवानो अंतुरुसाव थर जाय है. जेमके- 🔓 💆 श्रीरामनंद्र साहात् ( निष्यु पोते सूर्यकुलपूरण यद अवतमी छे तथा माहति था साहात् ( संकर ) पोते अवतर्पी छे, प कथा मसिद्ध छे. 🥇

🛂 ऋलगतं सुरम्यं यत्पत्तनं सूर्यपुराभिधानं । तत्रैव सामाभिधवेदपाठी वसाम्यहं येन ऋतां हि साँठी ॥ ५ ॥

१ साटी नामनुं प्रस्तक करी छे.

अ्थ ग्रहयर्ज्ञः ॥ तत्रादो यजमानो मंगलस्नानपूर्वकं स्नाखा परिहितचीतवस्नुकुंकुमचंदनादिभृतपुण्डूः संच्यादिवेश्वदेवान्तं नित्यकर्म विभाष । स्वदक्षिणे मंगलद्रव्याण्यादाय शुभवस्त्रालंकृतपत्न्या सह शुभमुहूर्ते शुभिदिने | स्वस्तिकादावासनविधिना प्राङ्मुख उपविश्य । स्वस्तिमंत्राः श्रवणीयाः ॥ यजमानोऽप उपस्पृश्य प्रणवं स्मरेत् ॥ पि॰की॰ तत्र मास्त्याद्वा उक्तः द्वितीयो पाइक्स्स्पसमुत्पादी प्रयोगपारिजाते च ॥ स च त्रेचा अयुसलक्षरोदिहोमास्पकः नित्यो वैभिषिकःकाम्पथेति भेदात् ॥ कार्यारभेषु संबंधु प्रतिष्ठारणनेषु च । नवोद्यपनेने च गर्भाधानादिकमेषु ॥ आरोग्यस्नानसक्षये संक्राती रोगसंभवे । अभिचारे च यः जुर्यान् प्रहर्प्ता वियानतः॥सोऽभीष्टफल्यामाति निर्धितन नसंश्रयः ॥इति प्रयोगपारिजातेच मदनरत्ने ॥अंगोद्धत्याँटणोदकेन स्नानंतन्त्रमण्डं स्मृतम् ॥ इति संग्रहे ॥ इक्षमण पयोम्लं तांग्रुळं फल्टमीपथं । अशियत्यपि कर्चव्याः स्नानदानादिकाः त्रियाः ॥ इति मार्कडेयः ॥

कापार्य रूप्णान्सं च मिलनं केन्नदूरितं । जीर्णं च सारितं वारि पारस्यं पैनुने गृतं ॥ १ ॥ छिनाग्रमुपवसं च कुरिसतं पर्यतो सिदुः ॥ इति-व्याप्तः ॥ प्रागत्रमुद्गप्तं वा धीतमसः प्रसारमेत् । पश्चिमागं दक्षिणाप्तं पुनः प्रधालनाच्छित्वः ॥ इति प्रतहेमही ॥ कटिवेप्पं तु यहसं पुरीपो येन या हतः ॥ मुत्रमेशुनहृद्धं धर्मकार्यं निवर्नयेत् ॥ इति मार्क्डदेयः ॥

हैं। इबे गणपति, इंकरमा पुत्र तथा पार्वतीनंदन छे. अने सारस्यतीना पति ब्रह्मा पण इंकरने वंदन हरे छे तो वे शंकरायतार शामरूतने वंदन १-हवे सक्छ मगछ कर्यना आरंपमा महयत करती, ते ट्यारजार, छाल, अने कोटी आहुती एपी रीते प्रण प्रकारनी छे. ( प्रहमल ) प्रतिष्ठा, ्र हीं ही द्वीमिति हस्ते जलं गृहीत्वा ।। अद्येत्यादि० प्रारच्ये कर्मणि चित्तद्वत्तिं निरोधाय अमंगलनाशकशांतिपाउँ श्रीकापः ज्ञानिकामो वा यथेष्टं विलक्तं चेत् ॥ इतिक्रस्यचिंवामणी ॥ मास्ये ॥ श्रीकापः ज्ञानिकामो वा ग्रहयतं समाचरेत् ॥ शृष्टवाद्युः पुष्टिकामे व विभाभिवरत्युनः।।ब्रह्शाति त्रवक्ष्णामि पुराण श्रुति चौदिवाम् ॥ पुण्येन्द्रि विभक्तथिते इत्या श्राह्मणवाचन।।ब्रहान्यहाभिदेवाश्व स्थाप्य होमे समाचरेत् ॥ 🕏 महयकालचा मोत्ताः पुराणश्चतिभाषितवित्।। श्रातिसारे ॥ सर्वेषु घर्षकृत्येषु पत्नी देशिणतः सदा मतिष्ठासंग्रहे ॥ श्राद्धे यते विचाहे च पत्नी दक्षिणतः ॥ 🐉 सदेति अत्रिलंदिवायां ।। नामनपुराणे ॥ सर्व मंगलमागरथं वरेण्यं परदं हुआं । नारायणं नमस्कृत्य सर्वेकमीणि करचेत् ॥ अपरार्के ययः ॥ विद्याविष्यात्रत 🎏 🎱 स्नाता प्रातमाः पंक्तिपावनाः॥ यांत्रेणो नियमस्याश्र ये विमाः श्रुतिसंगताः ॥माणिहंसानिष्टचाश्र ते हिनाः पंक्तिपावनाः ॥ इति कृत्य चितामणौ ॥ है हस्तायों पथा देवता मसस यंत्रापी प्रहादियी क्या विच्नोनो विनास था मंगळक्षीक वजाने छे. बीर्जु यहक्रस्यमा विज्ञकर्तो मुख्य राससी 🖒 होयछे अने पमने नाम राक्षसानीक होनाथी सथा लक्ष्मी अवतार श्रीजानकीमा क्रुपायत्र होनाथी, श्रीरामना दृतनुं मेगलस्मरण ि लक्ष्मीमद छे, एम समजी गंगल करी बीजा चार रुधेक बडे प्रंथकर्की पोवालं स्थान नाम वतावी प्रंयारंभ करे छे. 🔐 ┷यह, बास्तु,सीमंत, रोगछुनत थया पठी संकाति,छन्न,यहोपबितादि सस्कार विगेरेण ग्रहपूनन करी कार्यनी आरमं करणायी साग कर्म यह संपूर्ण फळ गेळवे 📭 🔐 दे तया महयहना आरंभे यनमाने मंगल्स्नान ( हळदर, आपळा, बाळो, तेल, सर्वोपिप, सर्वे बस्तुओ छना पाणीमा नाली ) उप्पोदक बढे बर्ख पद्धी 🖓 भीताम्बर वा शुद्ध घोषळा वस्त्र तथा उपरक्ष शनी साथे रासी तिळक क्षिपेर करी नित्यकर्ष करते. १—शुभ दिवसे, शुभ मुहूर्ते झाझणेने वोळानी वे नित्र वेचन पूर्वक नित्रति करी कहेबु के-मारे अधि प्रस्यधि देक्ता सहित यह यहा करते छे ते काम निर्विध प्रीपूर्ण करी आसे. एस वही झाझणेनी

कारिये ॥ इति जलमुत्सृजेत् ॥ विप्राः शांतिपाठमंत्राः पटेयुः ॥ भृगुर्वसिष्ठः ऋतुरीङ्गराश्च मनुः पुलस्यः पुलह्थ गीतमः । रेम्यो मरीचिश्रयवनश्च दक्षः कुर्वन्तु सर्वे तव मंगलानि ॥ १ ॥ सनत्कुमारः सनकः सनन्दनः सनातनोऽप्यास्त्रीरिपेग्लो च । सप्तस्तराः सप्तरसातलानि क्वन्तु सर्वे तद मंगलानि ॥२ ॥ संग्राणियाः सप्तकुळाचळाश्च सप्तर्पयो द्वीपवनानि सप्त ॥ भूगादिकृत्वा भुवनानि संग्र कृर्वन्तु सर्वे तय मंग-नवकुवलयदामश्यामवर्णाभिरामः सीतपालिङ्गिताङ्गो सर्वतो समर्चदः ॥१॥ अशेपलङ्कापतिसेन्यहन्ता ३ ॥ कनकनिकपभासा मम तापे आज्ञा टर पाटलपर शुद्ध आसन पापी पोताने नणणे हाथे की सहनतेपान वेपी मनने स्पिर रासी, अद्धापूर्वक शांतिपाटना मंत्रो सांमळवा. घणे ठेकाणे वनमान माथे पारत पेरी बेसे हे, पण ( कंतुकोर्ण्णा विवर्तयेत् ) विगेरे शास्त्रना प्रयाणयी प्रायधिक हे. तो रुटीने बाघ न आवता शास्त्र विगेरे बांखवी. टर्सी, शांति, प्रिट, वृष्टि आदिनी इच्छाबन्छाए अहयत प्रथम करनी.- विद्वान, वर्षिष्ट, द्वालु ने लोम वगरना श्राप्तणो पासे शांतिपात मणावयो, —पदी अमणे करि पाणीनी सर्वते करी झान अने शांतिने आवशवाळो (प्रणन ) तेनो घण बसत मोदेथी उचार करी शयमां पाणी छह देशकाळाउँ म्मरण वरी आ कर्ममां मारुं वित्त स्थिर रहे। तथा निर्वित्न पूर्वक कर्म थाप एम यही पाणी कोड्युं, पुत्री सर्व मंगळना संगळहूप नारायणादितुं स्मरण. करता शानित पाठना पंत्रो वाव्यणीना मेटियी सांपळरा. यनपाने हायमां नालीएर तथा दशणामां रूपानाशुं राखी उभा घर, हाथ नोडी सांपळर् 🍨  $[ec{eta}]$  तिल्ह हं कुंक्रेमैचैर सद्दा पंगलकर्षणि ॥ कारियत्वा सुपरियान्नपेत चंदनं मृदा ॥ ,इति विष्णुपर्योच्चरे ॥ संध्याहीनोध्यप्रित्वर्यपन्नहेः  $[ec{eta}]$ स्पेक्सेस् । यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फल्पवन्तुते ॥ अत्रिपुराणे ॥ सुरुनातः सम्यगानांतः कृतसंग्यादिकाकेषः ॥ कामकोधिहिनित्र पालंडस्पर्ववर्गितः ॥ अितेन्द्रियः सत्यवारी सर्वकर्मम् शस्यते ॥ इति बारादे ॥ फलेन सफलावाप्तिः सांगता दक्षिणार्पणात् ॥ इति इद्धवसिष्ठः ॥ सस्यं दपस्तवशे दान पहिंसेन्द्रियनिवहः । दृश्येते यत्र राजेन्द्र स ब्राह्मण इति स्प्रतः ॥ इतिवहिष्राणे !। अहिंसा निरतो नित्यं कुह्यानो 👸 भाववेदसं । स्वदारिनत्तो दाता सर्वे प्राह्मण उस्यते ॥ यमसूतौ ॥ यस्पास्येन सदाशंति इव्यानि त्रिदिवौकसः ॥ ऋव्यानि चैव विवरः

श्रीतमसेवाचरणेककर्ता । अनेकदुःखाहतलोकगोप्ता स्वसौ हन्मान तव सौरूयकर्ता ॥ ५ ॥ यः प्रत- 🖓 नामारणलञ्चकीर्तिः काकोदरो येन विनीतदर्पः । यशोदयालंकृतमृर्तिरूपात्पतिर्यद्वनामथवा रद्रणाम् ॥ ६ ॥ 🖇 र्शि शांतिः शांतिः शांतिः ॥ यजमानभाले तिलकं ऋता ॥ मंत्रार्थाः सफलाः सन्द्र प्रणीः सन्द्र मनोस्थाः ॥ शनुणां बुद्धिनाशोऽस्त मित्राणासुदयस्तव ॥ १ ॥ स्वस्तिर्या चाविनाशाख्या धर्मकल्याणबुद्धिदा **।** 

्री विनायकप्रिया नित्यं तां च स्वस्ति , बुवन्छ नः ॥ २ ॥ सदक्षिणाफलहस्तो यजमानः स्वासनादुत्थाय विप्राणां

किंगुरमिकं ततः॥इति याद्यक्तयः ॥ तपस्तप्तास्म्बद्धसा माद्यणानः वेदरुसये । तृष्यर्थे पितृदेवानां पर्मसंरक्षणायः च ॥ इति तैत्तिरीय स्मृतौ ॥

रै उपरच शातिभाउना मंत्रो बाह्मणीना मोदेशी सामळी, नमस्त्रार करी हाधमा राखेला फळ दक्षिणा बाह्मणीना 'परगोमा मुकी आसनपर मेसर-

वि॰ को॰ 🐉 समीपं गत्वा पादाभिवंदनं कुर्यात् ॥ विप्राः ॥ वागीशाद्याः सुमनसः सर्वार्थानामुपक्रमे । यन्नता कृतकृत्याःस्युः तन्नमामि गजाननम् ॥ १ ॥ हन्मानप्रतः पाद्य पृष्टतो देवकीस्रतः । खेतां पार्श्वयोदंवी स्रातते रामलः है तन्नमामि गजाननम् ॥ १ ॥ हन्मानप्रतः पाद्य पृष्टतो देवकीस्रतः । खेतां पार्श्वयोदेवी स्रातते रामण्यहं ॥ ३ ॥ क्ष्मणो ॥ २ ॥ यस्य प्रसादात्याप्यते सर्वकामाः सुनिश्चलाः ॥ सर्वोत्तमस्य तस्याहं गुरुपादी नमाम्यहं ॥ ३ ॥ शास्त्र शास्त्रांभोजवद्ना वदनाम्छुजे ॥ सर्वदा सर्वदाऽस्माकं सित्रिधिं सित्रिधिं कियात् ॥ ४ ॥ यो रुद्रः सर्वमृ

तानामादिशन्तविवानितः॥अष्टमृतिरिषष्ठानं तस्य पादी नमान्यहं ॥५॥ गणाविर्षं नमस्कृत्य नमस्कृत्य पितामहं ॥

विष्णुं रहं श्रियं देवीं वंदे भक्त्या स्रस्वती ॥ ६ ॥ स्थानाधिपं नमस्कृत्य दीननाथं निशाकरं ॥ धरणीगर्भसंमूतं

शशिपुत्रं वृहस्पति ॥७॥ देत्याचार्यं नमस्कृत्य सूर्यपुत्रं महाग्रहम् ॥ गहुं केतुं नमस्कृत्य यज्ञारंभे विशेषतः ॥८॥ श्रकादिदेवताः सर्वा मुनीश्रकथयाम्पर्हः ॥ गर्गं मुनि नमस्कृत्य नारदं मुनिसत्तमम् ॥ ९ ॥ विसिष्टं मुनिशाईलं है श्रकादिदेवताः सर्वा मुनीश्रकथयाम्पर्हः ॥ गर्गं मुनि नमस्कृत्य नारदं मुनिसत्तमम् ॥ ९ ॥ विसिष्टं मुनिशाईलं है विश्वामित्रं महामुनिम् ॥ व्यासं कविं नमस्कृत्य सर्वशास्त्रविशास्त्रं ॥१०॥ अगस्त्यं च पुलस्त्यं च दक्षपुत्रं पराशरं ॥ शिरसा शप्या मनसा यचसा तथा ॥ पद्रवां करान्यां भातुभ्यां प्रणामीष्टांम उच्यते ॥ इति धर्मसिन्यी ॥ स्ताने बस्ते च

निवेदो अध्ये आचपनं स्मृतम् ॥ कालिकापुराणे ॥

गरुङच्चाः ॥ १३ ॥ याग्ये रखतु वासहो नारसिंहस्तु नेर्फते ॥ केशवो वारुणी रक्षेद्रायव्यां मधुस्द्रुदनः ॥ १४ ॥ ्रीडत्तरे श्रीधरो रक्षेदीशाने च गदाधरः ॥ ऊर्वं गोवर्धनोरक्षेदघस्तातु त्रिविकमः॥ १५॥ एवं दशदिशो रक्षेद्रासुदेवो जनार्दनः ॥ यज्ञात्रे पातु मां शंखः पृष्ठे पदां द्ध स्तृतु ॥ १६ ॥ वामपार्श्वे गदा रक्षेद्रक्षिणे च खदरीनम् ॥ उपेंद्रः ्रे∥पातु ब्रह्माणमाचार्यं पातु वामनः ॥ १७ ॥ अच्छतः पातु ऋग्वेदं यज्जवेंदमधोक्षजः ॥ कृष्णो रक्षतु सामाख्यम| 🎇 थर्चाणन्तु माधवः ॥१८॥ वित्रा ये चोपदेशस्तांश्च दामोदसेऽचतु ॥ वेदंमंत्रेश्च कर्तन्या रक्षा शुद्रेश्च सर्पपैः ॥१९३॥ 🎉 यजमानं सपत्नीकं वास्रदेवस्तुरश्चस्त्रास्त्राहीनं तु यत्सर्वं तत्सर्वं हशिरश्चतु।।२०।। इतिप्रणम्य स्वासने उपविश्य आचम्य ्र नोकर्णाद्धातरस्तेन पापनार्न जलं शिवेत् ॥ इति ॥ आस्पनासाक्षिकर्णौ च नाभिरुत्कं धुनौ स्मृतेत् । एवपाचमनं कृत्या साक्षात्रारायणो भावेत् ॥ इति भारते ॥ अगस्यसीहतायाम् ॥ माणायामैर्विना यदास्कृतं कर्म निर्देशकं ॥ भनेतु ॥ इति भारते ॥ अगस्यसंहितायाम् ॥ भाष्यवार्षितिमा बद्धस्कृत कम । निर्धकः ॥ १ रत्री नमणो हायभायनस्कान जेन्दे करी, एक सोनानी नाते. मणको हुने एउछुपाणी हुपेळीमां व्हर् उपरना मत्रवी त्रण आचमन करवां ॥ कर्मयोग्य थवा हाना इत्यापाणणे व्हर्, मोहे, नाते, आखे काने, दुटिये, हापे अडकाइड. पत्नी पाणीनी वारा गैतानी चार बाजुप करवी. ए विधिधीसासात् नारायणस्प पनाय है।

े विद्याधिकान् सुनीन् सर्वानाचार्याश्चतपोधनान् ।१ ९१ ॥ तान् सर्वान् प्रणमान्यद्य रक्षन्तु ते ममाध्वरम् ॥ अन्ये विद्यातपोष्डमता वेदशास्त्रविचत्रणाः ॥१२॥ सर्वे नमस्कृतास्ते मे यज्ञं रक्षन्तु सर्वदा ॥ पूर्वे रक्षतु गोविन्द आन्नेयां ै वया ही करावाय तमः॥ ही नारायणाय तमः॥ ही माचवाय तमः॥ इत्याचम्य॥ ही गोविन्दायनमः इति इस्त-प्रकारतं ॥ ज्ञात्मनः समंतात्प्रदक्षिणयदुद्कन्नोपणं कुर्यात् ॥ ईी नमो भगवते वासुदेवायेति प्राणायामत्रयं कुर्यात् ॥ पुण्डरीकासः पुनातु ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीष्ठरूम्यो नमः ॥ श्रीपरात्यस्युरुम्यो नमः ॥ इष्टदेवताये नमः ॥

कुल्देवतावे नमः ॥ ग्रामदेवताये नमः ॥ लक्षीनारायणाभ्या नमः ॥ उमामहेश्वराभ्यां नमः ॥ शचीपुरंदरा-म्यां नमः ॥ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः ॥ सर्वेभ्यो त्राह्मणेभ्यो नमः ॥ सुपुष्तश्चेकदन्तश्च कविलोगजकर्णकः ॥ लंबो-दुरुष्ट विक्रयो विप्रनाशो विनायकः ॥ १ ॥ ५प्रकेतुर्गणान्यक्षो भाळपदो गजाननः ॥ द्रादशैतानि नामानि यः पठेच्च्यूणुयादिष ॥ २ ॥ विद्यारंभे विवाहे च प्रवेशे निर्ममे तथा ॥ संग्रामे संकटे चेव विप्रस्तस्य न जायते ॥ ३ ॥

श्किबंदर्यः देवं शुरावर्णं चतुर्भुजम् ॥ प्रसन्नयद्नं ध्यायेत्सर्वविद्योपशांतये ॥ ४ ॥ लाभस्तेपां जयस्तेपां कृतस्तेपां पराजयः ॥ येपामिदिवरत्यामा हृदयस्यो जनार्दनः॥ ५॥ अभीपिततार्थसिद्धयर्थं पूजितो यः सुरासुरैः ॥ सर्वेविप्र-अतो यत्नेन कर्तृष्यः शाणायायः द्वाभार्षिना ॥ द्वी द्वी मासस्तु पथ्यान्हे त्रिश्विःसंस्थासुराचेने । भीजनादी भीजनात्वे पाणायामस्तु नोहत ॥ यथा परिवधातुनां दोणे दहति पानकः ॥ एत्यन्तर्गर्वपापं शाणायायन दहति ॥ १ ॥

है। १। यत्र योगीश्वरः कृष्णो यत्र पार्थे। धन्नुर्धरः ।। तत्र श्रीविजयोर्भृतिर्भुवा नीतिर्मतिर्मम ।। १० ।। १ सिंप्यारूयकार्येषु त्रयिक्षमुवनेश्वराः ॥ देवा दिशन्तु नः सिर्फ्षि ब्रह्मेशानजनार्दनः ॥ साक्षतज्ञलः मादाय ॥ १ विष्णुविष्णुविष्णुः अद्य श्रीसिचदानंदरूपस्य ब्रह्मणार्शनविज्ञानिर्मतिवज्ञानिर्मताविद्यायोगारकालकर्म- १ स्वाधिर्मृतमहत्त्त्त्वोदिता हिंकारतृतीयोद्धतिवदादिपंचकेन्द्रियदेवतानिर्मितांडकटाहे चतुर्दशलोकारमके १ लिल्यानाविर्मृतमहत्त्त्त्वादिता हिंकारतृतीयोद्धतिविष्णुविष

र -आजमर्नामां जल छड़ तेमां चंदन कूल इडव तथा फल सूकी लग सखत ( विष्णुः ) उचार करी संकल्प करवो, संकल्प वगर कर्म करे ही फल

। इर्दं कर्प-करिप्येक्षमितिसंकल्पमाचरेत ॥

अद्भुं मळे छे, माटे महिनो, तिथि, वार, महाय, योगकरणादिनो उचार करवा.

ैं सर्वकार्येषु सिद्धिद !!७।। सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेपाममंगरुं ।। येपां इदिस्थो भगवान् मंगरुपयत्नं हरिः।।८॥ १८॥ ८ ।। तदेव रुप्नं सदिनं तदेव तारावरुं चंद्रवरुं तदेव ।। विद्यावरुं देववरुं तदेव रुध्मीपते तेऽङ्कियम् स्मरामि

गणाधिपतये नमः ॥६॥ वऋषुण्ड महाकाय सूर्यकोटिसमप्रभ ॥ निर्विप्तं करु मे देव

वि॰ को ॰ है सप्तद्रीपमंडिताया क्षीगेदाद्विधृष्ट्रिष्ट्रिण्द्रीपवलयीकृत्कृतयोज्निवृत्तिर्णे जंखदीपे स्वर्गस्थितामरादिभिः सेवित गंगादिस्पिद्धिः पाविते भारते वर्षे निखिलजनपावनशीनकादिमुनिकृतनिवासके नेमिपारण्ये अमुकनामक्षेत्रे

॥ ५॥ 👸 श्रीभगवतो मार्तण्डस्य कुपापात्रे कालकृत्यवनगीवगृहाचार्यादिगणितायाँ संख्यायां श्रीत्रहाणों द्वितीयपरार्धे । श्रीश्वेतवासहनाम्नि प्रथमे कल्ये दितीये यामे तृतीये मुहूते स्वायं सुवस्वासे चिणे तमतामसरवतचा सुपेतिपण्मनू नितनामित संपति वैवस्वतमन्वंतरे खुगानां त्रिघूगयाते अष्टाविंशतितमे कल्खियो प्रथमचरणे श्रीमन्नृपविक्रमार्क समयातीत्संवत्सराणां व्यतिकांतानां अमुकतंबत्तरे अमुकायनगते श्रीस्र्ये अमुकर्ती अमुकमासे अमुकपते । अमुकतियों अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते चंद्रे अमुकराशिस्थिते सूर्ये अमुक

वरोऽहं असुकदासीऽहं श्रुतिसमृतिपुराणोक्तफलप्राप्यर्थं मर्गं स्तरम वा सुतायाःकरिष्यमाणविवाहकर्मणि सर्वप्रहाणां 🕏 र शुद्ध दामा २ संरत्यने छेडे असुक गोत्रवाळो असुक दास हुं धर्म शास्त्रमा कहेला फल पामवाने वास्तेमारा लोकसमा अथवा होकराना लग्नमा सक्ता प्रही 👵 युर् भाग प्रतिकृति महि प्रतिकृति कर मुक्त प्रतिभा जल व्ह उपर व्लेलो आसंक्रस करको तथा अधिकार सिद्धीने मारे प्राजापत्यप्रत्याज्ञायद्वव्य-सहाय यक्क्षेत्र मह यह कर्रलु एम कही जल मुक्त प्रतिभा जल व्ह उपर व्लेलो आसंक्रस करको तथा अधिकार सिद्धीने मारे प्राजापत्यप्रत्याज्ञायद्वव्य-. सहाय प्रथम मह यह करलू एन कहा नक पूज कराया जब कई उमा क्वला जमानकर करना तथा जावन्त्र साहाज माट आजायप्राचानायाव र सह (२० तया ३० सुधीनो) (करूप करी. ब्रांक्योंने ते आमी कहेंचुं के कर्म करवानो अधिकार आमे एमी रीते अधिकार प्राप्त करी अंशांगी े संरक्ष करी आसनदृद्धि सृषिक्रमीनन्त पुनन, द्विपरायन करेंचुं, तेमों आसननीचे जिल्लोंचे क्रमहासनतं पुगन करेंचुं.

गशिस्थिते देवसुरीपथायथाराशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवंत्रहमणविविष्टेऽस्पिन्शुभक्षणे अमुक्गोत्रोत्पन्नोऽहं अमुक्प-

👫 अधिकारमासये प्राजापत्यद्रव्यं सभ्येभ्योऽहं संप्रदास्ये भोत्राह्मणाः अस्मिन्कर्मणिकर्मकर्त्तंममाधिकारसंपदास्त्विति भव 🔀 🕍 तोडुर्वेद्ध एवं त्रिरुक्ते ॥ विपाः एवं अस्त्विधकारः ॥ कर्मांगतया विहित आसनग्रद्धिं भूमिकूर्मानंतपूजनं 🕍 🎇 दीपस्थापनं करिष्ये ॥ आसनायो जलादिना त्रिकोणं विलिख्य ॥ ऱ्हीं आधारशक्तिकमलासनाय नमः ॥ 🕺 🎼 सर्वेषचारार्थे गंथपुष्पं समर्पपामि इत्याधारशिवतसंप्रज्य।। तदुपर्यनुदिमताकरं क्रशकंवलाद्यन्यतममासनमास्तीर्य।। 🕌 पृथ्वीति मंत्रस्य मेरुपृष्ठऋषिः स्रुतलं छंदः क्रमेदिवता आसने विनियोगः ॥ ऱ्हीं पृथ्वी त्वया घतालोका देवि त्वं 🐉 विष्णुनापता ॥ त्वं च धारय मां देवि पवित्रं करु चासनम्॥ आधारशक्तिं संप्रार्थ्य ॥ हीं पुंढरीकाक्षाय नुमः ॥﴿﴾) श्विष्णुनापुता ॥ त्य च धारय मा दाव पावत्र करु चासनम् ॥ आधारशाश्व समाध्य ॥ ह्य पुढशकार्याय नमः ॥ ह्य इस्यासनं संप्रोक्ष्य ॥ तदुपरि प्राइमुख उदङ्मुखो बोपाविश्य ॥ ह्यं अनन्तासनाय नमः ॥ ह्यं क्र्सासनाय नमः ॥ ह्यं विमलासनाय नमः ॥ ह्यं विमलाय नम

ति प्रधान संकल्पः॥ अथ अंगसंकल्पः॥ तदंगभूतं दिग्रक्षणे । इति प्रधान संकल्पः॥ अथ अंगसंकल्पः॥ तदंगभूतं दिग्रक्षणे । क्रिक्तां क्रिक्तां विक्रिक्तं विक्रिक्त

त्रिकोणे तेलपूर्ण रक्तवार्तेयतं दीपपार्त्रं संस्थाप्य दीपंपञ्चाल्य संप्रुच्य प्रार्थपेत् ॥ भो दीप देव रूपस्त्य कर्मसाक्षी हाविष्ठकृत् ॥ याचतुकर्मसमाप्तिः स्थात् तावत्त्वं सुस्थिरो भव्र ॥ एवंस्थापितदीपमासमाप्तिरक्षेदिति ॥ अंथ दिग्रक्षणं ॥ वामहत्ते सर्पपान् गृहीला ॥ अपसर्पत् ते मृता ये मृता मृगिसंस्थिताः

हीं दूरविहानुषर्सिहासनाय नुमः ॥ हीं मध्येष्रमुखुखासनाय नमः ॥ इति नुखा ॥ शिखावंधनं ॥ हीं क्रियंकेशि विरूपक्षि मांसशोणितभक्षणे ॥ तिष्ठ देवि शिसावंधे चामुण्डे ह्यपराजिते ॥ अथदीपस्थांपनं ॥ दिवस्य दक्षिणतः भूमी गंधेन त्रिकोणं विलिख्य ॥ दीपाधारयंत्राय नमः ॥ गंधाक्षतेःसंयुज्य ॥ तत्र घृतपूर्ण थुक्रवर्तियुतं दीपपात्रंसस्थाप्य ॥ दीपंप्रज्वात्य नाम्ना पंचीपचौरः संपूज्य ॥ तद्वद्देवस्य वामे प्राग्वत

चनुर्विग्रतिमने ।। मध्येनुजुद्रनाः सर्वे निवन्त्रीयुः शिलांततः।। स्वस्यटस्पादिदोपेण विशिल्यवेश्वरो भवेत् ॥ कौओन्तदा पारयेतविष्णुप्रन्थियुतांशिलाम् ।। वसिष्ठः ॥ रौद्रिपित्रा सुरान्त्रतान् तथा वैवाभिचारकान् ॥ व्याहृत्या्डेभ्यः चात्मानमपुरपृष्ट्युऽस्यदा्चरेत् ॥ कात्यायनः ॥ पित्र्यमेत्रासुद्धवाणे आत्यालंभोयम् क्षणे ॥ अयोत्रायुससुरसम् प्रदासेऽजृवभाषणे ॥ मात्रीरमुपत्रस्वर्ते आरुष्टे कीयसंमवे ॥ निमित्तेल्येषुसर्वेषुकर्मकुर्वनप्रस्थवेत् ॥

आसन गीने रहेळ देवताओने तमस्तार करी उपरता संतर्थ पोटलीनी गाठ वाली दिवातुं स्थापन करतुं. तेमी कसी सपेत वे धीवेट करी कोडोबामां प्रीपृरि सीनी देवनी नमणी तरफ मुख्यो तथा कोडोबामा तेलग्नी लल दीवेट वे राजी देवनी डाभी बाजूए दीवी सुमले स्टीभी पणे ठेकाणे स्ता पूगरों कोंनेते योग्य नयो ने शास्त्रयी निम्द है, दोश नीय दिस्रोण यंत्र कारी दीयो महणायी पूजन करी प्रार्थना करवी. २ यजमाने पाताना हाता है।

🎼 करोम्पर्ह ॥ २ ॥ यदत्र संस्थितं भृतं स्थानमाश्रित्य सर्वतः॥स्थानं त्यक्त्वा तु यत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छत् ॥ ३ ॥ 🖹 🅯 मतानि राक्षसावापि येऽत्र तिष्ठंति केचन ॥ ते सर्वेऽप्यपगच्छंत शांतिकर्म करोम्यहम् ॥ ४ ॥ भूतपेतपिशाचाद्या 🕄 अपकार्गत सञ्चसाः ॥ ते सर्वे विरुपं यांतु ये मां हिंसन्ति हिंसकाः ॥ ५ ॥ मृत्युरोगभयकोषाः पतन्तु रिपुमस्तके ॥ 🖇 🖺 🚉 ति नाराचमुद्रया सर्वस्यां दिशि वा ईशान्याम् सर्पपान् विकीरयेते ॥ च्छोटिकया तालत्रयेणान्तस्क्षिगान्मता-🔯 🎇 तुस्सार्य वामपार्ष्णिना भूमो घातत्रयं कुर्यात ॥ उदकस्पर्शः ॥ तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय कल्पान्तदहनोपम ॥ भैरवाय 🖺

िनमस्तुभ्यमनुत्रां दानुमर्हसि ॥ स्ववामे *कलु*ङ्गस्थापनम् ॥ अक्षतपुञ्जोपरि ॥ तस्मिन्तिर्थान्यावाह्य ॥ गंगे च १ यममाने पोताना हाथवा सरस्य हेई जमयो हाय उपर हाकी भूतभेतादिकने हुर करे एवा राक्षनीय मधी साथ नहा, पछ सरसव पारे तरफ वेरी ढावी पन जण बसत कृष्मीपर परादी बढ़नो अगणाकाने स्पर्श करवो. ( उपरत्नवेछा अन्नोमा कहेले ठेकाणे अरवित्र यता कानने बखरपर्श क(वायी पवित्र थाय छे ) 🔯 पत्री भैरवने नमस्कार वरी पोतानी ढान्चे तरफ जारानो प्रस्त्वा तीर्पोदक मरी मुक्ती वे हाथ अदक्किं तेमा महानदीओ तथा तीर्पोत्त ध्थान सरख्र तथा 🕏

∥<sub>विशकर्ता</sub>रस्ते नत्र्यंत्र शिवाज्ञया ।≀ शा अपक्रामन्त्र भूनानि पिशाचाः सर्वतोदिशं ।। सर्वेपामविरोधेन शांतिकर्म- 🕏

अऊरा, धेमु, पवन, मत्स्य मुद्रा करी, आठ बखद स्मरण बर्द्र तथा पंचीएबार पूजन, प्रार्थना करी तेमायी जरु टावा हायमा छेर छाती साथे छाटव. फरी

्रें अफ़ुरा, धेनु, वयन, मत्स्य मुद्रा करी, आठ े अस उद्द पूमाना साहित्यने छाटी शुद्ध करतु. े

विश्की र विष्कु वेव गोदावरि सस्त्ती ॥ नर्मदे सिन्धुकावेरी जलेऽरिमन्संन्निर्धि कर ॥१॥ ब्रह्मण्डोधरतीर्थानि करेः स्पृष्टाः ्रीनि ते खे ॥ तेन सत्येन मे देव तीर्थ देहि दिवाकर॥ २॥ अंक्टरामुद्रया सर्वाणि तीर्थान्यावाहा ॥ वं इति भेजुमु

|वरुणाय० दीपं०वरुणाय० नैवेद्यं० पाशहस्तं च वरुणमम्भसां पतिमीश्वरम् ॥ आवाहवामि यद्गेरिमन्यूजेयं प्रतिगृह्य-ताम् ॥ वरुणाय नमः प्रार्थनापूर्वकं नमस्कारं समर्पयामि ॥ तरमादुदकादुदकं गृहीत्वा स्वात्मानं संप्रोध्य स्वशिरः संप्रोध्य पुन स्वस्पोदकं गृहीत्वा पूजाद्रव्याणि संप्रोध्य तां च भूमी संप्रोध्य ॥ अपवित्रःपवित्रो वा सर्वाः

वस्थांगतोपि वा ॥ यः स्मरेत पुण्डरीकालं सवाह्याभ्यन्तरः श्रुचिः ॥ अथापंचगव्यकरणम् ॥ कांस्यपात्रे ॥ ? बरुणायनयः ॥ इति ॥ नामोक्षितं स्पृत्रेत् किंचित् देवे गित्रे च कर्मणीति वानयात् ॥ सर्वपस्तूनि संपोक्ष्य ॥ प्रोक्षणात्माक् न

पाधमा (गायन छाण, मृतर, दूध, दही, वी एने प्वगव्य वहेंहें ) चास्त्र प्रमाणे नास्त्रा पाणी रेडी दर्भ फेरवी बास्रणपासे

प्रोक्षण करावर्डं.

n ७ ॥ 🏅 ह्या अस्तिकृत्य ॥ हुं इति कवचेनावराण्य्य ॥ मत्त्वसुद्रयाच्छाद्य मृहेन अष्टवास्मभिमंत्र्य ॥ हस्ते असताच

मृहीत्वा ॥ भो वरुण सुप्रतिष्ठितो भव ॥ वरुणाय नमः गंधं समर्पयामि ॥ वरुणाय० पुष्पं०वरुणाय० पूर्पं०

अग्रमग्रश्चरन्तीनामोपर्धानां रसं वने । तासां वृपभपत्नीनां पात्रे तिन्निक्षिपान्यहम्।।२।। श्वीरं ।। पयःपुण्यतंषं शेक्तं धे<u>न</u>भ्यश्च समुद्रवम् ॥ सर्वेशुद्धिकरं दिव्यं पात्रे तन्निक्षिपाम्यहम् ॥३॥ दिघ ॥ चंद्रक्रन्दसमं शीतं स्वच्छं वारिविव-🎼 🕍 जितम् ॥ किंचिदाम्ळस्साऌं च क्षिपत् पात्रे च सुंदरम् ॥ ४ ॥ घृतम् ॥ इदं घृतं महद्दिन्यं पवित्रं पापशोधनम् ॥ 🕺 ्रींसर्वपुष्टिकरं चैव पात्रे तन्निक्षिपाम्यहम् ॥५॥ क्रश् ॥ क्रशमूले स्थितो ब्रह्मा क्रशमध्ये जनार्दनः ॥ क्रशाबे शंकरो ै 🐩 देवस्तेन पुतं करोति च ॥६॥ हीं इति मंत्रेण इशोन वा यहकाष्ठेनालोंड्य ॥ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थांगतो-🎼 पि वा ।। यः स्मरेत उण्डरीकाक्षं सवाह्याभ्यंतरः श्राचेः ।। कर्मभूमिं यद्मसंभारांश्च भोक्षयेत् **।। गणप**ति-

गोमुत्रं ॥ गोर्मुत्रं च महद्दिव्यं पवित्रं पापशोधनम् ॥ आपदा हस्ते नित्यं पात्रे तिन्नक्षिपाम्यहं ॥१॥ गोमयम् ॥ 🔯

स्रोत् न द्यादीति वायुपुराणे ॥ १ गोमूनं नोमय सीरं द्वि सर्षिः इशोदकम्॥ गोमूनं कुण्णवर्णीयाः खेषायाधैष गोमयं ॥ वयश्च ताम्रयणांया र परताया मुप्ते द्वि ॥ कपिलाया पूर्व ग्राह्मं सर्व कार्पिक्वेव वा॥ मूत्रमैकपलं द्याद्युष्टार्धे तु गोमयं॥सीरं सङ्गण्डं द्याद्वि विचलमुच्यते ॥कृतमैकपल द्यात्यक्षमेकं कुषोदक ॥ इति पराक्ररीये ॥ वरुमधैष गोम्ये गोमये स्व्यास्त्रासिक्ववादः समुदिष्टस्तोम सीरं पृते राविः॥१आदौ विवायकः १

विकर्द्धडाङ्गरागं॥श्रीसिद्धिग्रद्धिसहितमहामणपतिं घ्यायामि ॥ ततःसुवर्णमयप्रतिमाः पात्रे संस्थाप्पै ॥ अगृन्युत्तारण

पूँजनम् ॥ इस्ते अक्षतान् गृहीत्वा ॥ सिंदूग्रभं त्रिनेत्रं पृथुक्मज्जनं पद्महर्सिर्द्रभानं दंतं पाशांख्रशेष्टां पृथुक्मविलसद्वीजपूर्गभिरामं ॥ बालेंदुचौतिमालिं करिपतिवदनं दानपूर्गार्द्रमंडं भोगीन्द्रेक्ट्रभूपं जयित गणपतिं

पूज्यशति तु कुळदेक्तेतिसंस्कारमपूरवादौ गृह्यपरिश्चिष्टवचनात् ॥ गणेत्रं पूजपेत् पूर्व निर्विद्यार्थ स्वक्तपेणीति परहारामकारिकोक्तेथ ॥ विद्रेत्रं च सवभ्यन्वॅतिचुदागणिकारत्वाच्च कार्यमेव ॥ १ ॥ वत्र सकळ्मंगलकपरिभादौ विप्तनदंयन्वंसं विनायकं प्रमयेत् ॥ इति तत्त्वसारसंहितायाम् ॥ सर्वकानसमृत्यरेगादी पृत्यो गणाविषः॥ इति भविष्यपुराणे ॥ कर्भारेभेषु सर्वत्र पुजनीयो गणापिवः॥विनायकः कर्मावेझसिष्यर्थे विनियोजितः॥

१ सुरुष्ठ मंगळ कर्षना आरंभमां वेहेळा विद्याता तारा करनार गणपतितुं पुनन करचुं अद्या विष्णु रुद्रादिए पण प्रपम गणपति, पुनन करेलूं छै-पूना-

२-पोताना द्वाचा स्थापां प्रांपातं वासण वह तेमां मूर्तिओ मूडी पंच गव्य रेढी तेना पर नलमी पारा मंत्री मणे त्यां सुधी करवी, पंज ते मूर्तितं

ना क्रममं वेहेरा गणपतितं च्यान करि अम्युतारण पुर्वत प्राणपतिचा करि आवाहन करित तथा आसन आपी पेताना शरीरे न्यास करना.

गणानामाधिपस्यं च ख्टेण बहाणस्तयेति वाद्यवस्ययः ॥

पात त्रावरणने आपी तेनी पाते क्षणाणतिक वंबीची खरावची ॥

पागिसंयोगजनितदोषपरिहारार्थं अन्युत्तारणपूर्वकं ब्राह्मणद्वारा प्राणप्रतिष्ठां करिष्ये ॥ मुर्ति प्रतेनाभ्यज्य 🖺 🖁 उपरि जलघारां कुर्यात ॥ अप्ति र्वेश्वानरो बन्हि वीतिहोत्रो धनंजयः ॥ अम्न्युत्तारणार्थाय 🛮 मूर्तिनां शुद्धिहेतवे ॥ 📳 । रक्तांभोधिस्यपोतोछसदरुणसरोजधिरुदाकराञ्जेः पाशं कोदंडिमश्चद्भवमथरुणमप्यंकुशं पंचवाणान् ॥ विभ्राणान् । 🏅 मुक्कपालं त्रिनयनविलसत्पीनवदो रुहाव्या 🛮 देवी बालार्कवर्णा भवडु सुलकरी प्राणशक्तिः परा नः ॥ इति मंत्रेण 🔆 ्रीअग्न्यत्तारणम् ॥ ततः प्राणप्रतिष्ठां क्रयीत् ॥ अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामंत्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋपयः ॥

िफ़रपज्ञः सामानि छंदांसि जगत्मृष्टिकारिणी प्राणशक्तिर्देवता ॥ आं बीजं ॥ हीं शक्तिःकों किलकं ॥ प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः ॥ मूर्तिषु हस्तं निधाय ॥ आं हीं क्रों यं रं छं वं शं पं सं हं ळं क्षं हंसः सोहं ॥ ुं आसां मूर्तीनां प्राणा इह प्राणाः ॥ पुनः आं हीं कों ये रं रूं वं शं पं सं हंळ क्षं हंसः सोहं ॥ आसां मूर्तीनां ्रीजीव इह स्थितः ॥ प्रनः आं हीं कों यं रं छं वं शं पं सं हं ळं क्षे हंसः सोहं ।। आसां मूर्तीनां सर्वेदियाणि 🙌 बाङ्गमनस्त्वक्चखःश्रोत्रजिह्या प्राण पाणि पाद पायुपस्थानि इहेवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु नमः ॥ गर्भा-

पूर्वकं प्राणपतिहा क्यांत् ॥ अद्येत्या० वासरे आसां मूर्तीनां अगप्रत्यम्संधिसमुत्यनं कट्टालिकादि टंकाद्यातः 🐉

श्रीसिद्धिञ्जिसहित् महागणपत्ये नमःगणपति आवाहयामि।।प्रतिष्ठामंज्ञः।।आगच्छ देवदेवेश गजवक्त्र गणाधिप।। 🐉

र---हाथ अडकाडी न्यास करवा, ते पण पहेलां डांबे औंगे पर्टी जनके स्वर्ध करवा.

नमस्तुम्यं मणाधिपतये नमः ॥ पुष्पासनं मया दत्तं विष्ठपुञ्जं निवास्य ॥ श्रीसिद्धिगुद्धिसहितमहागणपतये है नमः 🛭 आसनं स॰ ॥ अथ देहन्यासैः सुमुखाय नमः ॥ वामहस्ते ॥ गणाधिषाय नमः दक्षिणहस्ते ॥ उमा 🧏

मम पूर्जा गृहीत्वा च मंडले सुरियरो भव॥श्रीसिद्धिसुद्धिसहितमहागणपते सुप्रतिष्ठितो वरदो भव॥आसनं॥सुमुखाय

पाशांक्रशपरवर्षः ॥ २ ॥ आवाहमामि पूजार्थं स्क्षार्थं च मम ऋतो॥इहागत्य गृहाण त्वं पूजां ऋतुं च स्क्ष मे ॥३॥ 🟅

ें पुत्राय नमः ॥ वामपादे ॥ गजाननाय नमः ॥ दक्षिणपादे ॥ रुंबोदसय नमः ॥ वामजानौ ॥ हःस्त्नवे नमः 🗟 ॥ ९ ॥

॥ ९॥ । सिद्धिबुद्धिपते त्रयक्ष लक्षलाभ पितः प्रमो ॥ १ ॥ नागास्य नागहार त्वं गणराज चतुर्भुज॥भूपितः स्वायुधे दिंब्यैः

ु ताम् ॥ इति त्राणप्रतिष्ठा ॥ पुनः अक्षतान् गृहीत्वा ॥ आवाहनं ॥ हेहे रंग त्वमेहोहि अंनिकात्र्यंवकात्मज ॥

दक्षिणजानी ॥ गजकर्णाय नमः वामकट्यां ।। वक्रतुंडाय नमः दक्षिणकट्यां ॥ नाभी ॥ एकदंताय नमः हृदये ॥ विकटाय नमः वामबाहुमूले ॥ विनायकायनमः क्षिलाय नमः चक्त्रे ॥ गजदंताय नमः दंतपंक्षी ॥ विष्ठराजाय नमः वामनेत्रे ॥ वटवे नमः दक्षिण ¶हस्ते दुर्वांक्रसन् गृहीत्वा ॥ देवं स्पृष्ट्वा ॥ देवन्यासं क्रयात् ॥ **द्वमुखाय नमः देव**स्य वामहस्ते ॥ गणाधि∹िं

? देवो भून्वा देवं यमेत् ॥

बताओं स्वधाने रही ते ते कार्य करे छे.

१-पोताना शरीरना न्यात थया पत्री दुर्वी छर गणपतिने स्पर्श करी देव न्यास करवा. न्यास करवाधी शरीरज्ञादि तथा अंगना प्रचलित व्यवेला दे-

दक्षिणवाहुमूले

🏿 पाय नमः ॥ दक्षिणहस्ते ॥ उमापुत्राय नमः ॥ वामपादे ॥ गजाननाय नमः ॥ दक्षिणपादे ॥ रुंबोदराय नमः ॥ 🔯

्रवामजानी ।। इस्स्नुनवे नमः ॥ दक्षिणजानी ॥ गजकर्णाय नमः ॥ वामकटयां ॥ वक्रतुंडाय नमः ॥ नाभी ॥ 🗗 ्र्भीपूकदंताय नमः ॥ हृदये ॥ विकटाय नमः ॥ वामनाहुमुले ॥ विनायकाय नमः ॥ दक्षिणवाहुमुले ॥ कपिलाय 🗓

ूँ नमः ॥ वक्त्रे ॥ गर्जदंताय नमः ॥ दंतपंक्त्रे ॥ विष्तराज्ञाय नमः ॥ वामनेत्रे ॥ वटवे नमः ॥ दक्षिणनेत्रे ॥ ुं चुरात्रगण्याय नमः ॥ ललाटे ॥ हेरंबायनमः ॥ शिरसि ॥ श्रीसिद्धिजुद्धिसहितमहाग० देवन्यासं स० ॥ उमापु 🕏 ॥ २०॥ 🖟 त्राय देवाय सिद्धिवंदायते नमः ॥ पाद्यं गृहाण देवेश विष्नव्युहं निवास्य ॥ श्रीसिद्धिगुद्धिसहित महा. 💠 ग्रं॰ पादयोः पाद्यं स॰ ॥ ताम्रपात्रे स्थितं तीयं गंधपुष्पफलान्वितम् ॥ सहिरण्यं ददाम्यर्थं ग्रहाण परमेश्वर् ॥ 🕉 श्रीसिद्धिबुद्धिसहितमहाग॰ इस्तयोः अर्घ्यं स॰ ॥ सर्वतीर्थसमाबुक्तं खुगंघि निर्मलं जलं ॥ आचम्यार्थं मया दत्तं 🏃 गृहाण गणनायक ॥ श्रीसिद्धियुद्धिसहित महाग० अर्घ्याते आचमर्न स० ॥ अथ पंचामृतस्नानं ॥ तत्रादी वयःस्तानं ॥ कामधेनुससुदृतं सर्वेषां जीवनं परं ॥ पायनं वज्ञहेनुश्च पयःस्तानार्थमर्पितम् ॥ श्रीसिद्धिद्धिद्धिस-हित महाग॰ पयःस्तानं स॰ ॥ पयःस्तानंति वरुणस्तानं वरुणस्तानाति आचमनीयं० सकल प्रजायें अक्षतान्।। सर्वोपचाराचें नमस्कासन् स॰ ॥ दिधस्नानं ॥ पयसस्तु ससुदूतं मधुगुम्छं शशिप्रमं ॥ दध्या नीतं मया देव 💲

१---पत्री राजपतिले मंत्रीभी पान, अर्च, आसमेरीय, पचामृत करी शुद्ध मेळवडे स्तान करावी बख, जनेह, चदन, ठळु, नीखा चडाकी आग पूनन

करध्-

💲 वरुणस्तानं ॰वरुणस्तानान्ते आचमनीयं ॰सकरुष्रजीर्थे अक्षताच ॰सर्वोपचारार्थे नमस्कारान् स॰ ॥मञ्जातहृषुष्पसमु- 🕄 🙎 दूर्तं छस्बाद्य मधुरं मधु ॥ तेजःपुष्टिकरं दिन्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥श्रीसिद्धिबुद्धिसहितमहाग०मधुस्नानं स०॥ 🎖 पिश्वस्तानांते वरुणस्नानं॰ वरुणस्नानांते आचमनीयं स० सकछप्रजार्थे अक्षतान्॰ सर्वोपचारार्थे नमस्कारं स० 🎼 🔋 🛮 शर्करा 🕦 इञ्चसारसमुद्धता शर्करापुष्टिकारिका 🛭 मळापहारिका दिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्मताम् ॥ श्रीसिद्धिञ्जेद्धः 👸 सहितमहाग॰ शर्करास्नानं स॰।। शर्करास्नानांते वरुणस्नानं॰ वरुणस्नानान्ते आचमनीयं॰ सकलपूजाये अक्षताच सर्वोपचासर्थे नमस्कारं स०॥ शुद्धोदकं ॥ कावेरी नर्मदा वेणी छंगभद्रा सस्त्वती ॥ गंगा च यमुना तोयं 🚏 मया स्तानार्थमर्पितम् 🔃 श्रीसिद्धिचुद्धिसहितमहाग० शुद्धोदकस्तानं स० ॥ शुद्धोदकस्तानांते आचमनीयं 🙌 है स॰ ॥ वर्च ॥ पीतांवरं सोत्तरीयं खदीवं खमनोहरं ॥ देवदेव गृहाणेदं लंबोदर नमोस्तु ते ॥ श्रीसिद्धिखिसहितः

स्तानार्थं प्रतिगृह्यतां ।। श्रीसिद्धिञ्जिद्धसिहत महाग॰ दिधस्तानं स॰ ।। दिधस्तानांते वरुणस्मानं स॰ वरुण है स्तानान्ते आचमनीयं स॰सकलप्रजार्थे अक्षताच्॰सर्वेषिचारार्थे नमस्कासन् स॰॥घृताः। नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसंतोष-कारकं ॥ पूर्तं छभ्यं प्रदास्यापि स्तानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥श्रीसिद्धिञ्जिदसिहतमहाग॰ प्रतस्तानं स॰पूतस्तानान्ते विश्वीः । महाग् वस्त्रं स्था वस्त्रांते आचमनीयं स्था । यज्ञोपवीतं ॥ राजतं त्रहास्त्रतं च कांचनस्योत्तरीयते ॥ गृहाण् के प्रथ स्थानिक वस्त्रं स्था वस्त्रांते आचमनीयं स्था देवार्षेत्र स्थानिक स्थानिक

॥ १२ ॥ अवदन्।। धुगंधं चंदनं दिव्यं केशसगरुसंयुतं ॥ विलेपनं मया भनत्या मृहाण परमेश्वर ॥श्रीसिद्धियुद्धिसहितमहाग० ौंगंधं स॰ ॥ कुंकुमं ॥ सर्वसौभाग्यजननं सुराणां प्रीतिवर्धनं ॥ पवित्रं मंगलं देव कुंकुमं प्रतिगृह्यताम् ॥ श्रीसिद्धिः ्रीबुद्धिसहितमहाग् कुंकुमं स० अक्षतान् ॥ अक्षताश्च धुरश्रेष्ठाः कुंकुमान्ताः मुशोभिताः ॥ मया निवेदिता भक्त्या 👶 ्री गृहाण परमेश्वर ॥ श्रीसिद्धियुद्धिसहितमहाग० अक्षतान् स० ॥ पुष्पं ॥ माल्यादीनि सुगंधीनि मालत्यादीनि वे 🕏 अभो ।। मया इतानि पुष्पाणि पूजार्थ प्रतिगृहाताम् ।। श्रीसिद्धिचुद्धिसहितमहाग० पुष्पाणि स० ।।दूर्वा॥ दूर्वायुरमं गृहीता तु गंघपुष्पादतेर्थुतम्॥ प्रजये सिद्धिविवेशं त्रत्येकं सर्वनामभिः॥श्रीसिद्धिद्यद्विसहितमहाग॰दूर्वीकुरान्स०॥ 🧗 अयांगपूजा ॥ वामहस्ते गंधपात्रं गृहीत्वा ॥ दक्षिणेन संघूज्य ॥ गणेशाय नमः ॥ पादी पूजयामि ॥ गीरी थागपूजा ॥ वासहरत वावपात्र रहारता । परकार राज्य । परकार प्रकार प्रकार । प्रकार होते । प्रवास होगम। १ १ १ १ प्रकार वाज हाथमा वदन कुंकुमनु पात्र छह प्रवास भागमी पर चदन कुंकुम चडावयां, तेने अंगपूना कहे के पात्र डामा हाथमा

े जनगान जन्म स्थम करूम उद्यमा कर महि आवरण पृमा करवी ॥

🏥 ५०॥ मणाधिपाय० सर्वांनं प्र०॥ प्रवें पीतवर्णाय० मणाधिपाय० मणाधिपं प्र०॥ दक्षिणे गौरवर्णाय मणे-🕍 🏥 शाय २ मणेशं पुरु ॥ पश्चिमे रक्तवर्णायर्थ गणनायकायर्थ गणनायकं पुरु ॥ उत्तरे नीलवर्णायव गणकीडायर्थ 🕄 🎒 गणकीडं पु॰ ॥ अथावरणपूजा ॥ वामइस्ते अक्षतान् गृहीत्वा ॥ सुमुखाय नमः ॥ एकदंताय नमः ॥ कपि-📳 🕍ळाय नमः ॥ गजकर्णकाय नमः ॥ स्त्रीदसय नमः ॥ विकटाय नमः ॥ विञ्रनाशाय नमः ॥ विनायकाय 📳 नमः ॥ भूप्रकेतवे नमः ॥ गुणाध्यक्षाय नमः ॥ भालचंद्राय नमः ॥ गजाननाय नमः ॥ हस्ते पुष्पं गृहीत्वा ॥ 🔡

सिताप नमः ॥ स्तनो प्रजयापि ॥ गणनायकाय नमः ॥ हृदयं प्र० ॥ स्थूलकंठाय० कंठं प्र० ॥ स्कंदायजाय० 🕏 |स्कंघी प्र० || पाशहस्ताय॰ हस्तान प्र० || गजाननाय॰ मुखं प्र० || विघहर्त्रे० नेत्रे प्र० || सर्वेश्वराय० शिरः 🔯

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सल ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं समस्तावरणार्चनं ॥ समस्तावरणार्चन-

१ अपरना मंत्रथी सिंदर, अनील, गुळाल, हळद, पढाववा.

🎖 चिंतो देव गृहाण गणनायक ॥ श्रीसिद्धिबुद्धिसहितमहाग० सिंदूसभरणं स० ॥ सौभाग्यद्रज्यं ॥ सुगंध्योपधि- 🕏

देवताभ्यो नगः ॥ सर्वोपचारार्थे गंधं पुष्पं स॰ ॥ सीदूरं ॥ सिंदूरं कल्पितं देव सिंदूरं नागसंभवम् ॥ सिंदूरेणा- 💱

श्रीसिद्धिशुद्धिसहितमहाग० पूरामात्रापयामि ॥ दीपं ॥ भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने ॥ त्राहि मां 🕏 िनरकात् चोराद्दीपोज्योतिर्नमोस्तुते ॥ श्रीसिद्धिङ्खिसहितमहाग० दीपं समर्पयामि ॥नैवेद्यं ॥ दृतं सलङ्क्षकं चैव 🦫

0	चूर्णं च नानापत्मिळानि च ॥ नानासुगंवतेळानि अतःशांतिं प्रयच्छ मे॥ श्रीतिष्टिचुद्धिसहितमहाग० सोभाग्य- द्रव्याणि स० ॥ भूपं ॥ वेनस्पतिरसोद्भतो गंधाख्यो गंधसुत्तमः ॥ आध्रेयः सर्वदेवानां भूपोऽयं प्रतिगृह्यतां ॥
,	चिष्णं च नानापासाळानं च ॥ नानाचुनवर्तळानं जवानाताः ॥ व्यानेयः चवेदेवानां घणेऽयं प्रतिग्रह्मतां ॥
ŏ	हुन्वीणि स् ।। धूर्प ।। वनस्पातस्साङ्गता गवाध्या गवखरानः ।। जाननः राज्यानः सार्वा

|मोदकान् घृतपाचितान् ॥ नैनेद्यं मृद्यतां देव नमस्ते विन्ननाशन ॥ श्रीसिद्धिद्धिद्विसहितमहाग॰ नैवेद्यं स॰ ॥ निवेद्यं जलेन संप्रोह्य घेन्वा अमृतीकृत्य प्रासमुद्रां प्रदर्श्य ॥ यथा ॥ प्राणाय नमः ॥ अयानाय नमः ॥ उदानाय नमः ॥ ज्यानाय नमः ॥ समानाय नमः ॥ नैनेद्यति आचमनं स० ॥ विनायक नमस्तुभ्यं त्रिदरीरभिनंदितं ॥ गंघोदकेन देवेश सद्य आचमनं कुरु ॥ श्रीसिष्टिबुद्धिसहिमहाग० नैवेद्यान्ते आचमनं स० ॥ प्रवीपोशनं ॥ १ उपरक्त भंत्रथी पूप, दीप, नैकेस मुकी तेनापर पाणी छाडी धेनुमुद्रा कती डायो हाथ आंधि अडकाडी नमणा हाध्यती पांच आंधरी-ओवडे शास मुद्रा करी जमाडवा, पढी जागार गठ मुकी बंदन चडांगी पानसेपासी तथा दक्षिणा मूकी नमस्त्रार करवा,मरनस्त्र प्रथमां घूप रुखोंछे, तेमां

डेवानी वस्तु अगर, चंदन, मीप, शिल्हाट, कस्तुरी, ए पांच चीत्री समान छड़ भूप करे, तेने अमृत पृष कहेड़े.

```
श्रीसिद्धिग्रद्धिसहितमहाग॰ औरात्रिकं स॰ ॥ जलेन प्रदक्षिणं ॥ पुष्पेण देववंदनं ॥ स्वात्माभिवंदनं ॥ हस्त-
अक्षालनं ॥ त्रदक्षिणा ॥ हस्ते प्रष्पं गृहीत्वा ॥ यानि कानि च पापानि इह जन्मकृतानि च ॥ तानि
्री सर्वाणि नर्स्यति प्रदक्षिण पदे पदे ॥ अनेन मंत्रेण तिस्रः प्रदक्षिणाः कार्याः॥ श्रीसिद्धिद्वुद्धिसहितमहाग् ० प्रदक्षिणां 👸
🕯 सः।।हस्ते प्रष्पाक्षतान् गृहीत्वा ॥ प्रष्पांजिं ॥ विष्ठेश्वराय वरदाय सर्रापया संयोदस्य सकलाय जगद्धिताय ॥
                  ? चंदनेन प्रस्तासिके चान्लिपयतीति गदाधरः ॥ सर्वश्वरीरोहर्तनं कार्यभिति हस्हिरः ॥
                  २ एका चंडी रवे: सप्त तिस्रो दचादिनायके ॥ चत्तारः केशवे दचात श्रिवस्यार्थअदक्षिणा ॥
       ्रिक पक्ष पन तस्त्र द्याद्वनायक ॥ चत्वारः कञ्च द्यात् । इत्तरसाधेभराहेला ॥
१-भार्ति राची ते सेळ उत्तरसाम नयी, तथावि छोको चोला फुछ छह करेळे ते सशाख नयी, छना इंड्या होय तो दीवेट अथवा कर्युची करती ॥
     ाठी प्रप्प छ। गणपविनी जण प्रदक्षिणा करकी
```

प्रेम प्रियं पानीयं॰ ।। उत्तरापोशनं॰ ।। मुलप्रक्षालनार्थं जलं स॰।। कैरोद्रर्तनार्थं गंधं स॰ ।। तांब्लं गृह्यतां देव गृहाण असुजित ॥ अनाथनाथ सर्वन्न मामुद्धर महेश्वर।। श्रीसिद्धिबुद्धिसहितमहाग॰ फलतांबूलं स॰।। दक्षिणा।। हिरण्य-

र्भ गर्भगर्भस्यं हेमबीजं विभावसोः ॥ अनंतपुण्यफलदमतः शांतिं प्रयच्छ मे ॥ श्रीसिद्धिबुद्धिसहितमहाग० दक्षिणां ॥ स०॥ आसन्निकं ॥ चंद्रादिस्यो च भरणी विद्युदमिस्तयेव च ॥ त्वमेव सर्वज्योतिंपी आर्त्रिक्यं प्रतिगृह्यताम् ॥ न्नहारूपाय विष्णुरूपाय ते नमः ॥ नमस्ते स्द्ररूपाय करिरूपाय ते नमः ॥ ३ ॥ विश्वरूपस्यरूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणे ॥ भवतिषयाय देवाय नमस्तुभ्यं विनायक ॥ ४ ॥ त्वां विप्रशञ्जदलनेति च सुंदरेति भवतिष्रयेति सुसदेति फलप्रदेति ॥ विद्यापदेत्यघहोति च ये स्तुवंति तेभ्यो गणेश वस्दो भव नित्यमेव ॥ ५॥ लंबोदर 🕏 नमस्तुम्यं सततं मोदिकप्रिय ॥ निर्विध्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सिद्धिद् ॥ ६॥ श्रीसिद्धिबुद्धिसहितमहाग०

स्तिसिंहासनस्थम् ॥ देाभिः पाशांक्रशेष्टां मयधृतिविशदं चेद्रमीिर्ल त्रिनेत्रं प्यायेच्छांत्यर्थमीशं गणपतिममलं श्री-

समेतं प्रसन्नं ॥ श्रीसिद्धिद्वद्धिसहितमहाग० प्रार्थनां स० ॥ विशेषार्घः ॥ सर्जेलपुष्पाक्षतहिरण्यसहितनालिकेरं

 पूर्ण चो चेंहुल द्यात्मत्र चापोमुर्त तथा ॥ फलं च सम्मुर्त द्यायघोत्पत्रं समप्पत् ॥ अर्थ- १ गणपतिनी प्रार्थना वरी नाल्पिर जेमन उन्यु होय तेमन शाला अर्थ आपनी. पत्नी ययाशिनत करेली पूनानो संकल्प करी, गणपितने अर्पण

यरी, ' अभीष्ट आपो ' एम कही नमस्कार करवा.

पुष्पांजर्छि स॰ ॥ प्रार्थना ॥ श्वेतांगं श्वेतवस्त्रं सितक्कसुमगणैः प्रजितं स्वेतगंधैः क्षीराञ्घो रत्नदीपैः सुरतस्रविमर्छे-

सर्वेश्वराय सुखदाय सुरेश्वराय ॥ विद्याधराय विकटाय च वामनाय भक्तप्रसन्नवस्दाय नमोनमस्ते ॥ २ ॥ नमस्ते |

नागाननाय श्चतिपद्मविभुपिताय गौरीस्रताय गणनाथ नमो नमस्ते ॥१॥ भक्तार्तिनाशनपराय गणेश्वराय

🕍 भूपदीपृष्ठतानि च॥ रक्ताच्छादननैवेद्यं तांबुलादिपत्लानि च॥ सर्वाष्यस्रतस्रपेण नमःसंपद्यतां तव॥ गणेशप्रजनं 🕍 🕍 कर्म यञ्चनमधिकं कृतं।। तेने सर्वेण सर्वात्मा वस्दोऽस्त्र सदा ममा।अनया प्रजया श्रीसिद्धिञ्चद्धिसहितमहागणपतिः 🕺 ीं सांगः सपरिवारः प्रीयतां ॥ इति श्री जयानंदारमञ मूलशंकस्शर्मणा विश्वितायां विवाहकौमुद्यां गणपतिपूजनम्॥ 🐉 अय कुरुरक्क तथा मंडपमूहर्तनो ब्रिपि:-द्याना चार दिवस अथवा पांच दिवस पहेलां गणपति बेसाहवा, जैने ( कुरुरक्की ) अथवा गणेश कहेले. तेमां 餐 ्री र्जाहेतं साहित्य देवचा पत्रमां उल्याप्रमाणे वैयार करी घरमां परसाळे अथरा सारे हेकाणे साफ कर्रा सीमाग्यवती स्त्री पासे मटोई छाण मिश्रित करी छीपाये। ्री ताथीओ पुरावती, तथा एक पाटले पश्चिममां मृतको, तेनीसामं पूर्वमा बागठ मूक्त्वो. तेनापर राती ककटो पापरी होर १। सवा, वटलुं मढळ काटी पानपर गणप्रतिनी प्रतीमा कादी घडार मूळी तथा तेनारर सीपारी ने नादु बांधी गणपति तरीके मूलतुं. पठी परणनार छोकरी अथवा छोकरी ने होय तेने 🖧 पूर्व तरफ मेहं करी पाटलापर बेसाडवा तथा गणपतिपुना ८ पानाधा छई समाप्ति छगीनी कराबी तेना संकरूप ( अक्टाबादि मम करिप्यवाणविवाहकर्माण

्री गुहीत्वा ॥ रक्ष रक्ष गणाञ्चक्ष रक्ष त्रेरहोक्यरक्षक ॥ भक्तानामभयं कर्ताः त्राता भव भवार्णवात ॥१॥ द्वेमातुरकपा-ौं∯सिंधो पाण्मातुरत्रज प्रभो ॥ वस्द त्वं वरं देहि वांछितं वांछितार्थद ॥ २ ॥ अनेन फलदानेन फलदोऽस्त्र सदरा 🕌 ुँ मम ॥ श्रीसिद्धिनुद्धिसहितमहाग् विशेषार्घं स० ॥ इस्ते जलमादाय ॥ यथाशक्तुपन्तिश्र यन्मया प्रजनं िं∥कृतं ।! त्रारुधकर्मसिष्पर्थं देवाय कल्पयामि तत् ।। सांगाय श्रीगणेशाय परिवासन्त्रिताय च ।। रक्तचंदनपुष्पाणि

॥ १४॥ 🕴 मात्त) मंत्र भणता. सीभाव्यवतीए गो, गुटणे, हाथे, गांडे कंतु (परणनारने ) पील्यु, पठी सात पान,७ सीपारी,७ पैसा, ६०१, नाळाएर १ मूझी हार

सम्मत है. ) मारे सूत्र माणसीए आ बात उपर बचारे श्यान आपी, अपमें न भाग तेम करतु क्षतेव्य छे. पट्टी परणनारे पीस माणपीत पासे मूकी गल्य 🕏 मोहोडु करी, गुरु बुद्धेने की लागतुं. ए प्रधाणे कुरुवदीनो विनि यया पत्री, पाटवा मृहूर्त करावयु, तेमा पाताना बारणा सामु छडी साधीओ करावर, ारण जाए कर रहे। पर पर अपने के नाम रहे हैं ति पर कार कराती पायरी घड़ देतर है। इस वह उपर प्रमाणे गणपतितुं मंदछ कारवुं. पछी पारख के पूर्णीनेमूले मूर्णी तेना सामुं बानट एक मूर्ता तेनापर वाव कराती पायरी घड़ देतर है। इस वह उपर प्रमाणे गणपतितुं मंदछ कारवुं. पछी सप्तन्तिक यनपानने बेसाडी पाना द्यी गणपति पूनन १ अपाना सुनी करावर्तु, तेमा संकल्प, ( अधेस्थानि मण स्तर्य ' जेलती होय तो 'छोकसी होय तो मण

गीळ पाणा सावा ( फेटलीक न्यातोमा वही, पापडवाला हाप बोता नथी, तथा वही पापडमी टीट पाणीची भावें तथा गणपतिने नैवेद्यमां तेना ट्री बानदरर कराएका चार दरीजा भरी मूरेके से बदन प्राकृती किरद है. नेनाशी वाताने बया ब्राह्मणीने धर्मज्ञष्ट धर नर्र शाह सायके, नेपी करेख 🙎

क्योंते कळ योग्य न मळतां अनिष्ट फळ मळे). " यतो पर्मनतो जयः "॥ कार्यात्मे अनृताधर्मस्य स्याग एवं विगेरे प्रमाणीयी,करपुन नहि ते पास्त

देशीन रित वभाग चार सीमाध्यनती स्त्रीर एक टेकाणे नेती वडा ते ( मोटा, वा मोखाने छोट ) तथा पापडनो छोट होय तो तेमा कंक, इछद, भात माली दूध रेडी बादबो. पर्छ मेरे सफेत क्लडापर साथाओं बादी पाटलपर पार्थी "मूर्तीया" धाणा, ऑरु, संपोरी, इल्ट्स, फेक्स जैने मूर्रतीया कहेंगे ते मूर्ज वडी मुकायर्च तथा पायलमा १७ करी तेमार कंकुनी भाषीओ कारी मूर्जा, वडी, पायड, मूर्ती स्थापजी तेनापर कंकु मात वधानी हाथ घोइने

पहेरावी चार वन्त कार्च मात ववावत् ( जयाय अस्त, विजयाय अस्त, मुखाय अस्त, लाभाय अस्त ) ए प्रमाणे वभावी बीजी त्रण सोमान्यवर्ती पासे पण

मूताया कारेप्यमाण विवाहकर्मीण भडक्मानुकारभारन कारिप्ये तद्गामृत हिमक्षणं, कछशार्चन,गणपतिपूजन कारिप्ये) करते। गणपतिपूजन थया प्रजी सकाति विवाह क्रियाना कारिप्ये। करते। गणपतिपूजन थया प्रजी सकाति विवाह क्रियाना क् है निर्मात ए प्रमाणे समाति जोहने करतु. मंदरमातुकानु स्थापन यया पत्री मांडवे नधावनो तेमा स्थन उत्तो र र हाथनो शास्त्रप्रमाणे छेवानो छे पण ते नथी यत 🔀 📝 बारे स्थित प्रमाणे स्तम समर्थनो ज्यका योग्य बुक्षनो छेड् तेने आवान पातर भीडळ नाडु बायनु,नराजने नाडु,पातरु बायनु यनमानयासे पाना १५प्रमाणे 🔀 ? भेटपमातकात एवन नरावी चार पत्यवर बोलावी तेने चालो करी नाडू वाधी नराज पकडावी खाडी खोटाववी. पत्री गोरे यममान पासे तेमा पाणी, कंछ. 🔭 भात, फूल, अकर, अवील, गुलाल, दहि, दूध, वैदो, सोवारी लगीनी पूजा कराववी पत्री चार पत्थ वर तथा यज्ञमान बळी, स्तथ उपादी खालामा सकी 🔀 े परीहुं नाताबरु ॥ पर्ता " मागस्यसंभाय नम '' मजनहे पनीपचारपूनन करानी, सपत्नीक यनमानने मणपतिने नयस्कार करानी आक्षणपूनन करानतु. | प्री पमवाने गत्यु चाँदु वरी पन्थवरदे गोळघाणा तथा नाल्लिर आपवा ( नाळकिरने बदले वे पैसा आपेडे ) गोरे परणनारने बेसाओं पर्वापनार 🖟 रें गणरातिपूतन करावी पेत भरावती. तेमा कार सीभाग्यक्ती आवी चाले करी हळदमा तेळ, बानी वीगेरे नाली पाणी रेडी ते हळद तथा कंळ, पग, गुटण े हाउ, बाल, बिगेरे स्थाने अरवाडना 11 पोसमा पान ७ सोपारि ७ पैसा ७ २० १, एक गाळियेर मुकी पुष्पनी हार पेरानी चार जलत चारे लिओए हैं व्याची छेत्रु ( स्टेटर्गक ज्ञातमा कुरवदीमा कीवेळा पान सोपारि २० पैस: तथा नाळिचेर के पीसमा मूकेळा तेन माडवा मूहनेनी पीसमा मूकेळ तेन माडवा मूहनेनी पीसमा तिरुद्ध छे. देवद्रव्य, ब्राक्षण विरोतेना द्रष्य हेवाथी पायश्चिति यवायछे अनि ते कुरुवर्धानी भागस्त्रणोस वरणवा नतीवलते हह नवाथी सकळ वार्य थावजे हैं माटे माइवा मुहूर्तमा हेवी नहिं तथा बुरुवर्धीनी पोस वस्त्रह्याने आचारणी हेवी चडे तेनु प्रतिनिधि द्रव्य ब्राह्मणने आपचु ) पूजा गणपीद पासे पोस मूजावी पोक्रपाणा आणी मुरुव्दतने नमस्कार कराववा ॥ हति कुर्वर्डामरूपमूर्क्शिय समास ॥ 

व सरहाया दाही नाडु बाबनु, पत्री यनपानने वरनीसहर्वतमान पाटणपर आसन पायरी बैसाडबा पत्री करूनो चाने करी आयमन विवेर करावी गणवित पूजन करावनु, पटी मानूका स्पापनमा मत्रीयी गोर्खादि चौद मानुका तथा एक नेना अगनः गणवानी मळी पैदान स्पापन करावनु ते उपर पोला क्यानना. दरेक वार्यमा of applicant महर्वामान वार्य करन् पढ़ी नादिखाद करनु ज्या मातृकास्पापन नवी, स्या नादि श्राद्धनी नरुर नवी जे माणप मातृकास्पापन पगर नादिशाद करे 👸 हो तेना शिवरी रोवायमान थर नायजे. पहेळापी गणवादि, ने छेळ्छे पुळदेशता एवी गीर्यादि मातृशने देवमातृका बहेंछे तथा झाक्ष्यादि सात मात्रिकाने पद्यन्य 🕹 मातृका कहेंद्रे तेतु, मीर्यादिक जमणी तरफ सात भवती वर्गती करी सीमारी गोटमी तेतु स्थापन पूमन करातु (केटलीक टैकाने पीवाना घरमा सारपाटको कडको सवागन ठावी औरीणाइन्द्रेत करी तेनायर साथीओ कहरी गोजन मानेजे हे घरमा होय तो करा अडती मुकी पूजा करावयी ए आचार 🕏 पठी भीत पर काटेला 🕏 जाला तात पहेंकी हारमा है तेना अर बीनी धारा करनी. मोळ बनमा चीला पर चोडी तेपर रूपानाणु चोडी तेनु पूनन कराननु. ए प्रमाणे मात्रिकास्थापन थयापत्री अधुष्यकी बृद्धि थवासात आयुष्य मननो पाठ करावके. ते ननीना देवताना स्वरूपयी आयुष्यकी बृद्धि यापत्रे. मन भणनार बाह्मणने टाह्मणा 🗘 आपी ' नादिशादा' करने हेमा वैश्वदेवनी नहर है पम है समये बेन नीह भाटे सुज बालागने थी रुपीओ ने भार, चोला दोर है। अपना, हैबे सक्करनीक नादि- 🕹 श्राद्वपा अर्थ अवाहन अग्नीक्रण विद्यान विकिर असम्बदान लग्ना प्रश्न एटअनो स्थाम करवो. नेमा पिता पितामह विगेरे पित्रोर्नु नाम तथा तल तथा जामहाथमा जनेह किपी बाह करतु नहि, हवे जत, यह जम श्राद, मृहसातिक, सीमत, नामकरण, मुंदन, जातकर्म, होम विमेरे कार्यभा जाहि-श्राद कर्योप श सतक विगरे आवे तो बाच कर्य तेमा पितृ पितामह अस्तिमह सरम्नीक तथा मातामह, प्रमातामह युद्धप्रमातामह, सपत्नीक मद्धी, उना सोपारी ने तथा विश्वेदेवात एक मळी त्रण मुक्तवाना के केररीक टैकाण गणवित्त पण एक सोपारी मूकी नारीश्राद्ध वरेके तेमां आवमनीने दरीई वीटाळी नाडु बाधी 🔆 प्रभाजापा पाणी मरी तरमाणमा काचा मातनी जण दगही करी उच्चराभि जण सीक्षरी गोठनी यथीनत नादीश्राद्ध करी झासणपुणन करी स्पापीत देवताओंने 🔯 नमरकार करी गळ्यु मोर्डु करी वोताना वडीजनेको लागर्त, एन्छु वरमाछ कार्य हरी गृहशातिक करना बेसर ॥इति गणवातपूरतादि नारीधाद्धान्त कर्व रम् ॥ 🕉

🎇 एक बुलवनेत्रे खेताम्बरे प्रोज्वलशुलहस्ते ॥ नागेन्द्रकन्ये भुवनेश्वरि खं भूजां ब्रह्मीवुं मम देवि गोरि ॥ 🧗 🎼 मोरि इहागच्छ इह तिष्ठ गौंचें॰ गौरिमाबाह्यामि स्था॰ ॥ १ ॥ पद्मां ॥ पृह्मोहि पद्मे शशिखल्यवस्त्रे पङ्केरुहामे 👸 \mid प्रमी काध्मपरीते रक्तरस्त्रं नसार्व तदपरि पंषदवासत्युद्धान् कुर्मात् ॥ तेतु प्रमीकलानि निषाय ॥ तदुपरि गणेशेनायिकाथनुर्देश मानुसाःस्था- 🕃 🖧 वृत्तीयाः ॥ तत्रार्व क्रयः ॥ गीरी पत्रा सबी मेथा सावित्री विजया ज्या ॥ देवसेना स्वर्ण स्वाहा मातरी खेळावातरः ॥ हृष्टि-प्रष्टिस्या तृष्टिस-🕰 सनः ऊळ्टेक्ता।।ननेक्षनाभिक्तदेता रुढी प्रस्थाश्चर्द्ध ॥ याची माहेश्वरी चैव कीमरी वैष्णवी तथा ।। वाराही च तथेन्द्राणी चामुण्डा सप्त मा 🧗

अथ गोर्यादिमातृणां स्थापनं ॥ इस्ते असतान् गृहीत्वा ॥ कोद्यत् गहिः वायन्यां गणपति॥देवं नमामि शिक्षिजात्मुजमेकद्तं सिंहरवर्चितवपुः स्विराज्यांडं ॥ नागृदमण्डिततन्तुर्ध्वतिसिद्धसूद्धिसेन्युं सदा सुरग्णेः सक्-🐉 छार्थसिद्धेचे ।। गणेश इहागच्छ इह तिष्ठ गणेशायनमः गणेशमावाहयामि स्थापयामि ॥ गीरी ॥ एहोहि नीलो 📳

🔐 मनुष्यवातरो ब्राह्माः ॥ इति शुद्रकमलाकरे ॥ अत्र चनुदेश मातुपदसमाहारान् मातरो लोकपावर् इति सर्वासाम् विश्लेषणम् ॥ इति हेशाह्री 🕄 कर्मकरूपुरोवतेश्व यत विद्धिश्राद्ध तव मातृष्यता यत्र श्राद्धाभावस्तत्र मातृष्यताभावः इति शातातपः ॥

अर्थ-यैवादि मातृकातुं स्थापन वानद्य अथवा पाटवा विगेरे मुक्ती तैनापर छाछ कक्तहो पापरी ॥१५॥ इपछी क करपटुषोनतेश यत बुद्धिश्राद्ध तम माट्यूचा यत्र श्राद्धाश्रोवस्तत्र माट्यूजनाभावः इति शातातपः ॥ अथ-गौर्यादि मातृकार्त्त स्थापन बानक अथवा पाटला बीगेरे सूकी तैनापर लाल कक्को पायति ॥१९॥ टाप्ली बाचा भातनी करी तेनापर सोपारी गीडलनां ॥

ैं। तरः ॥ केबित् ॥ श्रीर्वहमी धृति मेंधा स्वाहा महा सरस्वते ॥ धृतेन पातरः सह पुरुषाश्च विधिवत् ऋषात् ॥ एताः धृतपानुकाः नांगीकृताः 🛣 🐉 शुद्रकमस्त्रकरादिष्यः ॥ क्योदिषु त् सर्वेषु पावरः स गणापिषाः ॥ पूजनीयाः मयत्नेत पूजिताः पूजपन्ति ताः॥ पातवन्देन सम्भेत्रवीयदि 🗨 🕏

वि॰ की॰ हैं अमचकह्तते ॥ सुरासुरेन्द्रिरीभवंदिते त्वं पूजा ग्रहीसं मम युनुभूमो ॥ पद्मे इहागच्छ इह् तिष्ठ पद्माये॰ मावाह्यामि स्था॰ ॥ २ ॥ शर्ची ॥ पह्योहे कार्तस्वर छुत्यवर्णे गजाभिरूढे जळजाभिनेत्रे ॥ शकाप्रिये प्रोज्व-लवज्रहस्ते पूजां प्रहीतुं शचि देवि शीघ्रं ॥ शचि इहागच्छ इह तिष्ठ शच्ये नमः शचीमावाहयामि स्था॰ ॥३॥ अंक्रत्या मातृप्रनान्तु यः शार्द्धं परिवर्षयेत् ॥ सस्य कोचसमाविष्ठा हिंसामिच्छन्ति मातरः ॥ आदौ विनापकः पृथ्यो अंते च कुल्देवतेति ।

दिश्वारवात् ॥ अदी विनायकपूर्वतं ॥ कुक्ष्यल्यां वसोर्द्धारां समुधारां घृतेव तु ॥ कारवेत् वंच घारां वा वातिवीचां न चील्रितां ॥ कुरुवलः त्रां पातृसमीपभित्रिकमां घृतेन पुत्रीष्ठय्यादिमा सप्तपंच वा धारां कारयेत् सप्त ।। पंच भवत्यत्र वेन्किको विकल्पः ।। वसुरविषेसुर्द्रन्यं यसनोष्टायिति कोबर्दर्शनात् च शतपथक्षुतेः ॥ वसोरप्रदेव ॥ च परं काँग्रीतकीवाद्मणनाक्यात् अग्निः सर्वदेवात्मकः ॥ अग्निर्वे वसवे। देनता इति शुतेः ॥ तस्यात् अग्निपंत्रेण वसाद्धीरा कर्तक्या ताः शादक्षिण्येन कुर्पात् दैवन्त्रात् नोष्य्वितां नात्युच्यां नोचस्तश्रेति कुड्ये कृतशारायां बसुवाराय नमः इत्यावाय नायमंत्रैः मणवादिनमोन्तैः ॥ मतीवियारम्य माग् पर्यताः वा वक्षिणस्यामारभ्य उदीति पर्यताः त्रस्यकं काण्डानु-समयेन वा पदार्थानुसम्येन पुनयेत् ॥ ॥

वायरच रोण गणपवित् स्थापन करी नैर्मेख खूणे गीरि तेनाउचर पत्ना ए प्रमाणे पश्चिमधी पूर्व तथा विश्वणधी उत्तर स्थापन करतु. गाँवीदित् स्थापन थयापठी तेनी मपणी तरफ सात दगनी भातनी बीनी करी तेनापर अख्यादिमातकातुं स्थापन वरखु

्रीमेथे इहोगच्छ इह तिष्ठ ॥ मेथाये नमः ॥ मेथामावाहयामि स्थापयामि ॥ २ ॥ सावित्री ॥ एहाँहि सावित्रि जग-🏥 दिवात्रि बद्धप्रिये छूट्ध्रवपात्रहस्ते ॥ प्रतप्तजांखनदछल्यवर्णे पूजां ब्रहीतुं निजयञ्जभूमी ॥ सावित्रि इहागच्छ 📳 ्राइह तिष्ठ ॥ सावित्र्ये नमः॥सावित्रीमायाहयामि स्थापयामि ॥४॥विजयां॥एह्येहि शास्त्रास्त्रघरे क्रमारि स्रसस्रराणां 👸 ै। विजयप्रदात्रि ॥ त्रेलोक्यवन्दे शुभरतमूपे गृहाण पूर्जा विजये नमस्ते ॥ विजये इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ विजयाँये। 🕍 ्री नमः ॥ विजयामाबाहयामि स्थापयामि ॥६॥ जयां ॥ एह्योहि पद्मोरुहलोलनेत्रे जयप्रदे प्रोज्यलशक्तिहस्ते ॥ ब्रह्मा-📳 🎼 दिदेवैरभिवंद्यमाने जयेव सिद्धि क्रह सर्वदा मे ॥ जये इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ जयाये नमः ॥ जयामावाह्यामि 🐉 🎇 स्थापवामि ॥७॥देवसेनां ॥ एह्योहं चापासिधरे क्रमारि मयुखाहि कमलायताक्षि ॥ इंद्रादि देवैरपिस्तूयमाने 👫 🅍 प्रयच्छति त्वं मम देवसेने 🛭 देवसेने इहागच्छ इह तिष्ठ 🛭 देवसेनारी नमः 🕦 देवसेनामावाहयामि स्थापया-🎉 🕅 मि ॥ ८ ॥ स्वर्षा ॥ एहोहि वैश्वानस्वरूपे स्व कव्यं पितृभ्यः सततं वहन्ति ॥ स्वर्गाधिवासे श्रुप्रशक्तिहस्ते 🕏 स्वये द्ध नः पाहि मलं नमस्ते ॥ स्वये इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ स्वथाये नमः ॥ स्वथामावाहयामि स्थापयामि ॥९॥ १

मेथां।।एहोहि मेथे श्रुभभूत्विस्ने पीतावरे पुस्तकपात्रहस्ते ॥ बुद्धिभदे हंससमाधिरूढे पूजां बहीतुं मसमस्मदीयं ॥ 💸

स्ताहां ॥ एहोहि वेशानरतस्यदेहे तुडितप्रभे शानुत्रियरे कमारि ॥ हविर्मृहीत्वा सुरत्रप्रिहेतोः स्वाहे च शीर्घ मुख मस्पदीयं ॥ स्वाहे इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ स्वाहाये नमः ॥ स्वाहामाबाहयामि स्थापयामि ॥ १०॥ हर्षि ॥ एहाहि भन्ताभयदे क्रमारि समस्तलोकप्रियहेतुमृते ॥ मोत्फुलपंके रहलोलनेत्रे रहष्टे मर्स पाहि शिवस्वरूपे॥ हुष्टे इहाग-च्छ इह तिष्ठ हृष्ट्ये नमः ॥ हृष्टिमाबाह्यामि स्थापयामिश ११ पृष्टि।। एहोहि पृष्टे शुभरत्नभूपे रचतांचरे स्वतविशालः नेत्रे ॥ भरतिभये पुष्टिकिर त्रिलोके महाण पूजां शुभदे नमस्ते ॥ पुष्टे इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ पुष्टये नमः ॥ पुष्टि-

मानाहवामि स्थापयामि।१२।तुर्हिः एह्योहि तुष्टेऽसिळळोक्वंचे त्रेळोक्यसंतोपविधानदक्षे।।पीतवारे शक्तिगदाञ्जहस्ते वस्त्रदे पाहि मसं नमस्ते॥ तुष्टे॥ इहागच्छ इह तिष्ठ॥ तुष्टेचे नमः॥ तुष्टि माबाहयामि स्थापयामि॥ १३ ॥ कुळदेवताम।।

एहोहि दुर्गे दुरितौधनाशिन प्रनंददैरपौधविनाशकारिण ॥ शिवे महेशार्धशरिशारिण स्थिरा भव त्वं मम यज्ञक र्मणा। आत्मनः कुरुदेवताये नमः॥आत्मनः कुरुदेवतामावाह्यामि स्थापयामि॥ इति गौर्धादि मात्कास्यापनमः॥

अय व हवादि मातुकारवापनाम् ॥ १ ॥ त्राह्मीं ॥ चत्रर्भुसी जगन्दात्रीं हंसारूढां वरपदां ।। सृष्टिरूपां महाभागां

हुने ग्रवणित सह गौनादि १४ मानुकाई स्थापन क्या पक्षी तेर्नु पूनन वक्रक प्रमाणे कर्त्यु, अयश एनी साथे बाइयादि अनुध्यमानुकाई स्थापन करी एक तमें ब्रतिग्रा करी पुत्रन नर्त्यु, ए यथानकाश समन्तुः, यूनन प्रकार जास्त्रार्थमां अपेखों).

शिकोमार्थे नमः ॥ कोमारीमाचाहवामि स्थापयामि ॥ ३ ॥ वैष्णवी ॥ शंखवकगदापद्मवारिणी कृष्णरूपिणी ॥ 🔀 िस्थितिरूपां खगेन्दस्थां वैष्णवीं तां नमान्यहृष् ॥ वैष्णवि इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ वैष्णवेशनमः वैष्णवीमावाहयामि ्री बाराहि इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ वाराही नमः ॥ वाराहीमावाहयामि स्थापयामि ॥ ४ ॥ इंद्राणीं ॥ इंद्राणीगजकुं 💸 भर्यो सहस्र रयनोज्वलाम् ॥ नमामि वस्तां देशीं सर्वदेवैर्नमरहताम् ॥ इन्द्राणि इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ इन्द्राण्ये 🛱 ैं। नमः ॥ इन्द्राणीमावाहवामि स्थापयामि ।। ६ ॥ चार्सुडां ॥ चार्सुडां संडमयतां संडमाळोपशोभितां ॥ अट्टाट्रहास चुदितां नमाम्यात्मविभूतये ॥ चामुण्डे इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ चामुण्डाये नमः ॥ चामुण्डामावाहयामि

नह्माणीं तां नमान्यहं ॥ त्राह्मि इह्मगच्छ इह तिष्ठ ॥ त्राह्म्ये नमः ॥ त्राह्मीमावाह्यामि स्थापयामि ११९॥ माहेश्वरीं ॥ श्रीमाहेश्वरीं नमान्यदं मृष्टिसंहारकारिणीं ॥ वृपाल्दां शुआं शुआं त्रिनेत्रां वरदां रिावां ॥ माहेश्वरि इह्मगच्छ इह क्षिति।। माहेश्वर्ये नमः ॥ माहेश्वरीमावाहपामि स्थापयामि ॥ २ ॥ क्षेत्रमारीं ॥ एह्योहि क्षेत्रमारि विवेहि शांतिं रार्वित श्रीकेतं व्यानेऽपि सदाश्रमच्ये ॥ स्कंथाधिल्द्धे शिखिनंग्यास्यां मातः प्रसीद प्रसृतिं प्रयच्छ।। क्षेत्रमारि इह्मगच्छ इह तिष्ठ ॥

तदुपरि रोप्यमुद्रामपि स्थापयेत् ॥ प्रतिष्ठां कुर्यात् ॥ प्रतिष्ठा सर्वदेवानां मित्रावरुणानिर्भिता ॥ प्रतिष्ठां तां करोम्यत्र भंडले देवते. सह ॥ सगणेशगोर्याचाविहतमातरः त्राह्मादि सप्तमात्य्य सुन्नतिष्ठिताः वरदाः भवत ॥ सगणेश गीर्याचाहितमातृम्यो नगः ॥ आयाहनं स्० ॥ सुगणेशगीर्याद्या० आसनं स ० ॥ सुगणेशमीर्याद्या०

परिपालयं नोरिभीतेर्नित्यं यथा सुरवभादस्त्रनेव सद्यः ॥ पापानि सर्व जगतां प्रशमं नयाशु उत्पातपातजनितांश्च अर्थ-गोर्यादि मेटले मातुराह स्वापन कर्युंत्रे तेनी मतिद्यावारी आवाहन आसन विगेरीया पुरमाराठी लगी. पूमा वारी प्रार्थना करी करेखी पाना अर्पण

करनी ब्राह्मपादित स्थापन थया पडी सात पाला क्यों होच तेना उपर कीनी मंत्रयो पास करकी गोळ तथा न्यानाण चोवयुः

गौर्याचा॰ पुष्पं स॰॥ सगणेशगौर्या॰ अलंकासर्थं कुंकुमासताच् स॰॥ सगणेशगौर्यादा्॰ सुशोभनार्थं सीभाग्यद्र-इयं॰स्।।सगणेशगोर्याचा॰ पूर्वं स॰ सगणेशगोर्याचा॰ दीवंस्।।सगणेशगोर्याचा॰ नेवेद्यं स०।। सगणेशगोर्याः द्या० तांबुलुं स०॥ सुगणेशगीर्याद्या० साहुण्यार्थे दक्षिणांस०॥ सगुणेशगीर्याद्या० प्रदक्षिणां स०॥ देवि प्रसीद 🖇

पार्च सुना सम्पेशनीर्वाचा॰ अर्व्य सुन ॥ समणेशमीर्याचा॰ आचमनीय सुन ॥ समणेशमीर्वाचा॰ स्नान स॰ ॥ सम्पेशमीर्याद्या॰ वर्च स॰ ॥ सम्पेशमीर्याद्या॰ उपनीतं ०॥ सम्पेशमीर्याद्या॰ मंघं स॰ ॥ सम्पेश-

👫 रूपैरनेकैर्नेह्रभारममूर्ति कृत्वांबिके तत् प्रकरोति कान्या ।। २ ।। विद्यास शास्त्रेषु विवेकदीपेष्वासेषु वारुपेषु च का

🎼 त्यदस्या 🛭 ममत्वगतेंऽतिमहांपकारे विभ्रामयत्येतदतीय विश्वं ॥ ३ ॥ स्त्रांसि यत्रोग्रविपात्र नागा यत्रारयो 🖟 ¶\$||दस्युवलानि यत्र ।। दावानलो यत्र तथावियमध्ये तत्र स्थिता त्वं परिपासि विश्वय ।। ४ ।। विश्वेश्वरि त्वं परिपा-¶३||

पन करी नादीश्राद्धनी आरम करवी.

🅍 िस विश्वं विश्वारिमका धारयसीति विश्वमाविश्वेशवंद्या भवती भवन्ती विश्वाश्रृया ये खिय भक्तिनम्राः ॥ ५ ॥ 🕺

🎇 कजनितांश्र महोपसर्गान् ॥६ ॥ हस्ते जलमादाया।अद्येत्यादि० कृतेन आयुःशांतिजपास्येन भगवान् कर्माघीशः 🕺 र्क्य-चीपमां जळ एड आयुत्परुद्धिमाटे सकलकरी ब्राह्मण पासे आयुष्य मेत्रपाठ करायी ते पारकीने दक्षिणा आयी नगरकार करना ए प्रमाणे मानुकारथा-

ा भिमहोपसर्गान् ॥ समणेशमौर्याद्या॰ पुष्पांजिलं स॰ ॥ अनेन पूजनेन समणेशमौर्याद्यादहितमात्रः श्रीपंताम् ॥ 🖁 हस्ते जलमादाय ॥ अर्थत्यादि० अस्मिन् कर्मणि आयुष्याभिष्टस्वर्थं ब्राह्मणदारा आयुःशांतिजपं करिष्ये इति 🖔 🕼 संकल्प ।। विप्राः पटेखुः।। ते च ।। रोगानरोपानपहासि तुष्टा रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान् ।। त्वामाश्रितानां न 🕄 👫 विषन्नराणों त्वामाश्रिता बाश्रयतां प्रयांति ॥ १ ॥ एतत् कृतं यत्कदनं त्वयाद्य धर्मद्रिणं देवि महास्रराणाम् ॥

🎇 देवि प्रसीद परिपालय नोऽरिभीतेर्नित्यं यथा सरवधादधनैव सद्यः ॥ पापानि सर्वजगतां प्रशमं नयाशु जलातपा- 🎇

वि॰ कौ॰ ई श्रीयताम् ॥तेन करिष्यमाणकर्मणि आयुष्याभिवृद्धिरस्तु ॥ आयुष्यमंत्रपाटकेम्यो यथाशक्ति दक्षिणां दद्यात् ॥ इति मात्कारयापनप्रयोगः॥ अथनादीशाद्धं॥तेत्र प्रथमं विश्वदेवः तदभावे अद्यत्यादि॰ अस्मिन् कर्मणि ह विहितवेश्वदेवाकरणजनितप्रत्यवायपरिहोसर्थं करणजनितफुरुपप्यर्थं इदं तंडुरुपात्रं सदक्षिणाकं शास्त्रोक्तपुण्यफु-ह्म्याप्त्यर्थं गोत्राय त्राह्मणाय संप्रदास्ये॥तेन किष्वमाणकर्माण अविकारसिद्धिरस्तु॥नादिश्राद्धं संपिण्डकं अपि-

? बुद्धिश्रादं पुरा कार्यं कर्णादी स्यस्तिकापनभिते ॥ किराण्डिसरणात् नवग्रहपत्रादी नादीश्राद्धपिति वान्यम् ॥ कन्यापुत्रभित्राहेषु प्रवे वे मुक्कम्पनि ॥ नापक्रमणि ग्रह्णाना चूहाकमीदिकं तथा ॥ सीमन्तोन्नयने चेत्र पुत्रादिषुखदक्षेते ॥ नादीषुखानं विनृगादी तपेयेत् मथतो मुक्षेति जाविसारे ॥ तत्र नादीमुखाः शिवसः शिवायहाः मिववायहाः सपतिनकाः मातामहत्रमातामहरुद्धममातामहाः सपत्नीका हति पह्नयः विनुन्यः पूर्वभद्दय स्पष्टं ॥ क्रवस्थानेषु दृशिः स्युः मेगुलस्थाभिष्टद्वये ॥ इति आश्वलायनोत्रतेः ॥ तत्र साकवित्रके समेत्रकात्राहनायीग्नीकरण-विण्डदानिकिसासय्यस्त्रधानाचनमञ्जत्येवत् सप्तकं बज्वे ॥ १ हुने नारी गढ़ करनु तेमा पहेंच्य वैधारेय करनो तेने वरले चोत्रा तथा था त्राह्मणने आपी सकता करी वर्म करनु वृद्धिश्रादमा कर्तांनी जाप सया तेनो बार तथा मा तथा तेनो बार जीवती होय नो करवानी जरुर नथी. बृद्धिश्राद्ध सवारमा करनु, ते वे मकारनु हे विष्टवाळु ने रिंड बगरनु तेमा विड-बालु करनु होय तो वधु आद प्रमाणे करी थिंड मूक्तवा अने साकलीक श्राद होय तो पिंड मूक्तवानी नहर नभी चेटलेक देकाणे व्याझणा संकल्प श्राद क्सबात कही विंड मूठावे के तेथी बैठतं फळ मळतु नथी सरुहन आदरण वागना तरभाणाया तम दगर्छ। भाननी करी सीपारी मोठनी नमणा हाणमा

र पुण्ये वह तेना उत्तर एंटरे बढिट शटमा सत्य अने बहु नामना विश्वदेश हे तेना उत्तर पाणी रेडलु पूजी बाना देवतापर तथा सीमा उत्तर एम अनुक्रेय पूजा करवी।। 🗴

नदिम्लिखाः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षाळनं रृद्धिः ॥ द्वितीयगोत्राः मातामद्दप्रमातामहश्च्यप्रमान तामहाः सपत्नीकाः नांदीसुखाः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः ॥ अद्य प्रवोंचरितश्चभपुण्यति-थी मम स्रतस्य वा स्रतायाः विवाहांगत्वेन सांकल्पेन विधिना नांदीशाद्धं करिष्ये ॥ आसनदानं ॥ सत्यवसमं-अनुम्ना अतिलैबेन नांतीआदं च सस्यतः ॥ इति संग्रहे प्रतयविचाहेषु आदहोमार्चने जपे ॥ आग्टो मृतकं न स्यात अनुसन्धे त सतकं ॥ अति विष्णुपराणे ॥ त्रीरंभो वरणं यहे सकल्पनतसनयोः नादीश्राद्ध विश्वहारी श्राद्धे पारुपरिक्रियेति ब्रह्मपुराणे ॥ क्रियेटेवाः फार्यरस्त्रे ॥ इष्टिआदे ऋतुरेक्षः संकीत्वां वैश्वदेविके ॥ नावीमुखे सत्ववस् काम्ये च गरिलोचनी ॥ पुम्परवर्दियी चैर पार्वणे समुटाहर्तो ॥ नैभित्तिके कामकारुविव सर्वेत कीर्तपेत ॥ इतिश्रादमपूर्व ॥ 

ण्डकं वा फलं समानं ॥ तत्र सांकल्पेन विधिना अपिण्डकप्रयोगः ॥ ताम्रपात्रे त्रीणि बहूनि वा अक्षतपुंजाानि हैं करवा ॥ तस्योपरि प्रगीफलानि निधाय ॥ दक्षिणहस्ते सजलहूर्वाङ्करान् मृहीत्वा ॥ सत्यवसुसंज्ञका विश्वेदेवाः हैं। नांदीसुखाः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादपक्षालनं मृद्धिः ॥ गोन्नाः पितृपितामहप्रपितामहाः सपत्नीकाः हैं।

```
विश्वी क्षकानां विश्वेषां देवानां नांदीमुखाना इदमासनं सुखासनं नांदीश्राद्धे सणी कीयेतां तथा प्राप्तुताम् भवन्ती है प्र०१
        र प्राप्तवाव ॥ गोत्राणां पितृपितामहप्रपितामहानां सपत्नीकानां नांदीसुखानां इदमासनं सुखासनं नांदीश्रास्त्रे 💸
॥ २१ ॥ है भ्रणाः क्रीयंताम तथा प्राप्तुवन्तु भवंतः प्राप्तवाम ॥ द्वितीयगोत्राणां मातामह प्रमातामह बुद्धप्रमातामहानां है
           सपत्नीकानां नांदीसुसानां इदमासनं सुलासनं नांदीश्राखे क्षणाः कीयंतां तथा प्राष्ट्रवन्तु भवंतः प्राप्तुवाम ॥ 🖔
           गंभादिदानं ॥ सत्यवसुसंद्रकेश्यो विश्वेभ्यो देवेभ्यो नांदीमुखेभ्य इदं गंभाद्यर्चनं नमः संपद्यतां वृद्धिः ॥
```

गोत्रेभ्यः पित्पितामहर्प्रापतामहभ्यः सपत्निकभ्यो नादीमुखेभ्योः यथादत्तं गंधाद्यर्वनं नमः संपद्यंतां रुद्धिः ॥ द्वितीयगोत्रेभ्यो मातामह-प्रमातामह-चुद्धप्रमातामहेभ्यः सपत्नीकेभ्यः नांदीसुखेभ्यः यथादत्तं नमः संपद्यंतां वृद्धिः ॥ भोजनिनष्कयद्भग्यदानं ॥ सत्यवसुसंज्ञकेभ्यो विश्वेभ्यो युगमुत्राह्मणभोजनपूर्याप्तमन्नं तन्निष्क्रयीभृतं किंचिष्ठिरण्यं असृतरूपेण नमः संपद्यंतां वृद्धिः ॥ नरिश्यादे अमाभाव आपं आपाभाव हिरण्यं हिरण्याभवे सुम्पत्रात्मणभीजनप्यात्रात्रीनिकायीभूतस्यात्रश्तिकिविद्रव्यदानं ॥ इति धर्मसियो।।

करवापी सुतकादिनो बाब छामतो नथी. पडी आसननो संस्वत्य करी स्थापित देवीपर पाणी सुकतुं तथा तेनापर चंदन पुरु चडायवा तथा

नादाणमाञन विगेरेनो संहत्य करवो.

🎇 सपत्नीकाः नांदीमुखाः श्रीयंतां ।। द्वितीयगोत्राः मातामह श्रमातामह बृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नांदीमुखाः 📳 🏿 श्रीपंतां ॥आशिषोत्रहणं ॥ गोत्रं नो वर्छतां ॥ वर्छता वे। गोत्रं॥दातारो नोऽभिवर्छतां अभिवर्छतां वो दातारः॥ 🕮 संतितनें।अभवर्द्धतः अभिवर्द्धतां वः संतितिः। श्रद्धाः च नो माज्यगमत् ॥ माज्यगमद् वः श्रद्धाः ॥ बहरेयं च 🎇 नोऽस्तु ॥ अस्तु वो वहदेवं ॥ अन्नं च नो वह भवेत् ॥ भवतु वो वहन्नं ॥ अतिर्थित्र लभागहै ॥ लभंतां वो 💱 र्भावंतामित्यत्र यनसीरजलानि दचात ॥ इति प्रयोगसन्मगदाभरौ॥यीत्यै सक्षीरदानं ॥ आभ्याद्विकश्रादं तु आन्वारात् ॥ द्वर्ग पाणी रहीने नांदीमुख देवीने आपवायी ते प्राप्त यह इर्ट्यविमेरेमा थतो क्लेश नार करी प्रीती उत्पन्न करावेछे एवं संयकारत वेडेयेछे प्रमणं मन नह तेमां दुष रेडा ते देशताओंने अर्पण करवाणी वंशमृद्धि यायछे. माझणीने मादिश्रद्ध पर्यु ए प्रश्नो विगेरे पुरुषा. सरेक देशना उद्देश-भी करियो पा आपवानो संग्रदाय छे—नादीश्राद्धमां में न्यूनाधिक यसुं होष तेनी चरिण्जी करी संम्रहम करि देशताने अर्पण करसुं. ए प्रमाणे नांदीश्राद्ध

ैं िरितृपितामह प्रिप्तामहेश्योः सपत्नीकेश्यो नांदीमुलेश्योः ग्रुग्मग्राह्मणभोजनपर्याप्तमन्नं तन्निष्कर्याभृतं किंचिद्धिरण्यं हैं अप्रतरूपेण नमः सपद्यंतां वृद्धिः ॥ दितीयगोत्रेश्यो मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहेश्यः सपदनीकेश्यो नांदी हैं मुलेश्यो ग्रुग्मग्राह्मण्यं अप्रतरूपेण नमः संपद्यंतां वृद्धिः ॥ हैं मुलेश्यो ग्रुग्मग्राह्मण्यं अप्रतरूपेण नमः संपद्यंतां वृद्धिः ॥ हैं सेतीसमुदकदानं ॥ नांदीसुखाः सत्यवसुसंह्मण्यः विश्वेदेवाः ग्रीपंतां ॥ गोत्राः पितृपितामहः प्रपितामहाः

अतिथयः ॥ याचितास्त्र नः संतु ॥ संतु वे। याचितासः॥ एता आशिषः सत्याः संतु ॥ संत्वेताः सत्या आशिषः॥ दक्षिणादानं ॥ सत्यवसुसंद्राकेन्यो विश्वेभ्यो देवेभ्यो नांदीसुस्तेन्यःऋतस्य नांदीशाद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्धयर्थं द्राक्षाम-लक्ष्यवम्लिन्क्यीमृतां दक्षिणां दाद्यमहमृत्मुजे॥ गोत्रेग्यः पिन्।पितामह प्रपितामहेभ्यः सप्तनीकेभ्यो नांदीमु-

क्षेभ्यः कृतस्य नांदीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्धचर्यं द्राक्षामलकयवमूलनिष्कयीभृतां दक्षिणां दाखमहस्रत्यने।।द्रितीय गोञ्जेभ्यो पातामह प्रमातामह पुद्धप्रपातामहेभ्यः सपत्नीकेभ्यः नांदीमुलेभ्यः कृतस्य नांदीश्रान्द्रस्य फलप्रतिष्ठासि-द्धचर्थं दाक्षामलकववस्युलनिष्कयीसृतां दक्षिणां दालुमहसुत्मुजे ॥ ततो नांदीश्राद्धं संपन्नं ॥ सुसंपन्नं ॥ जलं मृक्षीत्वा ॥ अनेन नांदीश्राद्धकर्मणा कृतेन श्रीनांदीमुखदेवताः श्रीयंतां ॥ अस्मिन्नांदीशाद्धे न्यूनातिस्वितो यो विधिः ॥ स उपविष्ट्रबाह्मणानां वचनात् नांदीसुखप्रसादात् सर्वं परिपूर्णे ॥ अस्त् परिपूर्णम् ॥ 🕺 ॥ अयथ अर्घवंदनं ॥ पाद्यार्घपात्राणां स्थापनं ॥ तत्र ॥ कांस्यसंपुटे ताम्रसंपुटे वा ॥ शरावे ॥ आपः क्षीरं 🕺

२ आचारात् अर्यवंदनम्।।बाक्षणप्ररणार्थं वाद्यार्थवंदनभिति केचित् ॥ कुछं मासी इस्टि हे सुरागैलेपचंदनं ॥ स्वचा चंपकमस्ता व सर्वेषःचा दम्न समृताः ॥ इति भविष्यपुराणे ॥ वर्षुं, फेटराक अध्युरियक श्राद्ध रहें है, वे, आचार है माटे सुरुषुं नथी. १ अपवंदन वर्षु तेमा पूतनने गाटे खानेला कलाती तेमां

परि कलशं निभाय ॥ विश्वायाससीति मंत्रेण भूमी स्पृष्टा ॥ विश्वायासीसे घरणी शेपनागीपरिस्थिता ॥ घता 🖁 चादिवराहेण सर्वकामफलपदा ॥ भूम्यै नमः ॥ हेमरूप्यादिसंभूतं ताम्रजं सद्दढं नवं ॥ करुशं श्रीतकः ल्मापं छिद्रवर्णियवर्जितं ॥ जीवनं सर्वजीवानां पावनं पावनात्मकं ॥ बीजं सर्वेरिपश्चीनां च तज्जलं प्रस्याम्यहं ॥ सूत्रं कार्पाससंभूतं ब्रह्मणा निर्धितं पुरा ॥ येन चन्नं जगरसर्व बेप्टनं कलशस्य च ॥ ओपधिः सर्ववृक्षाणां तुण-ग्रस्मलतास्तंथा ॥ दूर्वासर्पपसंथुक्ताः सर्वेपिष्यः प्रनातु माम् ॥ विविधं प्रष्पसंजातं देवानां भीतिवर्धनं ॥ क्षिप्रं

क्रशामाणि द्विद्वीक्षतास्तथा ॥ तिलाः सिद्धार्थकाश्चैव अंद्यगोऽर्घवकीर्तितः ॥ प्रस्तः घान्यसर्शि कृत्वा ॥ तद्र-

यकार्यसंभतं कलशे निक्षिपाग्यहं ॥ अैश्वत्थोदंबरप्टश्चनृतन्यग्रोधपछवाः ॥ पंचभंगा इति प्रोन्ताः सर्वकर्मस्र-। वीपछो-उपहो-वीपरही-आंवो-दद#घोडो-हाधी-राफडो-संगम-एटले पहानदी समुद्रनो-खाडो-राज्य-भायनी ॥ एटली ठैकाणेथी

00000000000 नल-साउ-कक-चंदन फुल औपधि-मोपारी--पचररत-पचपहुद नासवा तपा०॥-॥सादा नव आता छालवानो सपदाय छे, पूर्व कारण एटलुंन है के करा रूपानी नोहंबे तेने बरुडे ए मुख्यानी संप्रदाय है. कलक्षमां उपर कहा प्रमाणे वे वर्धु कुर्का तेपर सालिकेर मूकी बांकबु, पत्री मटोडीनुं कोडिर्धु अथवा कांसानी बाहकी तैमां-पाणी--नुष-दर्हा--

शोप्रि ॥ अनेन पाचपात्रोपरि ताम्रमयं पूर्णपात्रं निथाय ॥ तद्वपरि नालिकेरं निथाय । तत्र अर्घ्यपात्रोपरि सवर्णपात्रं पिधाय रक्तसूत्रं वेष्टियत्वा ॥ पाद्यार्घपात्रे गंधपुष्पार्श्वतरम्यर्च्य ॥ वैजमानहस्ते मांगल्यं कृत्वा । धान्यदृर्वीप्रक्षेपः ॥ यजमानः स्वासनात् पश्चिमतः उत्तर्राभिमुखो भूत्वा तिष्ठेत् ॥ आचार्यः पत्नीहस्ते कलशं

' दद्यात्।।यजमानहस्ते अर्च्य च॥सुमुहूर्तादि कर्त्तव्यं शोभने मंडपे द्विजः॥ शांतिपाटोऽर्घदानं च प्रच्छापूर्वं समाच दुर्वा-असत-तिष्ट-सरसय-विरोरे नांसी तेना पर बीजुं पात्र द्वारी तेनापर नाढुं मुकी एक पायनी कल्या तथा अपेने अवील मुलास्थी झुरोभित यत्त्वा. पाद्यार्थ करतु एका आचारहे. गेरि सक्तीक यजमानना हथमां कुंकुन तथा भातछात्री यजमान क्तीना हथमां कुटरा तथा यजमानना हथ्मां

अर्ध आधी पाटचनी नीने उत्तरत मोडु करावी उमाराली मंत्र भणावदा. नहीं तो ब्राह्मणीने मेहियी सांमद्री, अर्थ समन्त्री, आ पाद्यपान तथा अर्घ द्ये एम 🔖 कहि आपी पोताना आसन पर देसनं.

र्धे सरिद्रपाम् ॥ सर्वसीभाग्यसंपत्ये निष्पत्ये अस्य कर्मणः ॥ ४॥ आचार्यादिसमस्तानां जापकानां द्विजन्मनाम्॥ ै वादार्च प्रकरिष्येऽहं आज्ञां देहि ममाध्येर ॥ ५॥ पावनाः सर्ववर्णानां वाद्यणाः वहारूपिणः ॥ अन्तरमण्हेन्ते 🔄 भामच ग्रहयज्ञास्यकर्माणे ॥ ६ ॥ स्वस्वकर्मरता नित्यं वेदशास्त्रार्थकोविदाः। श्रोत्रियाः सत्यवादाश्च देवस्या-🕼 बरताः सदा ॥ ७ ॥ यद्राक्याच्रतसंसिक्ता ऋद्धि यान्ति नरहुमाः ॥ अंगीक्रवेन्तु कर्मेतत् कल्पद्दमसमाशिषः ॥ 🔐 ।। ८ ॥ यथोक्तनियंमेर्द्रका मंत्रार्थे स्थिखद्धयः ॥ यत्क्रपालोचनात सर्वी ऋद्धयो रुद्धिमासूयुः ॥ ९ ॥ स्वागतं।

वर्ष -उपरान पत्रीमणी रहे प्राव्यणी, त्यारपत्री यनमाने केदेतुं प्रतिगृह्मताम् पत्री ब्राव्सणीए प्रतिगृह्णामि कहि ते बेउना हाथमध्यै कछरा अर्घ छउ

हैं। १ ॥ मम क्षेमाञ्जरारोग्यं परमश्रीञ्जलाप्तये ॥ सर्वश्चुत्तनायस्य वांछितार्थस्य सिद्धूये ॥ २ ॥ आधिव्यापि-अत्रास्ट्रस्यभयशोकापन्हतये ॥ भूतभव्यभविष्येति त्रिविधात्पातशांतये ॥ ३॥ सर्वेन साममध्यस्तीर्निस्तिश्र

माइ्मुखमुपविदय ॥

्रीचे मुक्ता यज्ञाचे पोताना पाउछापर बेसी बाद्यापवरणनो संस्ट्स करतो.

मूहा-भंत्रभाष्ये ॥ आवार्षे हृणुयातत्त्र्वे ब्रह्माणं तद्यतंत्ररं ॥ परश्रारामेणापि ॥ आचार्योदिसमस्तानां जापकानां दिनन्यनां ॥ आयार्यं

मो दिजश्रेष्ठा मदतुत्रहकारकाः ॥ अयमर्घमिदं पार्यं भवद्भिः त्रतिगृह्यतां ॥ १०॥ अर्घोऽघोंऽर्घः ॥ प्रौतिगृह्यतां 🛱

षि॰ की॰ है। इति यजमानः ॥प्रतिमृण्हामि इति दिजः ॥ जलं मृहीत्वा ॥ आचार्यादिकत्विजां वरणमहं करिच्ये ॥ यजमानः है हस्ते सवनपुष्पप्रगीफलं गृहीत्वा ॥ शकादीनां यथा स्वर्गे आचायों वा बृहस्पतिः ॥ तथा स्वं मम यहेऽस्मिन्ना वार्यो भव सुबत ॥ मंत्रमृतिभवनाथ संसारोच्डेरकारकः ॥ पूजाईस्तु वथादेवः छहधमी हुर्तिचन ॥ हैं क्षंसारमयभीतेने अयं यज्ञः समिक्तिः ॥ प्रारूपस्वरपधादेन निर्विचनं में भवेदिति ॥ भगवन्सर्वधर्मज्ञ है ्वं प्रविधर्मपरायण ॥ सर्वशास्त्रार्थतत्वज्ञ सर्वशास्त्रविशाख ॥ अनादिजन्मसंतान हाप्रमेय भवार्णवे ॥ अदा

मे हात्तमं जन्म अद्य में सफलं धनं ॥ अद्य में जननान्छित्तिस्य में परमं पदं ॥ मोचितोऽहं त्वया 🕺 नाय दुच्छेद्याद्भवनंथनात् ॥ संत्रातोऽहं त्वया अस्मादप्रमेषाद्भयार्थनात् ॥ सुक्तोऽहं मर्त्यसंसारात् प्रपन्नोऽहं तथा-न्तिकम् ॥ प्रगीफलं आचार्याय दला ॥ पुष्यं निर्यास तिधाय ॥ ययैः जातु स्पृशेत अमुकगोत्रोऽअमुकपवरो वनेपान स्ट्र्मुलो भूत्वा ॥ सपरप्रयोक्तस्युप्पे मृदीत्व अंत्रील क्षता आचार्य प्रार्थपेत् ॥ ---- की यनवाने उच्चराभ्यित मेन्नी हरम्मा सोगारी अक्षत पुष्प वर आचार्यवर्ग पेहेलाधी कालु तेमा प्रथम प्रापंना करी सोचारी आपी आचार्यना गोळणे नर्या अञ्चली गोत्रादि ब्राह्मणया बोस्यापळी यनमाने पोताना गोत्रोचार बोटी अमुरुकर्ममा आनार्यक्रमें करवा हु तसने आनार्य करुदु, एम नदी त्रत्र आसी मुख्य माथा पर मुरुषु तथा आमार्थना ने पण तरभाणमा मुकना. पादा पात्रनी राज्यांने तेमाथी पाणी त्रण रखत पराउपर रेडी आनार्थना 🐴

।। कपिलाय नमस्तुभ्यं रक्षाकंकणबंधनम् ।। इस्तमुद्रा कर्णमुद्रा आसनादिसामर्श्री यज्ञोपवीतं वद्धं च दस्या ।। स्नामगोत्रमवरात्मंकीत्यं बाह्मणस्य च ।। अस्पिम्यवेऽमुकं देवं त्वावदं काविस्यं एणे ।। इस्तुतत्वा तु फलं दचारकरे अनैन प्रगर्नम् ॥ १६६ करपनन्याम् ॥ तत्र नद्मा स्वामवीयः कर्तव्य ॥ हिंदियेश पन भोइ. पत्री अर्प करेलेके नेमाथी एक यसत पाणी आचार्यना बेहाएमा आपत्र. पत्री शुद्धपानमाथी एक आचमनी भरिने जळ पाह हायमां 🕺 🕍 आपनुं पढी चदन फ्रन्टमाधापर सुकरू. तथा कथाळे चदन करी कुरूमने। चाले। करी नोखा चोडी कुपने हार पेहेरावी नवणे हाथे नाउ बायने. तथा 🖟 ी जारिन गीमली माळा आचमनी तरभाग पत्रीपपात्र ( अयहा ध्यालो ) तथा वस्त्र उपवस्त्र ननीह मुदिका भिगेरे. लावेली वस्तुओ तथा दक्षिणा आचार्यने 🔯 👫 आर्थ कहेबु के हे आचार्य 🕽 ज्यालगि आ मारुं कार्य सपूर्ण पाय त्यासुधी तपारे आचार्यत कर्त्तन्य कमें वत्रबुं तेरलायटे तमने आचार्य कर्या 🥉 एम कह्यापति। 🙌

अनार्ये केहेषु तमा उत्तम कर्य करवा तैयार पथाछे, तो सापकर्मकरावया आचार्य थांउद्धे. पद्म आचार्यना पूमनरा क्रम प्रमाण यनभाननी द्मालानोन है असा करवे तेना मंत्रीक्ष्मेरेपी प्रार्थन। कर्म ब्रह्मान्त वरण कर्युं तथा बीजापाण्यत्यादि तथा द्वारचा७ तिगेरे ऋत्विनीनु जुर्दु पूनन श्रद्धापूर्वक कर्युं.

्रियुक्तयज्ञमानोऽहं करिष्यमाणकर्मणि आचार्यकर्मकरणार्थं अयुक्मोत्रं अयुक्पवरं अयुक्वेदांतर्गतअयुक्तशाखाः । श्रीव्यायिनमयुक्तशर्माणं ब्राह्मणं साक्षतचंदनवासोभिः आचार्यत्वेन त्वामहं त्रणे व्रतोऽस्मि ॥ त्रताय एतत्ते पाद्य श्रीवादावनेजनं पादपक्षाळनं इदमत्र चंदनमाळिकां च हस्ते कंकणवंधनम् ॥ प्रतिज्ञावरणं चेव स्वस्तिपुण्याहवाचनम्।

वानकर्म समाप्यते तावत्त्वं आचार्यो भव ॥ भवामि इत्याचार्यः ॥ पूर्ववत् ॥ यवष्रपप्रभीफ्लं गृहीत्वा ॥ ब्रह्मा-णं वृष्ण्यात् ॥ यथा चतुर्मुखो ब्रह्मा सर्ववेदविशास्तः ॥ तथा त्वं मम यहोऽरिमन् ब्रह्मा भव द्विजोत्तम ॥ आवाह-यामि देवेरां ब्रह्माणं कमलोद्धवं ॥ चतुर्वेदसमाञ्चक्तं सर्वसिद्धांतवेदिनम् ॥ प्राथ्ये ॥ प्रगीफलं हस्ते दत्वा पुष्पं ॥

🖇 शिरंसि निधाय वेवेर्जान्त स्पृशेत ॥ अमुक्रगोत्रोऽसुकप्रवरोऽमुक्यजमानोऽहं करिष्यमाणकर्मण्यंगभूतकृताकृतावेः 🐉 क्षणार्थं अमुक्रमोत्रममुक्रप्रवरममुक्रवेदांतर्मतामुक्रशाखाःयायिनममुक्रशर्माणं ब्राह्मणं साक्षतद्रव्यचंदनवासोभिः है बहत्वेन त्वामई वृणे व्रतोऽस्मि इति प्रतिवचनम् ॥ व्रताय एतत्ते पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं इदमत्र चंदन 🐉 म लिकां च हस्ते कंकणवंधनम् ॥ प्रतिज्ञा वरणं चैव॰ ॥ हस्तमुद्रा कर्णमुद्रा॰ ॥ यायत्कर्म समाप्यते तावत्त्वं बह्या भव ॥ भवामि ॥ साक्षतप्रगीफलं गृहीत्वा गाणपत्यं प्रार्थयेत् ॥ ऋत्विन्भः सहितो बह्यनसंयुतेः सुसमाहितेः ॥ आचार्येण च संयुक्तः कुरु कर्म वयोदितं ॥ बांछितार्थफलावास्ये प्रजितोऽसि खुराखुरः ॥ निर्विध्नकार्यसंसिख्ये त्वामहं गणपं वृषे ॥ त्वन्नो ग्रहः पिता माता तं प्रभुक्तं परायणः ॥ आचार्यादिभिः सञ्चकः इह कर्म यथोदितं ा। फलं दत्वा प्रवेवत्यजनं ॥ अमुक्रमोत्रः यजमानोऽहं ०॥ अमुक्रमोत्रं० ब्राह्मणं गाणपत्यत्वेन त्वामहं वृणे ॥ 🐉

भी मय ॥ कर्मिणं वेदतत्त्वज्ञं सदस्यं त्वामहं रूणे ॥ फलं दत्वाः पूर्ववरष्ट्यनं ॥ अमुकगोत्र० यज्ञमानोऽहं०॥ अमुर 🎼 कगोत्रं॰ त्राह्मणं सादस्यत्वेन स्वामहं रूणे। त्रतोऽस्मि पाद्यं॰ यावत्कर्मः समाप्यते तावत्त्वं सादस्यो भव ॥ सर्वेाप- 🕏 🕍 द्रष्टारं बुख्यात् ॥ अस्य यागस्य निष्पतो ,भवंतोऽभ्यर्थिता मया ॥ सर्वोपद्रष्टकर्तेब्यं कर्भेदं विधिप्रविकं ॥ फुलं 🕍 🅍 दत्वा प्रर्ववत्य्वजनं ॥ असुकगोत्र० यजमानोऽहं० ॥ असुकगोत्रं० त्राह्मणं सर्वोपद्रष्टारं त्वामहं वृणे ॥ त्रतोऽस्मि 🕼 🎇 पार्चं गावत्कर्म समाप्यते तावत्त्वं सर्वेषिद्रष्टा भव।।ऋग्वेदिनं वृष्णुयात्।।ऋग्वेदः पद्म पत्राक्षो गायत्रः सोमदेवतः।। 🎏 🕼 अत्रिगोत्रस्त विपेन्द्र ऋत्विक् त्वं मे मखे भवा।फर्छ दत्वा पूर्ववत् पूजनं ।।अमुकगोत्र०यजमानोऽहं ।। अमुकगोत्रं० 🎎 🕺 त्राह्मणं ऋग्वेदिनं त्वामहं रूणे व्रते।ऽस्मि पाद्यं० यावत्कर्गं समाप्यते तावत्वं ऋग्वेदसूक्तजापको भव ।। यज्जेंदिनं ॄ 🎒 वृष्ण्यातमकातराक्षो यज्ञवेदः स्त्रेष्ट भो विष्णुदैवतः॥ कारुपपेयस्त विषेन्द्र ऋत्विक त्वं मे मखे भव।।फलं दत्वा पूर्व- 🕼 वर्षजनं ॥ अमुकगोत्र॰ यजमानोऽहं॰ ॥ अमुकगोत्रं त्राह्मणं यज्ञवेदिनं त्वामहं वृणे व्रतोऽस्मि पाद्यं॰ व यावत्कर्म समाप्यते तावस्वं यज्ञवेदसुक्तजापको भव ॥ सामवेदिनं वृष्णुयात् ॥ सामवेदस्तु, पिंगाक्षो जात्रतः

हैं। ब्रितांऽस्मि पाद्यं॰ यावत्कर्म समाप्यते तावत्त्वं गाणपत्यो भवा। सदस्यं वृष्ड्यात् ।।कर्मणासुपदेष्टारं सर्वकर्मविद्धत्त- विन्ती शकरैवतः ॥ भारदाजस्त विभेन्द्र ऋत्विक त्वं मे गले भव ॥ फलं दत्वा पूर्ववत्यूजनं ॥ अमुकगोत्र० यजमा-त्री नोऽहं० ॥ अमुकगोत्रं० त्राक्षणं सामवेदिनं त्वामहं पृणे व्रतोऽस्मि पाद्यं० यावत्कर्म समाप्यते तावत्त्वं सामवे ॥२६॥ ह्या दस्तकजापको भव ॥ अथवेविदिनं पृणुयात् ॥ वृहत्रेत्रोऽयर्ववेदोऽतुषुभो स्द्रदेवतः ॥ वेशंपायनविभेन्द्र ऋत्विक

र्वं में मखे भव ॥ फर्लं दत्वा पूर्ववत्युजनं ॥ अमुकगोत्र॰ यजमानोऽहं॰ ॥ अमुकगोत्रं॰ त्राह्मणं अथवेवेदिनं ै त्वामहं वृणे व्रतोऽस्मि पार्चं० यावित्कर्म समाप्यते तावत्वं अथर्ववेदसूक्तजावको भव ॥ ऋत्विक्वरणं ॥ भगव-न्सर्वधर्मन्न सर्वधर्मभृतांवर ॥ वितते मम यद्भेऽस्मिन् ऋत्वियस्यं भव सुन्नत ॥ फलं दत्या पूर्वचरपूजनं ॥असुकः गोत्र॰ यजमानोऽहं॰ ॥ अमुकगोत्रं॰ ग्राह्मणं ऋत्विजं वृणे ब्रतोऽस्मि पाद्यं॰यावस्कर्म समाप्यते तावत्त्वं ऋत्विक् भव ॥ अर्थ त्राह्मणप्रायना ॥ क्षमा तपोदयादानं सत्यं शोचं च संयमः ॥ विद्याविनयसंयुक्ता त्राह्मणा लोकः

अर्थ-अहो माहारायत्तमां आदेश दिनो तमो विद्यादि गुणोपे करि युक्तको. तथा सत्य श्रीमादिवे करि चालमायाळा छो तथा देवताओपर श्रद्धा राखनायाळा के तथा धर्म शासमां कहेला नांबमो पळनार को तथा संध्या स्तानादि बेदने मानवायाळा छो एम तमोने हुं मासुं हुं. तो हे भूमिदेवो ौ आ मारा कार्यमा श्रद्धारासी निर्वित परिपूर्णकीर आपनुं. आ प्रमाणे श्रह्मणोनी प्रार्थना अनेक प्रकारे कर्तीः

🌡 मुलिनो जनाः ॥ मुभीदेवास्त्र विभा वै त्रिषु लोकेषु विश्वताः ॥ अस्मिन्कर्मणि सर्वे वै सहायाः सन्त्र सर्वदा ॥ हुँ ब्राह्मणाः सन्छ मे शस्ताः पापात्पान्छ समाहिताः ॥ वेदानां चैव दातारः पातारः सर्वदेहिनां ॥ जपयञ्जस्तथा 🖁 होमैर्दानेश्च विविधेः पुनः ।) देवानां यितृणां चैव तृप्यर्थं याजकाः कृताः ।) येषां देहे रियता वेदाः पाव-🔯 🕺 यंति जगत्रयं ॥ स्त्रन्तु सततं ते मां जपयेत्रेव्यवस्थिताः ॥ ब्राह्मणा जंगमं तीर्थं त्रिपु लोकेषु विश्वतं ॥ तेषां 🞇 वाक्योदकेनैव शुप्यन्ति मिलना जनाः ॥ पावनाः सर्ववर्णानां नाह्यणा त्रह्यस्पिणः ॥ सर्वकर्मस्ता नित्यं वेद-शांचार्थकोपिदाः ॥ श्रोत्रियाः सत्यवादाश्च देवःयानस्ताःसदा ॥ यदाक्यास्ततसंसिक्ता ऋद्धियांति नरः माः ॥ अंगीकुर्वन्तु कर्मैतत्कल्पहुमसमाशिषः ॥ यथोक्तनियमेर्श्वक्ता मंत्रार्थे स्थिरबुद्धयः ॥यत्कृपालोचनात्सर्वाः ऋद्धयो वृद्धिमाशुद्धः ॥ मम यहे जपे प्रज्याः सन्तु मे नियमान्विताः ॥ अक्रोधनाः शोचपसः सततं त्रह्यचारिणः ॥

तारकाः ॥ यजनं याजनं चेव भ्ययनाभ्यापनं तथा ॥ दानप्रतिग्रहो होमः पद्कर्मीनिस्तः सदा ॥ त्रिकालसंध्या-इ करणे स्वाप्यायाचरणे तथा ॥ नानाशास्त्राभ्यासस्ताः संसारोच्छेद कारकाः ॥ भवदर्शनमात्रेण मुक्तास्तु भववंप-से नात ॥ अमिश्यश्रूपणस्ता धर्ममार्गे स्टब्रताः ॥ पस्दास्पस्तव्यपरानिदाचिवर्जिताः ॥ भवतां दर्शनेनेव श्रुख्यंति ह 🕫 🖟 🖟 देवच्यानस्ता नित्यं प्रसन्नमनसः सदा ॥ अदृष्टभाषिणः संतु मा सन्तु पर्सनेदकाः॥ ममापि नियमा होते भवन्तु भवतामपि ॥ इति संप्रार्थ्य ॥ त्राह्मणाः ब्रुखुः ॥ वयं नियमसंयुक्तत्र तव कर्तन्यतस्यराः ॥ कार्यं तव करिष्यामो

॥२७॥ ट्रीविधिपूर्वं न संशयः॥ कर्तव्या नी कियाशंका वेदाज्ञा हि गरीयसी ॥ वैदिका नहि वेदाज्ञां छप्यंति कदाचन ॥ ित्यदर्भीनं त्वया कार्यं निःशंकं श्रद्धयान्वितम् ॥ वयं सर्वं करिष्यामस्तव कार्यं न संशयः ॥ विभागार्थं कृतकृत्योऽहं सोभाग्योऽहं धरातले ॥ प्रसादाङ्ग्यतांविप्राः पवित्रोऽहं कृतोऽधुना ॥ मेरुमंदर्शुल्योऽहं भ 🗐 विद्रर्भतलेकृतः। यशोविस्तारि तं भेद्य लक्षीवृद्धिश्च मे कृताः।। अद्यमे पितरः स्तृप्ताः पवित्रं मे कुलं कृतं ।। दे-🎖 | विचानां प्रसादोअपि जातो में चैव निर्मलः ।। कार्यं कर्तुं न मे शक्तिनेंव दातुं च दक्षिणा ॥ न च प्रजाविः

भानं च नमस्कारं करोम्यहं ॥ शक्त्या सर्वं करिष्यामि यचनात भवतां ततः ॥ आशिर्यादाच सिद्धानां पूणे

🖾 सर्वं भविष्यति ॥ इति आचार्यादीन्संप्रार्थ्यं ॥ वैरणश्राद्धंक्रयीत् ॥ स्वपादी करी प्रश्नाल्याचम्य॥ अक्षतैर्दिग्वंषः॥ 🕺

श्रीचारादर्वश्रादम् ॥ परश्रुरामोक्तेः ॥ वर्षादिभ्यः समस्तेभ्य ऋत्भिभ्य इदमासनम् ॥ गंभेषुणं च भूपं च वरणश्रादे मकत्वपेत् 🕺

अर्थ-बाहरणोए नहेर्डु के तमी श्रद्धापूर्वक करोजे तो अभी शास्त्रमां कहेश नियमी पाळी सांग कर्म करामानुं. वळी यनमाने केहेंचुके हे भूदेवो! तमारा वित्य आपरानी क्रीह पण रीतनी मारी दाकि नथी पण ने माराशी बने तैमां न संतीप मानी दया राखी आदिवदि आपनी. हवे पूनेला याह्यणोर्नु वरण

देशकालपात्रान्नद्रव्यश्रद्धा संपदस्तु ॥ अद्येत्पादि० अमुकवारान्वितायां सांकत्येनविधिना वरणश्राद्धं करिष्ये ॥ गृहीत्वा ॥ आचार्यादिऋतिजाम आसनं संपन्नं सुसंपन्नं आचार्योदिऋत्विरम्यः यथादत्तं गंधाद्यर्चनं संपन्नं स्रसंपन्नं अर्चनविधेः परिवर्णतास्त दीपादीनां प्रदत्तानां इदं वो ज्योतिः सूज्योंतिः शेषोः पचारा विधिवद्भवंतु ॥ आचार्यादिऋतिरभ्यो अद्येहि मोजनं संपन्नं सुसंपन्नं आचार्यादिऋतिरभ्यो दक्षिणाः संपन्नाः ससंपन्नाः ॥ तिलकमाशिर्वादः ॥ कींतुकवंधनं ॥ येन वद्धो वली राजा दानवेदी महावलः ॥ तेन ओचारातु कंकण वंधनंपरं च भनिष्ये-दुर्वा यवाहरा श्रेव वारूकं त्रवक्षत्रवाः ॥ इस्त्रिह्यसिद्धार्थः शिखिपशे स्मत्वचः ॥ कंकणीपथय-वैताः कीतकारुवानव रम्ताः ॥ अथवा ॥ यवाङ्कर्मस्तथा दुवीः रार्पपान् गंधसंयुक्तन् ॥ गोमयं दिपसंयुक्तं कारयेत्तान्त्रधानने ॥ तन्नाननं क्सप्रेट घुत्वा मंत्रान पंटश्व मोक्षपेत ॥ श्राद्ध करत्रं, तेमां, पहेलापी यनगाने पोताना नेउहाथ वग बोह आवमनकरी पारदिशाए अक्षतनेरी पूजाना साहित्यने प्रोक्षण करी हंकरूप वस्वो तथा आसन मंत्र योजन दक्षणा विमेरे आपेन्री वस्तुओ तथा आपवाना वस्तुओनो संकृष्य करवो, तथा बाहरणे वनवानने जांनो हरी हरिये नाउ

यनपानपतीने साबाहाथे नार बांधवे.

स्वस्तियाचा॰ ॥ चतुर्षु दिश्वअवतान् विकीर्य ॥ आयांतु सांकलपेन विधिना वरणश्राद्धोपहासः पवित्राःसन्त

गंभदूर्वीपंचपछवफळ हेम पंचरत्नादीनि क्षिप्वा तहुपरि धान्यपूरितपूर्ण पात्रं निधाय तहुपरि नाल्क्ष्मिरं निधाय 🕺

11२४॥

स्वामपि वध्नामि स्त्रे स्त्र हिमाचल ॥१॥ मांगत्यतन्तुना येन भर्तुर्जीवनहेतुना ॥ हस्ते वध्नामि सुभमे हैं सजीव शरदः शतं ॥२॥ परनीवामकरे सूत्रं वध्वा सोस्यधनागमम् ॥ वहु संपत्ति मारोग्यं स्क्षार्थे कंकणं है शुभं ॥ इति कोंतुक वंधनम् ॥ अर्थं स्वस्ति पुण्याह वाचनम्॥ पूर्व संपादित कलशे वा वि-थाधारासीत्यादिपूर्वोक्तमंत्रैः कलरो पूर्णपात्रान्तं कृत्या ॥ ततः स्वात्रे धान्यराशौ कलरां संस्थाप्य ॥ सत्र

परमारीन ॥ ऋतिवं बरणं पूर्व बार्ष्यं पुण्याहवाचनाधिति ॥ अथ पंचीपचाराः ॥ गर्थ, पुष्प, भूप, दीप, नैवेध, इति पंचर्व ॥ पंचीपंचार-बाल्यातं पूजने तत्विकृ युपैः ॥ इति कमराकरे ॥ गुण्याहवाचनमृद्धी पूनीं च ॥ इति कारमायनः ॥ ऋदिश्वैव तु संस्काराः विवासताः अकी-

अर्थ-हेंने स्विक्षितापन करतुं तेमां पोताना सामी चोखानी दगडीकरी तेनापर कछत्र मुकी तेमां अगावीना पत्रमां कहेछा " विधाधारासीति " आरंभी

पूरा पात्र रुयोना मंत्री भणी क्ल्झना पदार्थ मूधावना तथा वरुणतो आवाहननी मंत्रभणी आवाहनकरी प्रतिष्टाकरी पंचीपचार्थी पुमन करीबर्चु.

वासिस वेष्टियत्वा ॥ कलशं स्पृष्टा ॥ आवाहयामि कलशं सप्तसागरसंस्थितम् सर्वलक्षणसंपूर्णं नदीनां च स-

र्तिवाः ॥ प्रविद्वीयापनादीनी पूर्व कर्म यथोचिवं.

दाः ॥ आयान्त यज्ञमानस्य दुरितक्षयकारकाः ॥ ५ ॥ अर्जुनी गोमती चैव चंद्रभागा सरस्वती ॥ कावेरी कृष्ण-वैषी च गंगाचैव महानदी ॥ ६ ॥ विषा वेत्रवती पूर्णाचर्मन्वती च वेदिका ॥ तापी गोदावरी चैव नर्मदा च मही ्रीतथा ॥ ७ ॥ पारासरी पयोष्णी च सरपु गरुकी तथा ॥ ज्वालेश्वरं महातीर्थं तीर्थं वाऽमस्कंटकम् ॥ ८ ॥ केदारंच 🎼 प्रयागं च युमुना सुरदीर्घिका ।। विन्यपादे च तीर्थानि श्रीपादे यानि तानि च ।। प्रभासं पुष्करं चैव नैमिपं🎇 🕍 च हिमालयं ।। ९ ।। शालियामं च गोकर्णं कुंभेर्रसम् संप्रतिष्ठितम् ॥ पृथिब्यां यानि तीर्थानि पाताले सन्ति 📳 🗱 यानि च ॥ १० ॥ तानि तिष्ठांति क्रंभेऽसिन्वरूणं कल्पयाम्यहम् ॥ गंगे च यमुनेचेव गोदावरी सरस्वती 🌠 🐉 ॥ ११ ॥ नर्मदे सिंधुकावेरी जलेस्मिन्सन्निधिं क्रुरु ॥ सर्वे समुद्रा सरित स्तीर्थानि जलदानदाः ॥ १२ ॥ 💸 ्री जायान्त पंजमानस्य द्वतित क्षयकास्काः ॥ वृषारुढा संरोजाक्षा पद्महस्तां क्रजेक्षणा ॥ १३ ॥ आयान्त

कुळाहिदेवानां दानवानां तथैव च ।। कळापि सकळा श्राह्मा सीम्य मांगल्य कर्मण ।। ३ ॥ वळा हि कळाहिदेवानां दानवानां तथैव च ।। कळापि सकळा श्राह्मा सीम्य मांगल्य कर्मण ।। ३ ॥ निर्मितोऽयं तदा है तत्र कळरां तेन उच्यते ॥ रचितं विश्वरूपेण कळरां कामरूपिणम् ॥ ३ ॥ सर्वे समुद्रा सस्तिस्तीर्थानि जळदान-

देवी कूर्म वाहन गासदा ॥ प्राची सरस्वती प्रण्या तथा मंदाकिनी परा ॥ १२ ॥ एतानद्यश्र तीर्यानि ग्रह्मक्षेत्राणि सर्वेशः ॥ तानि सर्वाणि क्रंभेस्मिन्विशंतु ब्रह्मशासनात् ॥ १५ ॥ तीर्थान्यावाह्य ॥ अंतरान गृहीत्वा ॥ प्रतिष्ठासर्व० अस्मिन्कलरो वरुणः सुप्रतिष्ठितो वस्दो भव ॥ प्रतिष्ठान्ते प्रजनं अस्मिन्कलरो वरणाय नमः नंधंस॰ अस्मिन्कलरो वरुणायनमः पुष्पं स॰ अस्मि॰ वरु॰ धूर्वं स॰ अस्मि॰ वरु॰ दीपं स॰ अस्मि॰ नरु॰ नेवेद्यं स॰ अस्मिन्कलरो सुशोभनाथें सौभान्यदृज्याणि स॰ अनेन पंचोपचौरेःपूजनेन वरुणः पीयतां इस्ते

पुष्पं गृहीत्वा ॥ प्रार्थपेत् ॥ कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे स्द्रः समाश्रितः ॥ मुले तस्यस्थितो ब्रह्मा मध्ये मानुगणा स्मृताः ॥ १ ॥ इस्तो च सागराः सप्त सप्त दिपा वस्तंथरा ॥ ऋगवेदोऽय यज्ञरेंदः सामवेदो हाथर्वणः ॥ २ ॥ अंगै-

श्रसहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः ॥ शंखरफटिकवर्णामः श्वेतहाराम्यराव्तः ॥ ३ ॥ पाशहस्त महावाहो द्यां क्रुरु दयानिधे ।। पाशपाणे नमस्तुभ्यं पद्मिनी जीवनाय च ॥ पुण्याहवाचनं यावत्तावत्त्वं सुस्थिरो भव

॥ ४ ॥ नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय शुश्चेतहाराय समंगलाय ॥ सुपाशहस्ताय झपासनाय जलाघिनाथाय नमो नमस्ते ॥ वरुणाय नमः प्रार्थनापूर्वकं नमस्कारं समर्पयामि ॥ मातृदेवो भव पितृदेवो भव ॥ आचार्यदेवो 🖇

ै एवं वारत्रयं कृत्वा ॥ कलशं भूमी स्वस्थाने संस्थाप्य ॥ ब्राह्मणानां हस्ते सुत्रोक्षितमस्त्र ॥ शिवा आपः संत्र ॥ तत्र वेदस्यासः ॥ संदुच्य गंगपाल्यानैह्योग्रणान् स्वस्ति वाचपेत् ॥ धर्यकर्माण पांगल्ये संधायेऽ झुतदकीने ॥ १ ॥ पुण्याह्वाचनं देवे 🏅 ब्रामणस्य निधीयते ॥ ऑकारपुर्व निमस्य भवेरपुण्यास्त्राधर्म ॥ एतदेव निर्सेकारं कुर्यात् क्षात्रवैष्ठयोः ॥ उपांतु च तथा वैद्ये स्वस्ति ह्युहे च नार्षेत् ॥ स्याप्येद्भणं क्वंमं पंचपरलबर्तयुतं ॥ पंचरत्नसमायुनतं युम्मवक्वेण वेष्टितं ॥ संग्रत्न पाणिनाचार्यो वाचयेत्स्वस्ति वाचनम् ॥ 🖒 🌣 ब्राचार्यक्रक्षणं 11 तहारीणतः मञ्जमतिवचनरामधीनः तिर्वते आद्धादिष्वभुवतवन्तोः निषिद्वमतिग्रहनिवचान्तः कर्णाच्छवि सोचरीया-स्दर्भ परितपाणियुमान् व्यासणाः सुदृष्ट्रमुखान् आसने उपविश्व ॥ गुर्वादीकत्वातत्वकळशहरताभ्यायादाय आक्रिपः मार्थपेत् ॥ ३ ॥ एवं सर्वत्र िं यजपानवचनोत्तरं घादाणाः मतिवचनं दद्यः ॥ अथे-पंचेपचार पूननकरी हापमा फूल्टर प्रार्थनाकरी नमस्कारकरवो पत्री धनपानना हायमां कंक्र यात दरीह आपी बेगोठणपृथ्वीने अडकाडी, अपे-पंपेषभार धूननकरी हापमा फूल्टर प्रार्थनाकरी नमस्कारकरने पडी धनपानना हाययां कंक मात दरोह आपी बेगोठणपूर्वाने अहकाडी, उभल्टना नेक ने हाप एकत्र वरी कटराने पोतानामाथे अहकाडी राखते.( पडी ते कटरा मांपे तथा एथ्यीपरत्रगव्यवत अङकाडचे )( एकटीडे.) फलटरामीचे तूनी पाडा स्थरनेती नार ब्राध्याना हाथमां नदन फूल जोला पान सोपारी दक्षिणा आपी पती पाणी आपतुं.

्री मुद्री पाठा स्थरपंक्ती चार ब्राह्मणना हाथमां चदन फूल जोखा पान सोपारी दक्षिणा आरी फरी पाणी आपतुं.

भव ॥ अतिथिदेवो भव ॥ आशिषः प्रार्थयन्ते ॥ अैवनि कृत.ञानुमंडलः कमलमुक्कलसदृशमंजलिं शिरस्याधाय 🔀 दक्षिणेन पाणिना सुवर्णपूर्णं कलशं धारयित्वा ॥ दीर्घा नागा नद्यो गिरयस्त्रीणि विष्णुपदानि च तेन आणुः 🕏 🐉 प्रमाणेन पुण्याहं दीर्घमायुरस्वितिभवंतो ब्रुवन्तु ॥ इति यजमानः ॥ पुँण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तुइति द्विजाः ॥

बिट्को र ैं संज शिवा आपः सोमनस्यमस्त ॥ अस्त सोमनस्यं ॥ अक्षतं चारिष्टं चास्तु ॥ अस्त्वक्षतमरिष्टं च ॥ मधाः पांछ 🐉 सौमंगल्यं चास्त्वितिभवंतो द्ववन्तु ॥ गंघाः पांतु सौमंगल्यं चास्तु ॥ एवं सर्वत्र ॥ असताः पांतु आयुष्यमस्त्वि० 🥻 ॥६०॥ 🎖 अक्षताः पांडआउष्यमस्त ॥ पुष्पाणि पांड सीश्रियमस्त्विति० पुष्पाणि पांच सीश्रियमस्त्र ॥ तांबुलानि पान्ड 🐉 र्वे ऐश्वर्यमस्त्रिति॰ तांबुलानी पान्तु ऐश्वर्ष मस्तु ॥ दक्षिणाः पान्तु बहुधनमस्त्रिति॰ दक्षिणाःपांतु बहुधनमस्त्र ॥ 🕏 पुरनत्राः पान्तु स्वर्वितमस्वि॰ पुनरत्राः पान्तु स्वर्वितमस्तु ॥ यजमानो आचार्यादीन् प्रणम्य श्रीर्येशो विद्या विनयो वित्तं बहुपुत्रं चायुष्यं चास्त्वि॰ श्रीर्यशो विद्या विनयो वित्तं बहुपुत्रं चायुष्यं चास्तु ।। अनेन यजमानमूः 🖔

र्प्न्यभिषिंचेयुः।विकत्वा सर्ववेद यज्ञक्रिया करणकर्मारभाः प्रवर्तते॥ तमहर्मोकार मार्दिकृत्य। ऋग्यज्ञः सामाशीर्वचनं र्नतिष्ठासंत्रहे ॥ अपां मध्ये स्थिता देवाः सर्वे चाच्छ प्रतिष्ठिताः ॥ ब्राह्मणानां करे न्यस्ताः विचा आपो भवन्तु नः ॥ १ ॥ रुह्मीर्यसिति पुष्पात्रे स्क्योविसति पुष्करे ॥ सा मे यसतु नै नित्यं सौपनस्यं तथास्तु नः ॥ २ ॥ असतं चास्तु मे पुष्पं दीर्घमायुर्गको वर्ल ॥ यसप्रदेवस्करं 🕺 कोके तचढ़स्त सदा गम ॥ ३ ॥ वदो अपरे ॥ अरिएमशुमे तके सुविकागार आसवे शुभे मरणिचन्द्रेध्यिति मेदिनि ॥ H३¢H

अप्-यंज्ञपाने आवेद्धं वाणी यज्ञपाननः पायापर डांटबुं, तथा असतल्ड यज्ञपानपत्नीना तथा यज्ञपानना खोळामां मंत्री भणीनांतना ॥

बहुन्तरिमतं समनुज्ञातं भवद्गिस्नुज्ञातःपुण्यं पुण्याहं वाचिष्वे॥वाज्यतां ॥ इति तैरुक्ते शवाह्मणानां हस्ते अक्षताच दयात्॥तेचाशिषोदद्युः॥यजमानः॥माविष्ठं माच मे पापं मासन्ज परिपंथिनः॥सौम्या भवन्ज सुस्तिनः सर्वेठोकाः सु स्वावहाः ॥ इति क्तो वदेत ॥ विप्रास्त्रथास्तिवत्युक्तता ॥ क्षेत्रेज स्वस्ति ते ब्रह्मा स्वस्तिचापि द्विजातयः ॥ सरी-भूपाश्च ये श्रेष्ठास्तेभ्य स्ते स्वस्ति सर्वदा ॥ १ ॥ ययाविर्नहुप श्रेव धुन्धुमारे भगीरथः ॥ तुभ्यं राजर्षयःसर्वे 🔀 स्वित्ति क्र्वेन्तु नित्यशः ॥ २॥ स्वस्ति तेऽस्तु द्विपादेभ्य श्रतुष्पादेभ्य एव च ॥ स्वस्त्यस्तुपावकेभ्यश्च सर्वेभ्यः स्वस्ति सर्वदा ॥ ३ ॥ स्वाहा स्वया शचीचैव स्वस्ति क्रवन्तु ते सदा ॥ रूक्मी रुज्यती चैव करुतां स्वस्ति तिक्रमच ॥ ४ ॥ असितो देवलञ्जैव विश्वामित्रस्तथांगिरः ॥ स्वस्ति तेऽद्यःप्रयच्छन्तुः कार्तिकेयश्च पण्मुखः 🕎 ।। ४ ॥ विवस्वान् भगवान्स्वस्ति करोछ तब सर्वशः ॥ दिग्गजाश्चेव चत्वारः क्षितिश्च गगनं ग्रहाः ॥ ६ ॥ अधस्ताद्धरणी योऽसो नागो धारयते सदा ॥ शेपश्च पन्नमश्रेष्ठःस्वस्ति तुभ्यं प्रयच्छतु ॥ ७ ॥ इति वदेखुः ॥ 🕌 ( इत्येता ऋचः प्रण्याहे ब्र्यात) व्रत जप नियम तप स्वाप्याय ऋतु दया दमदान विशिष्ठानां सर्वेषां ब्राह्मणा-अनां मनः समाधीयतां ॥ समाहितमनसःस्म इति ब्रिजाः ॥ प्रसीदंतु भवंतः श्रसन्नाः स्मः ॥ शांतिरस्तु ॥

बि॰ क्री॰ 🖟 अस्तुं शांतिः इति द्विजाः ॥ प्रतिबचनं सर्वत्र दृद्धुः॥ आस्त्रित्युक्ते क्रंभाज्यकं पातृयेत्॥ पुष्टिरस्तु ॥ तुष्टिरस्तु ॥ वृद्धिरस्तु ॥ अवित्रमस्तु ॥ आखुष्पमस्तु ॥ आरोग्यमस्तु ॥शिवं कर्मास्तु ॥ कर्मसमृद्धिरस्तु ॥ धर्मसमृद्धिर 🕺 रखुँ ॥ शास्त्रसम्बद्धिरस्तु ॥ धनधान्यसमृद्धिरस्तु ॥ पुत्रपोत्रसमृद्धिरस्तु ॥ इष्टसंपदस्तु ॥ अरिधनिरसनमस्तु॥ युत्पापं रोगमश्चभमकर्त्याणं तहूरे प्रतिहत्मस्तु ॥ यच्छ्रेयस्तदस्तु ॥ उत्तरे कर्मण्यविष्नमस्तु ॥ उत्तरेत्तरमहरहर-भिरुद्धिरस्तु ॥ उत्तरोत्तरः क्रियाः शुभाः शोभनाः संपद्यताम् ॥ तिथि करण सङ्दर्गनक्षत्र ग्रहरूत्रसंपदस्तु ॥ तिथि कर्ण मुहूर्तनक्षत्रग्रह लग्नाथिदेवताः त्रीर्थताम् ॥ तिथिकरणे समुहूर्ते सनक्षत्रे समहे साधिदैवते त्रीयेताम् ॥ अभिपुरोगा विश्वेदेवाः श्रीयन्ताम् ॥ इन्द्र पुरोगाः मरुद्रणाः श्रीयन्ताम् ॥ माहेश्वरीपुरोगा उमामातरः शीयन्ताम्॥ अरु-पंतीपुरोगा एकपत्यः शीयन्ताम् ॥ विष्णुपुरोगाः सर्वेदेवाः शीयन्ताम् ॥ ब्रह्म पुरोगाः सर्वे वेदाःशीयन्ताम् ॥ यत्रीयि जीनकेन व्यक्तिस्तरपादीनि पंचदञ्ज नचनान्युक्ताति ॥ सथापि प्रयोगस्तमदी ॥ अधिकान्यपि दृश्यते ॥ तद्वसुसारेणात्र लिखितानि ॥

अस्त्वितसमये पात्रमध्ये नलपोचनं कार्या<sup>प</sup>न्दुक्तं प्रयोगचूडायण्ये ॥ पात्रे सुंचंति अस्तिसंचुनिरसनं दिवारं पश्चिमेत्युक्तं ॥ प्रयोगचूडायणी रू शामिरस्तिवि त्रिश्लांताः अन्दाः पंचद्रीय हु ॥ संस्कारभास्करे ॥ गीपतां वानयपाटितेष्द्रकस्य निपयनम् ॥ अर्थ-देशितरस्त्रणी आरम वरीने " अविध्यस्त " असी ल्पीना वाक्यो घोलता अर्दने बलकात पाणि पश्चिमदिकामा नारत्यु ।। वैपरना प्रीयता

वास्यो बोडता नई तरमाणामा पाणी नासर्व ॥

🙎 सिद्धिकरी प्रीयताप् ॥ भगवती प्रष्टिकरी प्रीयताम् ॥ भगवती द्वष्टिकरी प्रीयताम् ॥ भगवन्तौ विन्नविनायकौ 🏗 शियेताम् ॥ सर्वाः कुरुदेवताः शीयन्ताम् ॥ सर्वाः ग्रामदेवताः शीयन्ताम् ॥ हेताश्च ब्रह्मद्विपः हृताश्च परिपंथि-्रै नः ॥ हैताश्च विष्ठकर्तारः ॥ शत्रवः पराभवं चान्त्व ॥ शाम्यन्त्व घोषाणि शाम्यन्तु पापानि शाम्यन्त्वितयः ॥ 🗜 धुमानि वर्छन्ताम् ॥ शिवा आपः सन्तु ॥ शिवा ऋतवः सन्तु ॥ शिवा ओपवयः सन्तु ॥ शिवा नद्यः सन्तु ।। सिवा गिरयः सन्त ।) शिवा अतिथयः सन्त ॥शिवा अमयः सन्त्त॥ शिवाऽक्रूतयः सन्त ॥ अहोरात्रे शिवे स्थाताम् ॥ श्रुकांगास्कञ्जभवृद्दस्यति शनिश्चर राहु केन्त सोमसहित आदित्यप्रसेगाः सर्वे म्रहाः प्रीयन्ताम् ॥ नारायणः त्रीयताम् ॥ भगवानः पर्जन्यः त्रीयताम् ॥ भगवाच स्वामीमहासेनः🌣 हेतान जन दिपेत्मदीनां शाम्यन्तिवत्यंतानां पूर्वस्यां जलमसेपणोक्तः प्रयोगचुडामणी ॥

हतौथ मसदिप अहिथे आरमे शास्यन्त रुगीना गरुयो बोरी आरमनीवर्ता पूर्वमा पाणी नासञ्ज ॥ तेमा हताश्र्यथी ते शास्यन्त पापानि रुगीना

पार्थात अळ नीने माखब ॥

्रैं वसिष्ठपुरोगा ऋषिगणाः श्रीयन्ताम् ॥ त्रहा च बाह्मणाञ्च श्रीयन्ताम्॥ श्रीसरस्वत्यौ श्रीयेताम्॥ श्रद्धामेधे श्रीये-ैं ताम्॥ भगवती कात्यायनी श्रीयताम्॥ भगवती माहेश्वरी श्रीयताम्॥ भगवती ऋद्धिकरी श्रीयताम्॥भगवती भीवेदचुसोद्भवेत्रित्यं तत्पुण्याहं ब्रुवन्तु नः ॥ भो त्राह्मणाः मह्यं सञ्चद्धिनने महाजनान् नमस्त्र्वीणाय आशीः

🕺 प्रीयताम् ॥ पुण्याह् कालान् वाचियिष्ये इति यजमानः ॥ वाच्यतामिति क्रिजाः ॥ दीयते यत्र दानानि प्रजान्ते 🚦 च द्विजातयः ॥ दृश्यते यत्र मांगलयं तरपुण्याहं सदाऽस्तु मे ॥ त्राह्यं पुण्यं महर्यच्च सृष्टग्रत्पादनकारकं ॥

विचनमपेक्षमाणाय ग्रहयद्वारव्यस्य कर्मणः पुँण्याहं भवन्तो ब्रबन्तु ॥ अस्तु पुण्याहं ॥ एवं वचनं प्रतिवचनं 🎙 च त्रिवारं सर्वेत्र पठेत् ॥ स्कण्डस्नुतुराखुर्यत् ध्रुवस्त्रोमशयोस्तथा ॥ आखुपा तेन संयुक्ता जीवन्तु शरदः र होन भागनते॥पुण्यद्वादिभिरभ्यास भेत्रकृषोर्थ्वनिस्वनैः ॥ पुण्यं कत्याणद्वद्धिश्च स्त्रस्ति श्रीपादि पंचकम् ॥पणवाद्यं त्रिराच्छे भवत्पूर्व भवन्त्विति ॥ मत्युक्तविषये भैपक्षिमारं स्मस्तिरित्यतः ॥ उदाचानुदात्तस्यारितश्चेति ॥ मंत्रोहीनः स्वरतो पर्णतो वा पिथ्या मयक्ती नतमर्थपाड ॥

हेकुदुन्त्री, अर्शार्वादनी इच्छाबाळो तथा महात्वात्रोने नमबाबाळो एवो ने ई ते मारे अर्थे हे ब्राह्मणो ! तमो पुण्यकारी दिवस कहो, एम यसपाने अण क्तत क्यापी ब्रासमोए त्रण क्तत प्रण्यकारी दिवत पाओ तेम कहेतुं, ए प्रमाणे मार्ह करवाण पाओ, मारे घेर कादि क्यो, मने स्वस्ति अप्तास थाओ, 🕺

विषा श्री प्राप्त याओ एनररेक वानयो वभवानना कह्मापत्री प्राक्षणोए प्रण बसत हरून दीर्च अने प्कुत उद्यारपी बाह्मणोए अस्तु शब्द पूर्वक कहेवाँ.

स वाग्वन्तो यनमानं हिनस्ति यन्यद्रसञ्जन्तरोऽपराधात् ॥ इति शिक्षायाप् ॥

पुण्याहं भवलो जुवन्तु ए प्रमाणे कस्याणं० प्रसिद्ध० स्वस्ति० श्रीरस्तु० ए पाचे पत्नत् यनपाने बोछसं ॥

ારજા

113311

🔐 हाणाः महां॰ अस्य कर्मणः कल्याणं भवन्तो हुवन्तु ॥ ३ ॥ कल्याणं एवं प्रवेवत् त्रिः ॥ प्रजापतित्ञांकपालो 🔐 घाता ब्रह्माऽच देवराद्राभगवाच्छाश्रतो नित्यं स नो रक्षतु सर्वदा॥सागरस्य तु या ऋद्धिर्महालक्ष्म्यादिभिःऋता ॥ 🕌 👸 संपूर्णा पूर्णचन्द्रेपा तामृद्धिं च ब्रुवन्तु नः ॥ भो बाह्मणाः महां० अस्य कर्मणः ऋष्टिं भवन्तो ब्रुवन्तु ॥ कर्म 🎇ऋयताम् । एवं ज्ञिः ॥ ३ ॥ आयुष्मते स्वस्तिमते यजमानाय दाशुपे ॥ क्रियास्त्राशिपः सन्तु ऋत्विण्मिर्वेद-👭 🖁 पारंगेः।।स्वस्ति या चाविनाशास्या पुण्यकत्याणवृद्धिद्या। विनायकिशया नित्यं तां च स्वस्ति ब्रुवन्छ नः।।भो बाह्मणा 👸 🖁 महां०अस्मै कर्मणे स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु।।आयुष्मते स्वस्ति।एवं त्रिः।।समुद्रमथनाष्नाता जगदानंदकारिका।हरिः 🍪 🕍 प्रिया च गांगत्या श्रियं तां च बुवन्तु नः ॥ भो ब्राह्मणाः मह्यं अस्य कर्मणः श्रीरिस्विति भवन्तो ब्रुवन्तु अस्तुश्रीः 🐉 📲 तिलकं कृत्वा ॥स्वस्ति या चाविनाशारूया धर्मकल्पाणवृद्धिदा ॥ विनायकप्रिया नित्यं तांच स्वस्ति ब्रुवन्छ नः।। 🕍 अस्मिन्पुष्याहवानने न्यूनातिरिक्तो यो विभिः स उपविष्टत्राह्मणानां वचनात् श्रीमहागणपतिप्रसादाच सर्वः 📳

शितम् ॥ पृथिव्यासुरता यान्छ यत्कयाणं पुराकृतं ॥ ऋपिभिः सिद्धगंधर्वे स्तत्कस्याणं डवन्छ नः ॥ भी त्रा-

बि॰कौ॰ भेषिपूर्णोऽस्त ॥ अरबुपरिपूर्णः ॥ अथाभिषेकः ॥ अभिषेके पत्नी वामतः॥ एकस्मिन्पात्रे वरुणादकं गृहा- 👸 🖺 ैत्वा अविधुराश्चतारो ब्राह्मणाः दूर्वोऽप्रपछवैर्यजमानमिभिषेचेयुः ॥ सुसस्त्वामाभिषेञ्चन्तु ब्रह्मविष्णुमहेश्वसः ॥ 🕏 वासुदेवो जगन्नायस्तथा संकर्पणो विभुः ॥ १ ॥ प्रद्युमश्रानिरुद्धश्र भवन्तु विजयाय ते ॥ आर्लंडलोऽमिर्भ- 🕺 117311 मैंबान्यमो नै वरुणस्तथा। २ ॥वरुणः पवनश्चैव धनाष्यश्वस्तथाशिवः ॥ ब्रह्मणा सहिताः सर्वे दिक्पालाः पान्छ 🙎 ति सदा॥३॥कीर्तिर्रुक्मीर्धतिमेघा पुष्टिः श्रद्धा किया मतिः॥ बुद्धिरुद्धा चपुःशांति स्तुष्टिः कांतिश्च मातरः॥४॥ 🖔 एतास्तामभिषिचंतु धर्मपरन्यः समागताः ॥ आदित्यश्रंद्रमा भौमो बुधजीवसितार्कजाः॥ ५ ॥गृहास्त्वामभिषिच-ैं। न्दु राहुकेतुश्च तर्विताः।।देवदानवगंधर्वा यक्षसक्षसपन्नगाः।।६।।ऋपयो मुनयो गावो देवमातर एव ना। देवपरन्यो 😽 द्वमा नागा दैत्याश्चाप्सरसां गणाः ॥ ७ ॥ अस्त्राणि सर्वशस्त्राणि राजानो वाहनानि च ॥ औपधानि च 🖔 แรงเ

? सब्बे पस्ती त्रिपुरयाने पितृणां पादफूनने ॥ स्यस्थारोहणे चैत्र ऑभेपेके विसर्जने ॥

र स्वस्ति वाचन थया प्रक्री यनमनाने किटक करी पूजी यनमान पत्नीने यनपाननी डाची थानूए बेसाडी स्वस्ति याचनना कळदामांथी पाणी रुई आंबाना

ूँ पांचानडे मंत्रो मणी चार बाहाणीए दंवतीपर प्रोक्षण करखुं ॥ ए धमाणे अभिषेक्ष थया पछी यज्ञवाने योताने स्थाने मेक्षी बाह्मणीने दक्षिणा आपनी ॥

श्विष्य मुर्धनि ॥ छलाटेकर्णयोरस्लोसपस्तु ब्रंह्य भेपजम् ॥ १२ ॥ इत्यभिपेकः ॥ तत्र क्रंडमंडपपक्षे आर्चार्यः ॥ |ँ||अदोत्पादि॰ मम संकल्पोक्तास्ये कर्मणि मंडवङ्गंडादीनां प्रोक्षणार्थं च रत्तार्थं दिग्रक्षणं पंचगञ्यकरणं करिष्ये 🕏 श्रीइतिसंकल्य ॥ पूर्ववत दिग्रश्नणादि कृत्वा मंत्रेः श्रोक्षणं क्वर्यात् । अद्येत्यादि॰ करिष्यमाणकर्मनिमित्तं वर्धनी 🎇कलशस्थापनपूर्वकं पूजनं करिष्ये ।। इति संकल्प ।। कलशस्यापनमंत्रेः वर्धिन्योपरि पूर्णपात्रान्तं कृताः जियेत ॥ वर्षिन्ये नमः ॥ गंधं० पुष्पं० भूपं० दीपं नेवेद्यं० एवं पंचोरचारान् कृत्वा ॥ वर्षिनीकृळशं धर्थ-केड मडद क्वीहोयदो तेतुं रक्षण तथा प्रीक्षणमारे दिग्रक्षण तथा पंचगच्य करणनो संकलकरी पत, ८ प्रमाणे करावर्तु, ैप्रीक्षण विगेरेकची पड़ी वॉर्डिनीकशल स्थापनमा मनो पन २३ मा प्रमाणे करी पूना नार्थना करी दुम्पतीय कलग्राहाथमां एड मंडपनी प्रदक्षिणा

दित आहणीए पंत्रभणता आवी पश्चिम द्वारतं ययोक पुननञ्दी ग्रंडरप्रवेश करने तथा इशान दिशामा बोखातं ''खामणुं'' करी कछश मुकी नमस्हार है पूर्वक प्राप्ति। करणे.

्रे पूर्वक प्रार्थना करवी. े

सनानि कुळस्यावयबाश्च ये ॥ ८ ॥ सस्तिः सागराः शैलास्तीर्थानि जळदा नदाः ॥ एते स्वामीभिष्वंत्र | सर्वकामार्थसिद्धयेगशासहस्राक्षं शतथारं च ऋपिभिः पावनं कृतं॥तेन त्वामभिर्पिचापि पावमानं पुनन्तु ते ।। १० ।। 🔯 🐉 भगं ते वरुणो सजाः मगं सूर्यो बहरपतिः। भगमिदश्च वायुत्र्य भगं सप्तर्पयो ददः।।११।।यत्ते केशे च दीभीग्ये सीमंते 🕼

मंत्रनिर्घापसुवासिनीर्गातवाद्यिनःस्वनैः ईशानभागे असताष्ट्रदरोपि वर्धिनीं संस्थाप्य प्रार्थयेत् ॥ मृन्मिय त्वं महाभागा सदा तीयोंदकान्विता बर्द्धनी त्वं जगन्माता भव त्वं कुरुवर्द्धिनी ॥ तव तोयेन कलशान्युजार्थे पूरवाम्यहम् ॥ इति श्रीजयानंदात्मज 🕏 NESH

मूलशंकरसर्मणा विरनितायां विवाहकोसुद्यां पुण्याहवाचनांतप्रयोगः ॥ ॥ अथ मंद्धपप्रवेद्गः ॥ सह मङ्गलवाद्यघोपेश्र सह गोधमग्रडलवणदीपादिभिः सहितः दृशपुत्रसेत्रादिसमेतः स्रशङ्गनमृचिताभ्युद्यः सपत्नीको यजमानो दुर्वाम्रपङ्गवनालिकेरादियुतं जलपूर्णं कल-अर्थ-हैव पडी भड़पप्रदेश करनो-सुवासिनी मंगलपानित्र शांति पाठ भगता मालगो तथा मंगल द्रन्यादि एर कर्ना खी पुरुष पुत्र पीत्रादिये परिपुत्त थर, नेमा दरोह आवाना पातरा नार्रकेर गुकेंद्र हे एवा नरु प्रस्ति कुंभ रुह भंदपनी प्रदक्षिणा करी मंदपना पश्चिमद्वार अगाडी उभा रहेर्नु, प्रश्नी संकल्प करी उमरानिः टेकांगे कुंकुमनो यन कारी तेना परिवृत रेहेला देवताओर्त स्थापन तथा पंनीपनारे पूजन करतुं. पत्री किरोने नाहाकरनारा भंती भणी पोतानुं जनमुं अंग मथनथी अंदर एसी करे एसी रीते प्रदेश करनी क्षण परनीना इत्यमां रहेली कुंम इशान्य दिशामांअक्षत मुकी मुक्तवो, एने मंडप प्रवेश नहेंने

🧖 अधना बास्त करी नवा गृहमां प्रवेश करवी होय तो एवी रीतेज करी गृहमां प्रवेश करसे श

🎇 सिंधुकावेरी जलेऽस्मिन्सान्निधि करु ।। इति मंत्रेणांक्रशमुद्रया तीर्थान्यावाद्य पुष्पाणि निर्विषेत् ।। असुरान्तकच-🎇 🕯 ऋप नमः ॥ इति द्वारमभ्युस्य ॥ इस्ते अक्षतान् गृहीत्वा ॥ ऊर्ध्व द्वारिश्रेये नमः॥द्वारपीटस्य मध्ये देहत्यां वास्तु-🕼 🔭 पुरुषाय नमः ॥ दक्षिणशासायां गंगाये नमः ॥ वामशासाया यमुनाये नमः ॥ दक्षिणे शंसनिधये नमः ॥ 🖓 ्रीवामे वज्ञनिषये नमः ॥ द्वास्त्य चतुष्कोणेषु आग्नेथ्वाद्युष्वोंघः क्रमे ॥ आग्नेयां गणवतये नमः ॥ 🐒 निर्ऋत्यां दुर्गीये नमः ॥ वायव्यां सस्वत्ये नमः ॥ ऐशान्यां क्षेत्रपाळाय नमः ॥ द्वारश्रियाः शावाहितदेवेम्यो नमः ॥ सक्षीरजलेन स्नानं समर्पयामि ॥ दारिश्रयाद्या०गेषं० ॥ दारिश्रयाद्या०पुर्णं० ॥ इतिहेवेम्यो नमः सर्वोपचा-द्वारिश्रयाद्या० पूर्पं०॥ दारिश्रयाद्या० दीपं०॥ दारिश्रयाद्या नैवेद्यं० ॥ दारिश्रयाद्यावाहितदेवेम्यो नमः सर्वोपचा-

्रिं गृहीत्वा ॥ मंडपं प्रदक्षिणीकृत्वा। पश्चिमद्रारे स्थित्वा द्वारशाखां प्रज्ञयेत ॥ अग्रेत्यादि० तियौ मम सकले । श्री प्रतिद्धवर्थ मंडपप्रवेशांगभूतं द्वारशाखाधिष्ठातृदेवतानां प्रजनमहं करिष्ये ॥ तद्यथा ॥ देहत्यग्रतः कुंकुमादिना

त्रिकोणं तदुपरि वृत्तं तदुपरि चतुरसं गंडलं कृत्वा ।) तत्र असुसन्तकचकाय नमः।) इति मंत्रेण प्रक्षालितं ताम्राः है दिपात्रं स्थापयित्वा कृष्णाय नमः इदयाय नमः इति जलं प्रस्येत्।।तत्र गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।।नर्मदे है ुं आगच्छ भगवन रह कुण्डेरिमन्संक्रियो भवशस्त्र इहा गच्छ इह तिष्ठ ॥ स्द्राय नमः स्द्रमा० ॥शायोन्यां ॥ सेवंते महर्ती योनिं देवर्षिसिद्धमानवाः ॥ चत्रस्शीतिलक्षणां पन्नगाद्याः सरीसूपाः ॥ १ ॥ मनोभवयुता देवी 🖟

रतिंसीस्यप्रदायिनी ॥ मोहयन्ति सुरान् सर्वान् जगद्धात्रि नमोऽस्तुते ॥ गौरीह्यगुच्छ इह ति० गौर्ये० ॥ जीवनं सर्वे जन्तनां सुगादिस्थानसुत्तमम् ॥ उत्तमाङ्गस्रुचाधारं कण्ठमाबाह्याम्यहम् ॥ कण्ठ इहाग्रच्छ

ंइह तिष्ठ ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणं आ० ॥ अधोमेखलायां जुष्णवणालिज्ञताया ॥ गंगायर महादेव द्रपारूढ महेश्वर

कर्षमात्राणि ।। अस्याणि व्याजामुष्टिभिया मताः ॥ अस्रं ग्राससमे शावं शाक्तं ग्रासार्पमात्रकं ॥ मुलानान्तु त्रिभागं स्याक्तंदानाम्द्रमांसकः ॥

इसोः वर्षममार्ग स्वाहंगुरुद्वितयं कता ॥ मादैसमानाः समियो निर्मणामंत्रके समां ॥ तिलक्षमतुन्तणादीनां मृगिमद्राप्तमाणतः ॥ पत्रपुष्पकः

ति॰ कष्ठाय॰ ॥ पद्माकाराथवाकुण्डे सदशाकृतिसंयुता ॥ आधारः सर्वकुण्डानां नाभिमावाहयाम्यहम् ॥ नाभि 🕺 इहागच्छ ।। इह तिष्ठ ।। नाग्ये० ।। नैर्ऋते ।। अज्ञानातज्ञानतो वापि दोपाः स्युः लन्तनोद्धवाः ।। नाशप

-विद्रष्याणि सुवेण समियो पूछ्जोद्वर्यगुर्छ विद्राय मध्यमानामिकागुष्ठै जेतुषात् ।। यहं प्राससमं पाणिनैव जुतुपात् ।। आङ्वं सुवेणैव ॥ सुनायार्वे यज्ञीयक्शापणेन ॥ सिद्धांतशेसरे ॥ क्षेप्रमाणभाव्यं स्यात् पश्च सीरे च तत्समं ॥ तण्डलानां श्रुक्तिमानं पायसं प्रश्नुतिसमं ॥

सारीमां मणजारविद्यमवे ॥

॥३वस

| |अदितान् सर्वान् निथकर्मत्रमोऽस्तु ते।।विथकर्मत्रिहागच्छ इह तिष्ठ निथकर्मणे॰ विश्वकर्माणमा० कुण्डनेकीते ॥ 🎇 |आवाहयामि देवेशं वास्तुदेवं महाबलम् ॥ देवदेवं गणान्यक्ष पातालतलवासिनम् ॥ वास्तुपुरुष इहागच्छ इह तिष्ठ||🎉| वास्तुपुरुपाय नमः वास्तुपुरुपमा॰ ॥ प्रतिष्ठा सर्वदेवानां॰ विष्ण्वाद्यावाहितदेवाः सुप्रतिष्ठिताः भवन्तु ॥ विष्ण्वाद्यावाहितदेवेभ्यो नमः गंधं स० । विष्ण्वाद्यावा० पुष्पं स० । विष्ण्वाद्या० पूर्प० स० । -श्रीखंडकेश्चरकस्पुरी कुकपागककदेमाः ॥ इरिवन्धाः सर्ग मोक्ताः गुन्मुकोवद्रीसमाः ॥ आहुतीनागिद् मान कथितं वेदवा-दिभिः ॥ तिग्रभिर्देशिषेतेबद्वतिः ॥ कुश्चेषु विपनेणैकेति ॥ ( १ ) भास्करे मूछपुनैः ईन्नानीमारभ्य द्विनैः मतीविपारभ्य माग् संस्थनिः 💸

चारितेः निभिर्देभे दिः वरिसमुद्ध ॥ १ ॥ गोपवनवण्यद्धेसनं मानंत त्रिक्वेरेपाकरणं याम्यतः उदयसंस्यामादेशपरिविता ॥५॥ बह्यिवितपा शूना पूरं ऊर्च प्रक्षिप ॥२ ॥ न्युन्नवाणिना ॥ सन्धुल मणयेदप्पि निर्मूषं क्रंडमध्ययः ॥ सासतं वन्हिषात्रे च सुवासिन्ये समर्पयेत् ॥ ४ ॥ 🕏

— नेटडो वरसो. तेमम मूलोबा जणभागकरी विनेशांगे आपयो. तेमन सदीनो आठमोमाग आपयो, सेरडीनो भाग एकपर्य अटबो आपयो, उत्ताओंनो है प्राय वेश्माल केटबो आपयो, समीदो एक मादेस नेटडी करी आपयी तथा यात सोबोम्पी आपयो तथा तल साथो कण वीगेरे मृगीसुदायडे आपया है

**\$\$\$\$\$**\$\$

तथा कुछ पत्र अने फळ एनी समान—

वि॰कौ॰ 👸 विष्णवाद्या॰ दीपं स॰ । विष्णवाद्यावाद्दित॰ नैवेद्यं स॰ । शेषोपचारा यथेन्छया कर्तन्याः ॥ यजमानः जलं 💸 प्र॰ १ ॥३०॥ 👸 मृहीत्वा अद्यत्यादि॰ तियो अमुकवासरे अस्मिन्कर्मणि त्राह्मणद्वारा पंचनमूसंस्कारप्र्वकअभिप्रतिष्ठां करिष्ये ॥ आचार्यो जलं गहीत्वा ॥ मम यजमानानुज्ञया पंचभूसंस्कारपूर्वकं अभिप्रतिष्ठां करिष्ये ॥ तत्र त्रिभिर्द- है 🖁 र्भः पेरिसमुद्धा।परिसमुद्धा।परिसमुद्ध।।भोामयेन उपलिप्य।। उपलिप्य।।उपलिप्य।।कुशमूलेन उक्तिस्य।। उक्तिस्य।। 👸

👸 उछिल्य ॥ अनामिकांग्रहेन उद्धृत्य ॥ उद्धृत्य ।। उद्धृत्य ॥ उदकेन अभ्युक्ष्य ॥ अभ्युक्ष्य॥ अभ्युक्ष्य॥ कांस्येन वा 🧍 त्राग्वेण स्वासिन्यत्रिमानवेत् ॥ आनीतमीत्रं स्थंडिलस्यामेथ्यां निधाय ॥ हुं फट् इति मन्त्रेण कृष्यादांशं नै- 🕏 👸 र्ऋत्यां दिशि परित्यन्य ॥ त्रिवारमित्रं स्थंडिकोपरि ञ्रामयित्वा ॥ आत्माभिमुखं अर्धि संस्थाप्य ॥ अग्न्यानी 🕏 ( 2 ) ॥ धर्मिसंभी ॥ अधिरतु मालतो नाय गर्भाधाने विश्रीयते ॥ पायमानः धुंसबने सीमंते मंगळाभिधः ॥ मथळा जावसंस्कारे पार्धियो 🕏 —आडूति आवर्षी. श्रीलड, केजर, कस्तुरी, छंडुम, जमर, कर्दमएटडी बस्तुनी होम नणा मेश्ली टर्डने करवी. तथा, ग्रुगटनी होम करवी ते 🕻

बोरना जेटले हैरी. तथा त्रण दुर्नाथी एक आहुति भायछे तेपन प्रीरमला छई दर्भनी होन करवी ॥ (१) आहुणे सकल्प करवीके धनमाननी 🕏 ॥३५ आज्ञानी अग्निस्थापन परुद्धन्न दुर्भे परिसमुख इत्यादि करी यनमानपत्नीने ताबाना नेवाल, वा कासाना वा महोडाना वाज्याः साधीओ काडी जीरता नारती

अलवा ते पाळी नृतम ओईए मोनन करेंडी पण न जोईए सामल पार पण नाहीशोके. तेले परमां नई एकमात्रमां देवता छड़ बीलु पात्र उपरदाकी,

तपात्रे साक्षतोदकं निर्पिच्य ॥ अत्रिमुखं ऋता ध्यायेत्॥सप्तहस्तश्चनुःश्वंगः सर्राजहो हिर्शार्पकः ॥ त्रिपास्प्रसः ॥ त्रवदनः मुखासीनः श्विचिस्तितः ॥ १ ॥ स्वाहां त व्यक्षित एकं केरी चले चले व्यक्षिति । 🐉 त्रवदनः छत्तासीनः श्रुचिस्मितः 🛭 १ ॥ स्वाहां छ दक्षिणे पाश्वं देवीं वामे स्वधां तथा ॥ विभ्रदक्षिणहस्तैस्तु 🖏 नाम कर्निण ॥ अञ्चासने कृतिः ग्रीवतो सध्यः स्याचीककर्मीण ॥ त्रतादेशे समुद्रावो मोदाबादौ सूर्यः ॥ विवादे योजकः ॥ प्रायश्रिते विद्र ॥ 🎇 वातिके बरदः पीष्टिके बलक्षीनः ॥ पृतदादे कव्यादः ॥ पूर्णाहुत्यां मृदः ॥ कात्यायनः ॥ न मखेन न काष्टेन नाक्ष्पना मृन्ययेन वा ॥ 🕌 त्रीष्टिलेहसणं विमसिद्धिरामस्तु यो भवेत् ॥ वसेन कुनसी चैव काग्नेन व्यापितीहति ॥ अभ्यना धननाशः स्यात्फ्रकाश्यः मृन्मये न च ॥ 🕍 फरेन फटमारोति प्रणेन श्रीयविच्छति ॥ पर्णेन धनकाभः स्यात् दीर्घमायुः कुशेन तु ॥ तस्मात्फकेन पुष्पेण पर्णेनाथ कुशेन वा ॥ मोछि-

िबेह्यरूपे निवसिद्धिकानस्त कर्मस्य ॥ दर्भाः ऋष्णानिनं पंत्राः जासूणा इनिरद्ययः ॥ अयातवापान्येतानि नियोज्यानि प्रवादनः ॥ चिती 🐉

थिति पापरी, माँहे तैम न देवां नीचे मूकांची ते पात्र आरोपे वह पीताना समुन्त करीं अभिन्तंहिलमां (अथवा कुँडमां) मुक्तवी. पत्री ते पात्रमा

-को६ अर्शयने स्पर्ध न करता कृतानी टेकरणे आबी नीचे पात्र मूकतुं, केटलक ब्राहणो ते सममानरत्नीना हाथमापी आमि पात्र हेठे. ते प्राप-००

दर्भाः पिद्रभीः वे दभीः यहसूरिष्ठु ॥ स्वरणासनविंडेषु परकुकान् परिवर्णयेत् ॥ घहायक्षेषु वे दभीः वे दभी विद्वर्वणे ॥ इता मूच-द्वीपाभ्यां नेपां त्यामो विधीयते ॥ इति छंत्रोगपरिश्चिष्टे ॥

र्विङ बोखा तथा द्वव्य नासी यमपानपत्नीने आपूर्व.

शक्तिमन्नं छुत्रं सुवम् ॥ २ ॥ तोमरं ब्यंजनं वामे पृतपात्रं च धारयन् ॥ आत्माभिमुखमासीन एवं रूपो इता- 🖁 बिल्की ० शनः ॥ ३ ॥ अमे वैश्वानर शांडित्यगोत्र शांडित्यासितदेवलेति जिः प्रवसन्वितभूमिर्माता वरुणः पिता मेशप्वज माइसुख मम संसुखो भव ॥ शान्तौ वरदनामामि प्रतिष्ठाप्य ॥ अमिपुरुषाय नमः इति मंत्रेण वायन्य- 🖟 113411 कोणे वजरोत असरो नमः गंधं० पुष्पं० धूपं० दीपं० नैदेशं समर्पयामि ।) अप्नि शक्त्या संप्रज्य ॥ प्रार्थयेत ॥

अपि प्रज्यस्तितं वंदे जातवेदं हुताशनम् ॥ हिरण्यचर्णमनलं सम्छदं विश्वतोम्पलं ॥ प्रार्थनापूर्वेकं नमस्कारं 🕌 समर्पवामि ॥ अथ ग्रहरूथापनम् ॥ तत्र पूर्वं कुण्डमंडपे प्रंथोक्तप्रकारेण ग्रहपीठं कृत्वा ॥ अथवा काष्ट्रमय-पीठे श्वेतबस्तं प्रसार्यं तहुपरि पंचवर्णेः वा शुमास्तिः नवग्रहमंडलानि कृत्वा ॥ तेपां लक्षणादीनि ॥ अयपयोगः ॥

॥ )१ ) स्कांदे ॥ जन्ममू गाँतपत्रिवर्यपरमामुखानिच ॥ यो शालाकुरते श्वांति वहास्तेनावमानिताः ॥ १ ॥ वतमंदरूपादिस्य चतुरस्यं नि-

अकरे ॥ महीपुत्रे विक्रोणंतु नुभेवै बाणसंनिभद्र ॥ २ ॥ मुरीतुपद्विसाकारंपंचकोणं तु भर्मचे ॥ धनुपाक्रनिमंदे च अपरिकारंतु राहवे ॥ ३ ॥

113611

अर्थ-(१) अप्ति स्थापन थवा पठी अप्तिन। मंत्रीशी आवाहत करी- " शांतिओमा" वरद नामना अप्रित्ते पुशन करी प्रार्थना करवी (१)

हरे नक्ष्महोर्च स्वापनकर्य तेमांस्मान्यमां बानदवर अथवा शास्त्रोक पीछपर प्रफेत ककडो पापरी सेना उप र नक्ष्महोना मंडलोकादबा-नेत्राखस्यगने पट

री गुकाकी मार्मुसीहेची गुक्तीस्वी उद्रुप्तुसी ।। भराङ्मुसी सोमञ्जनी शेषा दक्षिणतोत्तुस्ताः ॥ एताग्रुद्रुमुखासेयाः स्त्रस्य स्रोकीनवासिनः 🖒 🛮 । यजनानात्माभिसुवाः सर्वे संस्थापवंति च ॥ पूज्य पुजकवो पेथ्ये यत्र त्राची नकत्ववत् ॥ तत्र संत्मुत्वसंस्थाप्या इति न्यायो स्था 🕍 वसमिति ॥ सदनस्त्नसंग्रहे ॥ ग्रहस्य दक्षिणेभागे स्थापेयद्धिदेवताः ॥ ग्रहस्य वागपार्थे त स्याप्याः मस्यविदेवताः ॥ ईश्वरं च उमां वैय रिक्टरं विष्युं तथैनच ।। जहााण मिद्रं तु वर्ग काछं चैन तु अष्टमं ।। चित्रपुतं तु नवर्ग किर्तिता अधिन्तताः ॥ अधि श्रीव क्या आपः पृथिनी 🕍 🎇 विण्यु रेव च N इंद्रेश्वेद वयेन्द्राणि मनापति स्तर्थवस N सर्पर्धेव तु जन्मा च एताः प्रस्पिष्ट देवताः ।। सहुमंददिनेसाना भुत्तरस्यां यथा अमं 💥 ्री॥ गणेव दुर्गी गणुष्य राहकेलोधदक्षिणे ॥ आकाश मिनिनीदेवी स्थापयित्या क्रमेणतु ॥वास्तोष्पति क्षेत्रपाछी स्थाप्यी गुर्वोत्तरेषु च ॥एताः

केतने द्व भ्रतनकारं भंडलानि मकल्पयेत् ॥ मध्येतु भास्करांदेयाच्छक्षिनं पूर्वदक्षिणे ॥ दक्षिणे लोहितं नियादः सुधंपूर्वोत्तरेजपेच ॥ उत्तरेखः गुरुंनियात् भार्यत् पूर्वतो न्यसेत् ॥ शर्ने पश्चिमतःस्पाप्य नैर्यदे सहस्रेवच ॥ केतु वायव्यकाणे च प्रहस्यानानि कलपेत् ॥ मिसप्टा कल्पे ॥

्री सदैव संस्थाप्याः कमें साहुष्पदेवताः ॥ इंद्राधि यमैनेकस्य वरुणो वाग्रुरेव च ॥ कुनेरैशानाविस्पद्यी मगादि मदिशापिषाः॥ ब्रह्मणं च ततस्याप्य ूर्वेजान्यो स्तुपन्यमे ॥ वर्षाचे नैकीतर्पन्ये अनंतं स्यापयेदिति॥आवाहनं तु मतिमासतपुंचादि स्यापितं संस्पृत्य कर्तव्यामित्रभास्तरे॥ संप्रदे ॥ 👸 विकारण चरुपिहरूनं समित्रां च यथानयं।।श्रद्धारीनां च सर्वेषां राविहेच्य मुदीरितं ॥ अर्केः प्रशास स्वदिरा वर्गामार्थाय विष्यकः ॥ औदंबरः सभी दर्ग कुश्राय समिपादिति ॥ हेमाद्री भविष्ये च ॥

-मृकेटोंधे ने प्रपाणेकासी अधिप्रस्यांचे देवता विगेरे सहित ग्रहना सोपारी गोटपवां ध⊷नो शाकिहोयतो दरेक ग्रहोशी मुर्तीओ करावणे तेनापर आवाहनकरी

दि॰कौ॰ 🐉 इस्ते जलं मृहीता ॥ अग्रेत्यादि॰ ॥ अम्रकवासरे संकव्योक्तकभणः सागतासिभ्यथं आदित्यादिश्रहाणा 🤌 प्र॰ १ र् सपरिवासणां स्थापनप्रतिष्ठापुजनं करिच्ये !! इस्ते असतान् गृहीत्वा ।। उक्तमंडले अक्षतपुंजेषु पूर्गीफलानि निधाय देवानावाहयेत् ॥ इस्ते अक्षतान् गृहीत्वा ॥ सूर्यं ॥ कर्लिगदेशेश्वर जपापुष्पोपमांगद्यते ॥ तेजोनिघे 🦠 H\$911 ? त्रिलोकप्रकाशक त्रिदेवतामयमूर्ते नमस्ते संनद्धो माणिक्याभरणसृपितारूण प्यजपताकोपशोभितेन सप्ताश्वरय-नाहनेनामच्छ पद्मकर्णिकायां ताम्रमयीं प्रतिमां प्राय्सुर्खी वर्जुरूपीठेऽधितिष्ठ ॥ प्रजार्थ त्वामाबाहयामि ॥ १ ॥ चंद्रं ॥ भगवन् सोमद्रिजाधिपति सुधामयशरीरात्रिगोत्र यसुनादेशेश्वर गोक्षीरथवलांगकान्तेय द्विसुजगदाः

वरदांकितकरशुक्रांवरमाल्यानुरुपन सर्वांगमुक्तमोक्तिकाभरण रमणीय समस्तलोकाऱ्यायिकदेवतास्वाध्यायि

स्वापन करतु. हवे त्रहो केवाठे तेर्त्त वर्णन भ्यानमां छह सी सीना स्थानपर मंत्र युक्त बेसाडवाप्रीहाथमांनछलह संकल्पनणवी,तेवां सपरिवार प्रहोत्तं स्थापन

करीश एमकेवाधी वया अवेग्रे.— तेपकरीखाल चोसाल्स सूर्येत ध्यान करी वनमा तांबाना कल्यापर तरपाणीपरताबानीमूर्तीपर मैत्रो जगरप्रमाणे मणायापणी 💆 ॥३९॥

स्थापन करतुं एमसूर्यदं क्हुंछ पीठे यत्रमं स्थापन करी बीमाप्रहोतुं स्थापन जेतनाठेकाणागर उपर प्रमाणे स्थापन करतुं जीवरेफ प्रदेशीप्रतिया ते ते च धायती 🕏

मूर्तियो सुर्योनी कराववी. अथवा रुरानी कराववी, एक्क्ण थायछे, एप्रमाणे प्रहोत्ते स्थापन विधीयी कराववी.

🏥 आवंतिदेशेश्वर ज्वालापुंजोपमांगद्यते चतुर्भुज शक्तिश्रलगदाखट्टांगचारीन् स्वतम्बरमाल्यातुलेपन प्रवालाभरण- 🔯 🎇 भूपित सर्वागृहग्रहोकदिप्ते नगरते ॥ सत्रद्धः रक्तव्वजपताकोपर्शोभितेनः रक्तमेपस्थवाहनेनागच्छ पद्मदक्षिणदले 🎏 िचंदनप्रतिमां दक्षिणमुखीं त्रिकोणपीटेऽभितिष्ठ ॥ प्रजार्थं त्वामावाहरामि ॥ ३ ॥ बुधं ॥ भगवन् सौम्य सौम्याऋते 🕄 🖫 सर्वज्ञानमयात्रिगोत्र मगधदेशेश्वर छंङमवर्णांगद्धते चत्रश्चेजखद्भसेटकगदाकित पीताम्बरमाल्यानुलेपन नील-🕼 ्रास्तामरणालंकृतः सर्वोगः विद्युपपते नमस्ते ॥ सन्नद्धपीतःयजपताकोपशोभितेन चत्रःसिंहरथवाहनेनागच्छ ॥ 🔯 🎇 पद्मेशानदरेः सुवर्णप्रतिमाउदङ्ससीं वाणाकारपीटेऽभितिष्ठ ॥ प्रजार्थं त्वामावाहयामि ॥ ४॥ ग्रुरं ॥ भगवन 🛱 बृहस्पते समस्तदेवताचार्यागिरसगोत्र सिधुदेशेश्वर दीर्घसुवर्णसदृशांगद्यते चतुर्भुजदंडकमंडळअत्तस्दश्रवरदांकित- 🔀 .पीताध्यस्मात्वानुरुपनः प्रष्परागमयाभरणस्मणीयसमस्तविद्याधिपते नमस्ते सन्नद्धपीतध्वजपताकोपशैरिभतेन 🐉

्रीपीताश्वरथवाहनेनागच्छ ॥ पद्मोत्तरदछमप्ये खवर्णप्रतिमासुदङ्सुर्खा दीर्घचखरस्र पीठेऽधितिष्ठ ॥ प्रजार्थं त्वा-

ै नमस्ते सन्नद्ध श्वेतध्वजरथपताकोपशोभितेन दशश्वेताश्ववाहनेना गच्छात्र पद्माग्नेयदले स्फाटिकप्रतिमां हैं अत्यङ्मुखीं चतुरस्पीठेऽथितिष्ठ ॥ पूजार्थं त्वामाबाहयामि ॥ २॥ भीमं ॥ भगवन् अंगारकाङ्गाकृते भारद्वाजगो-

प्रसणमते नमस्ते ॥ सम्बद्धशुक्तभ्वजपताकोपशोभितेन श्वकाश्वरथेनागच्छ पूर्वदलमध्ये रजतप्रतिमां प्राइसुखीं 🞖 पंचकोणपीढेःचितिष्ठ ॥ प्रजार्थं त्यामाबाहयामि ॥ ६ ॥ शनैश्चरं ॥ भगवन् शनैश्चरं भारकस्तनय काश्यपगोत्र सोराष्ट्रदेशेश्वर कजलाभकांते चर्छश्चचापत्रणीरकृपयाऽभयांकित करनीलाग्वरमालाग्रलेपन नीलरस्तभूपणालं 🖔 कृत समस्त्रभुवनभिपणाभिमर्पमूर्ते नमस्ते ॥ सन्नद्धनीलज्जनपताकोपशोभितेन नीलगृत्र स्थवाहनेनागच्छ ॥ पद्मपश्चिमद्के छोद्दमर्यी प्रतिमां प्रत्यंगधन्तपाकारपीठेऽधितिष्ठ ॥ प्रजार्थं त्वामावाहयामि ॥७॥ सद्धं ॥ भगवन् सहो 🕏 रविसोममर्दन सिंहिकानंदन पैठिनसगोत्र वर्षस्येशयर कालमेघसूते न्यात्रवदन चत्रर्श्वजसङ्गचर्मश्रूलवरदांकित

कृष्णांवस्मालानुलेवन गोमेदकाभरणमृत्रित सर्वागशौर्यनिधेनमस्ते ॥ सन्नज्ञकृष्णव्वजपताकोपशौभिते कृष्णसिंह-स्थवाहनेनागच्छ ॥ पद्मनिर्फतिदले सिसमयित्रतिमां दक्षिणमुखीं सूर्पाकारपीठेऽघितिष्ठ ॥ प्रजार्थं त्वामावाहयामि 🦠 🕺 ॥ ८ ॥ केतुं ॥ भगवन् केतो कामरूप जैमिनिगोत्र मध्यदेशेश्वर धूम्रवर्ण ध्वजाकृते द्विश्चजगदावरदानांकितकर- 🦥

वि॰ को॰ हैं मावाह्यामि ॥ ५ ॥ शुक्रं ॥ भगवन् भागेव समस्तदैत्यश्चरे भीर्गवगोत्र भोजकटदेशेश्वर रक्तोज्वलांगकांते 🥇 प०१ 🗜 चतुर्भुज दंडकमंडत्वससूत्रवरदांकित करशुक्लम्बरमाल्यानुरुपन शुक्लाभरणभूपित सर्वागसमस्तिनितिशास्त्र- 🖔

Hokil

[लामामहायामि ।) इति ब्रह्मणां स्यापनं ।। अयाधिदेवताः ॥ सूर्यस्य दक्षिणे शर्भे ॥ भगवंतं पंचवक्त्रं जिलोचनं वृपारूढं कृपालशुलस्तृांगाधिधारिणं चंद्रमाैलिं आदित्याधिदेवेशं शंभु मावाहयामि ॥१५। चंद्रस्य दक्षिणे उमां ॥ भगवतीमक्षस्त्रदर्पणकमलकमंडलुधारिणीं नानाभरणभाषतां त्रिदशप्रजितां सोमाधिदैवतासमा मावाह-🕴 🔡 यापि ॥२।। भौगस्य दक्षिणे॥ स्कंदं॥भगवंतं पण्मुलं शिलंडकविश्वपणं स्क्ताम्बरधरं मयुरवाहनं क्रुकुटघंटापताकाश-मिरुपेतं चर्चार्जं अंगारकाधिदैवं स्कंद माबाहयामि ।। ३ ll ब्रयस्य दाक्षेणे विष्णुं ।! भगवंतं चर्वार्जुजं कीस्तु 🎼 भादिनानाभरणभूपितं पीताम्बरधरं केमिोदकीपद्मशंखचकोपेतं बुधादिदैवं विष्णुमा० ॥ ४ ॥ ग्रहोः | व्रह्माणं ।। भगवंतं व्रह्माणं पद्मासनस्यं जटिलचतुर्भुखपक्षमालारसुवं पुस्तककर्मडळुभारिणं कृष्णाजिनवाससं (१) नवेमहोसं स्थापन थया पक्षी अधिदेवताओलें स्थापन प्रहोत्ता दक्षिणभागे करतुं. ते दरेकता करूत्रा गोटपी तरमाणी मूकी प्रहो प्रमाणी

र् मृति धूकी पयोक्त करवुं.

विज्ञान्तरमाल्यानुरुपन वैद्वर्यमयाभरणभापित सर्वांगवित्रशक्ते नमस्ते ॥ सम्रद्धचित्रञ्जपताकोपशोभितेन| नित्रकपोतस्थवाहनेनागुच्छ ॥ पद्मवायज्यदले कांस्यप्रतिमां दक्षिणाभिसुर्खी ध्वजाकारपीठेऽघितिष्ठ ॥ प्रजार्थे

\*\*

किकी कि भुजां सिंहारुवां दुर्गारुयदेत्यान् संदारिणीं दुर्गामानाहयामि ॥ २ ॥ मूर्यस्य उत्तरे वायुं ॥ स्थामनर्णे हेमदण्डधरं कुळामृगवाहनं जगत्याणरूपं मोहिनीप्रियं वास मावाहपामि ॥ ३ ॥ राहोदीक्षणे आकाशं ॥ भगवंतं चंद्राकेपितं ब्रियुजं पण्टमाकाशमानाह्यामि ॥ ४॥ केती देक्षिणे अश्विनौ ॥ नीछोत्पलामी नीलांवस्थारिणो प्रत्येकमीपि पुस्तकोपेती दक्षिणपार्थे परस्परवामपार्थे स्ताभांडाकस्शुक्तांवस्थारी नारीञ्जग्मोपेती देवभिपजावश्थिनावावाहः ાષ્ટ્રવા 💲 यामि ॥ इति लोकपालाः ॥"वास्तोष्पतिं" ॥ उत्तरे भगवंतं देवेशं महावलं देवदेवं गणाध्यक्षं पातालतलवासिनं वास्तुदेव माबाहवामि ॥ १ ॥ मंडेलस्योत्तरे ॥ क्षेत्रपालं ॥ भगवंतं देवेशं दिन्यरूपं महाकायं नानाभरणम्भुषितं संहारमृतिं शिरसि एतजटाशेखरं चंद्रविंबं कृतनस्वपुपं करालं पापनाशं क्षेत्रपाल मावाहयामि ॥ अथ दि-क्पालाः ॥ पूर्वे इदं ॥ स्वर्णवर्णसहस्राक्षं वज्रपाणि शित्रिय मिद्रमावाहयामि ॥ १ ॥ आग्नेयां अप्ति ॥ सप्ताः ાાજરાા ३६ ( १ ) मंगलोचरे क्षेत्रपाल स्थापन मिति ॥ शांति कमलाकरे इति कतु साहुण्य देवताः ॥ अर्थ-हुने गणनस्यादि साहुण्यदेवताओर्नु स्वापन कार्यु ते सहु, शनि, अने सुर्य, तैनी उत्तरिद्शामां कार्युः, वास्तोप्पति अने क्षेत्रपाठन्तुं स्वापन मैडकना उत्तरमां करतुं. (१) इन्हानिदश्चदिनपाछतुं स्थापन पूर्वोदि दिशाओमां करतुं तेमां श्रसातुं " पूर्वशानमध्ये <sup>17</sup> तमा अनंततुं पश्चिम निर्कतिमध्ये करतुं.

आवाहन करंड. ते दरेक प्रहोनी मुह्मीओने सर्फ कर्ती करवं.

्रीदक्षिणे यमं II रक्तवर्णं दंडधरं महिएबाहेनमभिष्रियं यममावाहयामि ।। नैक्तियां निकितिं ।। नीलवर्णं 🐉 ्रींबह वर्मधरमूर्वकेशं नस्वाहनं कालिकाप्रियं नैकेति मावाहयामि ॥ १ ॥ पश्चिमे वरुणं ॥ रक्तभूपणं 🕄 ँ∥नागपाशघरं मकरवाहनं पश्चिनीप्रियं वरुण मावाहयामि ॥५॥ वायव्यां वायुं ॥ स्यामवर्णं हेमदण्डघरं॥ँँ ∮ॅं∥कृष्णसृगवाहनं जगत्मारिणरूपं मोहिनीप्रियं वायु मावाहयामि ।। ६ ॥ उत्तरे सोमं ।। स्वर्णवर्णानीधीश्वरंािं 🎇 मदापाणिमश्ववाहनं चित्रिणिपियं सोम माबाहवामि ॥ ७॥ ईशान्यां ईशानं ॥ श्रुद्धरफटिकवरदाभय-🛛 🕯 श्रालाक्षमुत्रघरं वृपभवाद्धनं गैरिषियं ईशान मावाह्यामि ॥८॥ प्रवेंशानयोर्मध्ये ब्रह्माणं ॥ भगवंतं पद्मासनस्यं ज-🕼 ्रीटिलं चर्रामुंबं अक्षमालाष्ट्रवपुस्तककमंडलुधारिणं कृष्णाजिनवाससं स्वरापियं त्रहारणमावाहयामि ॥ ९ ॥ 🕏 ्रीनिर्क्षति वरुणयोर्पेच्ये ।। असमूत्रधरं कुंडलिकाएच्छयुक्तं सहस्रभोगं शुप्रवर्णमनंत मावाहयामि ।। १० ॥ 🕄 हिशान्यां ११ विधियुक्तमंत्रिः क्छशोपरि रुद्धं ॥ भगवंतं गिस्जिप्तियं नंदीशं व्यम्क त्रिश्त्वल सद्धांगाभयधारिणं है

(१) इति प्रतुर्वत्सक देवताः॥ अयं स्त्रक्रस्त्रो यनपानस्य स्मानार्थं गिति कपनार्करः॥ स्त्रक्रस्त्रोपरि इस्तं दत्ता सांगं स्ट्रं जपेत् ॥

🎒 र्विवं सप्तहस्तं मुकसुवशाक्ति सूत्रतोमरूव्यंजनपृतपात्राणि दथानं स्वाहापियं मेषवाञ्चन मिन मावाहयामि शशा 👭

## बि॰की॰ विद्यसिवितं स्त्र माबाह्यामि ॥ ११ ॥ एवं अहवेद्यां देवान्संस्थाप्य ॥ हर्स्ते अक्षताच् गृहीत्या ॥ प्रतिष्ठा विकार कार्या ॥ प्रतिष्ठा सर्वेदेवानां भित्रावरुणनिर्मिता ॥ प्रतिष्ठां वः करोम्यत्र मंडले देवतेः सह ॥ आदित्याद्याः व ॥४३॥ व्रीविहतदेवाः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवत ॥ प्रतिष्ठांते पूजनं ॥ आदित्याद्यावाहितदेवेभ्योनमः ॥ आ

सनं समर्पयामि ॥ २ ॥ एवं सर्वत्र ॥ आदित्याद्याचाहितदेवेभ्योनमः ॥ पादयोः पाद्यं समर्पयाभि ॥ ३ ॥

(१) करहास्थापनोक्तमंत्रैः करुशस्थापनं ॥ वेपाष्ट्रपरि कृत्यम्युचारणपूर्विकां सुर्पाद्दानां मतिषाः स्थापयेषुः ॥ पूननन्तु १ अग्राद्द्रश्चोपचारैः कर्वन्यं ॥ आवाहनासनं पाद्य मधे याचमनीयर्कः स्नानं वस्त्रोपयीतं च गंपमाल्यान्यनुक्रमात् ॥ पूर्णं दीपं च नैवेषं १ तांबुर्लं च मदिलां ॥ पुणांजिक रितिशोक्ता उपचारास्तु श्लोबख इति ॥ अर्थ-(१) स्वकरस्य स्थापन महना इशानमा करत् तेमा करुशमा नरु निगेरं ययोक्त मरी ईशानमा मुक्यो तेनापर रुदां स्थापन करत्, महोनी १ ताये पूना कर्ती तेना पर हाण अरुकाडी एक महायापाते रुद ना करावदेते. उत्तर सहस्यापाते प्रहोतः स्थापन यथा पत्री भोतास्त्र प्रतिष्ठानो मन्त्रभी १ रोक्षन अरुवा पत्री पत्री पत्र पुनाकर्ति तेमा एक पुनाकण नियमित उपचार वहे यति तथी तथी प्रोत्यक्तम सन्त्र सन्त्र स्थापन स्था मारे पाँदरानेपचार अरुवा १ रोक्षन सन्तर स्थापन स्था सन्तर सन्तर स्थापन स्यापन स्थापन स्

अष्टादशोषचार, पद्तिशोषचार, पतुपद्विशोषचार, राजेषचार नीगेरे चणाउपचारो छे. तेमाणी देने ते उपचार ग्रहण करीने पूना करनी ए चीरय छे. र माटे एक निश्चय करी पूना करनी, केटलक उपचारोमा दक्षणा नणी ते त्या मुक्ती महि एण पुननना अन्ते मुक्ती, कारणके दक्षिणा सफलाये छे यायामा

यक्षमधी विधि नय यसके

🛂 ॥ १० ॥ आदित्याद्यावाहितदेवेभ्यो० अरुंकारार्थेअक्षतानुस० ॥ आदित्या० पुष्पाणि स० ॥ ११ ॥ आदित्या० 🔀 🐉 मुरोभनार्थे सौभाग्यद्रव्याणि स॰ ॥ आदित्या॰ धूपं स॰ ॥ १९ ॥ आदित्या॰ दीपं स॰ ॥ १२ ॥ आदित्या॰ 🔣 🐉 नेवेचं स० ११ १३ ॥ आदित्याद्या० तांबुलं स० ॥ १४ ॥ आदित्या० औन्तलेपनं स० ॥ १५ ॥ आदित्या० नम-💖 🎇 स्कारं स० ॥ १६ ॥ आदित्याद्या० साहुण्यार्थे दिवणां समर्पयामि ॥ प्रार्थनापूर्वकनमस्कारं क्रयीत ॥ जपा कुरुमसंकाशं काश्यपेयं महद्द्युर्ति ॥ तमोरि सर्वपापप्रं प्रणतोऽस्मि दिवाकरं ॥ १॥ दिघरांखस्रशासभं क्षीरो-(१) वंदनेन मुखनासिके लिंग्नीति गदापरः ॥ सर्वप्रतिहर्तनं कार्य मिति इरिहरः॥ (१) अन्नापानं ॥ त्रयोगरत्ने प्रणातिकास स्मार्तिकासक्ति अस्मिन्द्रस्यक्षस्य कर्माण

े देववापरिज्ञरणार्थणन्यापानं करिये ॥ अस्मिन्नन्याहिते ऽजी पूर्वेण ज्ञह्मणोतमनं ॥ उत्तरतः पात्रासादनं ॥ द्वे पवित्रे कांस्यमयी । हाराज्ञमपी व अञ्चल्याच्ये ॥ सात्रपपी चरूत्याच्ये पाछाश्यः समिषः ॥ त्राच्यां वा पारी समिद्धतेषे जाज्यभागी पूर्णपात्रं ॥ दक्षिणा

৮ কী০ 🎖 दार्णवसंभवं ॥ नमामि शशिनं सोमं शंभोर्स्रेकुट्रभूपणं ॥ २ ॥ घरणीगर्भसंभूतं विद्युत्कृांतिसम्प्रभम् ॥ अभारं शक्तिहर्सं च मंगर्ल प्रणमान्यहं ॥ ३ ॥ प्रियंग्रुकलिकास्यामं रूपेणाप्रतिमं छुवं ॥ सीन्यं सीम्यग्रुणो अथा है वेतं तं छुवं प्रणमान्यहं ॥ ४ ॥ देवानां च ऋपीणां च ग्रुठकांचनसन्निभम् ॥ बुद्धिभृतं त्रिलोकेशं तं नमामि ३ 🎖 बृहस्पति ॥ ५ ॥ हेमईद सणालाभं देत्यानां परमं ग्रहम् ॥ सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भागेवं प्रणमान्यहं ॥ ६ ॥ नीलां-जनसमाभासं रविष्ठत्रं यमात्रजं ॥ छायामार्तंडसंभूतं तं नमामि शनैश्चरम् ॥ ७ ॥ अर्थकायं महादीर्यं चंद्रादित्य-विमर्दनम् ॥ सिंहिकागर्भसं मृतं तं सहुं प्रणमान्यहं ॥ ८ ॥ पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम् ॥ रीदं ० -वा II पतान्तैकलिका न्यदार्थानई कृरिय्ये II अय देवकाभिष्यानं II तत्र मृजापति भिन्द्रमप्तिं सोम्मेताः आश्येन मत्येक पेकैकया हुत्वा II अश्र प्रधानं ॥ आदित्यादि नग्यहा नकीदि यथालाम सांगियखतिकाज्यद्रव्यीः पत्येकं प्रतिद्रन्येण अष्टाप्टसंख्याकाभिरादुतिथिः ॥ अधिदेवता प्रत्यधिदेवताथ तेरेव द्रव्यैः प्रत्येकं मतिद्रव्येण चतु अतुः संख्याकाभिराहुतिभिः धिनायकादि पंचदेवताः वास्तोप्पति केत्रपालं इंद्रादिदश्वदि-แหหน कपालांश्र तैरेव द्रवीः शरोकं मतिद्रन्येण द्वार्थ्या द्वार्थ्या पाहृतिभ्यां यहूँये ॥ न्यूनातिरिकार्यं घृताक्तितल्द्रव्येण सगस्त व्याहृतिभि रष्टाविद्यति संख्याकाभि राहुतिभि यस्ये ॥ श्रेपेण स्विष्टकृत् ॥ अर्थि वार्ष्ट्र सूर्य मिनवरुणी अप्रि वरुणं सविवारं विष्णुं विश्वान्वेषान्मरुतः स्वकी न्यरुगगादित्य मदिति मजापतिवेता अंगमधानार्थे वेनता आज्येन अस्मिन ग्रह्यशाल्ये कर्षण्यारं यस्य ॥ इति अन्नाधानं ॥

संगृता ॥ दक्षिणकरेण जलं प्रपूर्व ॥ सुमी निधाय ॥ आलभ्य उत्तरतोऽग्नेः स्थापनम् ॥ बर्हिगदक्षिणमभैः परि-स्तरणं ॥ वा त्रिभि स्निभि देभैः परिस्तरणं ॥ तत्र प्राग्डदग्रेनेः ॥ दक्षिणतो प्राग्रेनेः ॥ प्रत्यग्रदग्रेनेः ॥ उत्तरतः (१) वात्रणामादे वर्तेष छय मुत्तरीय जल्लात्र दर्भवद्द्व मकासमे निधाय ॥ इति श्रांतिवितामणौ ॥ (२) मणिवा उत्तरेस्थाया वितस्यन्यस्तोगिताः ॥ इति महयग्रक्ष्यक्याम् ॥ आसादनन्तु पात्राणां गादेशान्तरके युपः ॥ इति कारिकाकारः ॥ मादेशमात्रं विदेवं परित्रे यगकुमनित् ॥ अर्ववर्गाभिणं सार्मं कीरो दिदस्योव च ॥ आज्यस्याकी कार्यमयी यदा ताल्यवी तथा ॥ मादेश मात्रा दीर्या सा ग्रहीवन्याऽ मणाशुभा ॥ दश मादेश मार्यप्रेथमियं नात्रि वृहस्युती ॥ ग्रन्यस्यौदंवरीवापी घरस्याकी शहरवते ॥ सादिसदेः एषः कार्यो हस्त मात्र-

्रियाणतः ॥ अंगुप्त पर्वस्तांत तन् त्रिभागं दीर्घ पुण्यतम् ॥ अनदोक्त पुरुपाहार परिमितानादिना पूर्ण पूर्णपार्शमिति क्रत्यचितामणी ॥

क्षे -( १ ) आदित्यादि नवग्रहोतु तथा अधिप्रस्पविदेवः तेमां ब्रह्मसन्त्रभे आरंभी पागत्सादन उगी परीपूर्ण करतुं ॥

अर्थ-( १ ) आदित्यादि नवग्रहोत् तथा अधिप्रत्यविदेवता विगेरेतुं पूनन थया पत्री संकरम करो, कोलुं पूत्रन अर्थण करो, कुशांडीनी आरंग करने

र्वे रोद्वात्मकं घेारं तं केतुं श्रमाणम्यहं ।। ९ ॥ आदित्या॰ प्रार्थनाष्ट्रवीक नमस्कारं स॰ ॥ अनया प्रजया आ द्वित्यादि ग्रहमंडलदेवाः ग्रीपंता ॥ अथ्य कुँठकृंद्धिका ॥ दक्षिणतो ब्रह्मासनं ॥ उत्तरतः प्रणीतासनं ॥ तत्र श्रिक्षोपवेशनं यावत्कर्म समाध्यते ॥ तावत्त्वं ब्रह्मा भव ॥ ब्रह्मानुद्धातः उत्तरे प्रणीता प्रणयनं ॥ वामकरेण प्रणीतां िक्ति॰ हैं प्रागत्रैः अर्थवत् पात्रात्सादनं ॥ पवित्रलेदने दर्भोस्त्रयः ॥ पवित्रे दे ॥ ग्रोसणीपात्रं ॥ आज्यस्थाली ॥ चरुस्याली 🐉 न॰ १ संमार्गेङशाः पंच ॥ उपयमनक्रशाः सत्र ॥ समिधस्तिह्यः ॥ सुवः ॥ सुची ॥ आज्यं ॥ तण्डुलाः ॥ पूर्णपात्री। 🕏 ै बरोवा॥पवित्रछेदनैः॥पवित्रीकरणं ॥द्रयोः पवित्रयोरुपरिपवित्रत्रपं निधाय॥द्रयोर्मूलेन द्रो छरोो प्रदक्षिणीकृत्य॥ 🤾 त्रयाणां मूलामाणि एकीकृत्य ॥ अनामिकांग्रहेन द्रयोरम्रं छेदयेत् ॥ द्रिमाह्य ॥ ज्ञिणि उत्तरतः क्षिपेत् ॥ प्रोक्षणीपात्रे 🥻 ्रिशणितोदक मार्पिच्य ॥ पात्रांतरेण चलुर्वारं ॥ जलं त्रपूर्य वामकरे पवित्रात्रं दक्षिणेपवित्रयोर्मूलं एत्वा मप्यतः 🧏

स्य प्रोक्षणं ॥ तण्डलानां प्रोक्षणं॥ पूर्णपात्रस्य प्रोक्षणं ॥ प्रणितामयोर्भेष्ये असंबरे प्रोक्षणीनां निर्धानं ॥ आज्यस्थाल्यां 🦠 अर्थ--(१) बचापतोचुं स्थापन पया पत्री प्रोतणी पात्रने खबाहायमां छर् भगणा हायबढे गोडवेछा पात्रोत अनुक्रमे प्रोक्षण कर्त्वु, पत्री आध्यस्पाठीमां 🦠 यो जाली नरुत्पार्लामां चीलानासी चणवस्तत पाणीची घोदनासी अधीपर दक्षिण तरफ घीतुं पान मुकतुं तथा अक्षीना मध्यभागमां चरु स्थालीयुक्ती.

पवित्राभ्या मुत्यवनं प्रोक्षणीपात्रजलस्य प्रोक्षणीनां सञ्यहस्तेकरणं ।। दक्षिणहस्तमुत्तानं कृत्वा ।। मध्यमाना- 🎖 मिकांग्रत्योः मध्यपर्वाभ्या मपां उद्दिगनं ॥ प्रणितोदकेन प्रोसणीनां प्रोक्षणं ॥ आज्यस्यात्याः प्रोक्षणं॥ चरुस्याः 🕏 ित्याःगोक्षणं॥ संमार्गक्रशानां प्रोक्षणं उपयमनकुशानां प्रोक्षणं॥समिघां प्रोक्षणं॥स्रुवस्य प्रोक्षणं॥स्रुचः प्रोक्षणं॥ आज्य- 🖔

🔐 चरोरुद्धासनं ॥ वामकरे पवित्रामं दक्षिणे पवित्रयो मूर्लंशस्य ॥ मध्यतः पवित्रास्यां ॥ आज्योत्पवनं ॥ आज्या-🕼 वैक्षणं ॥ अपद्रव्यतिरसमं ॥ प्रोक्षिण्याः प्रत्युस्पवनं ॥ उपयमनक्षशानादाय ॥ तिष्टत् समिभोन्याधाय ॥ प्रोक्षे १ (१) दैवित्रसाक्षिताकेषा पितरि वण्डलाः सकृत् ॥ इति कलपत्त्वाय् ॥ अनतिक्षिषिकं अफकिनं अदर्श्य कांशल्यन सप्येत् ॥ इति हि 🐉 कृत्यांचतामणी ॥ (१) होत्र सुत्रे ॥ भूरादि नवसुस्विष्ट कृते नायचतुरुये ॥ अन्वारंभोभने चेषु सोम्बारंभः कुरोनवे ॥ अग्रेप्टतार्थनाञाय 👸 🏋 कि वे वेवपुतपनाः ॥ मुझे व श्रियते होता सुवस्थानं कथे भवेत् ॥ अग्र क्रध्याचयन्यध्यंमूट्यध्याच कथ्यतः ॥ सूर्व धारपते विद्वान् असरध्येच 🖓 🕍 सदाउपैः 🔃 तर्रमी च बहिः करना कनिष्टां च बहिस्तमा ॥ पथ्यमा जापिकांत्रप्रैः खुवं धारवते द्वित्रः॥ खबहोषे सदात्वायः प्रोहाणी पात्रपथ्यतः 🖒

ूँ। अाज्यनिर्वापःचरुस्थाल्यां तण्डुलप्रक्षेपः।।तंस्य त्रिःपक्षालनं।। चरुपात्रे प्रणीतोदकः मापिंच्यः। दक्षिणतः आज्याधिश्र-🚏 यणं ॥ मध्ये चरोरिधश्रयणं॥ ज्वलितोल्सुकेन पर्यक्षिकरणं॥ अर्धश्रिते चरोः सुवस्य प्रतपनं॥ संमार्गक्ररोः सुवस्य 🔀 🕍 संयार्जनं !! अग्रेरग्रं ॥ मूळेर्म्ळं !) प्रणीतोदकेनान्युक्षणं ॥ प्रनःप्रतपनं ॥ देशे निधानं ॥ आज्योदासनं ॥ 🕍

🌠 पाणीहोमे त्यामो न 🛭 अयोमस्वर्ध्वन्यादः मार्मुखोहन्यवाहनः ॥ तिष्ठत्येवस्वभावेन आहुतिः क्रुन दीयते ॥ सपवित्राम्युर्ह्यतेन वन्हैः। 🍨 कुर्या त्मदक्षिणाम् ॥ हव्यबाद् सिष्ठिलं द्वष्टा विभेति संमुखोभवेत् ॥ इति कारिकायां ॥

े उथे पत्री नकाथे अर्दभी जुवावती होम करवे ॥ छुने मृगी मुझये झाछे घीनो होम करवे.

अर्थ-(१) धृत तथा वर भयो मेहदे उतारवा प्रश्ने खुवाने तपाया श्रीकाणकरी उपयमन कुराव्य समियो आपवी, तथा पर्युक्तण करी जमणो प्रम

रे॰ जी॰ ें ण्डुदकरोपेण सपवित्रहस्तेन अगेः ईशानकोणादास्य ॥ प्रदक्षिणवत् पर्यक्षणं ॥ पवित्रयोः प्रणीताख् निधानं ॥ है विक्षणं जान्वाच्य जहीति ॥ तत्राघासवाज्य भागाच ॥ ब्रह्मान्वार्ठ्य ॥ स्रवेण जुहुयात् ॥ स्रीगसुद्रया पृतः है स्रुवेण माज्यमादाय ॥ प्रजापतिं मनसा ध्यात्वा ॥ हीं प्रजापतये नमः ॥ इदं प्रजापतयेनम् ॥ इत्यमे रुत्तरभागे हीं 📓 इन्द्राय नमः॥ इदमिन्द्राय नमम ॥ दक्षिण भागे॥ ही अवये नमः ॥ इदमवये नमम ॥ मध्ये ॥ हीं सौमाय नमन। ं इदं सोमापनम इस्ते अक्षताच महीत्वा।।शान्तीके वरदनामानमित्र माबाहयामि।।अप्ति प्रज्वलितं वंदे जातवेदं हुता-

हविर्जातं देवताश्च मनसा ध्यात्वा ॥ इदं संपादितं । समिनरुतिलाज्यादिहविर्देव्यं या या यक्षमाणदेवता तस्य ( ? कुर्रुक्टिका भाष्यकारादयः ॥ अधि पुना पहिः मोत्तिति पचनाद्वहित्व सर्वपूशन मितिकिचिदातुः ॥ तत्रविष्णुपमीन्तरे ॥ मध्येपि

गंश्युपादीन् द्यादाने नैसंत्रया ॥ यस्निवेच याकन्तु दातन्यं मिविनिश्चयः ॥ इति ग्रांति मयूखे ॥ ાપ્રક્રા अर्थ- (१.) होममां पहेंद्य प्रमापति आदिनी चारे आहुती आपत्री, वर्षी वरदाक्षितुं स्थापन करी पूनन करी अमितुं च्यान करेतुं तथा करेती पूना

शनं ॥ सुवर्णवर्णं ममलं समिद्धं विश्वतोसुखं ॥ वरदनामामये नमः गंधं पुष्पं भूपं दीपं नेवेद्यं समर्पयामि ॥ अनुया

पूज्या अभिः प्रीयतां ॥ यजमानेन द्रव्यत्यागः कार्यः ॥ यथाकालं प्रत्याहृति त्यागस्य कर्त्तमशक्यत्वात्सर्वमेव

हैं। अर्थ-( १ ) आप्ति पूनन यदा पूर्वा वभी आहुती परको स्थाग न यह दाके तैरहा माटे हाथमां अळ तथा फळ छद चराने त्याग संकल्प करवा, तथा नि है। होगमां बेहेल गणदिने १ एक आहुती आधीन स्थापित देवेने आहुति आधी तुम करवा, तथा स्थापित देवेने समिदोनो होग करवे। तेमा सूर्यने आंकडानी है। बंदने सासरती, मंगळने बेतती, बुपने जीवोग्रती, गुरुने पीप्ळानी, शुन्ने उमयदानी, शर्नाने समर्थानी, राहुने दुवी, केतुने दर्म, यग्रमाणे नवेमहोत्री समीयो

तस्य देवताय नमम ॥ यथा देवतमस्त ॥ ततोहोमं कुर्यात् ॥ ही गुणपत्येनमः इदं गणपत्ये नमम॥१॥ । इस्पीय नमः इदं स्वीय नमम ॥ ८॥ १ ॥ स्वित्र त्यागमंत्रेणेव होमः कार्यः ॥ वन्द्रमसे नमः ॥ ८ ॥ २ ॥ १ (१) गणिकत्ये देवाः मया तु बराहतिः ॥ अन्यथा विकडं विम भवतीह न संज्ञयः ॥ इति वनळाकरे ॥ तिल्लाच्य वक्षवनं च स्व १ पुक्षं प्रकीर्तित भिति ॥ ततो आदित्यादि नव्यहाः क्रवेण पूर्वोक्त ग्रह्मोषहुलेम अधिमत्यविदेवतान्त्रभतः संस्थया हत्वा ॥ यस्य ग्रहस्य 116841

नमः ४ ॥ १ ॥ उमिषे नमः ४ ॥ २ ॥ स्कंदाय नमः ॥ ४ ॥ ३ ॥ विष्णवे नमः ॥ ४ ॥ ४ ॥ ब्रह्मणे नमः ॥ ४ ॥ ४॥ इन्द्राय नमः ॥ ४ ॥ ६ ॥ यमाय नमः ॥ ४ ॥ ७ ॥ कालाय नमः ॥ ४ ॥ ८ ॥ वित्रष्ठ. शाय नमः ॥ ४ ॥ ९ ॥ अथप्रत्यधिदेवताः ॥ अभवे नमः ॥ ४ ॥ १ ॥ अद्वयो नमः ॥ ४ ॥ २ ॥ घराँप ई नमः ॥ ४ ॥ ३ ॥ नासयणाय नमः ॥ ४ ॥ ४ ॥ इन्द्राय नमः ॥ ४ ॥ ५ ॥ इन्द्राप्ये नमः ॥ ४ ॥६॥ प्रजाप-

तथे तमः ॥ १ ॥ ७ ॥ सर्पेभ्यो नमः ॥ ४ ॥ ८ ॥ ब्रह्मणे नमः ॥ ४ ॥ ९ ॥ अथगणपत्यादिदेवताः ॥ —होमबी, तेगन ने देवना अविदेक्ता भत्यिघ देवता नेत्रे, तेनी क्ण तेन समीधनाणकी, महोर्नासपीद आफ्यानो८ तो अम छीपोहोग्यतो तेना आंभे देवता प्रत्यिष

देवताओंने ४ समीच आपक्षा, तेन कत साहुण्य देवताओंने समीदी २ आपक्षा, भेटलुं द्रस्येजे तेटलानो उत्पाधी होग करको तथा कठिण हथिनेजे तेनो 🕹

મજના

हारेश्वे होम करने. होन सफ्टो समाप्त याय पत्री गुमळनी होम करी सरसारनी होम करी आबीका भायपर अग पखत ठोकी काने पाणी अरकार्डा.

रुस्बीहोम करवी, तेमी रुस्पीते पूमन करी पंत्री अक्य करवा रुस्मी होम संपूर्ण करवी, पत्री संकरकारी ओहुं वपारे पर्यु होय तेने माटे · प्रापक्षीस होमकरवे, ते आहुति २८ अथवा १०८ आपी करने ॥

|॥ अथलोकपालाः ॥ इन्दाय नयः ॥ २ ॥ २ ॥ अत्रये नमः ॥ २ ॥ २ ॥ यमाय नमः ॥ २ ॥ ३ ॥ 💸 ीनिर्वतये नमः ॥ २॥ ३॥ वरुणाय नमः ॥ २॥ ५॥ वायवे नमः ॥ २॥ ६॥ सोमाय नमः ॥ २॥ ७॥ 🕌 ीईशानाय नुमः ११२ १४ ८ ११ ब्रह्मणे नुमः ॥ २ ॥ ९ ॥ अनंताय नुमः ॥ २ ॥ ९०॥ महास्द्राय = नुमः ॥२॥११॥ ∭ि ∥\$∥एतादेवान्समिदाज्यं चरुतिलादिद्रव्येः पृथक् पृथक् होमकार्यः ॥ विशेषहोमः॥ द्राक्षाः मूर्याय नमः॥ १ ॥∯\$∥ 🕌 इस चन्द्रमसे नमः ॥ २ ॥ पूर्गाफ्लं भोमाय नमः ॥ ३ ॥ नारिंगं ब्रुधाय नमः ॥ ४ ॥ जम्बीरं बृहस्पतये नमः 🕌 इह्य चन्द्रभस नान ।। ॥ ।। बीजपूरकं शुकाय नमः ॥ ६ ॥ उत्तांत शानव्ययन ।। ॥ सवीवाधा प्रशमनं त्रेठोक्यस्या। प्रश्नमं केतवे नमः ॥ ९ ॥ ग्रग्नुठं रहाय नमः ॥ अथ सर्पपहोमः ॥ सवीवाधा प्रशमनं त्रेठोक्यस्या। प्रश्नमं ।। उदकं स्पुरेति ॥ उद्देनी । । वामपाद भूमो त्रिस्ताबनं ॥ उदकं स्पुरेति ॥ उद्देनी । । । ।। वामपाद भूमो त्रिस्ताबनं ॥ उदकं स्पुरेति ॥ उद्देनी ।। ।। वामपाद भूमो त्रिस्ताबनं ॥ व्यवत्व सेवभेष्टः ॥

्रैं गणपतये नमः॥ २॥ १॥ दुर्गाये नमः ॥ २॥ २॥ वायवेनमः॥ २॥ २॥ आकाशाय नमः ॥ २॥ २॥ ३॥ अभिभूगं नमः॥ २॥ ५॥ इति पंच देवताः॥ वास्तोष्णतये नमः॥ २॥१॥ क्षेत्राधिपतये नमः॥ २॥२॥

हींथे समाप्त थया पत्री गोरे चार कियोने तथा परणन्त्ररने उद्द घरमा अर्चु. त्यां जह गोधन सामे बेसार्ट्डा पोस भराववी. तेमां घरंडु करी पान ७

सोपारी ७ मैता ७ रु. ? मुकाबनो. तथा चार कीयो पत्ते चार भार यक्षत मात वभावनु पठी परमाधी परणनारने वेडीने बहार महयत्तनी जगापर आवी पूर्वीभिग्रुले उत्पारही हापमानी पोसना क्वार्थ महत्रा मंडपपाले मुकी देवा तथा माताना नमणा हाथतरफ पाटछा पर मेही स्पापित देवताओं ने उत्तरपूरण शाय तैयां माग केवो. केळडीक न्यातोमां परणनारने खीपुरुनना वचमां नेसाकेठे ए अविहित्तठे अने शाखना प्रमाणोधी प्रायधिक्तां परावधे तो तेम बेत-बानी नरूर नपी जुवेके रुढी छे छवां प्रायक्षित न थतं होय त्यां रुढी ग्रहण करीये तो अडचण नभी पण पर्म कार्यमां शास्त्रने पेगर्सुं सूकी अनिष्ट फल 🕹

अरपनार्ह कार्य करतं ए तदन अवोगतीने आपनार्ह के माटे आची सपजण आप्या छतां कीण करते अर्थात न करतं ।।

अष्टाविंशति संस्थया तिलद्रस्येण व्याहृतिहोमं करिष्ये ॥ अत्रिवायुसूर्येभ्यो नमः ॥ इति होमं समाप्य ॥ ॥ अथ उत्तरपूजनं ॥ अवेत्यादि॰कृतस्य कर्मणः सांगतासिभ्यर्थं स्थापितदेवतानां मृडामे श्रोतरपूजनं करि॰ये ॥ 🐉 मुडाम्नवेनमः ॥ गंर्थं समर्पयामि॥ मुडायये नमः॥ पुष्पं स०॥ मुडायये नमः भूपं स०॥ मुडायये नमः दीपं -अनुयोः सरविधिव देपस्योः गुरुक्तित्वयोः ॥ नंदीश्रंकरयो मेध्ये इन्ति पुष्यं दिवाकृतं ॥ पूजास्विष्टं नवाहृत्यो विठः पूर्णाहृति स्तथा ॥ 🖒 संस्वनादि निमोक्तांत होमरोपसपापनं ॥ श्रेयः सपाप्यदानं च अभिषेको विसर्वेन मिति ॥ पूर्वमञ्बल्तिहासि इंबिर्ट्डपंबुभूसितः ॥ दुस्रो निर्भूम ै 💲 निर्गाली मुडाविः परिकोर्तितः ॥ इति ग्रहरत्नवस्यां ॥ —एवा प्रमाणो क्यान छे माटे ज्ञातापृरुषो क्वभः बेसाब्बातु करते निद्देन सारा समन् द्विनो कराक्त्रो निह तो हूं तेमने उपकार मानीज्ञा। उत्तर तैमान पहेला अनुक्रमे

्उत्तर पूमन क्री सीष्टकृत नवाहुती नक्षेदान करी पूर्णीहुती फरवी. उत्तरपूनन बसते अक्षित प्रथम पूनन करनु, ते मुदाक्षि नामवी पचोरचारे करनु, ते व विद्या पछ। गणाती नभवहब्दित पण पूनन करी शक्ति होय तो बहोना दान करना, ते न बने तो तेनो निष्कत मृक्तो. पठी नवे ब्रहीने तेना मनोधी 🔉

्रे अध्यं आप**ा**.

बिविण मेह मिर्म करुष्य ॥ आलोकयत प्रणत रुद्धतयेन हंत्री त्यरपादपद्म युग्नलं प्रणमाम्यहं श्रीः ॥ ४॥ इति ल । क्षीहोमः अद्यत्यादि० ॥ अमुक्तवासरे अस्मिनकर्मणि न्यूनातिरिक्नदोषपरिहासर्थं अष्टोत्तस्थत । संख्यया वा

स्वामुडावये नमः ॥ नैवेद्यं स्वाअनया पूज्या मृडाविः त्रीयतां॥विष्नहर्त्रे गणेशाय सांगायसपरिवासय नमः गंधं स॰ विग्नहर्ने॰ पुष्पं स॰ विग्नहर्ने॰ पूर्व स॰ विग्नहर्ने॰ दीपं॰ विग्नहर्ने॰ नैवेद्यं स॰ साहुण्यार्थं दक्षिणां स॰ अनया प्रजया विघहर्ता गणेशः प्रीयतां ॥ सगणेशगौर्याचाहितमातृभ्योनमःगंधं समर्पयामि॥सगणेशगौर्याचा० HSSII पुष्पं स॰ सगणेशगोर्याद्या॰ पूर्वं स॰॥सगणेशगोर्याद्या॰ दीवं स॰॥ सगणेशगोर्याद्या॰ नैवेदां स॰ अनया पूजया सगणेशगोर्याद्यावाहितमातरः श्रीयंतां ।। आदित्याद्यावाहितदेवेभ्योनमः गंधं समपर्यापि॰आदित्याद्या॰ पुष्पं स॰ आदित्याद्या॰ भूपं स॰आदित्याद्या॰ दीपं स॰ ॥ आदित्याद्या॰नैवेदां स॰ अनेन आदित्यादिदेवाः प्रीयंताम् ॥ शक्त्यात्रहृदानानि॥ प्रजान्ते स्रपात्रे जलपुष्पासत फलादीनि निधाय ॥ तत्पात्रं हस्ताभ्यामादाय॥आदित्याद्या-स्यापितरेवेभ्यो मत्येकं प्ररुपाहार परिभिनाति नैवेद्यानि भवंति ॥ आदिरये कपिलां पेर्नु अलं सोमाप दापपेत ॥ भीमे रक्तमनाहाई सोमधुनाप कांचनं ॥ गुरोक्षपीतवासौंसि शकायात्वसित स्तथा ॥ ऋष्णागी मंदनारस्य राहोच्छाग स्तरीवच ॥ ऋष्णायसं तयाकेती सर्वेषा मेवकांचनं ॥

अर्थ-( १ ) स्वाक्षित देवीत उत्तर पूजन थया पडी शक्की प्रमाणे नवे ब्रहोता वानी करवा ते न ननी शक्के तेम होयतो करी मुरुगे पछी सारा पात्रमा नळ व्ह तेमा गंध, पुत्र, फल, जरुस द्रव्य, मुकीने हाथे झाठी व्हेला भनवडे सर्पेभी आरभी स्थापित देवाने अर्थ आवता.

แห

रति झातिचितापणी

्रीतंग तारापतिरनन्दितः।।मासे मासे क्षयो बुद्धिःससोमःश्रीयतां मम ॥२॥ वालःक्रमारको यस्त्र रक्तवर्णःस्रशोभनः ॥ 🐉 🏮 अव्ययः पृथिवीपुत्रः स भीमः प्रीयतां मम 🛭 ३ 🕦 सीम्यपुत्रो बुधो सीम्यो बुधोनाम महात्रहः 🕦 आदित्यः 🎉 🐉 पथगोयस्तु सबुधः श्रीयतां मम ॥ ४ ॥ वृहस्पति र्वृहत्तेजो ृहन्दुद्धि र्वृहचशः ॥ स्रतणां च रहर्गस्तु स रहः 🎼 🧣 प्रीयतां मम रा ५ ॥ अस्रताणां ग्ररुर्येस्तु ब्रह्मणां परमां गतिः ॥ शुक्कवर्णः शुक्कदीशिः सशुक्रः प्रीयतां मम ॥ ६ ॥ 🧗 🎇 शनिश्ररः शनैश्रारी उत्ररूपो खेः सुतः ॥ ऋष्णवर्णः ऋरदृष्टिः सशनिः प्रीयतां मम ॥ ७ ॥ आसुरः सिंहिकापुत्रो 🎇

|ब्रह्मः सर्वे पीठेपेऽत्र व्यवस्थिताः ॥ ते गृहणन्तु मयादत्त मिममर्थ्यनमोनमः इति मन्त्रेण अर्घदत्वानमस्कारं स्व ्रीस्वमंत्रिःकुर्युः॥नमोरथमादित्यायदिप्यमानस्वतेजसे।।ज्योतिरथःसर्वभृतेभ्यःसर्स्ययःश्रीयतां मम ॥९॥ दिजराज महा 🗗

🎖 साजुनारः समेथात्र्य सकेतः प्रीयतां मम ९॥ शम्भः प्रभूतयो देवाः पीठे येऽत्रमयार्चिताः ॥ ते सर्वेश्वभदाः संजु 💱

🏅 | राहुश्रंद्रार्कमर्दनः ॥ स्थापितस्त्र निमित्तार्थे स राहुःश्रीयतां मम ॥८॥ अपां तु देव सगणः केतुः कपोतवाहनः ॥ 🕏

साग्रभाः साग्रमाः सदा ॥ १० ॥ इति प्रार्थयेत् ॥ ततो हुतशेष हविर्देव्यं सुचिप्रस्तिं मृहीत्वा ॥ व्रह्मान्वारूषः

बि॰की॰ 🖟 स्विष्टकृद्रीमं क्रयात ॥ अमये स्विष्टकृते नमः ॥ इदममये स्विष्टकृते नमम ॥ ततो नवाहृतयः ॥ अमये नमः 🥞 प्र<sup>०९</sup> ै इदममये नमम ॥ वायवे नमः ॥ इदंबा० ॥ २ ॥ सूर्याय इदं सूर्याय० ॥ ३ ॥ अमिवरुणाभ्यां० इदं ममिवरुणा-×वां०॥ ४॥ पुतः ॥ अप्तिवरुणाभ्यां० इदमिवरुणाम्यां ॥ ५॥ अग्रये अयसे नमःइदमग्रये अयसे० वरुणाय सवि-त्रे विष्णवे विश्वेरयोदेवेरयो मरुद्रयः स्वर्केभ्यो० इदंवरुणाय सर्वित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेरयो मरुद्रयः स्वर्केभ्यश्च ॥७॥ ngon 🔅 वरुणायादित्यायादितये नमःइदं वरुणायादित्यायादितये गाटा। प्रजापतये नमः इदं प्रजापतयेनमम् ॥९॥ अथ वै-िल्दानं ॥तंबेवं॥ अम्त्यायतनस्य दिख्नु विदिक्तु च दशदिश्पालान् मापभक्तवलयो देयाः ॥अद्येत्यादि०॥ ऋतस्य 🖇 कर्मणः सांगतासिष्यर्थं दिक्पालपूर्वकस्थापितदेवतानां विलदानं करिष्ये ।।षाच्यां दिशि।। इन्द्रं सांगं सपरिवारं सायुधं (१) स्विष्टकृद्धोभः सर्वेद्रव्यैः कार्यः ॥ इति शाति कमलाकरे ॥ (१) अलिहीने तु दुर्भिसंगंधहीनत्वपीग्यता ॥ धूपहीने तपोद्वेगो चहाहीने મહના

धनस्यः ॥ इति भविष्यपुराणवास्यातः ॥

जर्ष ( १ )होमता रेहेंडु द्रव्य तेमापी शुषी भराय एटलुं लड् आंग्रमा आहुति आवशी, तेनेशियष्ट्रस्त केहेंजे. तेमडी नव आहुती मीनी मृत्रापी आपयी

(२) छुडनी अपना स्थिडिजनी दशनाजुपे ह्यादिदेवोने मोटे मुळी दान ( वडा-यूरी दुध पाक दीवी ) गोटवी तेना प्रस्पेकन पूजन करी संकल्पकरयो .

पत्नी प्रार्थना दरीनी थया बाद गणपतीनवेपहोने मुक्त मुक्त नामा क्षेत्र पालत बली करेतु.

🏥 धियेदेव स्तस्मे यागात्मने नमः॥ प्रार्थनां समर्पयामि ॥ अनेन विरुदानेन इन्द्रः त्रीयतां नमम ॥ एवं सर्वज्ञोहः 🎼 🎒कार्वः ॥ आग्नेयां ॥ अग्निं सांगं सपरिवारं सशक्तिकं एभिर्मत्या० अन्नये सांगाय सपरिवाराय० इमं सदीप माप- 📳 🎒 भक्तवर्लि स॰ भोअमे दिशंस्त वलिभक्ष मम सङ्कद्वं पस्याग्युदयं कुरु कुरु ॥ आयुः कर्ता शांतिक॰ प्रष्टिक॰ ন্তুष्टि- ី 🖠 🕍 क० निर्विष्ठक० वरदो भव ॥ सर्वदेवमयो देवो रँकोवन्हिर्महावरूः ॥ सप्तजिह्वो महावीयों नमो वैश्वानसयते ॥ 🕌 🎒 प्रार्थनां स॰ ॥ अनेन प्रजनेन अप्तिः प्रीयतां नमम ॥ दक्षिणस्यां ॥ यमं सागं सपस्वारं सायुर्थं सशक्तिकं 🐉 🕌 एमिर्गेशञ्च० यमाय सांगाय सपरिवाराय साजुधाव सशक्तिकाय इमं सदीपमापभक्तवर्छि स० भो यम दिशंख 🕼 ्रीविलिभस मम सञ्ज्डंबस्पाभ्युदयं इक कुरु ॥ आयुः कर्ता शांन्तिक० प्रष्टिक० द्विष्टिक० निर्विन्नक० बरदोभव ॥ 🕺 🕌 दंडहस्तमयोदेवो धर्माप्यक्ष महावरूः ॥ आवाहये महादेवं तस्मै कालात्मनेनमः ॥ प्रार्थना स० अनेन पूजनेन

्रीसशक्तिकं एभिर्गशाञ्चपचारे स्त्वामहं प्रजयामि ॥ इन्द्राय सांगाय सपरिवासय साश्चभाय सशक्तिकाय इमं ैं। सदीपमापभक्तवर्लि समर्पयामि भो इन्द्र दिशंरत्र वर्लिभक्ष मम सक्टंबस्य। भ्युदयं करु करु ॥ आयुःकर्ता क्षेमकर्ता 🕌 🖟 शान्तिकर्ता प्रष्टिकर्ता तृष्टिकर्ता निर्विप्तकर्ता वस्दो भव ॥ इन्द्रः सुरपतिर्जिष्णुः स्वलंकिशो महावलः॥ शतयागाः 🎉

विश्वेर हैं यमःश्री ।। निर्फ़ात ।। निर्फ़ातिं सांगं सपिश्वारं सशक्तिकं एभि गैंघा । निर्फ़ात सांगाय सपिश्वाराय इमं । सदीपं मापभक्तविं स॰ भो निर्फ़ाते दिशंस्स विर्हिभक्ष मम सकुडुंवस्थाभ्युदयं करू कर ।। आयुः कर्ता शान्तिक हैं ुं पुष्टिक॰ द्वष्टिक॰ निर्वि॰नक॰ वस्दो भव ॥ सञ्जसेभ्यो 👅 स्तार्थं भवन्नेत्रप्रतिष्ठितं ॥ निर्विष्ठयञ्जभूमिं च कुरु तं 🕏 ्र सत्तसाधिया। प्रार्थनां स०।।अनेन पूजनेन निर्फातिःशी०।। प्रतीच्यां वरुणं सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकं एभि 💲 गैंधा॰ वरुणाय सांगाय सपरिवाराय साखुशाय सशक्तिकाय इमें सदीपंमापभक्तवर्छि स॰ भो वरुणदिशंरत बर्छि भक्ष 🕏 ममस् कुडंनस्याभ्युद्यं कुरुक्तः॥आगुःकर्ता पुष्टिक० तुष्टिक०निर्विष्ठक० वस्दो भव॥पाराहस्तात्मकोदेवो जलसञा- 🔅 ि धिपो महान्।।निम्नगामीतिविख्यातो वरुणाय नमोनमः।। प्रार्थनां स० अनेन पूजनेन वरुणःप्री०।।वायव्यां वाखुं सांगं 🦠 संपरिवारं साञ्चर्यं संशक्तिकं एभिर्णंघा॰वायवे सांगाय संपरिवासय संशक्तिकाय इमं सदीपमापभक्तविलं स॰भो वायो 🧖 दिशंरत बर्लिमक्ष ममस्कृदंवस्याभ्युद्यं कुरुकुरु।। आयुःकृती पुष्टिक॰ द्वष्टिक॰ निर्विधक॰ वरदोभव वायुस्तुवल॰ 🕃

माक्रम्य बायुराजः सुप्रजितः ॥ अहोवायो मृगारूढ दशास्त्रनमोनमः प्रार्थनां स॰ अनेन पूजनेन वा॰ पी॰ ॥ ई ॥ उदीच्यां ॥ सोमं सोमं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकं एभि गैधा॰ ॥ सोमाय सांगाय सपरिवाराय सशक्तिकाय वृष्टिक∘ निर्विष्ठक॰ वरदे। भव ॥ नक्षत्राणां च सर्वेषां सोमराजा अकीर्तितः ॥ सनांगी च महाहस्त सोमराजा-िशी यते नमः॥ प्रार्थनां स॰ अनेन प्रजनेन सोमःप्री॰॥ईशान्यां ॥ईश्वरं सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकं एभि गैधा॰ ईश्वसय सांगाय सपरिवाराय सशक्तिकाय इमं सदीपमापभक्तवर्लिस॰ भी ईश्वर दिशंरत वर्लिभक्ष मम सङ्द्रेवस्या 🕄 म्युदयं कुरु कुरु ॥ आयुःकर्ता प्रष्टिक॰ तुष्टिक॰ निर्विष्ठक॰ वस्दोभव ॥ विद्यायसयभृतेश ज्ञानभूवेंदपास्मः॥ 🕍 सदेशोदेवपुज्यश्च भूपालश्च बलिप्रियः ॥ प्रार्थनां स॰ ॥ अनेन पूजनेन ईश्वरःश्रीयतां नमम् ॥ पूर्वेशानयोर्मध्ये 🐉 उर्थायां ब्रह्माणं सांगं सपरिवारं साख्धं सशक्तिकं एभि गैं॰ ॥ ब्रह्मणे सागाय सपरिवाराय सशक्तिकाय ॥ इसे 🐉 मदीपमापभक्तवर्लि स॰ ॥ भो बहान दिशंस्त्र चिलंभत ममसक्ट्रंबस्याम्युद्यं करु करु ॥ आयुःकर्ता पुष्टि-

कर्ची द्धष्टिकर्चा निर्विप्रक० वरदे।भव।। त्रह्मादुनलमाकस्य त्रह्माताः खुप्रजितः।। अहोबुद्धः स्थितो त्रह्मा दर्धनस्याम 📳

इमं सदीवमायमक्तवर्लि स॰ भोसोम दिशंरत वर्लिभन्न मम सङ्दंवस्यान्युद्यं क्रुरु क्रुरु ॥ आयुःकर्ता प्रष्टिकः

रसं सर्वदा ॥ प्रार्थनां स॰ ॥ अनेन पूजनेन बह्मा प्री॰ ॥ निर्ऋति पश्चिमयो मध्ये ॥ अयस्थायां ॥ अनंतं सांगं सपरिवारं सायुपं सशक्तिकं एमि गें॰ ॥ अनंताय सांगाय सपरिवाराय सशक्तिकाय इमं सदीपमापभक्त विलं

निश्की 👸 स॰ भो अनंत् दिशंस्स वृत्तिभस्ष ॥ मम सङ्डंबस्याभ्युद्यं कुरु इरु ॥आयुःकतो प्रिष्टिक० वृष्टिक० निविध्नक० 🥇 म०१ Deall 3 वरदोभव ॥ यो सावनंतरूपेण ग्रह्माण्डं सचसचरं ॥ पुष्पवत्थार्यते मृद्धित तस्मे नित्यंनमोनमः ॥ प्रार्थनां स० ॥ अनेन पूजनेन अनंतः प्री० ॥ ततो गणपतिसमीपे विह्नं निधाय ॥ गणपितं सांगं सपरिवारं सशक्तिकं एभि ै गैंधा॰ ॥ गणपतये सांगाय सपरिवाराय संशक्तिकाय इमं सदीप मापभक्तवित्तं स॰ ॥ भोगणपते दिशंरक्ष बिलंभन्न मम सक्रडंबस्याभ्यदयं क्ररु कुरु ॥आयुःकर्ता प्रिष्टिक॰ त्रष्टिकर्ता निर्विच्नकर्ता वस्दोभव॥ वऋतुण्डम- ृ हाकाय सूर्यकोटि समप्रभ ॥ अविष्नं कुरु मेदेव वर्लिभक्ष नमोनमः ॥ प्रार्थनां स॰ ॥ अनेन पूजनेन गणपातिः हैं श्री॰ ॥ सगणेश गौर्याद्यादाहितमातृः सांगाः सपस्विसः सायुवाः सशक्तिकाः ॥एभि गैषा॰ सगणेशागौर्याद्याः बाहित मातृम्यो सांगाभ्यः सपरिवासभ्यः सायुधाभ्यः सशक्तिकाभ्यः इमं सदीप मापभक्तवर्लि स० भोभो सगणे ्रशागीर्याद्याबाहिमातरः दिशंरक्षत वर्लिभक्षत मम**्राहे सकलक्र**डंबस्याभ्युदयं कुरुत आयुः कर्र्यः पुष्टिकर्र्यः

तुष्टिकर्र्यः निर्विष्नकर्श्यः वस्दाःभवत ॥ अम्य त्वद्रत्सवाक्यानि वलिप्रजादियतकृतं ॥ तानि स्वीक्ररु सर्वज्ञे द्यालुत्वेन सादरं ॥ प्रार्थनां स०॥ अनेन पूजनेन सगणेशगोर्याचाहित मातरः प्रीयंतां॥ ग्रहविद्धानं॥आदि- 🤻

મહસા

भ्यः सायुर्वभ्यः सश्चितकेभ्यः इमं सदीपमापभक्तवार्ले स॰ ॥ भो भो आदित्यादि श्रहाः दिशंरसत् वर्लिभक्षत मगान्यदर्यकुरुत आयुः कर्तारः प्रष्टिकर्तारः द्वष्टिकर्तारः निर्विन्नकर्तारः वरदाः भवत् ।। यहाराज्यं प्रयच्छन्ति ग्रहा-गुरुषं हसन्त च ॥ ब्रहेस्त व्यापितं सर्वे त्रेरोक्यं सचसचरं ॥ प्रार्थनां स० ॥ अनेन प्रजनेन आदित्याद्याचाहित प्रीयंतां नगम ।। क्षेत्रपालं बर्लि ।। अद्यप्रबोंचरित० सकलारिप्टशान्त्यर्थ क्षेत्रपालप्रजन वलिदानं च करिन्ये ॥ क्षेत्रपालवलिद्रव्याय नमः इति यथाशयित गंधादिभिः प्रजयेत् ॥ क्षेत्रपालाय सांगाय भूतप्रेतपिशाच डाकिनी शाकिनी वैतालादि परिवारयताय) सायुधाय संशक्तिकाय सवाहनाय इमं सदीपमापभक्तविलं स० भो भो क्षेत्रपाल सर्वतो दिशं रत बर्लि भक्ष ममस्कुडंबस्याभ्युद्रपंक्रह क्कह ।। आयुः कर्तो क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता प्रष्टिकर्ता त्रष्टिकर्ता निर्विध्नकर्ता नरदो भरा।प्रार्थनां।।द्वीनमः क्षेत्रपालस्त्वं भृतपेत गणैः सह।।पूजां विल गृहाणेमं

त्यादिदेवान् सांगान् सपरिवासन् सायुधान् सशक्तिकान् एभि गैंधा॰ आदित्यादि देवेभ्यः सांगेभ्यः सपरिवारे-

अर्थ- ( १ ) क्षेत्रपालक्षं बली छानदीमा अपना सुरदामा मुकतु-तेमा प्रकल्ट मात भारते. तथा पुरी हुए पाठ पदा ने कर्यु होय ते मुकी चोलडो 💍 दीवड़ों करी नार दिवेट सुनी तेंतु मेंन प्रभाणे पुगन करी बड़ीनों संतल्य करवों तथा ते बड़ी चकड़े सुकावबु—ते बड़ी डेनार आक्षणानुं पूनन करी दाही-णा आणी तेनी पासे ग्रुरावती—ते न होष तो नांवे व्हलेड नइ यनपाने भुक्तो.

वि॰को॰ 🏅 सींग्यो भवतु सर्वदा॥१॥आरोग्यमायु भेंदोहि निर्विच्नं कुरुसर्वदा।द्वीं नमःक्षेत्रपालाय महावल पराकामाय वर्वस्केशाय समस्त न्यापकाय चतुःपष्टिरूपाय नगरग्रामक्षेत्रवनन्यापिने सकळजगरप्रजिताय ॥हां हीं =हुंक्षेत्रपाल बिलें गृहाण भैसवरूपेण क्रम क्रम क्रूंकुँफाँफाँहींहींडमर डमर क्रम्ते यमदंडहस्ते हुंहुंहुं रूपादि किलि किलि किलितं पातुनः 🖫 🖁 क्षेत्रपालः ॥ यंपंपंपक्षरूपंदशदिशिवदनं भूमिकंपायमानं संसंसंहारमृतिशिग्रसिचतजदाशेखरं चन्द्रविवं ॥ दंदंदं-

दीर्घकेशं कृतनखपुपं उर्घ्वेस्वाकग्रहं पंपंपपापनाशं प्रणतपशुपति भैखं क्षेत्रपालं ॥ १ ॥ इति संप्रार्थ्य ॥ अने-ेनपूजनपूर्वक चलिदानेन क्षेत्रपालः शियतां ॥ विष्ठिषाहि ब्राह्मणं पूजयेत् ॥ विल्ठं विसृज्य तत्तस्थानं जलेन संप्रो-ुँ ह्व ॥ ब्रह्मणाः शौन्तिस्कं पठेयुः ॥ आदौ नमामि चतुराननवंद्यमान मिञ्छातुकूल मिललं च वरं ददानं ॥ तंतुंदिलं द्रिस्सनाप्रिययज्ञसूत्रं पुत्रं विलासचतुरं शिवयो शिवाय ॥ १ ॥ आदोनमामि भजता मभिलापदात्री 🕹

धात्री समस्तजगतां दुरितापहंत्री ॥ संसारवंधनविमोचनहेतुभृतां मायां पर्रा समधिगम्यपरस्यविष्णोः ॥ २ ॥

HEPH

आदीस्मरामि भवभीतिमहार्तिशान्त्ये नारायणंगरुडवाहन मञ्जनाभं ॥ त्राहाविमृतवस्वारणमुक्तिहेत्रं चकायुर्थ

थर्य-(१) बर्झदान मुक्या पत्री ब्राह्मणीए शाहि पाटना मंत्री मणवा-

पूर्णोहाति होमं क्र्यांत ॥ अध्यक्षांबरित कृतस्य कर्मणः सांगतासिष्यर्थं वसोषीय समन्वित पूर्णाहृति होमं करिष्ये ॥ अध्य पूर्णाहृतिः ॥ चतुर्गहीत आज्यमादाय तदुर्णरे स्वतवक्षेणाच्छादितं, सुशोभितं कृत्वा नािलेकरं निषाय, ततो स्थानात उत्थाय पूर्णाहृति मंत्रान् पठेत ॥ तत्र मंत्राः ॥ चतुःशृंग कियावद्धो विस्पूर्ण नािलका द्वयंः ॥ पण्नेत्र श्च चतुःश्रोत्र त्रिपादः समहस्तकः ॥ १ ॥ याग्यभागे विद्वस्ता नािलका द्वयंः ॥ पण्नेत्र श्च चतुःश्रोत्र त्रिपादः समहस्तकः ॥ १ ॥ याग्यभागे विद्वस्तः सन्यभागे त्रिहस्तकः ॥ सुवं सुवं तथा शक्ति मक्षमालां च दक्षिणे ॥ २ ॥ तोमरं व्यंजनं चैव घृतपात्रं अर्थ- वर्ष- स्वर्णा वर्षेन् । । वर्षेन् । वर्षेन् । वर्षेन् । । वर्षेन् । वर्षेने । वर्षेन

करतुं. पत्री ते एर उपर पतुं. तथा यनवान आवारित अबकी रेहेर्चु. तथा यनवान पत्नीये पोताना स्वाधीने अवकनुं तथा कुँदेव तथा प्रतीये पण स्वा हैं उपर रहेर्चु. गौरे ऑपटा महस्थोने वांदलकरी भाव बोहबुं. स्वारवाद गारीयल होपाया पत्री वसीर्वार होप थया पत्री अधिक महस्याए बोहानी हैं नामये वेसीराई-आ टेकाणे गोगाय शियाद शरमानालाने बोह्यववानो संबहाय के तथा ने आच्या होप तेने बांलेकरी भात बोही नाई बांधे के. पत्री

वर्णाहरितं काम थया पत्री केटलीक स्वातीमां गोळ घाणा पण आपेके, ए संवदायके,

तरायभस्य नस्कार्णवतारणस्य पारायण प्रवण वित्र परायणस्य ।। २ ।। यजमानः पाणि पादं प्रक्षाल्याचम्य

ुँ रूपाय नमो मृह्याभिरूपिणे ॥ पंचाभिरूपिणे तुभ्यं नमस्ते परमात्मने ॥ ८॥ महाराजेकराजाय नमस्ते भक्त 🖔

ु वत्सल ॥ काण्डद्रयोपचाताय ब्रह्मकर्मस्वरूपिणे ॥ ९॥ स्वर्गीय स्वर्गदात्रे च यहेशाय नमोनमः ॥ नमोऽभिहोत्र 🕏 हैं रूपाय नमः परमिष्ठिरूपिणे ॥ १० ॥ चातुर्मास्यस्वरूपाय नमः पश्चिष्ठिरूपिणे ॥ सौत्राग्णिने नमस्तुग्य मिन े होमाय वे नमः ॥ ११ ॥ अत्यिमिहोमरूपाय तथा चोक्य स्वरूपिणे ॥ नमः शोडशरूपाय वाजपेयाय वे नमः 🛜

🐉 ॥ १२ ॥ अतिसत्त्र नमस्तुभ्य माप्तोर्याम नमोनमः ॥ नमोस्तु सर्व भुताना माधाराय महात्मने ॥ १३ ॥ ए॰ 🐉

कत्रि पंचिमविक्ती दींप्यमानपडात्मने ॥ नमःसमस्तदेवानां वृत्तिदाय सुवर्वसे ॥ १८ ॥ शकरूपाय जगता म ेशेषानां स्तुतित्रद् ॥ त्वंसुर्खं मर्वदेवानां त्वयात्तं भगवान् हविः ॥ १५ ॥ रुद्रतेजसमुद्धतो वस्दोहज्यवाहनः ॥

प्रणतिनम्नित्तरोषांसा वाग्भिः महर्षपुळकोद्गमचारुदेहाः ॥ २ ॥ देग्या यया तत्तिमदं जगदात्मसक्त्या निःशेपदे हिं वगणशाक्तिसमृहमृत्यां ॥ तामिक्कामखिळदेवमहर्षिष्ठज्यां भक्त्या नताः स्म विद्धातु श्वभानि सा नः॥ ३ ॥ वस्याः प्रभावमन्नुळंभगवाननन्तो ब्रह्माहरश्च न हि वक्तुम्छं बळं च॥सा चण्डिकाऽखिळजगत्परिपाळनाय नाशाय चाश्चभभयस्य मतिं करोतु॥ध॥या श्रीःस्वयं सुक्रतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः पापात्मनां कृतिधयां हृदयेषु बुद्धिः ॥ श्रद्धा सत्यां कृळजनप्रभवस्य ळजा तां त्यां नताःसम परिपाळय देवि विश्वम्॥५॥किं वर्णयाम तव ख्पमचिन्त्यमेतत् किंचाति वीर्यमसुरक्षयकारो भूरि॥ किंचा हवेषु चारतानि तवातिवानि सर्वेषु देव्यसुरदेवगणादिकेषु ॥६॥ हेतुःसमस्तजगता

त्रिग्रणार्श्वपे दोपेने ज्ञायसे हरिहरादिभिरण्यपारा ॥ सर्वाध्रयार्श्वस्त्रसिदं जगदंशस्त्रसम्बर्धाकृताहि परमा प्रकृति-अप्रमाणे पूर्णकृति प्रयाप्त्री बसोर्थाराते होम प्रवोगोहरे एव तेष करतां नथी पूर्णाहृतियां केवल नाख्किर त्वर येत्रोपणी खुषमां गुक्ती वांताणे होमन् अने बसोर्यारामी यीनीपारा अवतीरत प्रवी जोहर नेनाणी कर्पजराजसमारतं जोदंबिहत पतुं नथी एचकार्यो श्रद्धा तथा उत्परतार्थी करवाना है ॥

अप्रिवेश्वानरः साक्षात् तस्मे नित्यं नमोनमः ॥ १६ ॥ इदमम्नचे वेश्वानसय वसुरुद्वादित्येभ्यः शतऋतवे सत्पते अमन्ये अमन्ये अञ्ज्यश्च नमम ॥ नौलिकेरं होमयेत इति प्रणीहतिः ॥ ततो वसोर्वासं जहयात् ॥ तत्र मंत्राः ॥ र्री

॥ शुकादयः सुरगणा निहतेऽतिवीयें तरिमन्दुसत्मिन सुराखिले च देव्या ॥ तां उप्रदः

स्त्वमाद्या ॥ ७॥ यस्याः सूमस्तस्रता ससुदीरणेन तृप्तिं प्रयाति सकल्पेष्ठ मखेष्ठ देवि ॥ स्वाहाऽसि वै 💸 म०१ ें पितृगणस्य च तृप्तिदेतुरुवार्यसे त्वगत एवं जनैः स्वषा च ॥८॥ या मुक्तिदेतुरविचिन्त्यमहात्रता त्व मभ्गस्यसे ै धुनियतेन्द्रियतत्त्वसारैः।।मोक्षार्थिभिर्मुनिभिरसासमस्तदोपिर्विद्याऽसि सा भगवती परमा हि देवि॥९॥ शब्दारिमका े सुविमरुर्म्यञ्जपं निघानसुक्रीथरम्यपदपाडवतां च साम्राम्।।देनि त्रयी भगवती भवभावनाय वार्तीच सर्वजगतां परमा- 🕃 िर्तिहन्त्री ॥१०॥ मेघार्गसे देवि विदिवाखिलशास्त्रसारा दुर्गार्थसे दुर्गभवसागरनौरसंगा ॥ श्रीःकेटभारिहृद्वेवकृता-

े भिवासा गोरीत्वमेव शिरामोळिकृतप्रतिष्ठा।११॥ईपत्सहासममलंपरिष्र्णचन्द्रविष्यानुकारि कनकोत्तमकान्तिकान्त-माअत्यद्भतं प्रहृतमात्तरुपा तथाऽपि वक्त्रं विलोक्य सहसा महिपासुरेण॥१२॥ दृष्ट्रा तु देवि कुपितं भुकुटीकरालः । मुद्यच्छशाङ्कसदृशच्छिव यत्र सद्यः ॥ प्राणान्सुमोच महिपस्तदतीव चित्रं केर्जीव्यते हि कृषितान्तकदरीनेन 🖔 ॥ १३ ॥ देवि प्रसीद परमा भवती भवाय सद्यो विनाशयसि कोपवती कुळानि ॥ विज्ञातमेतदधुनैव यदस्तमेत 🞖

त्रीतं वर्लं छविप्रलं महिपासरस्य ॥ १४ ॥ ते संमता जनपदेषु धनानि तेषां तेषां यशांसि न च सीदिति धर्मे- 🦠 वर्मः ॥ धन्यास्त एव निभृतात्मजभृत्यदारा येपां सदाऽन्खुदयदा भवती प्रसन्ना ॥ १५ ॥ धर्म्पाणि देवि सक- 🕺

🎼 🛮 १८ 🗓 दृष्ट्रैव किं न भवती प्रकरीति भस्म सर्वोच्चसनरिष्ट्र यस्त्रहिणोपि शस्त्रम् 🛭 छोकान्त्रवान्तु रिपवीऽपि 🎇 🙎 हि शस्त्रपुता इत्यं मतिभवंति तेष्वहितेषु सान्धी ॥ १९ ॥ सङ्गप्रमानिकस्विस्फ्रःगैस्तथोप्रैः श्रूलाप्रकानितनिवहेन 🖫 🎼 हशोऽस्रराणाम् ।। यत्रागता विरुयमेश्चमदिन्दुखण्डयोग्याननं तव विरोक्यतां तदेतत् ।। २० ॥ दुर्वृत्तवृत्तशमनं 🌠 🎼 तिव देनि शीर्छः रूपं तेथेतद्विचिन्त्यमनुरूपमन्यैः ॥ वीर्थं च इन्तृहृतदेवपराक्रमाणां वैरिष्वपि प्रकटितेव दया 📳 ्वित्येत्यम् ॥ २१ ॥ केनोपमा भवतु तेऽस्य पराक्रमस्य रूपं चशत्रभयकार्यातिहारि क्रत्र ॥ चित्ते कृपा समरीनष्टरता 🕄 च दृष्ट्वा स्वय्येव देवि वस्दे भुवनञ्चयेऽपि ॥ त्रैलोन्यमेतदिष्क् रिप्रनाशनेन त्रातं स्वया समस्मूर्धनि तेऽपि हता॥ विवं रिप्रगणा भवमत्यपास्तमस्माकमुन्मदश्चरारिमवं नमस्ते ॥ २३ ॥ श्रुलेन पाहि नो देवि पाहि सङ्गेन

हानि संदेव कर्माण्यत्याद्दतः भतिदिनं स्रकृती करोति ॥ स्वर्गं भयाति च ततो भवतीप्रसादाछोकत्रयेऽपि फल-दा नसु देवि तेन ॥ १६ ॥ दुर्गे स्प्तता हरिस भीतिमशेषजंतोः स्वस्थेः स्पृता मतिमतीव शुभां ददासि ॥ दारियदुःसभयदारिणी का त्वदन्या सर्वोषकारकरणाय सदार्विचत्ता ॥ १७ ॥ एभिईतैर्जगदुपैति सुसं तथेते । कुर्वन्तु नाम नस्काय चिराय पापम् ॥ संग्रामसृत्युमधिगम्य दिवं प्रयान्तु मत्वेति नूनमहितान्विनिर्हेसि देवि

चाम्निके ॥ बण्टास्तरीन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च ॥ २४ ॥ प्राच्यां स्थ पतीच्यांच चण्डिके रक्ष दक्षिणे ॥ 🖇 प्र०९ श्रामणेनात्मश्रुरुस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि ॥ २५ ॥ सीम्यानि यानि रूपाणि त्रेरुोक्ये विचर्रान्ते ते ॥ यानि 198॥ 🎉 चात्यर्थचेताणि ते स्थासमांस्तया भ्रवम् ॥ २६ ॥ खद्गश्रूलगदादीनि यानि चाम्नाणि तेम्त्रिके ॥ कस्पछवसंगीनि ँतैसमान् रक्ष सर्वतः ॥ २७ ॥ ऋषिस्त्राच ॥ २८ ॥ एवं स्तुता स्त्रीर्विद्येः क्रसुमेर्नन्दनाद्ववेः ॥ अर्विता जगतां ं धात्री तथा गन्पानुरुपेनेः ॥ २९ ॥ भक्त्या समस्तैन्त्रिदशैदिन्येभूपेः सुभूपिता ॥ प्राह प्रसादसुसुसी समस्तान्धः णतान् सुरान् ॥ ३० ॥ देञ्खवाच ॥ ३१ ॥ त्रियतां त्रिदशाः सर्वे यदस्मत्तोऽभिवाञ्छितम् ॥ ददाम्यहमतिपीत्या 🎉 स्तवेरेभिः सुप्रजिता ॥ ३२ ॥ देवाऊचुः ॥ ३३ ॥ भगवत्या रुतं सर्वं न किंचिदवशिष्यते ॥ यद्यं निहतः शञ्चरस्माकं महिपासुरः ॥ ३४ ॥ यदि चापि वसे देयत्स्वयाऽस्माकं महेश्वरि ॥ संस्मृता संस्मृता त्वं नो हिंसेथाः परमापदः ॥ ३५ ॥ यश्च मर्त्यःस्तवेरोभिस्त्वां स्तोष्यत्यमङानने ॥ तस्य वित्तर्धिविभवेर्धनदारादिसंपदाम् ॥३६॥ મહદ્વા ्र रुद्धपेऽस्मत्यसन्ता तं भवेषाः सर्वदाग्विके ॥ ३७ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ३८ ॥ इति प्रसादिता देवेर्जगतोऽयें तथा-्र ऽऽत्मनः ॥ तथेत्रुक्ता भद्रकाली वभूवान्तर्हिता नृप ॥ ३९ ॥ इत्येतत्कथितं भूप संभूता सा यथा पुस ॥ देवी 💈

🐉 ।। श्रद्धां मेशां पराः प्रज्ञां विद्यां पुष्टिं श्रियं वरुं ।। तेजमायुष्य मारोग्यं देहि मे हव्यवाहन ।। १ ।। यथा 🔀 🎇 शस्त्र प्रहाराणां कवर्च भव सर्वदा ॥ एवं दैवोपघातानां शांतिर्भवति वारुणं ॥ २ ॥ इति मंत्रेण ललाटे ग्रीवा यां दक्षिणांशे हृदि एततस्थाने भस्म धारणं क्यात ॥ ॥ हस्ते जलं गृहीत्वा ॥ आघारादि पूर्णाष्ट्रति पर्यंतं य- 🖓 हा प्राप्त के प्रस्ति के प्रस्ति के प्रस्ति के प्रस्ति के प्रमाण के प्रस्ति के प्रमाण के प्रस्ति के प्रमाण के प्रस्ति के प्रमाण के प्रम हर्द्य यावद्यावत् सस्याकः यस्य परप परप परपातः सामानः स्वापः स्वा

|देवशरीरेश्यो जगत्रयहितैषिणी।।४०।। प्रनश्च गौरीदेहात्सा ससुद्धता यथाऽभवता। वथाय दुष्टदैत्यानां तथा श्वम्भः 🕍 ्रीतिशस्त्राचोः ॥ ४१ ॥ रक्षणाय च लोकानां देवानामुपकारिणी ॥ तन्त्रपुष्व मयाऽऽस्यातं यथावत्कथयामि ते ु।। ४२ ॥ इति शकादयस्त्रीतभिः वसोर्घारं जहयात वा प्रधान देवसुकेर्ज्डहवात ॥ इदं मुहारनये नमम इति।। 🎇 हुबोपरि प्रगीफलं निधाय ॥ भोभोवन्हे महाशक्ते सर्वकर्म प्रसायक ॥ कर्मातोपिसंप्राप्त सांनिष्यं क्रह 🐉 सादरं ॥ नमः ॥ इति मंत्रेण होमयेत स्त्रकलश समिषे छशे त्यागःस्थंडिलस्य ईशानकोणात ख़ुवेण भस्मे गृहीत्वा 🧗

•को॰ 🖇 प्राशनं ॥ पवित्राभ्यां मार्जनं ॥ अग्ना पवित्र प्रतिपत्तिः ब्रह्मणे पूैर्णपात्र दानं ॥ कृतस्य कमेणः सागताासप्य- 🕦 र्थं त्रह्मन् इदं प्रणेपात्रं सदक्षिणाकं तुभ्यमहं संप्रददे ॥ प्रतिगृह्मतां इति यजमानः ॥ प्रतिह्ममि इति आह्मणः ॥ वंणीता विपोकः ॥ विगोकोदकेन यजमान मूर्यान मभिषिचेत ॥ मंत्रेण ॥ भगन्ते वरुणोराजा भगं सूर्यो 🕏 वृहस्पतिः ॥ मर्गमिद्र श्र वायुश्र भगं सप्तर्पयो दद्दुः ॥ अमृताभिषेकोऽस्तु ॥ ततः श्रेयः संपादनम्॥ यजमान-इस्ते जर्ल गृहीत्वा ॥ अचेत्यादि० इतस्य कर्मणः सांगतासि पर्यं त्राह्मणेभ्यः श्रेयोंगीकरण महं करिण्ये ॥ 🞖 त्राह्मणः उदइन्त्रोपविश्य ।। जलं गृहीत्वा ॥ अखेत्यादि०कृतस्य कर्मणः सांगतासिष्पर्थं यजमानाय श्रेयोदानं 🕏 करिन्ये ॥ शिवा आपःसंतु ॥ संतु शिवाआपः ॥ सोमनस्यमस्तु ॥ अस्तु सोमनस्यं ॥ अक्षतं चारिष्टं चास्तु ॥ अर्थ-पर्रोक्त्याडो पूर्णररी ब्रब्मने पूर्णपाननी दशणाभाषी प्रणीतानुं पाणीबोली तेनाथी यजवानने माथे छाटबु पर्श यजपानने अभियोक रस्पेत पर्रोधेय-महणकरी मक्षाणीने दक्षणाआपदी,रश्चिमे रोखनु—श्रेयलेदाया पेहेला त्राह्मणपुत्रनकरी माह्मणेपीताना हापपापाणीतगासीपारी लड़केहेंचुं के आजे तमारा कर्मपा मसाथी आरभी जेटल राजिनोये अप होम पाठ विमेर्र कथीं हेर्नु फल आनल तथासीपारी बढे तमनेसोपुष्ट, एमक्हीपाणोसोपारीचनमाननाहरूम्या आपवी.

प्राज्ञाचार्योदिमाद्दणोने द्रस्णाआपेश तेमानदानेएकमाया आपरोतया आचार्यने गाय आपर्यानोद्दये ते नहीयती तेनीतिरक्रयनेटलीद्दशायायायी. हिलनोने , यथाशाकि दक्षिणा आक्ती दक्षणा अपनापार प्रशिक्षानापात्रमा थी भरी तेमा सुवर्णमुनी पोतानुमोर्डु नोइ तेमाधी पी जणक्तत बहारकारी झाराणीने तेमात्र आपन्-

सजलेन प्रगीपलेन तुम्यमहं संप्रदरे ॥ तेन श्रेयसा त्वं श्रेयोवाच भव ॥ भवामि इति यजमानः ॥ ततः 🔯 आचार्धदीनां प्रजनप्रदेक दक्षिणाप्रदानं करिष्ये ॥ ऋतस्यक० इमां दक्षिणां क्रम्यमहं० अथ दानानि ॥ स्वर्ण 🕄 गो भ तिलान्दद्यात सर्व दोपापन्तस्ये ॥ सबस्रं सहिरण्यं च प्रजयेत् ब्रह्मणःश्वतः ॥ आचार्याय मां त्रक्षणे अनद्वाहं उक्तोक्तरानानि दत्वा ॥ ततोछायापात्र दानं ॥ कांस्यपात्रे सहिरण्यं घृतं प्ररचित्वा ॥ संपत्नीकः छार्यां निरीक्षेत् ॥ आज्यंतेजःसमुद्दिष्ट माज्यं पापहरं परं ॥ आज्यं सुराणा माहार माज्ये लोकाः प्रतिष्ठिताः ॥ इदं छायापात्रं धृतप्रस्ति सूर्यदेवतं कृतस्य कर्मणः सांगतासिन्यर्थं कस्मेचितभ्रक्षणाय दास्ये ॥ अथ पीठदानं ॥ कृतस्य॰ इमानि गणपत्यादिदेवानां पीठानि दास्यमानो-परकरसाहितानि गंपपुष्पाद्याचितानि आचार्याय दास्ये ध्दानसां।।दञ्जणांतु०।।ततः स्थापितदेवताकलशोदकं एकस्मि

अस्तक्षत मरिर्ष्य ॥ गंधाःपांतु ॥ अक्षताःपांतु ॥ पुष्पाणि पांतु ॥ यत्पापं रोगमश्रुभ मकत्पाणं तहुरे । प्रतिहतमस्तु ॥ यच्ह्रेप स्तदस्तु ॥ भवन्नियोगेन अस्मिन्नमीण यत्क्रतं आधार्यत्वं यत्कृतं नद्यत्वं तथा च एभिः । प्राह्मणेश्वह यश्कृतो होमः ॥ यश्कृतो जपः ॥ आचार्यादयस्तात् होमाज्यपा चतुत्पत्रःश्रेयः तत्असुना साक्षतेन । बे॰ को॰ 🎖 नगाने एकीकृत्यू॥ दूर्वा पंचपहर्वः उदङ्मुख आचार्यादयः सपत्नीकं युजमानं प्राङ्मुखमुपविष्टं अभिपिनेयुः ॥ 🚼 हैं तत्र मंत्राः ॥ अभिषेके पत्नी वामतः ॥ शकादिदशदिक्याला महोशाः केशवादयः॥आपस्ते ब्नंतः दीभीर्म्य शांति हैं दरत सर्वेदा ॥१॥ समुद्रा गिस्यो नद्यो मुनवश्च पतित्रताः ॥ दीर्भोग्यं व्नंतु ते सर्वे शार्ति यच्छंतु सर्वेदा ॥२॥ 💡 पदगुरुहोरुजंघास्य नितंबोदर मालिके ॥ सत्नोरी बाइहस्तात्र ग्रीवायां सर्वसंघिपुः ॥ ३ ॥ नासा ललाटकणिम् 🞖 ्र केशांते शुचयस्थितं ॥ तदापो ब्नंतु दोर्भाग्यं शांति यच्छंतु सर्वदा ॥४ ॥ एतद्वे पावनं स्नानं सहस्राक्ष मृषि 🕏 स्पृतं ॥ ते नत्वा शत धारेण पावमान्यः पुनं त्विमां ॥ ५ ॥ एभिमैत्रेः अभिपेकं कुर्यात ॥ अभिपेकानंतरं स्नानं वा पादप्रक्षालनं कृत्वा उभयोः स्नानवस्त्रत्वागः ॥ वस्त्राणि आचार्याय दद्यात् ॥ सपत्नीकः यजमानः 🕏 श्रुक्तमाल्यांवरघर वृतमंगलतिलकः स्वासने उपविश्य आचम्य ॥ कृतस्य० यथासंख्याकान् ब्राह्मणान् सुवासिः ( १ ) मद्दश्यरः ॥ गर्भापानादि संस्कारे बाह्मणान् भोजपे इत्र ॥ शतंत्रियाहसंस्कारे पंचाशन्मेखला विधी ॥ आवसर्थे जयस्त्रियत् अर्थ-अभिवेकरुर्तीत्वते देवताओना कछ्छमांथी जछ्क्त्आंशनायातत्था यनमानवानीने यनमाननादाबाहायवरूपवेसाडी अल्छांट्यं तथाअभिवेकपांएक- 👍 बद्धनारणक्ररवानीविधिके नेथीर्द्धनीनामन एकोहेके ते बब्दमाह्मणिलआपर्तुं प्रमासुनासिनांबहुकादीनो बाह्मणनानन्नोसंकरपकरी यज्ञमानने तिछककरी आशिर्वाद र् आपन्नो तथ्वनानस्वरूपमा गण्यत्यादिदेवसामोनीभीठर्नुदान तथासुन्यणं माय स्मिरेना दानोनो संकल्पकरी प्रत्यक्ष अथना निष्कपआपन्नो, पर्धाओर्त्नुवयोर यसुं होय

तेनी समाहीने माटे मूर्यासनो संबक्त करी द्रव्य आपत्र.

|याबद्रागदिराम राम रमणं समावणं श्रूयतां ताबत्त्वं सङ्घष्ट्रच्रेपोत्रविवरं विष्णोःपद माप्तवान ॥ ३ ॥ येनाक्षरां 🕍 समान्ताय मधिगम्य महेश्वरात ।। कृत्स्नंज्याकरणं श्रोक्तं तसी पाणिनये नमः ॥ ४ ॥ येनधीता गिरःपंसां विम- 🕏 ँ∰रुः शन्दवारिभिः ॥ तमश्राद्मानजं भिन्नं तस्मै पाणिनये नमः ॥ ५ ॥ रिपवःसंक्ष्यं वार्ति कल्याणं चोपपद्यते ॥ निंदते च इन्हेंपुंसां महारूपं मम थुण्वतां ॥६॥ वसुदेवसुतं देवं कंस चाण्हर मर्दनम्॥ देवकी परमानंदं कृष्णं वंदे ∥जगहुरुं ॥ ७ ॥ मंत्रार्थाः सफ्लाः संतु पूर्णाःसंतु मनोरथाः शत्रूणां बुद्धिनाशोस्तु मित्राणा सदयस्तव ॥ ८ ॥ 🎇 श्रीवाभाने शतात्पर ॥ अष्टकपोजनेदनत्या तत्तत् संस्कार सिद्धये ॥ आग्रायणे प्रायथिते ज्ञासमान् दश गंच च ॥ इति ॥ बृहस्रारदीये ॥ (॥ 🐉 विज्ञानर्षिनानि कर्माणि सफल्याने भवेति हि ॥ अनर्षितानि कमारेणि भरमनीव हुर्नेहविः ॥ नित्यं नैपित्तिकं काम्पं ययान्यत्मोक्षसाधनम् ॥ विज्ञाः सप्तर्षितं सर्व सात्त्विकं फळदं भेनत् ॥

है विष्णोः समर्पितं सर्व सास्विकं फर्छ्दं भवेत ॥

्रीनीः बडुकान् कुमारिकाः यथात्रेन अद्याहं वा यथाकाले भोजयिष्ये ॥ कृतस्य क०न्यूनातिरिक्त दोष परिहास्थै 🕺 नानागोत्रेभ्यः त्राह्मणेभ्यः यथाराक्ति भूयसी दास्ये ।। आशिर्वादः स्वस्तियाचा० द्ववंतु नः ।। १ ॥ स्वस्य-∯ स्तिते कुशलमस्त विराय रस्त गोवाजिहस्ति धनधान्य सम्रद्धि रस्तु।।ऐश्वर्यमस्त वलमस्त रिप्र-क्षयोस्त वंशे सदै-🞼 ्रीवभवतां हरिभक्ति रस्त्या।२०यावत्तोयघरा घराघरधरा धाराधरा भूधरा यावज्ञारु स्रजारु चारु चमरं चामीकरं चामरं ॥

्मनसा चिंतितंकार्यं तस्तर्वं सफ्लं भवेत् ॥ आसप्यदेवाः प्रसन्नाः सन्तुः ॥ तथास्त्विति यजमानः ॥ विसर्जनं ॥ 🐉 🗝 🤇 यांद्वप्रहगणाःसर्वे स्वशक्त्यापूजिता मया ॥ इष्टकामप्रसिष्यर्थे पुनरागमनायच ॥ स्वस्थाने गच्छ ॥ अभि विसः 🏠 ॥५९॥ 🏅 जैनं ॥ गच्छ गच्छ प्रस्नेष्ठ स्वस्थाने एसोश्वर ॥ यत्र ब्रह्माद्यादेवा स्तत्रगच्छ हुताशन ॥ गच्छस्वं अगवज्ञते हैं स्वस्थाने परमेश्वरा।हरूपमादाय देवेन्यःशीव्रं देव प्रसीद मेशअशैत्यादि०मया अद्यान्हि यथाशक्ति द्रव्यादिकेन यत-कृतं कर्म तत् कारुद्दीनं भक्तिद्दीनं श्रद्धाहीनं त्राह्मणानावचनात् स्थापितदेवतात्रसादात् सर्वे परिपूर्णमस्तु।। भो ै त्राह्मणाः सर्वपरिपूर्णमस्त्वित भवंतो बुवन्तु ॥ २ ॥ अस्तु परिपूर्ण मिति द्विजाः ग्रूयुः ॥ इति त्रिः ॥ यस्य स्पृ- 🖇

त्या च नामोक्ता तपोयज्ञ कियादिषु ॥ न्यूनं संपूर्णतां याति सद्योवंदे तमन्युतं ॥ प्रमादात्कुर्वतांक्तमे प्रन्यवेता 🞖 ष्यरेषु यत् ॥ स्मरणा देवतिद्वष्णोः संपूर्णस्यादिति श्रुतिः॥विष्णवेनमो विष्णवे नमे। विष्णवे नमः॥इतिश्रीजयानं-दात्मज मूल्यांकर शर्मणा विरचितायां विवाहकीमुद्यां ग्रहयन्नभयोगः समाप्तः ॥ ાધ્યા

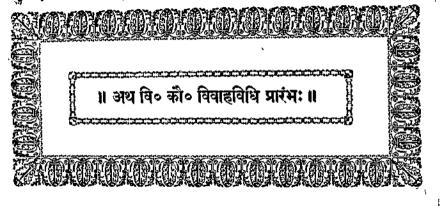
अर्थ-(१) अधि विसर्भन कतावर्त्तु तेमां एक पाद वह तेमां आखं सोपारी एकनी ठरेंग्र मुक्तमंत्र भणी होमतुं तथा नमस्कार कर्त्वो. अहीया

करणनारे के क्षेत्र होते क्षित्र वांची गर्ल्यु मोढुं करानी परमांनवानी रमा आपनी 🛪 पछी पुण असत छड़ देशेनी पासे रमा मांगी "तेमने विमर्तन 🕏 कां तुं तथा मोरेथी तथा मखत विष्णुमुं समर्थ करी नमस्कार करवा-पर्श मोरे मोरेथी कें रू-चांछा करवा त्राछी-ते व्यवहार करावी यजपानीने गीछ

मराश तेषां केकुमत सोशारी पेरी व्यर्का तेना उपर नारियल सुकी तेना पर ककड़ो रेशमी सुकी नाडु बांधी तेने केकु करी स्थांथी घरमां व्यः जह गोज-🕏 त्र पासे मुकाबवों ए पत्र एक रही है. आश्रमाणे प्रहरत्त्वो प्रयोग कहाो-हवे पत्री विवाह संबंधी कार्यमा त्रे छप्त सम्यवना पूर्वमां कर्नव्यवर्ग तथा रिवास तो केटचार होय है ते रीवान प्रमाणे अपना छरूम प्रमाणे अनुकुछ बखते करी छेना ते कहुं हुं अर्थ-महद्यांति यथा पत्नी नेने चेर मातः स्नवनानी रिवान होयके. तेणे माता स्नवना. तेमां पाते बादावनं घर होय त्यां वैवरराओए मर्यानेननं पत्नी. ियां रोफरीमो रोपेट्य नवांकरो होय. तेने पूजामां ठइ गयला कुंक मात चहाववा. तथा ठइ गयला घर्ड गालीयर तेना घरनाने आर्था मैंगरू सीत माता 🔯 ीर आवर्तुं. पड़ी मारणा अमादी उप्पर्रही परवाला मांथी कोह स्त्री तेना पगस्र दूर्शरही तेना पग भोड़ तेने छुंकु अस्कादी चांठीकरी चार असत वसावे. र् पर्छ ने मताना मात्र छह गोत्रन अवाहि मुक्का, पठी तेनी पुत्राकरी ते काम सवाह कर्त्यु-माताने भाटे थाल करवानी तेमां लापसी-सेटली-मग-नणा–दुभगक-सेप–पादः तथा दीवडा–विगेरे करीने ने थारु विरही राखवी–पछी वरणीने आवे वर कन्या पत्नी मातानी पूजा करी थालं⇒धराववी-ए 💆 रिशन परवादाने त्यांहां होय है. तेम कोइने त्यांहा माता स्थवनाने हो तो चण नथी प्रहर्माति थया पूळी छोकरानुं घर होय तो ते. दीवले मोसाव्य-🕍 कि पि भीमार्ख आपेके ते कार्य करते. मोसार्छ अपने के ते छान लेमारी मेड जणीने नेने चेर छद मनुछे तेना यरमांथी कीई पण की आने ते आर्था चांले। बरी ने बंसत मात तेना उपर क्षाये— पत्ने अबडी मेरी हर भाग अये गंडपना मुक्ते, पत्ने करना अथवा ने परणनार होग, तेने बागटपर बेसाजी, हैं भोसान्त्रियांगी पांडी करें पत्नी पोम भेरे तेमां नारियछ सोपासी पान मुक्ते तथा रुपियों मुक्ते पढ़ी. छोकरी होग तो नोटा अवोद्येयुं आंभी, अने डामीनों

आपी गर्न्सु मोर्डु करानी उठाउना, पती ते यजपानना घरनी पुल्य जेने भानता होय तेने ( महियारी केहे छे ) तेने पाउछापर रेज्ञपी करुडो पाधरीने व साडी पजमान पत्नी पासे तेना पन कूपपी घोलडानी परी तथा होचे केन्ठ करानी चांछो करानचो. पत्नी तेना हाथमां पान ( ५ ) तथा सोपारी (५) तथा दस आज: ग्रुकापी हार पेहेरानचो तथा तेने चार दखत भातपी नवानी उठाडनी-पत्नी एक मटोडीनो वडी खानी तैयां ते महियारी पासे पाणीपी प्र रिक्सीर 💸 ते होय ते तेना ह पण सुके- पड़ी नार नणी क्यांचे. पड़ी गोरे चाहो करवाने आवनी. एम केहेनार्थी फेटा मोसाहिया तरफना आवेटा छोड़ोमांभी 🚫 प्र० रे े वैवारतो बांटो करने होय ते वर्रा नाय. ए प्रमाणे बीता पशवासा पासे पण करावयो. पत्री मोसालातुं दाय ने होय ते आयी ए काम संदर्भ करवुं – 🎉 ै तेमन कन्यानाटाचं पर होच तो तेने घेर उधने दहाडे प्रहशाति पर रहा पड़ा मोसाछ अवि तेमां पेहेटां करा। प्रमाणे रीत करी कन्याने आपनामां चुड़ी-कांरण- वारी- तीडा- अने पानेतर तथा दायीना ने मछे ते ठाळ्या सोच हे आयी उपर प्रमाणे रीतभात करी ए काम संपूर्ण करवुं- पत्री कन्यावाळाचे त्था मायर्क संवाद्या पर्छ ने तेमा-अथेवाली बदाववी. ( मायरानी रीवान सुरत वीगेरे केटलाक गामपा नडे ) एने अंतरमंत्रप केहेंडे तेमा एक निशा स्थिडिलपर मुकी- पूर्वपश्चिम पाटला गीठनी एक सी पुरुपत्तं और्दु पूर्वपश्चिमने भीडे नेसाटमु तेमने बरमाछ चालकी तथा लेखना जाला करवा पत्नी शिला बचवा है तेना पर भात करनु मुकी एक नारियङ तेना पर मुकर्तु ने दे जणने केंद्र के तमी गणवती तुं स्परण करी बाटो ते बाटता जनामा शानित होता 💸 ते नारियळ छड़ माय. पडी बरमास्य काडी छड़ उंची मुझी छांडवी एने अथेवाको यहेंजे. ए ध्यापडी फल्ला मुकडी विमेरेनो रिवान ने होय ते वन्यायाछा 💸 तुमा बरबाला करे पत्री कन्यातं पूर होय तो ते थया पत्री कन्याने सारा मगल द्वस्त्रार्थ करू दहीं, भात-आपला तेल हरूद विगरेथी नवाडीने बेसाडयी 🔑 गीनन पासे तेने चूड़ो निर्मरे सीपायना बुट्य पेराबी स्थापीतर्देशों पुनन करावत्तं तथा पानी बाढको छह तेमी रूपा नाणु मुखी मोर्डु नोबासी इट स्मरण करता बेसाटर्ड नेमन बरना परतुं होयतो तेने कण स्नान कराबी गोजनका पूजा कराबी थीमां मोडु नोवाडी चार ख्रीयो बटी पोस भरी तैयार कर्यापणी समानहाला मित्रमंडल मह एकता यह वानित्र साथे इष्टर्व समरण करता घोडापर बेसी सहेश्यां करता कन्याने यहणे जबूं पत्नी त्यां भइ घोडा पर्यो जतिरी , समाहान मनवन्त्र मह परान पर नामन साम रूटन एएन करना मनाम साम स्वार स्था करीप्रमाणे प्रयोग करो, वण एवं करीने वसारे हैं। भेडवना सरणा जगाडी मुक्ते बानद तेनावर पूर्वाभि अवता उत्तराभि मुखे उमा रहेर्नु, आजास्य तथा करीप्रमाणे प्रयोग करो, वण एवं करीने वसारे हैं आश्चन आपता शास्त्र प्रयाणे करतुं जेनाची पीतातुं तूमा बीजातुं कर्म करवायी करुयाण करी जयादि मेळवी अते सारी यसी सत् कर्मांथी मेळवेडे इति

श्रीमयानंदासमन मुख्यत्वर प्रापेणा विरानितायां विवाहकीमुनां प्रथमभद्यद्वागयोगः॥ १ ॥



'II श्रीगणेशाय नमः II श्रीसरस्वत्ये नमः II अय विवाहकर्म प्रयोगः II धर्मार्थकाममोक्षादि यान्तरं गत्ना समावर्तनोन्तरं ब्रह्मचारिणा कन्यापाणिब्रहणं कर्तव्यं ॥ तत्र सामुद्रिकासुक्त प्रशस्तलक्षणवंती लक्षणसंपन्नां यत्नतः कन्यां परीक्षेत् ॥ तत्र कन्यादोपाः ॥निर्छणा श्रुक्तसंभापी कोधयुक्ता सरोगिरणी॥विषयोगा

'वं'ययोगा छलविष्वंसयोगका ॥ १ ॥ दिद्रजारयोगा च हीना चरण संयुता ॥ एतद्दोप दरीर्थुका तां कन्यां न त्रतिग्रहेत् ॥ २॥ अय कन्पाग्रणाः ॥ अन्यंमां दोपरहितां सुरूपां वयपूर्विकां ॥ सुवर्णां सुकुलोत्पन्नां शुभलक्षण संखुतां ॥ १ ॥ प्रतिमृण्हीत तां कृत्यां कुलसंतानवर्षिनीम् ॥ इति कात्यायनः ॥ अथ वस्दोपाः ॥ मुकांषो न्याभ्यंतराणि स्वरीविदान्छत्वेस्याभ्यव्यवनोक्त विधिना बेदितव्यानि ॥ यया ॥ पूर्वस्या रात्री गोप्तेमेट्काकित प्पण स्पर्णानेन्स्रो पृत्तिकां गृहित्वापिडाएकं कर्तव्यं ॥ तत्रानुक्रमेण श्रथमेपिडेस्पृष्टे चान्यवती भवति ॥ द्वितीये पशुमती ॥ तृतीयेपिडे।त्रपत्त ॥ चतुर्वे विनेकिनी चतुरा सर्वजनार्जन पराभवति ॥ पंचवे रो विणी ॥ पछेर्वध्या ॥ सप्तमे व्यभिषारिणी ॥ अष्टमेविश्वम भवेदिति ॥ प्रथम विद्यान्यात थया पूजा ज्योतिहात्योत। नियमो प्रभाणे सामुद्रादिक चिन्हो जोई सारा सीमान्यादि पुत्र प्रमुतादिक योगो पाछी वन्त्या जोवी तैयां केटलाक विज्ञाना भाजाना परवरायी प्राप्त थयला दोगो पर विवार करवेर. तेमा नोबालायक टोगो—युद्धिवगरनी, बोवडी,कोपवाली,कंपरव खोगवाली, कुलनाक्ष- 🤾

ાદ્વરા

प्रकीर्तिताः ॥ तद्दोपप्रयुक्ता ये तेषु कन्या न दीयते ॥३॥ अथ वस्युणाः ॥ चमः ॥ कुरुं च शीलं च वयश्च स्वयं 🕸 विद्या च वित्तं च सनायतां च ॥ एतान् ग्रणाखुष्टुपरीक्ष्य देया कन्या बुधैः शेपमर्चितनीयम् ॥१॥ शाकटायनः ॥ 🕼 चिद्धर्थासदहेतकन्यां चतुर्थः एंचमो वरः ॥ पराशास्मते पष्टी पंचमो न द्व पंचमीम ॥ २ ॥ एकजन्ये द्व कन्ये द्वे 🕼 प्रिजयोर्नेकजन्ययोः ॥ न प्रत्री द्रयमेकस्मै प्रद्यात् कदाचन ॥३ ॥ एकोदयोः कस्तलप्रहणं यदिस्या देकोदरस्य 🖏 वरवोःङ्खनाशनं च ॥ एकाव्दिके हि विधवा भवतीह कन्यां नदांतरेऽर्प श्वभदं पृथुशैलरोघे ॥ ४ ॥ नदान्तरेण∦ं िरोलान्तरं देशो लक्ष्यते॥तथा च वसिष्ठ स्मृतिः॥व्यवधानं मद्दानद्या गिरिर्चो व्यवधायकः ॥ वाचो यत्र विभिर्द्यते∦ं वहेशान्तरमुच्यते ॥ ५॥ एकमानुत्रसूतानां एकस्मिन्त्रसारे गदि ॥ विवाहं नैव क्वति वदन्ति मुनयो यथा ॥६॥ कामी, हाद, वार, तथा हुका भाषाडी, तांवे करीने सारीर नेतं सक्तारातं के ते देखों क्रिकेटी मोई केवी, गुणवाली करवाना क्थण भारा कुटबाली, रूप

तथा मुणी शिरोरे व्याणवाकी तथा प्रसारवाचा चिन्द्वाकी तेने शुभ बहेके एवं। कन्या छेती, ए प्रमाणे वर्ता होगी चेरे,(सुगो)पागली,नवंसक, कंपबी,काटि निगरे रेणवाजे,पूर्ण,आवारकारनो,नीच कर्म वरनारो,पासंबी, सुगारी, निगरे ) जोवाना छे,तेय सामान्य गुणी कुच्हवभाव, वेये,रूब, विद्या, यन,प्रपाबहाला

विषरः कुञ्जः स्तन्थः पंछर्नपुंसकः ।। कृष्ठी रोगी ह्यएस्मार दशदोपाः प्रकीर्तिताः ।। १ ।। च परं ।। आचारहीनो 🐉 मर्खश्र कुरूपश्रीरजारकः ।। पार्खंडी च तथोन्मचो मृहकः कुछदोपकः ।। २ ।। युतकर्म स्तश्रेव दशदोपाः 😹

'विवाहत्त्वेकजन्याना मेकस्मित्रद्वे कुले ॥ नाशंकसेत्येकवपे स्यादंकावंभवा यतः ॥ ७ ॥ इति साहतासासवल्या। ३। क्षीणां ग्रहवर्ल श्रेष्ठं प्रहपाणां खेर्बलम् ॥ तयोश्रंदवर्ल श्रेष्ठ मितिगर्गेण भाषितं ॥ १ ॥ मनुना ॥ वैवाहिको | |विधिःश्लीणा मीपनायनिक स्छतः॥पतिसेवा छरी वासो गृहस्थाप्ति परिकियेति ॥ स्त्रीणां निवाहएबोपनयनं द्वि- 🕏 जन्मन्यापादानपरं ॥ न मुण्डनं मण्डनतोऽपिकुर्या दिति निषेधात् ॥ गार्ग्यः॥नांदीश्राद्धे कृते पश्चा द्यावन्मातृवि-|सर्जनम् ॥ दर्श श्राद्धं क्ष्यश्राद्धं स्नानं शीतोदकेन च ॥१ ॥ अपसन्यं स्वपाकारं नित्यश्राद्धं तथैव च ॥ त्रहाः यज्ञाचाच्ययनं नदीसीम्रोश्रकंघनम् ॥ २ ॥ ज्यवासत्रतं चैव श्राद्धभोजनमेव च ॥ नैव कुर्युः सपिण्डाश्र्य 🕏 मंडपोद्धासनावधीति ॥३॥ विवाहत्रतचूडासु वर्षमर्थतदर्धकम् ॥ पिण्डान् सीपण्डा नो दसुःप्रेतर्पिडविनानरेति ै॥ ४ ॥ स्मृत्यंतरे ॥ पुत्रोद्याहाँन्नेवपुत्रीविवाहोऽपि ऋष्ठत्रये ॥ अद्यान्तरान्मुण्डनं च नेकदा मुण्डनदयं ॥ तत्र 🕺 ાલસા सायणीये ॥ एकस्मिन् शोभने वृत्ते विशुभं नेव कारयेत् ॥ यदि कुर्यात् प्रमादेन तत्र नस्याच्छुभं ध्रुवम् ॥ इह-कोरे तोई कन्या आपनी. हवे बोधी देश साथे पांचमी पेशनो वर जोईपे, तेम पांचनी साथे बोधो जोईपे पण बोधे बोधो, पांचमे पांचमी संबंध होय ती

नहिं परणावतो. वे बेहेनो एकत गरमां एक मानुकत्योनी साथ आपवाथी विश्ववादि दीवो पामे छे.तेमन वे छोकरोनां छरा एके दिवसे करां नहि. छोकरीने

मिल्रसम्बत्ति ॥ अलाभे सुसङ्ग्र्तस्य स्जोदोपे ह्यपस्थिते ॥ श्रीयं संप्रज्य तत्क्वर्याद्वत्रहत्याभयंकरिष् ॥ सुविकोदः |न्ययोःश्रद्धचे गां दद्याद्धोमपूर्वकम् ॥ प्राप्तेकर्मणिश्रद्धिःस्वादितरस्मिन्नश्रद्धचित ॥ एकविंशत्यहर्येन्ने विवाहेदशवाः ित्रसः ॥ त्रिपर्चोत्रोपनयने नांदीश्राद्धं विधीयते ॥ विवादविहिते तेत्रहोमकालमुपस्थिते ॥ कन्यामृत्रुम्तीं दृष्टा 🋂 क्यं क्वेंति याद्विकाः।।स्नापयित्वा त ता कन्यामर्चियत्वा यथाविथि ॥ उंजानाज्याइतिंइत्वा ततः कर्माणि योज वित् ॥ दश्वरमानुरूपाप्तौ नांदीश्राद्धोत्तरं मुहुर्तान्तरालामे संकटे श्रीशातिं कृत्वा कर्म मारमेत् ॥ युरुवलविचारः। रजस्त्रलायाः कन्याया एरुश्रव्धिं न चितयेत् ॥ अष्टमेऽपि प्रकर्तन्यो विवाहस्रीग्रणार्चनात् ॥ अर्क ग्रवोंर्वेठंगीर्या गुस्त कठ तथा छोकराने रावितुं कठ प्रेष्ट् विवाह करवो, तेमण लग्न थया पत्री मुख्य करतुं, वाँह तेमण नांदीध्याद थया पत्री मातातुं विसर्वेन थाय स्यांसुधी युरुं के तथा छोजराने रावेते कर ग्रेहं विनाह करवे, तेमम लक्ष थया पर्ज मुदन करतुं नीह तेमन नांदिश्याद थया पर्ज मातातुं विसर्वन वाय स्वांसुधी कें अरुप्यत सोमोह्हेबन उपग्रास, प्रात, श्राह्म, बोजन, विगेरे त्याम करवा, विवाह तथा गुंहन अथवा अनोह यया पर्ण सिपिडियोए प्रेतिषद शिवाय ६ महिना

40000

स्पतिः ॥थस्याःकियायाः संत्राप्तः कालोमासैदिनैरापे ॥ न तत्र मोव्यदोषोस्ति अस्तो वा ग्रहशुक्रयो सिति॥व्रतयज्ञ 🙎 विवाहेषु श्राखे होमार्चने जपे ॥ प्रारंभे सूतकं न स्यादनारंभे जु सूतकं ॥ प्रारंभोवरणं यत्ने संकल्प व्रतसत्रयोः ॥ 🖧 निर्दासुलं विवाहादी श्रान्ते पाऋपरिकिया ॥ वधूवरान्यतस्योर्जननी चेद्रजस्वला ॥ तस्यान्श्रद्धेः परकार्य मांगल्यं

कौ॰ 🖇 तोहिण्यके वलास्मृता ॥ कन्याचंद्रवलं शोक्ता उपली लगतोवला ॥ अष्टवर्षभवेद्रीरी नववर्षा च रोहिणी ॥ दशवर्षा 🔯 घ० २ ्रे भवेत्कत्या अत्रज्ञर्यं रजस्वला। कमलाकरेशत्रह्मापदिव, प्राज्यपत्य गंधर्वाह्मर सक्षस पेशाचाष्टी विवाहः ॥ माध-१२॥ है बीये नास्दः ॥ पितादचाद स्वयं कन्यां भ्राता चातुमते पिद्धः ॥ मातामहो माद्यलश्च सङ्ख्यो जननी तथा ॥ है ै मातात्वभावे सर्वेषां प्रकृतो यदिवर्तते ॥ तस्यामप्रकृतिस्थायां कन्यां दद्युःस्वजातयः ॥ संवर्तः ॥ अलंकृत्य तु यः 🗟 कृन्यां भूगणाच्छादनादिभिः ॥ दत्वा स्वर्गमवाप्रोति प्रज्यते वासवादिभिः ॥ सर्वत्र प्राङ्मुखो दाता प्रतिप्राही 👸 ं उदर्मुखः ॥ एपएव विधिर्यत्र कन्यादाने विपर्वयः ॥ इति ऋष्यशृंगः॥हस्तोच्छाया वेदहस्तैः समेतात् छल्याः 🖟

हैं। सुधी आद्वादिनो त्यान करते। होये जेनो काल प्राप्त पयोजे तेने मोट गुरु झुकास्तादिनो दोप न जोता ते करपामा प्रापधित नधी. अतहोम यद्विवाह— आद्व पुमनादिनो आरम थया पजी सुसकादिनो दोष लागतो नयी आरमता पूर्वमा प्राप्त भाव तो वरत नहीं,पारंमना नियमो यद्यमा वरण पया पणी गत अने 💲

वेदी सद्यतो वामभागे ।। विवाहे कन्या हस्तेनैव वेदिनिर्माण मिति सहूर्तिचितामणी ।। कन्याहस्तैः पंचिमि सप्तमिनी वेदि क्रपीत् मंदिरे वामभागे ।। तां श्रुद्रोनोपल्पित् नवंध्याविषयां इति गृह्यसंप्रहे ॥ उदगयन हि

आपूर्वमाणपक्षे प्रण्याहे क्रमायीः पाणि गृण्हीयात् ॥ विवाहशृद्धि पवदंति सन्तो वात्स्यादयस्त्री जिनजन्ममासा 🞘

सुमंगल स्वतान्पठन् परेर्गाह्मणेःपुरंभीभिःपूर्णकलरो।दकपात्रं कन्यापुष्पाक्षत दीपमालाध्वज लाजेर्मगलत्येघोपे-श्च सह वष्ग्रहंगत्वा तत्र दारदेरो प्रावस्थलस्थित नीराजनपूर्णकुंभयुतेः स्वीपुरुपेः प्रख्यातो नीराजितस्तन्मण्डप-वहिर्दारि तिष्ठेत् ॥ कन्या जननीरगृहद्वारिसमागतं वरमाचार्याचिलकादिभिर्यथाचारं संप्रज्य ॥ तमग्रतः कृत्वा ह हैणस्थाने नयेत तत्राहेणीयोहेणस्थानन्यस्तोदगग्रासनात् पश्चिमतः निर्मितासने उपविशेत्॥ अथकर्मारंमः॥ ह सुसुहूर्ते कन्यापिता वर्यपेता च श्वभासने उपविशतां॥दिजःयजमानभाले तिलक्षकुर्यात्॥ स्वस्तियाचा० आचम्य

ा तबफ़ संख्या पत्री विवाहमा नादी तपा श्राद्धमा स्तोह थया पत्री विष्य आपे तो तेने दोष गणको नहीं तथा करयानी माने रजोदर्शन थाय तो तेनी हैं अबुद्धि पत्री रूप पार्य करबु-पत्री मुद्दूर्त न पछ एम होय तो बीजा शास्त्रीमा प्रमाण जोवाडी करबुं नाठीध्याद्ध केरबा दिक्म पेहेला करबु. यज्ञमा दिवस

दिति ॥ अत्रनष्ठवस्योर्घटिकादिनिचासेग्रहमलादिकं पृण्याहादिविनिर्णयो लमशुद्धिश्चेत्यादि ज्योतिःशास्त्रे हेयां। हि विस्तरभया न्नात्र लिखितं ॥ इति शास्त्रार्थः ॥ अथ विवाहः ॥ वरःकृतिनित्यिक्तयो विधिवत् कृतस्वस्ति वाचनो है जार्ह्यणेः सह सार्त्यिकाहारं भ्रुक्ता इशब्दीतं नवं स्वेतं सदशं परेणाभृतं वस्त्रयुख्लं परिवाय स्वेष्टदेवता पित्रादीः । न्नमस्तृत्य तेरन्त्रमोदितो यथाविभवमश्वादियान मारुह्य भृतशितच्छत्रः स्ववित्तेर्ज्ञातिवांषवैः ॥ स्वस्तिर्याचेति • ौ ॰ 🐉 प्राणानांपम्य ॥ शांतिपाठं पठेखः ॥ गणाधिपं नमस्कृत्य नमस्कृत्य पितामहो। विष्णुं रुद्रं शिवालक्ष्मीं वंदे भक्त्या 🗳 व॰२ ्रै सरस्वती ॥ १ ॥ स्थानं क्षेत्रं नमस्कृत्य दीननाथं निशाकरं ॥ घरणीगर्भसंभूतं शशिषुत्रं बृहस्पति ॥ २ ॥ ं देत्याचार्यं नमस्कृत्यळायाषुत्रं तथेव च ॥ सर्हुं केल्नं नमस्कृत्य पूजारंभे विशेषतः ॥ ३ ॥ शकादिदेवताः सर्वा 🕺 े नमस्कृष मुर्नि ततः ॥ मर्गमुर्नि नमस्कृत्य नारदं मुनिसत्तमं ॥२ ॥ वसिष्टं मुनिशार्दृेठं विश्वामित्रं च गोभित्रं ॥ 🟅 431 ेव्यासं कर्ण्व हृष्किशं देवलं गीतमं कृषं ।) ५ ॥ अमस्त्यं च पुलस्त्यं च दक्षपुत्रं पराशरं ॥ विद्याधिकान् सुनीन् 🕺 ं सर्वात्राचार्याश्च तपोधनान् ॥ ६ ॥ तान्सर्वान्त्रणमामच रक्षंतु मे ममाध्वरं ॥ अन्ये विद्यास्तपोयुक्ता वेदशास्त्र विचक्षणाः ॥ इति शांतिपाटः ॥ ॥ श्रीमणेशाय नमः ॥ श्रीग्ररुम्योनमः ॥ परमग्ररुम्यो नमः ॥ परात्परग्ररु भ्योनमः ॥ इष्टदेवतार्येनमः॥कुलदेवतायै नमः ॥ ग्रामदेवतायै नमः॥ शचिषुरंदाराभ्यां नमः ॥ सर्वेभ्योदेवेभ्यो ं नमः ॥ सर्वेभ्योत्राह्मणेभ्योनमः ॥ सुमुखश्चेकदंतश्च कपिछो गजकर्णकः ॥ छंबोदस्श्च विकटो विघनाशो विना-114811 (२१) विवाहमा दिवस (१०) मुंडन तथा जनोद्दमा दिवस (१) अधवा (६) दिवस पेदेला करा. मीरी कन्याने सूर्य गुरुतं वल नोतुं. रोहिन वीते पूर्वर्त बठ तेय कन्याने कंदर्त बल जीर्तु पण स्यारपातीनीने वेयस लग्न शुद्धि नीर्दने ज लग्न करी नासका. विवास आठ प्रकारनी के तैयर एकेकथी .

चुतुर्भुजं ॥ प्रसन्नवदनं ध्यायेत सर्वविष्नोपशांतये ॥ ४ ॥ स्त्रभस्तेषां जयस्तेषां कृतस्तेषां पराजयः ॥ येषामिन दिवरस्यामो हृदियस्थो जनार्दनः ॥५॥ अभीप्तितार्थसिध्यर्थं प्रजितो यः सुरासुरैः ॥ सर्वविध्नहरस्तस्मै भणाधिः। |पतयेनमः ॥ ६ ॥ वक्रतुंड महाकाय सर्यकोटि समप्रभ ॥ निर्विध्नं कुरु मे देवसर्वकार्येषु सिद्धिद् ॥ ७ ॥ सर्वदा सर्वकार्येषु नास्तितेपाममंगलम् ।) येषां हृदिस्थो भगवानांगलायतनं हृतिः॥ ८ ॥ तदेवलमं स्रद्धिनंत-॥ चंद्रवलं तदेव ।। विद्यावलं देववलं तदेव लक्ष्मीपतेर्तेष्रियमं स्मरामि ।। ९ ॥ यत्रयोगीश्वरः। कृष्णो यत्रपार्थोपनुर्धरः ॥ तत्रश्री र्विजयो भृति र्ध्ववा नीतिर्भतिर्मम् ॥ १० ॥ सर्वेष्वारंभकार्येषु क्किक उत्ततो छे.सज.आरं.देव, गरवर्व, प्रामायतः आसूर,ररशस,वैशाच एवा आठ प्रकारना विवाहमांपी पूर्वना चार विवाह सारा कहेवाय के. तेवी राते कर्न्यादानना भारतारा १९५ अनुरुषे उतरता होय के. ते निवा ते ना होय तो यह, पिताना पिता,अने माना बाय,पामा अथवा याता अथवा कुरुपार्था कोई ते र होय तो अथवा बीनी न्यादवारण कोई एण मनुष्ये कन्याने सीभाग्यनी वस्तुओं आपी अरुंकृत करी कन्यादान करेंटे तेने स्वर्ग प्राप्त थड़ दरेक प्रका-

यकः ॥ १ ॥ भ्रम्नकेतुर्गणाञ्यको भालचंद्रो गजाननः ॥ द्वादशैतानि - नामानि यः पठेच्छूणुयादपि ॥ २ ॥ वि-द्यारंभे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा॥संग्रामे संकटे चैव विवस्तस्य न जायते ॥ ३ ॥ श्र्यकांत्रस्यरं देवं शशिवणी

त्रयाश्चिभुवनेश्वराः ॥ देवा दिशन्तु नः सिर्छि ब्रह्मेशान जनार्दनः ॥ साक्षत जलमादाय ॥ विष्णु र्विष्णु र्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महा पुरुपस्य निष्णोराङ्मया प्रवर्तमानस्य अद्यग्रह्मणो श्वेत वाराहकत्ये वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टार्विशतितमे प्रथमचरणे भूलोंके भरतसंडे जंबूद्वीपे दंडकारण्ये **લ્લા** निर्मदातपत्योः दक्षिणतटे बौद्धावतारे शालिबाहनशके संवत आपाहादि अमुकामुकाधिकऽदे संवत्सरे अमुकायने अमुकऋती मासोत्तमेमासे अमुकमासे अमुक पन्ने अमुक तिथी अमुक वासरे चंद्रे सूर्वे त्य्रे ग्रुरो च शेषेष्ठमहेषु यथायथा सशिस्थानस्थितेषु सत्स्र एवं महगणविशेषण विशिष्टायां पुण्यतिथी करिष्यमाणविवाहांगभूतं वाग्दान महं करिष्ये ॥ इति कन्यापितुः ॥ वरिपता ॥ करिष्यमाण विवार

हांगभूतं कन्या निरीक्षणं करिष्ये ॥ तदंगभृतं दिग्रक्षणं कलशार्चनं गणपतिप्रजनं वरुणप्रजनं च करिष्ये ॥

रनां ते सुखो मोगके छे.हरेक कर्ममां दान आपनारो पूर्वने मोडे नेसे अने हेनारो उत्तरने मोडे केसे पण कम्यादान एक्ते हाताचे उत्तरने मेटे तथा हेनारे पूर्वन

मुद्रे भेती हेर्नु, विवाहमां कत्याना हाथना प्रमाणयी देवी करवी ते पती नयी तेनी ठेकाणे ( मायर ) करेंग्रे,एने अंतरमंडप कहेंग्रे, ए पांच हाथ अपना

सात हाथनी टैबाइपी कार्चु तमा चार हाप पोटाइपी करचुं सपा धर्मा बाबी नामु तरफ करचुं, रहीथी घरना वरणानी सार्मु करेंगे, उत्तरायणमाँ उदोति- 🧏

भेत ॥॥ यदत्र संस्थितं भृतं स्थानमाश्रित्य सर्वेदा॥स्थानं त्यक्त्वा छ यत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छन्न ॥३॥ भृतानि 🎉 ग्रवसावापि येऽत्र तिर्क्षति केचना। ते सर्वे प्यपगच्छन्छ देवप्रजां करोम्यहम्॥शासर्वस्यांदिशि सर्पपान्विकीरयेत ॥ |वामपादपार्ष्णिना भूमी घातत्रयं कृता ॥ उदकस्पर्शः ॥ स्ववामे अक्षतप्रञ्जोपरि कलक्षं संस्थाप्य ॥ तत्र∥ईं तिर्धान्यानाह्य ॥ सर्वे समुद्रा सरितस्तीर्थानि जलदानदाः ॥ आयान्छ ममशांत्यर्थे इस्तिक्षयकारकाः ॥ १ ॥ गंगे च युमुनेंचेव गोदावरी सरस्वती।।नर्मदे सिंधुकावेरी जलेऽस्मिन् सन्निधिकर ।।२।। ब्रह्मण्डोदस्तीर्थानि करेःस्प ैं ष्टानि तेखे ।।तेन सत्येन मेदेव तीर्थ देहि दिवाकर।।३।।इति मंत्रेण तीर्थान्यावाहा।।इस्ते अक्षतान गृहीत्वा ।। अस्मि- 🔀

इत्सुभी कृत्वा 🛭 वामहस्ते सर्पपाच गृहीत्वा 🛭 अपसर्पन्तु ते भूता ये भृता भूमिसंस्थिताः।ये भूता विन्नकर्तार-🕌 स्त नश्यन्त शिवाञ्चया ॥ १ ॥ अपक्रामन्त्र भृतानि पिशाचाः सर्वतोदिशं ॥ सर्वेपामविरोधेन प्रजाकर्म समार

-कुरुशे सांगंसपरिवारंसाञ्चर्यं सशक्तिकं प्रजार्थेवरूणमावाह्यामि॥प्रजयामि॥वरुणायनमः॥गंधंसमर्पयामि॥वरुणा- 🖡 🕏 द्वारमध्ये प्रमाण क्रेरेटा दिशसे कुमार्रानुं पणीधहण करावतुं तेवन कम्ममये घटिहादिनुं स्थापन करी शुद्ध छत्र नोह राखतुं, यनमानोना गोत्र शाखादिनुं 🕏

है सिर्वाहतर त्रिक्षत म होताथी तैयम परासर तथा शतथब धुतिन प्रथाणी सरकी प्रमास्त्रवर्षीय है माटे कार्रयणीय यमपानीमुं है. हेपाड़ि मेयनुं

क्रिक्त 🐉 य॰ पुष्पं•वरुणाय॰धूपं स॰वरुणाय॰दीपं॰वरुणाय॰नैवेद्यं॰ पुष्पं गृहीत्वा ।। एहेहिह यादोगणवारिधीनां गणेनपर्ज्ये ुँ न्यसहाप्सरोभिः॥विद्याधरेन्द्रामरगीयमानः पाहि त्वमस्मान् भगवन्नमस्ते॥वरुणायनमः ॥ प्रार्थनापूर्वकं नमस्कारं ॥६६॥ हैं सगर्पयामि ॥ अनेन पूजनेन सांगःसपरिवारः वरुणः त्रीयतां ॥ गणपतिपूजनं ॥ हस्ते असुतान गृहीत्वा ॥ े आवाहयामि विष्नेशं सुसाजाचितेश्वरं ।) अनाथनाथसर्वज्ञं प्रजार्थं गणनायकं ।। विष्नहर्तारं गणेशं सांगं 🖔 💲 सपरिवारं साञ्चर्यं सशक्तिकं आवाहयामि॥ प्रतिष्ठासर्वदेवानां मित्रावरुणीनर्मिता प्रतिष्ठौतांकरोग्यत्र मंडले 🤻 दैवतेःसह ॥ गणेशःसुप्रतिष्ठितो वस्दोभव ॥ प्रतिष्ठांते पूजनं ॥ सपीरवासय गणेशाय नमः आसनं०सपरिवास-य गणेशाय नयः॥पादयोःपाद्यं स॰सपरि०गणेशाय०अर्ध्यं स॰सपीखा०गणे०अर्घ्यान्तेआचमनीयं स० ॥सपरि० र्र गणेशाय स्नानं स्वासपरिव्गणेशायव्यस्रं सवसपरिव्गणेशायव्यज्ञोपवीतं स्वासपरिव्गणेशायव्यस्ति स्व सपरिव्मणेशायव्अलंकारार्थे अक्षताच् सवसपरिव्मणेशायव्युव्यं सवसपरिव्मणेशायवसुशोभनार्थे सीभाग्यदव्यं 🖇 गहदेश वण एसच वहेंतु है. तीव्रनी नाश मनाधी कारयपगीन प्रहण करतुं. माटे नीना मीवनी उचार न करतां कारयपगीत्र सपमाण ग्रहण करनें वही कन्यान मा देहना प्रमाण करीने मनर भावं तथा तेनी सत्ताबीम तारनी दिवेट करनी अने ते कीडियामां मुकी तेल पूरी दीवो करनो एम छे, पण अनास्पी

गणेशाय॰ नेवेद्यंस्।।सपरि॰ गणेशाय॰ तांबुलंस्।। साहुण्यार्थे दक्षिणांस॰ सपरि॰ गणेशाय॰ प्रदक्षिणांस॰ ॥ अंजली पुष्पाण्यादाय ॥ विद्येश्वाय वरदाय सुरिष्याय रुप्रोदराय सकलाय जगद्धिताय ॥ नागाननाय श्रुतिः कन्यदेहमपाणेन समुद्धिवतिष्ठेत्रभिः ११ कृतवर्तिकयादीर्थं मञ्चास्य वैलपुरिव ॥ इति भास्करे ॥ लोटने। दीवडो वरी तेवा थी पुरी सङ्गवे डे तेने रतनर्गवहो कहेंडे तेमम कन्याना देहना प्रमाणधी छाङ पुतर भरख देना बोवीस तार तेना टेहना प्रमुखे भरीने तेनी वरपाला करवी अने ते वरमाला वरनी कोटमा नालवी. कन्यादान आफ्नार तथा ग्रहण करनार मणा समुद्रते भोड़ आसन पापरा पाटरापर पेसे पठी ते नेउना वपाने कुकुपनो तिखक करी मात चोंडी आयमन प्राणायाम कराबी कातिराहरा मैत्री भणवा, पत्री गणवति सुबसु समस्ण करी गणवति पूत्र्य मणबी, हवे मडपने द्वारे आणी उभेले वर तेने शास्त्र तथा जाशार्प्हक अंतरमञ्जय हेवो. तेमा पहेलाथी पेताना वरमा गोत्रन अगाडी बेठेली कन्या तेना हाथ कुंकुवाला करी तथा एकहार शरमा। आश उन्याना मामार पण पीतावर पहेरी कन्याने पीतावा हायेथे उचकी महपमा जबुं ते बखते गोरे हाथमा झारी छड़ तेनावर नारियछ ढानकी तेनी अगाडी भावना ऋषुं, ते समये दोह क्या विभवा अथवा आंग्राल वस्तु सामु छावनी नहीं पत्री मदपना भारणा अगाडी जपा रहीने कस्यापासे चार प्रदक्षिणा 🕄

वरायनी तथा चाह्नो कराची हार पेहेराची बन्याने नाठी मोकल्बा ए शास्त्रसम्पत छे—क्या ए डेकाले कन्यानी मामो ते कन्याने छेड्ने चार प्रदृष्टिणा करेंछे तथा

सुना सुपरिन् गुणेशायन प्रसन्नार्थे दुर्बोक्कसन्तरः ॥ सपरिन्गणेशायन्द्रपंसन्॥ सपरिन्गणेशायन्दीपंसन्॥सपरिन्।

युद्धविभूपिताय मोरीसुताय गणनाथ नमोनमस्ते ॥ १ ॥ भक्तार्तिनाशनपराय गणेश्वराय सर्वेश्वराय सुखदाय 🕯 छरेश्वराय॥ विद्याधराय विकटाय च वामनाय भक्तप्रसन्नवस्दाय नमोनमस्ते ॥ नमस्ते ब्रह्मरूपाय विष्णुरूपाय ते नमः॥ नमस्ते रहरूपाय करिरूपाय ते नमः ॥ ३ ॥ विश्वरूपस्वरूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणे ॥ भक्तप्रियाय देवाय विवाह परिणयने चूटाकरणे सीरकर्मिण उपनयने मेसल्डावयने केशांते गोदान कमीण सीपतोख्यपने गर्भसंस्कार एवानि च विवाहादीनि 11051 कर्माणि शास्त्रमां वंडपे एव कार्याणि ॥ न विद्वः क्रयीत् इति काल्यापनः ॥ गोर तेना अगाडी प्रदक्षिण करेंडे अने मोडे मेल्ला नायडे मगल भगवान् विष्णोर्मगढ महडप्बन ॥ मगल पुण्डरीकास मगलावतर्व हरि:॥ ए मैत्र मणी चार प्रदक्षिण प्या पत्री कन्यानो मापो ते होकरीने छदने प्राप्त उपी रहेके. पत्री ते होकरीने हाथे चाहो करूनो करावा पत्री हाथमानो हार पेहेरावी देते. वजी भोडामा चावेछ पान तेनी शिचकारी वरना उपर मारेके. तेववते अंतरएटनी करूडी झाळी राम्बेलो होयके. तेना उपर पडे एवीरीते रातेके पठी ते 🕺 े करपति घरमा तेती मानो पासे वह जापी. पी. वेत पेंकनारी होय तेने साथे छद तेना हाथमा एक पात आपा तेमां (भेंकणा ) तथा कुंकुनो दुईापो ं तथा मातनो दहीयो इक्ष भीजी ( पचना छोटना चार मुडीया ) तथा पाणिनी रोडी ( तथा संपट) एउछे कोडियुं एक रह तेमां कुंकु मात मुक्ती तेना उपर 🕺 त्रीज्ञ कोडियुं बाक्ष तेना उपर नाहुं पापीने मुक्तुं तेने संपट कहेंजे ते मुक्ती तथा (सराह्या ) एटले जुनारना डीडवाना मूछ एटली वस्तू टर् पोकनारीने ्टर् जनी, ए पण क्यो आचारते.पंजी परणनारने कपाले पेहेलायी चाही करवी.-पंजी भात चोडी हायमां रुमाछ टर् तेनी साथे पोत्रणामांथी नुसरी तर तेना नाक साथे एक वसन तथा पोताना नाढ साथे एक बखन एम नार यखन अरकाडी कर्त्तुः ए प्रमाणे प्रया पत्री (सुसन्ड) लड्र-प्राख-संस्त ए अनुकरे 💸

The state of the same

करां तेमां संपट उतारी नमणा पग अगार्थ सकतं. पत्री इंडोमेर्डी तेना उपरंथी उतारी काली देवी तथा पाणीनी छोटी उतारी रेडी देवी तेम सराया पण उतारी मार्गाने फेंकी देखे. पत्र बरता हायवांनी पोक्ष पोकनारीना सोख्यमा अपार्वधा. नरा हाये हाथ अरकाखने तथा वरे परा अगाडी मुकेछुं संबद्ध वोताने। भएको पर मुक्त फोडा नाखबुं, पत्र भागरामा पूर्वीभ मोडे नह आएन पर बेसबु, पत्री पोकनारीये वर तरफना ओवलां क्यराओने प्रारीमांधी पाणी आपर्न एने आचमन कहेंछे-पड़ी कन्या पश्रादक्षेत्री विधि करवे(-तेम) ज्योतिहासमा नियम प्रमाणे घटिकार्न, स्थापन कर्नु, होय तो तेना बखत प्रमान 💢 णि प्रापनो आरंभ करमो नहि तो नेटका बलतनुं मुहुर्त होय ते प्रमाणे कोइने मंगव्यचरणना श्लोको साठीनामना पुस्तकमायी भणवा तथा कन्या घरमां होय 🔯 तेने तेने। मागो फरी उंचकीने छावे ने बरना सामु. पश्चिमतु मेहु करी नेसाडे, पत्री ब्राह्मणोये. बरमाला बेउनी पासे प्रार्टी शखर्बा तथा अंतरपटनं . बला 🔯 बैडनी सध्यमां माठी एखबुं तथा रतन देखडो छानी मुक्तो, तथा कासानी पाठी तथा बेठण मोदीना हाथमां आपबुं ए प्रमाणे थया पठी चटिकानो समय 🕍 पूर्णने। पनाधी परना हापमां कन्यानो हाथ आपना तथा ते समये जोशीये थाछी नगडी मनावर्तु के हस्तेमक्शपक थया पत्र गोर मधुपर्शादि पूशननो साहित्य

( क्रंडमत सोगरी फ्रल माडु विषट सकर पान प्रमाणे दाँहें नच थी, कासानी पाडकी नंग २ पाटलानंग २ दडीयानंग ७ तरभाण आवधनी पवाटा, तांबानी 🚫 इत्या किमेरे हरे केम्हां तथा वरने वाप तथा कम्यानी बाप तेने वेसाडवा. तेषां वरमा वापने पूर्वने मोडे तथा कम्याना वापने उत्तरने मोडे वेसाडी बेउ जणने 🔇

निमस्तुम्यं विनायक ॥ ४ ॥ त्वां विप्तराञ्चदलमेति च संदर्शतिभक्तप्रियेति सलदेति फलप्रदेति ॥ विद्याप्रदेत्पचहरे है ति च ये स्तुवंति तेभ्यो गणेश वस्दो भव नित्यमेव ॥ ५ ॥ सपरि॰मणेशाय॰मंत्रपुष्पांजलिं स॰ ॥ विशेषार्घः ॥ १ स्विरक्षमणाध्यत सक्षत्रैलोक्यस्वक ॥ भक्तानामभयं कर्ता त्राताभव मवार्णवात ॥ १ ॥ द्वैमात्तुरकृपार्सियो १ ्रे पाण्मातुरग्रजप्रभो ॥ वस्द त्वं वरंदेहि वांछितं वाछितार्थद् ॥ २ ॥ अनेन फलदानेन फलदोऽस्तु सदा मम ॥ है सूपरि० गुण्शाय० विशेषार्थ्यस० ॥ इस्ते जलं गृहीत्वा ॥ यथाशक्त्युपचौरेश्च यन्मया पूजनं ऋतं ॥ पारूथकर्म्- है

सिद्धवर्थं देवाय कत्पयामि तत् ॥ सांगाय श्रीगणशाय परिवासन्विताय च तारक्ष चन्न प्रभाग पर्यं पार्यं । पर्यं मात्रविश्लेष इति अर्नृयक्षः ॥ परम्पराहुलेपनिपति केचित् ॥ गदायरेण गोत्राशुचारं 💸 सर्यजनं संभुतीकारणिति इरिहरगदायरी ॥ परस्परंगाजविश्लेष इति अर्नृयक्षः ॥ परम्पराहुलेपनिपति केचित् ॥ गदायरेण गोत्राशुचारं 💸 इवाछे चाहो करी मात चोटी राणपति पूजन करावर्ते. ते करावी वर कन्याना हाथ छोटायो मधुपर्क करावे छे-पर्छा सात मारहणने चाहा करावी कन्या-दायमो संकरम करानी सरित नाचन करानीचे सामाप्तामी वरकम्याचा निवाना गाठ फिलानी यह्य मोर्चु करानी आशीर्याद दर रचा आपेठे. एने 🛮 छप्तनिधि 🤾 महेंछे अने त्यारपत्री शोतानी न्यातना रिवानो एउछे वरकन्याने आपतुं लेबु, विगेरे कहा आदोषी छेठे एवा उस्रो कांक्रे करीने यवाणी वरकन्याना हे परसर-

रना कर्तत्र्य, तथा प्रीति तया तेनी अनित अथवा धर्म अर्थ काम अने मोक्ष्मुं साधन धयु, ते म धर्ता तथा विवाह दिने महर्षियोथे कहेला बास्यो प्रमाणे न बता तम प्रति नगा दुसी नोबामां आवेत्रे तेग हुसी होयत्रे तेतुं कारण फात तेन है के चार वस्तुने आपनार्ह ने साभन विवाह ते विधिवत् न थाय तो क्युं न निष्कुल होय एमां नवाह शी-भेना पर आ जन्मनी तथा परजन्मनो आधार छै तथा जेनाथी देव पितृ मनुष्यो तूस धायछे एवो जे

विदाह वेमी सर्ह व्याप्य न करती रुद्रीन वकडी गमे तेवां करायों वचने खोड़े विद्वान तथा शिनारवंत पुरुषों करें है (यर आवे छे ते वार कन्यापास पाननी विषयारी मरांवे के, कन्यानी साथे गोर प्रश्तिणा करेंके तथा प्रार गुहूर्तमां कृत्यानुं दान पोताना दिता विषेतेए संकल्प करी आपनुं जोड्ये तेचे बद्छे गोर अथना संपद्मतां तव ॥ इति जलसुत्सुजेत् ॥ गणेशपूजनं कर्म यन्यूनमधिकं कृतं ॥ तेन सर्वेण सर्वात्मा वस्तो स्तु सदा मम ॥ लंबोदर नमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रिय ॥ विद्यानां नाशकर्ता च हरात्मज नमोस्तुते ॥ अनया पूजया सांगःसपितारः गणेशः प्रीयतां ॥ वरदोऽस्तु मे ॥ स्वाप्रेषान्यसारिं कृत्वा ॥ तदुपरि महारान पासे हाथ असकाडावे छे पत्री वैश्वव्यादि दोषोने नाशकातवाकुं वरम्मपुनन तथा श्वीपूनन करता नथी एनो स्थाम करी गणपति पूननादिक करें हे ती (बर) एरहे क्षेष्ठ पुरुष आदे तेने मान आधा नेसाहवा तेने बरहे तेना उपर पाननी विचकारी मारीने अपमान करेहे. बाह्यणने उत्तम मेलिये हैए. ती बाह्मणवासे भदारेणा कराववाधी पोतामा पूर्वको नर्कमां पढेठे. पोतानी कन्यानुं दान पोताना ७ १ एकोतेर पेडीना पित्रओने तारवाने करवानुंछे. ते शास्त्रवराणे 🗱 हरूर्त ओहने पोताने हाथे संस्तर करी आपपातंत्रे, तेने नदले आहाण पासे करानेले जेलं फल विभिन्न न ध्वाधी बेडने मललं नथी. पाणि प्रहण संस्कार तुनी है त्यां परना हाथमां कन्याने। इत्य आपने। एम विधि है. पण आहे तेम करवानुं नया तथा जेनाया डोकरीनुं सीभाग्य वये एनो विधि ते मूर्की

<u>धूपदीप युतानि च ॥ स्काच्छादन</u>

नेवेद्यं तांबूलादिफलानि च ।। सर्वाण्यसतरूपेण

दर्भ वेकल उताबल्जेन बाटे बरकन्याने जन्मतुं दु.ख करेले. माटे मारी प्रार्थनांजे के ए प्रमाणे न करता आ विवाहविधिमां केलेला प्रनादि शास्त्र प्रमाणे करना तेष करवायी ऐदिक तथा पारमर्थिक सुख मले के ए पर्पशाख्युं कहेर्युंजे माटे ६४ पत्रमां ठलेला आशिर्वादना भंतीयी आरंभ करी सांग हम दिया अनुक्रमे संपूर्ण करानची, ए आरणा धर्मरक्षक बाहण अन्त्री बैस्पादिल्लं कामके-हचे प्राप्त स्पर्कुं करण पूनन कर्त्युं तेमां पेठायी भातनी बगली रियताः ॥४॥ त्वयि तिष्ठंति भृतानि त्वाये प्राणाः प्रतिष्ठिताः ॥ शिवःस्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः॥५॥ 🐒 आदित्यावसवोरुद्राविश्वेदेवाः स पैतृकाः ॥ त्वयि तिष्ठंतु सर्वेऽपि यतः काम फलपदा ॥ ६ ॥ त्वरमसादादिमं 🖇 यद्गं कर्तुमिह् जरुवेदव ॥ सानिच्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा ॥ ७ ॥ वरुणायनमः ॥ प्रार्थनापूर्वकं नम- 🐉 स्कारं समर्पयामि ॥ अनेन पूजनेन वरुणः ग्रीयतां ॥ दाता प्रत्यङ्मुखः उपविश्य वरुपितरं गंपादिभिः पूज-येत् ॥ वर्रापेतर्रापे दातारं प्रजयेत् ॥ उभी उभयोः कपोले मांगत्यं कुर्याताम् ॥ ततो दाता सदक्षिणा हिद्धार्खंड॰

हुं हुछत्ता गादियां, सोपारी, तथा दैसा, टेमा (तेन प्रमाणे वरनो विवा वण है के एवे। संप्रदायकें) ते हुई पूकी करूपानी दिता उपरप्रमाणिनी स्थेक हैं के के मारी दोप बनारनी छोकरी तमारी छोकराने मारे आपी एम कहीं वरना बारना हामा। पोताना हास्प्राना राखेला कछ पैता आपे. के पूकी बरनो बाप कहे तमारी छोकरी पारा छोकराने मारे छोधी, वरने जुनो, पूकी बन्यानो आप कहें के आ फलहून्य हरितायहें तमासू छोकराने हैं

यतने मम ॥ अन्न प्रमायदानेन ल्यो कन्या भविष्यति ॥ ३॥ वस्पिता ॥ अस्मद्रसय योग्याय मंडपायतने तव ॥ अत्र प्रगप्रदानेन छत्रे वसे भविष्यति ॥ ४ ॥ कन्यापिता ॥ विश्वंभरः सर्वभृतः साक्षिण्यो मम देवताः ॥ इमं कन्यां प्रदास्यामि देवात्रिष्ठसित्रिधौ ॥ ५ ॥ देवात्रे निवद्य ॥ अनेन पूजनेन कर्माधीशः प्रीयतां ॥ इति वा-ग्दानं ॥ अय शचीपुजनं ॥ अश्व मधुपर्कः ॥ दाता आचम्पप्राणानायम्य ॥ अद्येत्यादि०कन्याविवाहांगत्वेन करेया का महपमा आपकी,ए.<u>इ</u> निश्चय करुतुं तेमभ वरनी बाप कहेंछे के तमारी आपेटी वस्तुवड़े पारी छोकरो नियमित करेंछ। समया शेष्ठपूर्ण पामरो,पती कन्याने विता कहेंके मारी जेकती तमने तारा तथा धुशील भागी भरवान् गुरु, अप्रि तथा अहिं आवेला मनुष्यों तेना समक्ष आपीश, ए प्रतिज्ञाओं करी 🕏 (पत्री आचार्या ए टेक्सेंगे परसर नेड नणाना हायमा सोपारी देता भार नरता फेरडेंडे. पत्री कन्याबाटो कहें डेके मारी सात पेडीये कन्या आपी

अतसर प्रमीफलानि गृहीला परेत ॥ आचारात वर्रापता च ॥ अञ्चंगेऽपतितेक्कीवे दशदोप विवर्जितें ॥ इमां कन्यां प्रदास्यामि देवामि बिजर्सनिधौ ॥ इति वरिषेत्रेदद्यात् ॥ च पठेत् ॥ वाचादत्तामयाकन्या पुत्रार्थे स्वीः कता तथा ॥ कन्यावलोकनविधौ निश्चित सर्व सुसीभव ॥ १ ॥ ततोवरंपिता ॥ वाचादत्तात्वयाकन्या प्रत्रार्थे स्वीकता मया 🛭 वसनलोकनविधी निश्चितत्स्वं सुलीभव ॥ २ ॥ कन्यापिता ॥ युष्मद्रसूय योग्याय मंडपा-

अन्यकश्चित त्राह्मण स्त्रिः प्राह ॥ विष्ठसे विष्टसे विष्टसः॥ प्रतिमृह्मता मितियजमानशाप्रतिगृण्हामीति वरः॥श्रेष्ठीस्मि ै वेसगा नानामुद्यतामियभास्करः ॥ तिष्ठामि त्वामयः कृत्वा य इदं मेऽभिदीयते ॥ अनेन मंत्रेण विष्टस्य दगत्र मासने निधाय तस्योपरि उपविशति ॥ पादार्थमुदकं पादार्थमुदकं पादार्थमुदकं ॥ प्रतिगृह्यतां प्रतिगृष्हामीति वरो मृद्दीत्वा ॥ स्वयमेववामं पादं प्रथमं पक्षालयति ॥ विराजोदोहोभयसि विराजोदोहमस्नवै ॥ विराजोदोहः पाद्याप मयि तं भव भोजल ॥ वामं प्रक्षात्य ॥ दक्षिणपादस्यापि प्रक्षालनं मंत्रेणैव ॥ दितीयविष्टरमादाय विष्टरो विष्टरो वस्वासे फहें के मारी सात देशीय कत्वा लीवी. पक्ष ते मणवित्वा मीदा आगल मुझी पो उसे दे, ए कर्म देवताने पाणी टर्ड ऑपण कर्तु, एने बागू दान

बहुने, हुने वैचच्य टोपने माश करनारं तथा सीमाग्य प्रमरीमादिने आपवानाकुं श्वीपूरन करतुं ते यतुं नगी पण तेतुं चोखाना मेंडलगर आवाहन करीं।

क्यात्राक्ति पूजा वरी प्रार्थना करवी, आवार्य रुलिक् शना प्रिय अतिथि वीमेरेआववाणी वेहेला मधुपत्ते पूजन करतुं, तेमां पेहेलां मधुपत्तेनी संकल्प करपो. क्रण बलत संकरमण केहेबाई के तमी धन्यादान देवा आवेखा हो माटे तमारुं मधुर्क पूजन कर हुं. एम कन्याना विनाना केजापी परे केंद्रेके करो वरना แองแ

र्रे आ गतेवरं मैधुपर्केणार्चियिष्ये ॥ अर्चयेतियरः ॥ तत्र सकलविद्योधर्ष्यसं विनायकं समरेत् ॥ ततो दाता वरस्यात्रे क्ष क्रतांजलिश्वरस्तिष्ठम् पेक्षत् ॥ साधुभवानास्तामर्चियम्यामो भवंतं अर्चयेति वरः ॥ दाता विष्टरं गृहीत्वा तिष्ठति

•की •

ustil

पद्धि द्वित्वतं पात्रस्थमर्घ प्राग्वोदग्मुणे निक्षिपेत् ॥ आचमनीय मुद्कमाचमनीयमुद्कं ॥

पितगृह्यतां प्रतिगृण्हामीति वरः॥ आचमनीयपात्रवामहस्ते कृत्वा॥ किंविचुद्दकं दक्षिणखळके कृत्वा॥ प्रियं जना
हार्षे उपा रही विष्टा चर आ विष्टर महण करे एव केरेतुं ( वर्षा सहर्ग कर तेने नाई विग्रक्ष राते है तेने विष्टर केरे है है ते विष्टार तेना हाक्यां आव
को भाव तरावाया पर क्याना पग मुक्ती प्री कन्यानो वाप पीताना होयेथी पेताता होयेथी पोताना हावा पगपर पाणी रेखं-अहिंया कन्यानी मा

को प्रति तरावाया पर क्याना पग मुक्ती प्री कन्यानो वाप पीताना होयेथी पेते हाव केरी तथा कन्यानी पा मारिक्सी पारी रेखें के, ए संप्रदाय केर

को पत्री तरावाया पर क्याना पग मुक्ती पारी कन्यानो वाप पीताना होयेथी पेते हाव केरी तथा कन्यानी पा मारिक्सी पारी रेखें के, ए संप्रदाय केर

को पत्री पत्री केरी पत्री केरी पत्री कन्यानी पा स्थापी जाय केरी चीनो विष्टा खर यावाने वाला हायमा आवशे पत्री ते विष्टरों का पणी

िया ने देने क्यारे चाले करी पात चादा करवाना मा त्याचा नाय छ. चाना विद्युत छह यममान चरना छापमा जाना उस पानकरण उस उस है चेताना आसन पर मुकी नेसनुं तथा एक तामाना अर्थिया कंड भात छूछ दिल्ला फल विवरे मुद्धी ते यनमाने वरना शायमां आपनु तेने वरे पत्र भणी, पूर्व

िविष्टरः ॥ प्रतिगृह्यतां ॥ प्रतिगृण्हामीतिवरः ॥ श्रेश्चेऽस्मि वै समानाना सुद्यतामिव भास्करः ॥ तिष्ठामित्वामधः रूत्वा य इदं मेऽभिदीयते ॥ इति मंत्रेण पादयोरयः निदधाति ॥ अघेंऽघेंऽघेः ॥ प्रतिगृह्यतां प्रतिण्हामीति वरः ॥ वयं वरुणयुष्माभिः सर्वान्कामानरोपतः ॥ अतोर्थं त्वं मृह्यणेमं भो ह्यापस्यममाप्तुपुषात् ॥ १ ॥ गमयामि समुद्र-रूपम् योनिमापत्रयांतु वै ॥ वीसअरिष्टाश्चास्माकं मापरासेषि मरपयः ॥ अनेन मंत्रेण गेथाक्षतक्वशाप्रतिलस्र्यः मुं मुंपकी मुंपकी ।। प्रतिगृह्यता प्रतिगृण्हामीति वसन्छादितं मुंपकिपात्रं किचिदुद्घाटय समीक्षेत् ।।समीक्षामि त्र गुजरान गुजरान । जात हुल्ला नारह स्थापक च प्रतिक्षामि लुद्ध प्रभो ॥ समीस्य सञ्ये पाणी कृत्वा ॥ मंत्रेण ॥ अ यथासर्वे ज्यहेमुतानि चश्चपा ॥ तथाहं मधुपकं च प्रतिक्षामि लुद्ध प्रभो ॥ समीस्य सञ्ये पाणी कृत्वा ॥ मंत्रेण ॥ पूष्णो देवस्य सविद्यर्हस्ताभ्यामाददे किल ॥ मधुपर्कं भर्गरूपं माश्विनं सूर्यदेवतं ॥ इति ततो दक्षिणस्यानाः र्हें मिकया मचुपर्कमालोडयेत ॥ मंत्रेण ॥ प्रयोमि मचुपर्क च नाशने नादनीयकं ॥ निष्कंतामि च यत्त्रदेश्या-| वास्याय नमोनमः ॥ दक्षिणस्यानामिकया त्रिः प्रदक्षिणमालोडयति ॥ ततः अनामिकांगुष्टेन त्रि निरुक्षपति ॥ ततः प्राशनं ॥ परमेण मधन्येन रूपेणान्नायकेचन ॥ मधन्यं परमं तेन ह्यानामि मधुनोशनं ॥ इति मंत्रेण प्रथमं किनिष्ठिकांग्रहाभ्यां द्वितीयअनामिकांग्रुष्ठाभ्यां तृतीय मध्यमांग्रुष्ठाभ्यां प्रात्य चतुर्थ तर्जन्यंग्रुष्ठाभ्यां तृष्णि तरक रेडी हेतुं एने अर्थ्य केंद्रे हे पदार्ख वह तेमा-माणी नासी ते वरना हाथमा आपतुं. पत्री ते वह तेमाथी आचमन अण मंत्र भणी करवा--( एने आन-मनीय पान रहे है ).ए प्रयाणे पाय अन्ये आचमनीयपान अवाया पड़ी संधुर्मनपात्र छेतुं तेमा कामानो बाढको तेमा पीई १पछ, दहीं २ एन, मध १पछ एर हु-कर्तु तेने मधुपर केहेंजे. तेमा रूपा नाणुं मूकी उपर कासानी बाउकी ढाकी ते हाथमा लड् मत्र भणी आवर्तु पत्री वरे तेने जाना हाथमा लड् तेने

हूँ नां यशसा पश्चनां स्वामिनं कुरु ॥ शरीरिणामरिष्टानि वरुणाचमयाम्यहं ॥ सकृदाचम्य ॥ द्वि स्तुर्रिण मधुपकों

प्रश्

प्रारम् ॥ शेषं शिष्याय प्रजाय वा दवात्॥वा सर्वं प्राश्नीयात् ॥ ततो आचम्य॥ प्रियंजनानां चशसां पशूनां स्वामिनं ै क्रहा।शरीरिणामरिष्ठानि वरुणाचमयाम्यहम्।। आचम्य।। द्विस्तुष्णिय प्राणाच् संमृपति जलेन मम वाक् आस्पेऽस्तु इति 🚧

धलं करात्रेण संस्पृशति नासिकयोः शाणवाखुरस्तु तर्जन्यंग्रहाभ्यां दक्षिणादिनासारंत्रं संस्पृशति।।मम नेत्रगोलकयोः चिखारत्ता। अनामिकांग्रहान्यां सुगपत् संस्पुशति ।।कर्णयोः श्रोत्रमस्तु ।। म॰यमांग्रहान्यां सुगपत्संस्पृशति।। कनिष्ठिः 🌠 कांग्रहाम्यां मम बाह्रोः शक्तिस्तु ।। इस्तेन दक्षिणाञ्चरु संस्पृशति ॥ मम उचेंसिजोऽस्तु ॥ मम देहस्यांगानि अस्षिति सुगपत् संतु इति शिरःप्रधृति पादांतानि सर्वाणि अंगानि उभाभ्यां हस्ताभ्यां संस्पृशति ॥ तत श्रंद-🞉

तिनाधी त्रण अन्तर जोडे अरकाटे छे. एम न करता मधुपर्क विभिन्त करों ते व्याची, नैनाधी बुद्धि वृद्धि पामी स्थानी में हे-) ए

उमडी जोर्नु पत्री तेथा भेताना जमणा हाधनी अनामिका अमारी मण बखत फेरक्षी पत्री पोतानी डेही आयस्त्री तथा अंगुठा बडे साख ए धमाणे 🔆 -पत्री अनापिरा-पत्री मध्यमा पत्री तर्रेनी बड़े मठी चार बसत खाडु-पत्री हाथ बोड़ आचमन करतु- ( ए डेकाणे-कन्यांनी मा हाथ घोबाटवाने 🌠 भावे छे तथा घरने वेड वॉर्भ सर्छा धाहुडी अले छे. तेमाथी बॉटीयनी चार बसत मधुपरने टैकाणे दहाँ टहने तेने हटावे के तथा 📀

त्रहीरे माथापी पग छर्या सर्श करी जबो. एवी रिते आचमन करवायी पोताना झरीरचा देवता स्थिर रही समयानुसार उपयोगी फल आपेंग्रे. माटे विविवत् आचमन करतुं केन्नर्था परित्र थवाय जे. हवे गेवालंपन करतुं जोर्ये, पग कवित्युगने ठांचे विरोध करेले। ये. तेथी वरना सामु उत्तराम दर्भ मूकी शण

उत्तर तरफ पात्र मुकी देंतुं. पत्री आचमनी पात्रमार्था कण बख्त मंत्र भर्गीः आचमन करीः पोताना शरीरे हाथ पाणीमां बोखी अरकाडवाः तेने। अर्थ ( मारे मोडे वार्णीना देवता स्थिर रहो. ) एम कही पोताना आंगल्रभोना अमधी पाणी मोडे अरकाडबुं. मारे नाके वायुदेवता स्थिर रहो, एम कही हैं तर्जनी अंग्रुष्ठ पढ़े केंद्र तातना हिंद्रने पाणी अस्तादर्युं. मारी आसे नेत्र देवता स्थित रही ने आंसीतुं तेन गुद्धि पामी एम वहीं अनामिक्ता अंग्रुष्ठ वहें आसे हैं। ं पाणा अरकाइतुं, मारा क्षानना देवता स्थिर रहो तथा मारा काने अवणशक्ति कथो, एम कही बनली आंगली अने अंगुटावडे काने पाणी अरकाडवुं, पठी . जेह्या आंगधी अने अंगुराबदे पाणी दे बाहुए अरकाडपुं, तेना देवताने कहेर्यु के पारी शक्ति बची. नपणा हापेथी उहने पाणी आकाडपुं, तेनाभी नेतानुं पराजम वर्षे छे. पत्री रोताना आखा शरीरे पाणी छाटंबुं ने कहेंबुंके मारा शरीरपर आवता अरिष्टोनो नाश करो. एम कही बेउ हाभवती आखा 🕉

नत्तर गायनो उधार करी हाथयो गोलिन्जय छः संरत्न करनो तथा ते हृज्य पहेलां पागेरता दर्भेस मूकी देनुं. पत्री नायनी प्रार्थना करी करे दुं के हुं अमुक तमारी यशमान अमुक दास तेने पापर्य मुक्त करो एम कहा एक दर्भ दूर नांलयो. ए निधि थया पछी धनमाने वरतुं पूमन कुंकुमधी करी दाकि होय

कन्यापिता जलमादाय ॥ अद्येत्यादि० मम झुतायाः स्व स्व काले उक्तसंस्कारलोपजन्य प्रत्यवाय परिहासर्थं । (१)ततःक्रम्यानानुको कन्यां गृदीस्य मंदपे नेिंद शदसीणीकृत्य नतात्रे पित्रमाभिमुलीमुनविदय तप्रवद्गवतानताले अविद्युत्तमुक्तवाः पुरुषा । उदक्दतं अंतरम्यं भारवेयुत्तम वैनकामंगलस्मृतीमां पत्रनं कुर्युः॥विद्योपका बचारणियाः सुमुद्दीं प्रतिष्टस्व हृत्युः वन्दं कुर्युः अनावसरे वयुवरकराजंभे । वयुक्तरायुव्यम्मृतिकरणमार्कां वर्तके समर्पयेत ॥ उदकसंस्यं एतातःपदनिःसर्यं कार्य मास्युन्तीं कन्यामबस्याप्य मस्यङ्गुन्तो वरः इति भास्त्रशे॥ | १

ै तो अलंबसादि आपी तेने प्रसन्न करतो. ए प्रमाणे मधुपर्क करतो. पाने मधुपर्क तरेलानो सेकल्प करी मण्यानने अरपण करी कन्यादान करतुं. आईया है सात ब्राह्मणने पाला करते कन्यादान करतुं. आईया है सात ब्राह्मणने पाला करता कन्या त्रह मायरानी प्रदक्षिणा करते

वदगत्रदर्भानास्तीर्यं !! दाता वरहस्ते निष्कयद्वयं दत्वा ॥ गोर्गोर्गोरं ॥ इति त्रिः प्राह ॥ वस्त्नां दुहिता माता ग्द्राणां भास्करस्वसा ॥ त्रविमि गां मावधिष्ठ जनाय चेतनावृते ॥ मम अमुकदासयजमानस्य च उभयोः पाप्मा हतः ॥ इत्युपांशुः ॥ तृणान्युत्सृजेत् ॥ इत्यनेन वरःक्षशोपिर द्रव्यमुत्सृजेत् ॥ अमांसोर्घश्चभवित पडच्यांनिधि कृत्य वे ॥ गोरुदेशेन तान्तस्याः निष्कयं क्षुत्मृजाम्यहं ॥ततः दाता यथाशवस्यस्त्रंकरणादिभिः वरं तोपयेत्॥ कृ तेन मुशुपर्कार्यनेन श्री परमेश्वरः श्रीयतां ॥ इति मुशुपर्कः ॥ अथ कन्यादानं ॥ तत्र प्राकृ संस्कारलोपप्रायश्चित्तं

े तत्तरुपकात्पतदृब्यमहमाचगमि ॥ तेन स्वस्यकालोकसंस्कारलोपजन्यप्रायश्चित्तनिवृत्तिरस्तु च ॥ अद्यत्यादि० मम सुतस्य स्वस्वकाले उक्तसंस्कारलोपनन्यप्रत्यवायपरिहारार्थे तत्तदुपकल्पित इन्यमह-मानसमि ॥ तेन स्व स्वकाले संस्कारलेपजन्य प्रायाश्चित्त निर्वृत्तिरस्तु ॥ अथ कन्यादानसंकलाः ॥ ततो 🖁 ै दाता उदइमुखोपविष्टहस्ते जलमादाय ॥ अद्येत्पादि० तिथो अस्मिन्युण्याहे अस्याः कन्यायाः अनेन वरेण घ- 🐉 llsell. र्मप्रजा उभयोर्वशबृद्धवर्षे च मम समस्तीपनृणां निस्तिशयानंदमहालोकावास्यादि कन्यादानकल्पोक्तफलप्राः ।

्रताहाणाः स्रमतिष्टितपस्तु।। उपत्यो रविच्छित्रा शीतिरस्तु।। तसो वसे कवै परिधानार्थे कुषार्यो नासःपरिधानं । आयुष्मतीदं वासःपरिधस्त्र वासः।। सा इत्या वाससे नमः॥ ततःकृष्यापिता॥ रहं प्रति ॥ र रूपीक्षस्य इति प्रैश्नं दशुःवरोयरूपीक्षेत् तत्तो आचारमातं मांगल्यलेनुकंट वंथनी।हस्तचनुः 🔯 ष्ट्रयमुमीमति किली समारोप्य चतुर्विशतिवारं वेष्टर्न सा वरवाखा।।मांगरवर्ततुनानेन मम तीवनहेतुना॥३ठे य नामि सुमगे स्व भीव शस्तां नर्ते ॥ 🎗

वस्त्री सागु पश्चिमाभिष्ठुंने वन्त्राने नेपांडेके. वरकम्याना अगाडी सारा परकेला पुरुषा औतरपट तथा बरमाला छड्ने छभा रहे तेमञ अयोतिथि पोताना मुहूरिना अस्तर सूधी धंगलाचरमन। जोरोनो उचार करे तथा तेनो पूर्णनी समय आवे स्यारे अंतरपट खेंची छे तथा बरमाला बेहना कडमा नांसीरे.

हेर ए बज्यादानना पूर्वमा वरहत्याना सकाने संस्कार न भया होय तेने मारे प्राथशिक्तमहरून करवे. (१) कत्याना बाँपे हाथमा पाणा एउ कहेचु मारी

कन्याना सरकार नक्षे थया माटे शास्त्र प्रमाणे अमुकद्भये परी प्रायधित संकल्प शरुषु नेनाथी सरकारलोपर्तु पाप दूर पह इष्ट कल प्राप्त थनी तथा

॥शक्तयऽलंकृत्य इस्ते गंघपुष्पक्रश जल यवान्यादाय ।। विष्णु विष्णुर्विष्णुः अद्य श्रीह कस्यचिस्सचिदानंदरूपस्य ह्मणोऽनिर्वाच्यमाया शक्तिविजंभिता विद्यायोगात्कालकर्मस्वभावाविर्भतः महत्तत्त्वोदिता हिंकास्त्रतीयोद्धतः वि-ग्दादिपंचकेंद्रियदेवता निर्मितांडकटाहे चर्दार्दशलोकात्मके लीलया तन्मध्यवर्तिभगवतः श्रीनारायणस्य नाभिः

कम्छोद्रत सक्छछोकपितामहस्य ब्रह्मणःमुर्धि कुर्वत स्तद्धद्धरणाय चं प्रकापतिप्रार्थितस्य महाप्ररूपस्य सितवाराहा-वतारेण त्रियमाणाया मरयां धरित्र्यां भूळोंकसंक्षितायां समग्रीपमंडितायां श्रीरोदान्यि दिशुणद्रीपवलयोक्त लक्ष-( ? ) काश्यपगोत्रस्य अमुकदासस्य प्रदौदियाय काश्यपगोत्रस्य अमुकदासस्य दौद्दिगय ॥ काश्यपगोत्रायअमुकदासाय वराय ॥

पिताये पण एमण सक्तल बत्तो, जेनाणी मेउ जलाना पापी दूर थह परस्पर दंपनीमां त्रेम तथा मक्ति उत्पन्न थह योग्य सुम्प मेखनेजे. उत्तर तरफर्त भोडुं करी मेडेडो कन्यानो बार तेले आचमनीया पाणी छह तेमां गंच पुष्प फरू दक्षिणा दर्भ त्रत सुद्धी वण सकत विष्णुती उत्तरार

व्रये अनेन वरेण अस्याम् कन्यायामुत्पाद्यिष्यमाणसंतत्या दशपूर्वान् दशपरान् मां च एकविंशतिपुरुपासुद्धर्द्ध शाजापत्यविवाहविधिना श्रीलक्ष्मीनारायणप्रीतये गोत्रोचारपूर्वकं कन्यादानमहं करिष्ये इति संकलप्य II कन्यां

ी करी देश काखने। एचार करने।

योजनविस्तीर्णे जंबदीपे स्वर्गस्थितामरादिभिः सेवितगंगादिसरिद्धिःयाविते भारते वर्षे निखिरुजनपावनशौनः कादिमुनिकृतनिषसतिकं नैमिपारण्ये अमुकनामसेत्रे श्रीभगवतोमार्तण्डस्य कृपापात्रे कालकृतयन्न गर्भवराहाचा-र्गादि गणितायां संख्यायां श्री बहाणो दितीयपराधें श्री श्वेतनासहनाग्नि प्रथमे कल्पे दितीये पामे ततीये सहतें स्वार्यश्चवस्वारोचिपोत्तम तामस रैवत वाश्चपेति पण्यनन्तिकम्यमरणे संप्रति वैवस्वतमन्वंतरे अष्टार्विशातितमे

काश्यमो • अमुकदासस्य अदीदिश्री ॥ काश्यमो • अमुकदासस्य दीदिश्री ॥ काश्यमोश्री अमुकनाश्री कश्या इत्यंत पठिता सर्वः स्वद्यांशणस्यगार्थया पूर्वकल्विकवळ्यारामविष्ठका वरहस्तोषरि वयूत्रस्तेस्वहस्तन्यस्य कृत्यांमस्युपरिस्थवरांजली दक्षिणहत्तेन सत्तवपारा हिएन 🕻 पर्वत् ॥ सक्रदेति गदाधरः ॥ सत्वलगोत्रीचारणमाचारात् ॥ २७ ॥

अर्थ-बरना गोरनी उचार करी अमुकनो प्रश्नेत अमुकनो पीत्र अमुकनो प्रत्ने अमुकनानी वर तेतु अमुक नाहिर कन्यासारे तेपन्न कन्यासु पण गोत्र-

परिक बहेर्नु अहिंया केटला कन्यातीमा मीतान्त गीत तथा तेना माना बार तेना वापनी उचार कोछे. ते शास्त्रमा नयी पण शबाय 🛪 साहे छे. एम उसार 🕉

करी कन्याने श्रु शुं बस्तु आपी सणागरियों ने तथा बरने श्रु शुं बस्तूओं आपकी गोर्स्य ने संकरन पोठी सकरन पारा छेडे अलंहन करेली अनुक जामनी 🏅 ॥७५॥ मारी करणाने अनुक्रनायना तमने अर्थण कर्हा एम कही आचमनोभात वाणी यस्त हाथमा आपनु तथा करणानी हर। पण बस्ता हाथमा आपने वरे 🛕

स्वधित अदेव

किल्छिगे प्रथमचरणे श्रीमञ्जूपविकमार्कसमयातीत् संवत्सराणां संवत् आपाढादि अमुकाधिकाधिकेऽन्दे अमुक-माम्नि संवत्सरे अमुकायनमते श्रीसूर्वे अमुकऋती महामांगल्यप्रदमासोत्तमे मासे अमुकमासे०तियी शतखणीकृत 🕺 ज्योतिष्टोमातिराञ्जन्य फलसमफलप्राप्तिकामोऽहं काश्यपगोत्रस्य अम्रकदासस्य प्रपौत्राय ॥ काश्यपगोत्रस्य 🕄 |असुकदासस्य पौत्राय ॥ कारवपमीत्रस्य असुकदासस्य प्रत्राय॥ कारवपमोत्राय असुकदासाय वसय॥ कर्या-| 🕄| ॅ्रीगोत्रोचारः ॥ काश्यपमोत्रस्य असुकदासस्य त्रपौत्री ॥काश्यपगोत्रस्य असुकदासस्य पौत्री ॥ काश्यपगोन∫्री

्रीत्रस्य अमुकदासस्य पुत्री अमुकनाम्नी कन्यां ॥ अथ मंडपाधस्तात्क्रलशीलसीभाग्य सामुद्रिकलक्षण लावण्यां 🏿 सावयवारोग्यां कांचनकुंडल कंकणनपुरकाटिसत्र भुजचूडकेयुरांगदम्प्रुपितां यवनालिकेरहस्तां अमरष्वनिस्रगंधि-ीमालालंकतां कर्प्रसगरुप्रपितां गंध यक्ष कर्दम द्रव्यादि सहितां मुक्टमालादि विविधालंकतशंगारा । मासनछत्रो 📲 ्रीपानहवासासिशय्यां कमंडळ कांस्यपात्र सुवर्णराप्यसदिकोऽपेतां दह्यमानसवत्साधेतु गजदंत कंकणकृजितां गृह-🕺 श्रीवित्तान्तसारेण स्वहस्तोपार्जित वस्तुमात्राणां अध्यओज्यपयपानादि किंचिन्मात्र दृज्यसाहितां स्मार्तकर्मसाहाय्य∙‼श्री दत्तां त्रियंवदां कंकुमकञ्जल मुक्ताफलमालालंकृतां त्रीहांजलिपूरिता मादर्शहस्तां मदनफलबद्धां त्रिमाचलश्चद्धां » कौ॰ 👸 दशप्ररुपविख्यातां शास्त्रप्रसणागमवित्तां दृर्वोक्करंशसास्ति प्रयागवटशाखाविस्तीर्णेकोत्तस्शतकोटि कुलोद्धारणश्रेय- 🦠 ूँ से ॥ कात्यवगोत्रोत्पन्नः अमुकदासोऽहं प्राजापत्यविवाहविधिना श्रीलक्ष्मीनासयणप्रीतये कात्र्यपगोत्राय अमुकनाम्ने वसय ।। गोत्रा ममुकनामीं कन्यां यथाराक्त्यलैकृतां उपकल्पितोपस्करसाहितां प्रजापितिदेवत्यां

प्रजोत्पादनार्थं सहधर्मचरणार्थं च भार्यत्वेन तुम्यमहं संप्रददे ॥ इत्युक्त्वा सक्रशजलं कन्यादक्षिणहरतं वरदिति णहस्ते दद्यात ॥ स्वस्तीति वरो बृयात् ॥ कृतेतत्कन्यादानसांगतासिद्धचर्थं इमां स्वर्णमर्यी दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे ॥ शक्तिश्चेत सुवर्णादि दानानि देयानि ॥ कन्यापिता ॥ धर्मार्थ कामभिनीमैयीं नैरः साध्यते परः ॥ धर्मः दान प्रकार ॥ कनकाश तिळानाया दासी रथ मही ग्रहं ॥ कन्यायकपिळाचेतुर्महादानानि वै दञ्ज ॥ अर्थ-(१) ए कन्यादानना अंगी दश दान आक्वां जोर्थ ते शक्ति होय तो ( सोर्तु चोडो तील हायी मार्डी पृथ्वी गृह कम्या गाय दासी ) आधवा 11POII

निह हो तेनी निष्पय आपनी अथवा ए टेकाणे रीत रु० (१) ने ने पैसा आक्वानी जे ते आपी पणे खागयुं, क यानी माये पण जेकरीना सभे 🗘 अडकी उत्तरनो मंत्र मणी अर्थण करी एम कहेरुं-अहिंया कत्यादानने संकरन जुदी काली पत्री मोत्रोचार करेछे तेम बेउ पस तरकश्च (७) सात हैं सात पैसा तथा सात सात सात सोपारी छड़ गोशोचार करें। मुझवेड़े पण तेष न करवुं, गोजोचार पण विना कल्यादान घाय नहीं. गोशोघार सामाटे 🕹

कर्तुं प्रत्य माटे के एक गोजनो ते। नधी पत्री करवानी कर्ता भार नधी माटे वस्यादानना संकरपमां गोतीचार करी सस्यादान आपनुं उत्तम है.

स्तु अनुपासार्ध मार्च्यस्य स वै विरं॥ धर्मे वार्थे च कामे च त्वयेय मतिचारतः ॥ नत्याज्याङ्गतिरिव ऋतौ 🕏 संसारभृतिदाम् ॥ कन्यामाताऽपि तां स्पर्शन् पठेत् ॥ गीर्सं कन्यामिमां भो त्वं यथाशाक्ति विसृपितां ॥ गोत्राय चिव दासाय तुःचं दत्तां समाश्रया। कन्ये ममाप्रतो भृयाः कन्ये मे देविपार्श्वयोः ॥ कन्ये मे पृष्ठतोभृयाः त्त्वतदाः 🎏 नात् स्वर्गमान्तुयाम्॥ मम वंशे कुले जाता यावदर्पणि पोपिता ॥ तुभ्यं दास मया दत्ता पुत्रपोत्रप्रवर्धिनी ॥ इति 🕏 संगार्थ्य ।। वरः ॥ अहं नातिचरिष्यामि यदुक्तं भवतां ततः ॥ धर्मार्थं कामकैः कार्ये देहच्छायेव सर्वदा ॥ नातिच-🖟

रिष्पामीति वरो वदेत ॥ अनेन कन्यादानारूपेन कर्मणा श्रीलक्ष्मीनारायणी प्रीयेतां ॥ अथ अक्षतारीपणं ॥ द्धिजाः ॥ वस्वघ्वोःशिरसि अक्षताक्रिक्षिपेत ॥ अद्येत्यादि० उभयोःवस्वघ्वोः अखंडप्रीतिकामः आयुष्याभिगृद्धचर्थंंंं अक्षतारोपणं करिष्वे।।इति संकल्य ॥ तदंगं त्राहाणपूजनं कृत्वा ॥ करोतु स्वस्तिते त्रहा। स्वस्तिचापि दिजातयः।। 🕺 अनसर प्रमायुर्व्यतिः स्तरं व्याधिपीडितं ॥ असता श्रत्यहरोण वस्त्रं पतिव गस्तके ॥ १ ॥ पाणिनीयश्रिसायां ॥

मैत्र भवावना तथा मैत्रान्वे अक्षत वेद्रत्याना मापा पर तक्षाववा ए प्रमाणे अक्षतात्रेषण थया पडी स्वस्तिवाचन कर्ने.

अर्थ-हुँबे अक्षतारोक्ण करतुं ते यतुं नदी नेताया भूणा भागपानातुं आयुष्य वधी प्रतित क्षेत्रेने तैमां चार झारामीना हापमी मात आणी संरुप्य करी 🔝

सस्तिपाश्र ये श्रेष्टा स्तेभ्यस्ते स्वस्तिसर्वदा ॥ १ ॥ ययातिर्नद्वपश्चैव धुन्धुमारो भगीरथः ॥ तुभ्यं राजर्पयः सर्वे 💲 स्वास्ति कुर्वेन्द्र नित्यशः ॥ स्वस्तितेऽस्त् द्विपादेभ्यश्चतप्पादेभ्य एव च ॥ स्वस्त्यस्वपादकेभ्यश्च मर्वेभ्यः म्यस्ति 🕴

करोड तन सर्वशः॥ दिरगजाश्चेव चलारः क्षितिश्रमगर्न ग्रहाः ॥ अघस्ताव्हरणीं योऽसी नागो धारयते सद्य ॥

अर्थ-( † ) तेना अराशृत प्राक्षणपूरान करी विधायारासीति मरोचडे कळशासापवर्षण पात्रात करी प्रतिष्ठा करी वरणान प्रजन पचीपचारपी करव.

करिष्ये ॥ विश्वाधाराप्ति धरणीत्यास्य ॥ अक्षत पुंजोपरि पूर्णपात्रान्तं विधिना कलरां संस्थाप्य ॥ तद्वपरि नाः है

शेषञ्च पत्रमः श्रेष्ठाः स्वस्ति तुभ्यं प्रयच्छत् ।। इत्यत्ततारोपणं ॥ अथ स्वातिवाचनम्।। तदंगभूतं आह्मणपूजनं ॄ

तैमा रु ( गटना ) भारवानी मंत्रदायके पढ़ी प्रार्थना करी नपस्कार करी बेड परमा गीउण भाँपपर गोठनी बेड हाधने कपलमा नेवा करी हाथमा कलका 💆 त्र मत्र मामज्या पड़ें वण बदत ते करुश माथे अरकादकी पत्र बेरावर वैक्ती कछदा जगापर मुक्ती देवा तथा आवाणीना हायमा पाणी आपी चदन

पुन्त चीवा सीवारी बान दक्षणा आयी पार्च पाणी आपतु ए प्रमाण यया पत्री नासकोए ते पाणी यमधानने माथे उद्धी मत्र बोहवा. पहीं पुण्याह्रवाचन

सर्वदा ॥ खाद्या स्वधा शर्चाचेव स्वस्ति इन्बंद ते सदा ॥ छक्षी रुज्यती चेव करुतां स्वस्ति तेऽनव ॥ असितो 🕏

देवलश्चेष विश्वामित्रस्तथांगिराः ॥ स्वस्तितेद्य प्रयच्छंतः कार्तिकेयश्च पण्मखः ॥ विवस्वानः भगवानः स्वस्ति 💆

neen

| | हिकेरं निधाय ॥ तस्मिन्वरुणंप्रतिष्ठाच्य पूजयेत् ॥ वरुणायनमः ॥ गंधं समर्पयामि ॥ वरुणाय० पुष्पं०धूपं० ्रीदीपं॰ नेवेशं॰ प्रार्थयेत् ॥ नमोनमस्ते स्फटिकप्रभाय स्रुथेतहासय सुमंगलाय ॥ सुपाराहस्ताय झपासनाय 🐉 जुछाधिनाथाय नमोनुमस्ते ॥ पारापाणे नमस्तुभ्यं पद्मिनी जीवनायक॥पुण्याहवाचनं यावत् तावत्त्वं संस्थिते। भव ॥ वरुणाय० प्रार्थना पूर्वकनमस्कारं स० अनेन पूजनेन वरुणः प्रीयतां ॥ मातृदेवो भव ॥ पितृदेवो भव ॥ आचार्यदेवो भव ॥ अतिथिदेवो भव ॥ आशिषः प्रार्थयन्ते ॥ एताः सत्याआशिषः संद्य ॥ अवनिकृतजान्तमं- 🕺

इत्युक्ते कुंभाज्नश्रं पातयम्बदेत ॥

**इ**लः कम<del>लमुङ्कलसदशमंज</del>लिं शिरस्याथाय दक्षिणेन पाणिना सुवर्णपूर्णकलशं धारयित्वा ॥ दीर्घानागानद्योगिर-🔝 🎚 यस्त्रीणि विष्णुपदानि च ॥ तेनायुःप्रमाणेन ५ण्याहं दीर्घमायुरस्त ॥ शिवाआपःसंत्र सौमनस्यमस्स्विति भवं- 🕺 ितो बबंतु ॥ अस्तु सौमनस्यं ॥ एवं सर्वत्र ॥ अक्षतंचारिष्टंचास्त्वि॰गंधाः पांतुमांगर्ल्यंचास्त्वि॰ अक्षताःपांतु आ- 🕏 |बुष्यमस्त्वि॰ पुष्पाणि पांतु सौश्रियमस्त्वि॰ तांधुलानि पांतु ऐश्वर्यमस्त्वि॰ दक्षिणाःपांतुबहुधेयं चास्त्वि॰ यंऋत्वा 🕍 सर्ववेद यज्ञ किया करणकर्मारंभाः श्रुभाः शोभनाः प्रवर्तते ॥ तमहं नत्वा भवद्भिरनुज्ञातः प्रण्यं प्रण्याहं वाच-

🖁 तिथिकरणसहर्तनक्षत्रसंपदस्त तिथिकरण सहर्त नक्षत्र ग्रहलगादि देवताः प्रीपंतां दुर्गापांचाल्पे प्रीपेतां अप्ति- 🖁

प्रसंजाः स्म ॥ शांतिरस्तु प्रशिरस्तु दृष्टिरस्तु वृद्धिरस्तु अविष्ठमस्तु आयुष्यमस्तु आगोग्यमस्तु शिवंकर्मास्तु कर्मसमृद्धिरस्तु प्रत्रसमृद्धिरस्तु धनथान्यसमृद्धिरस्तु इष्टसंपदस्तु अरिष्टनिरसनमस्तु यत्पापं तत् प्रतिहतमस्त् यच्ह्रेयस्तदस्तु उत्तरेकर्मण्यविद्यमस्त उत्तरोत्तरमहाहाभिष्टक्रिस्त उत्तरोत्तराः कियाः श्रामाः शोभनाः संपद्यंतां ॥

🔋 प्रोमाविश्वेदेवाः प्रीयंतां इंद्रपुरोगामरुद्रणाः प्रीयंतां ऋहापुरोगाःसर्वे वेदाः प्रीयंतां वसिष्ठपुरोगाऋपिगणाः प्री० 🙎 अरुवातिप्ररोगाएकपरूपः प्री॰ ब्रह्मच ब्राह्मणाश्च प्री॰ श्रीसरवस्वरो प्रीयेतां श्रद्धामेधे प्रीयेतां भगवतीकात्याः 🕏 यनी श्रीयतां भगवतीःमाहेश्वरी श्रीयतां भगवती पुष्टिकरी० भगवती तुष्टिकरी श्री० भगवती वृद्धिकरी श्री० 🕏

सपार्पदः सर्वस्थानगतः त्रीयतां हरिहर हिरण्यगर्भाः प्री० सर्वाग्रापदेवताः प्री० सर्वाःकुलदेवताः प्री० सर्वाहरुदेवताः प्री॰ हता त्रहाद्रिपः हताः परिपंथिनः हता अस्यकर्मणो विद्यकर्तारः शत्रवः पराभवं

भगवती ऋष्टिकरी प्री॰ भगवंती विष्नविनायकी शीयेता भगवान स्वामिमहासेनः सपत्निकः

यिज्ये सञ्यतामिति ॥ ततः कर्ता ॥ त्राह्मणाः मनःसमापीयतां समाहित मनसःस्म ॥ इति ते प्रसिदंतुः भवंतः 🐉

शिवा कतवः संतु शिवा अत्रयः संतु शिवा ओषधयः संतु शिवा वनस्पतयः संतु शिवा अतिथयः संतु

अहोरात्रे शिवेस्यातां श्रुकांगारक बुधबृहस्पति शंनेश्वर राहुकेत्र सोमसहिता आदित्यपुरोगाः सर्वे ब्रहाः प्रीयंतां भगवाञ्चारायणः श्रीयतां भगवानपर्जन्यः श्रीयतां भगवानस्वामिमहासेनः श्रीयतां प्रग्याहकालान वाचियिष्ये 🏻 बाज्यता बाह्यं पुण्यं महर्यश्च सृष्ट्युत्पादनकारकं ॥ वेदवृक्षोद्भवं नित्यं तत्पुण्याहं ब्रुवंतु नः ॥ भो बाह्यणाः मह्यं सक्रदंबिने महाजनान नमस्क्रवीणाय आशीर्वचन गपेक्षमाणाय अस्य कत्या दानारूयस्य कर्मणः पुण्याहं भवन्तो |ब्रुवन्तु पुण्याहं इति त्रिः॥३॥ पृथिन्यामृष्ट्रता यांतु यत्कल्याणं पुसकृतं ॥ ऋपिभिः सिद्धगंधर्वे स्ततकरुषाणं 🕍 हुवन्तु नः ॥ भो त्राह्मणाः महाँ० अस्प० कर्मणः कल्याणं भवन्तो हुवन्तु कल्याणं॥३ ॥ सागरस्य तु या ऋ-📳 र्द्धिमहालक्ष्म्यादिभिः कृता संप्रणी सुप्रभावाच ऋदिं तां च तुवन्तु नः ॥ भो ब्राह्मणाः महां० अस्व० कर्मणः।

चिह्नोकरी मातबोटी प्रध्याहवाचनने सङ्गस्य भगवान प्रजापतिने अस्पण करवो.

अर्थ-यनमाने पुण्याह करनाण माहि स्वत्ति वकाना उचार पोठाने मोडे करवा तथा तेनी मृद्धि थाओ एमप्राह्मणोये कहेवुं, एपया पछ यनमानन

दिल्को 🦸 ऋद्धि भवन्तो हुवन्तु ऋष्यता ॥ ३ ॥ स्वति याचा विनाशास्त्र्या धर्मकल्याण ग्रद्धिदा ॥ विनायकप्रिया नित्यं 🧯 प्र॰ २ तां व स्वस्ति व्ववंद्ध नः ॥ भो त्राह्मणाः मह्यं अस्मे कर्मणे स्वस्ति भवन्तो व्ववंद्ध आयुष्मते स्वस्ति ॥ ३ ॥ 🍨 मंत्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः ॥ सन्तु मनोस्थाः शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणासुदयस्तव ॥कृतेन पुण्याहवा-चनेन भगवान् प्रजापतिः प्रीयतां ॥ दानलंडोक्ता मंत्रा आशिपः संदु ॥ अभिपकः ॥ अभिपके पत्नी वामतः सहस्राक्षं शतथारं ऋषिभिः पावनं ऋतं ॥ तेन त्वामभिषिचामि पावमानं पुनन्तु ते ॥ भगंते वरुणो राजा भगं स्यों वृहस्पतिः॥ भगमिंदश्च बाख्ध्य भगं सप्तर्पपो दहुः॥ यत्ते केशे च दीभीग्ये सीमेते यच मूर्थनि॥ ललाटे 🕏 🗳 कर्णयो रूणो सपस्वित्रंतु ते सदा ॥ नारदाद्याऋपिगणा ये चान्ये च तपोधनाः ॥ भवन्तु यजमानस्य आ-है शिर्वादपरायणः ॥ असृताभिषकोऽस्तु ॥ स्वस्थाने उपविशेत् ॥ कृतस्य कर्मणः सांगतासिद्धवर्थं त्राह्मणेभ्यो ्री यथोत्साहं दक्षिणां दास्ये ॥ ऋतस्य० यथासंख्याकाच् त्राह्मणाच् सुवासिनीः वद्वकाच् कन्यकाः यथाकाले भोज-यिष्ये ॥ कृतस्य॰ गोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो भूपसी दास्ये ॥ अद्येत्यादि॰अद्यान्हि यथा मिलितोपचास्त्र्येः कृतं कर्म तत भवतां त्राह्मणानां वचनात श्रीगणपातिप्रसादात सर्वं परिपूर्णमस्त्रिति भवंतो ख़्वंद्ध अस्तु परिपूर्ण इति 🕹

युमुस्प्र्येकदंतम् कपिलो गजकर्णकः ॥ छंत्रोदस्म् विकटो विम्ननाशो विनायकः ॥ धूमकेतुर्गणाध्यक्षो भारतः । क्ष्याव्यक्षे कर्तव्यं भितिष्ठते ॥ आवश्यस्यस्तिभेश्य गीरी पुत्रवर्षके ॥ क्रंक्यस्यक्ष पूजनं च गणेशस्य मणस्य च परस्परम् ॥ परस्परं भूखोच्छिष्टं कर्तव्यं मीतिहेतवे ॥ आन्नपृक्षस्यसँकोव्य गौरी पूजनपूर्वकं ॥ क्रंकुमद्रस्यपं-केनेश्वीणा गीतपुरःसरम् ॥ इतिसंस्कारम् कानस्याम् ॥ कर्मणः अपनर्गः सपाप्तिप्वत्रवाह्मणभाजनकर्षस्थामातिशेषः ॥ इति शतपथश्चतेः ॥ अर्थ-हवे अभिनेक वर्तना तेषा यनपानप्रतीने डावी तरक बेसाडी प्रश्वादवाचनना कळसनुं पाणी तेयनां माधापर छाट्यु तथा परकन्याना माधापरछाट्यु, तया अभिषक वरशासे वसमाआपी बाद्यमभीजनो सकल्प तथा ओहुं बचारे यहुं होय हेने यहे भूयसीनो सकल्प करी ते दक्षिणा बाद्यमने आपनी, पत्री चदम फुळ ए३ गणपतिनी प्रार्थना करी नमस्क्रम करवे। के बाद्रासभा विभि वसी गया छैये वे विधि अहिया करेछे. तेमा सामासामी बरानो पिता तथा करवालो भिता बेसी वरना क्षिप्रन्य वपाछे बाहो करें हे- तथा बेड जणना गाले कंडबार वस्त कों हे तथासोपारी ( ७ ) पैता (७ ) सोबाना राखी एकेकना हाथमा

अफ्टें, ए अहेंया वरकारी महर नहीं. ए बाद्वावागेंग्रे मारे पूर्वभाव यह जोड़ये. केनायी बन्या छेवानो तथा आपवानो हक यायटे वण तेम न यता अहिंया करीने पत्री बरना बापना हायमा चारवसत कत्यानो बाप खाड आगेंडे,पत्री रास्ता गर्स्य भोड़ वरायचा रहनायदे,ए ठेकाणे केटळीक न्यादोषा सरवाधापने साल ओं , राडवानो पारोजे–आ मगाणे विवाहकैससुरीना औगाप्रयोग्ध्यकर्णमा प्रयोगसाखर्य गुजरातो भाषातस्साये वर आवे त्यायी के पुण्याहबाचनक्रभीनो प्रयोग समाप्त पर्यो.

दिजाः ॥ इति श्रीजयानंदात्मज मूल्शंकरशर्भणाविगवितायां विवाहकौमुचां दितीयप्रयोगे वाग्दानादिप्रण्या-हवाचनांत प्रयोगः ॥ श्रीगणेज्ञाय नमः ॥ श्रीग्रहस्यो नमः ॥ अथ विवाहसंस्कारः ॥आचम्य प्राणानायम्य ॥॥ २० को ० 🖇 चंद्रो गजाननः ॥ साक्षतहस्ते जलमादाय अद्यात्यादि० तिथो मग देव पितृ मनुष्यऋणापाकरण धर्मप्रजोत्पादन-सिद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वरपत्पियं च प्रतिगृहीतायां अस्याम् वन्यां भार्यत्वसिद्धये विवाहहोमं करिन्ये ॥ तदंगभृतं

निर्विप्ततासद्धवर्थं गणपतिपूजनं वा स्मरणपूर्वकं अभिस्थापनं करिष्ये गणपति संयूज्य ॥ प्रार्थयेत ॥ अनेन पूजनेन महागणपतिः गीयतां॥आचार्यःभूसंस्कारपूर्वक योजकनामानमप्तिं प्रतिष्ठाप्य ॥ दर्भैःपरिसमुद्य ॥३॥ गोम-येन उपलिप्य॥३॥ कुशमूलेन उल्लिस्य ॥३॥ अनामिकांग्रेष्टेन उज्जूत्य ॥३॥ उदकेनाम्युस्य ॥३॥ अत्रिमुपसमा-भाय ॥ आत्माभिम्रखर्मीमें संस्थाप्य ॥ दक्षिणतो ब्रह्मासनं दत्वा तमुपवेश्य ॥ उत्तरतःप्रणीतासनं ॥ तत्र पात्रा-े सादनं ॥ त्रिणि पवित्रे दे ॥ प्रोक्षणीपात्रं ॥ आज्यस्थाली ॥ संगार्जक्रशाःपंच ॥ उपयमनक्रशाः सप्त ॥ स-ततो विवाहवेशां वहनते माद्युत्ती तेजनीवीहणकटे एकासने अपेः पथातुपनित्य ॥ उत्तरे वा ऐशाने धेनलक्षुपं स्कंपे गृहीत्या ॥ काश्चित्त

हेत् ॥ आसप्तरंपरं याकळकं सूपी वेकाने निधाया।उत्तरतो हपदुपलेचालंहते निधाय तत्तेवधूपिता परसरं समीक्षितव्य मंत्रेण॥ व्यसिद्वसुरपतित्री 🖇 विदाच सुमना स्तथा ॥ मुक्चीः पुत्रसृ देंव कामाच सुखदा थव ॥ इतिवरः ॥ सोमगंपर्वाप्रिपृषभ्योनमः ॥

दीप-रहेपने विनेवीपदिशेदिति प्रयोगसनाशयः ॥

ऑस्तामवेदने नायमदो नामासि समानया मु∗्षसते अभवत् परमत्रकन्याये तपसो निर्मितोऽसि स्वाहा ॥ १ ॥ ओं इमंतदयस्य मधुनासं सुन्नामि 🕍 प्रजापते मुख्यमेतद् दिवीयम् ॥ तेनपु॰्सोभिभनासि सर्वान्वशान्वशीन्यसिराडि स्वाहा ॥ २ ॥ ओं अग्रिकट्या दमकृत्वन गुहानाः स्त्रीणा 🖁 मुषस्य मृषयः मुराणाः तेनाज्यमकुण्यन् श्लैशृद्धं त्याप्रूरविषवस्थातुस्याहा ॥ ३ ॥ सामवेदमं व्याव भपाव १ मंव २-३ ऑनसंगच्छ परिकत्यवासो भवाक्षष्टीनायभित्रस्तियाया ॥ शर्वचभीव श्ररदःमुक्यो स्विच पुत्रानुसंख्यय स्त्यायुष्पतीदं परिधतस्य वासः॥ स्तीतमेन ग्रेथे-( ? ) मधानेऽधिकाससिद्धो स्थमतिष्ठियदंगेषि श्रवणोषदेशादिना ज्ञानसंभवाद्धोममादः ॥ (१) ( कांगवेद ) हे कांमदेव! ताहनाम आखु नगत भाणेजे. हुं मश्कर नामक्षे प्रसिद्ध हे तुं अनेभा तारा अर्थने माटेडराम ययक्षे कन्या पण सुरा-समान (मदकारिणी) के ते कन्यानीप्राप्ता मने कराव. हे वक्रमात्री तारु मूळ्याधीनातिमान के सूं पुरुषोर्थनी सिदिकरावनारके.( इमन्त०) हे कन्यके ! आ ता-री आनंदेंद्रियोने मशुरमक्तरेंड मार्शसाये योजाबु कुंतेप्रजापतिना क्षेत्रामुखसमानजे तेनाज प्रभाववेड वदामानहींआवनारा पुरुषो क्ण वदा यायजे हे कान्तिमाती ती सर्वक्रायनाओंनी त्नापिनीजे.आममोवडेयुर्गंपित शुद्धनरूपी पूर्णकरुशने रूद वयू तथा वरे स्नानकरी पथात् उत्तमक्त्रार्थकराराणकरी उत्तमभासनव्यर पूर्विमिस्तुते बेसतु. ( जसलच्छ ) २ हे गुणशान रच् । हथरफ़्याये तुं पूर्ण आयुर्व था, आवक्त्यरियान कर प्रीतिवती जने पतिन्नता धमे, सीदर्वतेम 🕏 तथा सति अने संपत्ति सर्व तने प्राप्तथाव ( याअकृतव ) हे दीर्पायुपी ! ब्युसार्व्याक्षायोये निर्मेखा आ वस्त्रने पेदेर अने तेथोना आदिर्यायुपी वृद्धकारवर्यत 🔯 आर्जु आयुष्य सुलयी ऋमण कर.

114111

गोठकी नाहुंबायेंडे.तेक्यापठी निराने गपेरयो उंत्रीतुर्के छे परीगोर एक नानीमाय्टी, बहु, तेमां, काची खेट वालेडे.परी थोडुंनाडुल्ड तेने धीमांचेली सतनरीर 🕻 बद्धामां सक्तावी तेचोरीवर मुक्केंद्र(प्रोपेक्षमादक्ष रहने तेना उपर घरेंद्र,अने मोटेपी मोरकहेंद्रे के कसाररंपायी-पात्री तैने एकप्रानुये सुकेंद्रे-पात्री गोरपातनी 🕏

स्वंदिकना पश्चिममानुरेदेरे. एवं कम्याने परोक्षेपरानी बेउपसम्मानेसाथे बेसाडेद्रेर. तथा चार विकराना कट्या तेनाज्यरवारमासाये चारमायसाना स्तंपनी पासे.

हवे अहिया उपरायको न करता ने रही चाँछेरे, ते पूर्णपरलक्षित्रे. वरकस्याना क्ति भस्तुंथोडु करवानस्मानाय पठी गोर मेशाचा अधवा बानट लांब तेने हैं

गणपति पुत्रनती संग्रस्य करी राजधाति पुत्रन वयाराष्ट्रिक कर्त्तु पत्री स्थादेशनापर अभि स्थापनकरी कुरांडी विगेरेकरीने तेया योगकनामनाअपितं स्थापन कराउं.

सातराहोकोरी ने तेनाउप बल्नीअंग्रों। अर कार्डेड तेनावते यन्याना भारेननीखानी तेनी पाने यरनी अंग्रुडो पकडावी तेनीतिना अपाता रूपिया अपायेते प्रश्ने वरकत्याने चारावत चोरानी अमारी प्रश्नी फेरवेजे, तथा चंगलैककातविष्णो मेंगलं करूदचन 🏿 मंगलं पुरुषिकाथ पंगलापवर्ग होर: 👪 र 🚶 सर्व कंगल भागस्य क्षित्रे सर्वार्थ साधिके।। दारण्येश्वेनकेमीरा नारायणी नमोन्नुते।। राते यता नीपार्कगर्यकरते वाटडी वरवाला तरफपी आपेपे.ते कृत्याने 🖔 उपरना मागपा ओड़ोंके, मंगरकेरायते केटब्रिकन्यातोगां मात कत्याना द्वायमां आपी चोरीमां बलावेळे.एप्प्रमाणेयवाप्टा कंसारनिरीत तेमां कत्यानी माता 😩 🐉 भावी पालीमों पेलो होट लारोजे. तथा तेमां सांड तथा बीड लासी हलायेजे.पत्री सत्यावरने मोडे चारवन्तत पेलो होट अरकाडे परनोत्तमणो कान पकडीने 🕏 🖓 पजीवरकस्यानेमोडे बारक्यत अरकांडेजे कन्यानी कानपारतीने-एने बंसारकहेंजे पर्धा पेतानी रीती आँपेजे. तेमां वरनेकम्यातरकारी में हापियामाध्याहोस्य 👌

अर्थ ( १ ) हो ए सत्र कियाशिवन शास्त्रव्याणे करवा ए वाजबीचारी रुखीछे तोते उस्पादमाणे प्रत्याधा उत्तमकल परेकेमने ते ह्य थाय है, हाँ कारण है 🕏 ए नहीं माणवामा अबि मारे गुजरातिपापामां देर शास्त्रोत। प्रमाण मुक्त रुप्युं हे,पियवत् विवाहसंस्कारकरवी ते महणकोरी कन्यानुं भार्यत्वसिद्ध पदा होम करती. तया तेथा पेकायी वरकस्थान उठाडी सांची ने पूर्वाभिक्किगोदवदी-पछी कन्याने पटीली पेहेरावी अने नेउनणाने साथे पूर्वाभिसरी नेसाडपा तथा है

तेमांतमेसं बरवाला कन्यादालाने आपेठे. एठेकाणे दागीनापण आपेठे.पठी पतन्यानी माता बेटानणना हाए घोषडाणी नासेठे केटलीकन्यातीमां सासनो छेडो वकडवानी चारु होयड़े-हवे मेहेतानीआवीर वेडने सब्बेका भणावेडे.पडीचकुन्याने चांहोकरी बेडनगतरफपी मेतानीने न्होकामगवानी रु. ( १ ) एक एक अराय है. तया वरकस्पाने पण सब्लेकानी शतना स्थीया अथाय है, तथा अहींचा-पोरलेकोना दायान्यातिना रिवान प्रमाणे अपायहे. तेने ब्रह्मासन-इंद्रासन कहेंछे. तथा श्रीमांमंदीरी विगरेनी अथवा न्यातना धारानी रीतो अवायके. पटी मोनोणु कोहोतेमां पेछाधी वरवाछा तरफयी केटलीकन्यातीमां करेंछे. तथा 🔯 केउजीकन्यातीमां वन्यावालतरफयी कोंजे. तेम्रा बांको वस्ते करी भातबोदी रूपीयाआएवा तेने मोत्रीणुं कहेंछे करी वेबारप्रयाणे ने आवहांहोयते अवायजे. 🔯 . पडी केटर्डिकन्याती चारवस्त भोरीनी प्रदसमा फरीभी फेरवे.य आठसंगठवालाने करवासुंछे. पडी चारखीयी आवी वरकत्यारे चांहीकरी यात बवावी होते. तथा कन्याना नवकाकानमा गोर केवाडे क्रे.जबासाविकांत्रं एवातण-रूकरपार्वतीत् सौध्यन्य-एथयापञ्ज कन्यानी माता वरना कोटपांधी वरमाल्य कांद्री नोरवडी

मिघरितसः ॥ द्ववः ॥ आज्यं ॥ प्रर्णपात्रं ॥ वरोषा ॥ उपकल्पनीयानि ॥ शमीपलाशामिश्रा लाजाः ॥ श्रूपं ॥

करीक्न्यानी कोटमां लाखेते. पूर्व गोरवरक्रनाने उंचे जुनो एसक्टी वरमां योजनपास लक्ष्मह गोजन पुनाकरानी त्यां १४ सोपारी-तथा १४ पेसा छह तेने चाराणीमां जांली प्कीवती समाडेडे.तथा अंतरपटना ककडानी कोरडेकरी मायबाटकाने चारकस्त अरकादीकस्थाने वाले अरखाडेडे.तथा बरपण एमकोक्के ုိ भंगी इंस्तुनना हाथ करीं मारामादद्यांते तथा करेअरकात्री नास्युं मोहुंकरी उटेंजे. एक्षे वीहाना माहाबिहाने बरोदाणी वह वर बदावेकरे हो गाडीमां बेसी 🔄

पेताने घेर भावहे. आ बाहरीबाननो विधि पेहरेस्था समाती सुधीनो बस्रोठे नेनेशास्त्रप्रमाणे नकत्वुं होय तेणे संस्थिमा कहेरो विधि करिसमात करतुं ॥ 🔖

हवे शासप्रमाणे अनुजन्मे विधिकहेबाय 🕏 ॥

संश्रात कुंगे॥ अस्मा।।आनडुई वर्म ॥ तदभावे वर्हिषः ॥ कुमार्या भ्राता ॥ आचार्याय वरद्रव्यं ॥ पवित्रव्छे । त्रभाव अन् ॥ जत्वा एका १७०० । अर्थ । प्रतिकृति । प्रतिकृति । प्रावेशमात्रे पवित्रे छि-देनेः पवित्रीकरणं ॥ द्रवोरुपरि त्रीणि निधाय॥ द्रयोर्म्छन प्रदक्षिणीकृत्य एकीकृत्य ॥ प्रावेशमात्रे पवित्रे छि-स्ता। दे ग्राह्म त्रीणि त्याज्यानि ॥ ग्रीक्षणीजलेन संप्रर्य ॥ जिंदगनं ॥उत्पवनं ॥ सन्यहस्तकरणं ॥ ताभिस्ताः 🖏 सां प्रोक्षणं ॥ आज्यस्थार्लि प्रोक्षयापि ॥ संमार्गक्रशाच् ग्रो॰ ॥ उपयमनक्रशाच् प्रो॰ ॥ समित्रः प्रो॰॥ सुवं

मो०॥ आज्यं मो०॥ पूर्णपात्रं मो०॥ उपकल्पनीयानि मो०॥ असचरे मोक्षणीपात्रं निघाय ॥ आज्यस्थान त्या माज्यनिर्वापः ॥ दक्षिणतोआज्याधिश्रयणं ॥ गृहीतोत्सुकेन पर्वमिकरणं ॥ सुवप्रतपनं ॥ संमार्गक्रशैःस्रय- 🎘 हैं स्य संमार्जनं प्रोक्षणीजलैः ॥ अग्रेस्त्रं मूलेर्मूलं ॥ प्रणीतोदकेनाभ्युक्षणं ॥ युनः प्रतपनं ॥ देशे निधानं ॥ आ ( ? ) बरारक्षिणतःकत्या होतावायव्य गोचरे ॥ अभा च उत्तरेस्थाप्य ईशान्यां शुक्शुबी तथा ॥ इशान्या मुदकुर्भ च आग्नेयामित्रसंभवाः

बरने त्रमणे हाथे कन्याने बेसाटकी तथा गोरेकाकन्य कोणका नेतर्चु तथा उत्तर क्षाद्यामा नीत्राः तथा उत्तरहवानी नीत्रातरो मुक्त्रो. फेटलीक ठेकाणे बर्त प्रमण हाथ कन्यात बसाटका तथा वारवायक्य काणमा नात्यु तथा उत्तर समाज नाता तथा उत्तराक्तमा नाताया हुनाया अञ्चलक उत्तर है नीहा एकडी मुक्ते के नेताथी दोष प्राप्त करीं वंपतीमा नन्मछंगी जुडापणु रहें है एते शास्त्रकारे शीवशासि मानेटा छे, पंडी एक पाणी मरी तावानी हु क्याज्या प्रक्रमे तथा समझी पातप तथा पासर मातनी धाणी सुपडामां सुकती विगेरे पातो गोठवी ने विवित्त होम करवा.

ज्योद्धासनं ॥ उत्पवनं ॥ अवेक्षणं ॥ अपद्रव्यनीरसनं ॥ प्रोक्षिण्याः प्रत्युत्पवनं ॥ उपयमनकुशप्रहणं ॥ तिष्ठच 🖧 ्रॅं∥सिमघोन्यायाय ।। प्रोत्तणीशेपोदकेन वन्हेः पर्श्वक्षणं ॥ पवित्रयोः प्रणीतास्त्र निधानं ।। वरेण अन्वारव्यः अाचार्यो दक्षिणं जान्त्राच्य ॥ ब्रह्मणा दक्षिणहस्तेन अन्वारूयः सुवेण खुह्रयात्॥ प्रजापतिम् मनसा ध्यात्वा ॥ श्रुजापतयेनमः ॥ इदं श्रजापतये नमुम ॥ १ ॥ इंद्राय० इदिमिद्राय० ॥ १ ॥ चरः सर्वत्रत्यागं क्रयीत ॥ अ-🎇 मये॰ इदमप्रये॰ ॥ सोमाय॰ इदं सोमाय॰ ॥ २ ॥ अक्षतान ग्रहीत्वा ॥ विवाहे योजकनाम्ने वैश्वानगय 🍪 (१) ऑसपञ्चन्त विश्वेदेवाः समापो हृदयानि नौ ॥ संमातस्थि संघाता समुदेशी द्वातु मी ॥ सा० म० आ० म० १ र्ख० २ मे० ९ 🕏 ओं भक्षेत्रस्यः अधोरचञ्चरपतिप्रेधित्रिया पद्मभ्यः समनाः स्वर्चाः ॥ बीरस्य देवकामास्योना राजोभव दिष्दे सं चतुष्पदे ॥ सा० गं० gro guro 9 (१) ( समझन्तु ॰ ) दे ( विभेदेव ) यहाशास्त्राम्य वेठेळा विद्वांनी आप अपने बनेते ( समझन्तु ) अम्पारी प्रसन्नता पूर्वक गृहस्पाश्रममां एकत रहेवांने मारेएक्कीजानी स्पीकार करनाराठीये एम निश्चयपूर्वक नाणी अने असे (नीहदयानि) अमाराहृदय (आप ) जठनीपेठे समान (सम ) मुलेखांडे असे जगवने चारण करेंट्रे तेम अमेनते एकवीनाने वारण करीतु नेन ( सहदेशी ) उपदेशक श्रोताओ उपरश्रीत रावेट्र, तेम ( नी ) जमाराबलेना आत्मा पुरुषीयात्रापे एउपेम (दश्वत ) धारणकरो (अग्रेर०) हेबरानेने (अपितीप्र) पतिनी साधेविरोध न करनारी (औम्) १११णकरो (भूः) माण-इत्यात (सुर ) सर्वेद्व तीने दूरकरनार (स ) सुल स्वरूप अने सर्वेने सुलना चाता आदि जेना नायछे ते परमाणेनी छूपा अने पीतानाउत्तमपुरुष्याव

ि तमः॥आग्रहयामि वजयामि योजकनाम्ने वैश्वानसयनमः गंधं समर्पयामि ॥ योजकनाम्ने वै॰ पुष्पं॰ योजकर् हैं प्र०३ नाम्ने वे॰ धूर्यस्॰ ॥ योजकनाम्ने वे॰ दीर्घ स॰ ॥ योजकनाम्नेवे॰ नैनेचं स॰ ॥ अभिर्नेश्वानसेवन्हि हैं । 2 वीतिहोत्रो धनंजयः ॥ कृषीटयोनिर्ज्वलनो जातवेदास्तनुनपात् ॥ इति संप्रार्थ्य ॥ अनेन प्रजनेन है

(२) ओं मुर्मुवास्तः त्ववर्यराभवसि घरकमीना नापस्वधावन्युदं विभागि । अञ्जन्तिमिनं सुधिनंनयोभियदंपति समनस्तृष्णाणि स्वाहा ।। इत्यन्तये इत्याप्त । ति ५ अ० १ स० ३ पं० २ । इत्यन्तये इत्याप्त । ति ० पं० ५ अ० १ स० ३ पं० २ । इत्यन्तये इत्याप्त । ति ० पं० ५ अ० १ स० ३ पं० २ । विवा । वगण्य कारिणी (वर्षुम्य ) सर्वपञ्चोने सुखाता (सुवनाः ) पारेतातः करणयुक्त प्रस्त । विवा । वगण्य स्वाप्त स्वाप्त । विवा । विवा । वगण्य स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वप्त स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वापत स्वपत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्त

योजकनामाभिः श्रीयतां ॥ अयाष्ट्राहुतयः आज्येन ॥ अन्तयेनमः ॥ इदममये

अमार्र आदंकतित पोषण करीपरस्पर एकजीनाना अंत करण शहर अने समान करो

वायबे॰इदं वायबे॰ ॥ २ ॥ सूर्याय॰ इदं सूर्याय॰ ॥३॥ अभिवरुणाम्यांनमः ॥ इदमभिवरुणाम्यां॰॥४॥ पुनः ॥ 🕼 अमिवरुणार्यानमः॥ इदमिवरुणार्म्यार् ॥५॥ अयसेर इदं अयसेर ॥ ६ ॥ वरुण सवित् विष्णुविश्वदेव मरुत्स्वेकंस्यो॰ इदं वरुणाय सिनेत्रे विष्णवे विश्वदेव मरुत्स्वेकंस्यश्च॰ ॥ वरुणायादित्यायदित्येचनमः ॥ इदं वरुणाय आदित्याय अदितवे व नममा। अथराष्ट्रऋदोमः ॥ आज्येना।ऋतापाहे ऋतथाम्रे अमये गंघर्याय नमः ॥इदं ऋतापाहे ऋतथान्ने अगये गंधर्वाय नमम् ॥१॥ औपिषभ्योष्सरोभ्योद्योनमः॥इदं औपिषभ्योष्सरोभ्यो इबोनमम् ॥२॥ संहिताय विश्वसाम्रे सुर्यायगंभर्वायनमः॥इदं संहिताय विश्वसान्ने सुर्यायगंभर्वाय नमम् ॥ ३ ॥ मिरिचिन्योऽसरोभ्य आञ्चभो नमः ॥ इदं मोरिचभ्योप्सरोभ्यो आञ्चभ्योनमम ॥ ४ ॥ सुशुम्णाय सूर्यरहमये। चंद्रमसे गंधर्काय नमः ॥ इदं सुशुम्णाय सूर्वरहमये चंद्रमसे गंधर्काय नमम ॥ ५ ॥ नक्षत्रेभ्योप्सरीभ्यो भेक्करी-भ्यो तमः ॥ इदं नवत्रेभ्योप्सरोभ्यो भेक्कीभ्यो नमम ॥ ६ ॥ ईशिराय विश्ववचसे वाताय गंधर्वाय नमः

( १ ) रुतापाडिति द्वादशाहृतयो राष्ट्रभृतसंज्ञाः ॥ एताम्न सीपुस्त्वादि ऐक्पस्वहेतुः इति महियरभाष्ये ॥

अर्थ- (१) पत्रे राष्ट्रस्द्रोम वस्त्रो तेनी आहुती बारआपनानीठे ते तेनामत्वेक देवताने आपनी जेनानी प्रत्यमा कोद्रश्न कारण्यी नमुसकादि दोग ते तु.पह पुरस्क शास्त्रहेरे होय ते दृश्यः पुरपत्व भारकरेले

ुईशिराय विश्ववचसे वाताय गंधर्वाय नमम ॥ १ ॥ अङ्गोऽसूरोभ्यञ्जम्मों नमः ॥ इदमद्रयोः उप्सोरियुड्जम्यों नमग ॥ ८॥ भुज्येव सुपूर्णीय यज्ञाय गंधर्यीय नमः ॥ इदं भुज्येवे सुपूर्णीय यज्ञाय गिंधवीय नमम ॥ ९ ॥ दक्षिणाभ्योऽप्सरोभ्य स्तानाभ्यो नमः ॥ इदं दक्षिणाभ्योऽप्सरोभ्य स्ता-बाभ्यो नमम ॥ १०॥ त्रजापतये विश्वकर्मणे मनसेगंधर्वाय नमः॥ इदं प्रजापतये विश्वकर्मणे सनसे गंधर र्वाच नमम् ॥ ११ ॥ ऋक्सामभ्योऽव्ससेभ्यऽष्टिभ्यो नमः ॥ इदं ऋक्सामभ्योऽव्ससेभ्यऽष्टिभ्यो नमम् ॥ १२ ॥ अथ जयाहोमः ॥ वित्ताय नमः ॥ इदं वित्ताय नमगारे॥ चित्येन०इदं चित्येनममा।शा आकृताय नमणा इदमाङ्गतायः ॥ ३ ॥ आङ्ग्येः इदै आङ्ग्येः ॥ ४ ॥ विद्यातायः इदे विद्यातायः ॥ ५ ॥ विज्ञात्येः इदं विज्ञात्ये ।। ६ ॥ मनसे इद्ं मनसे ॥ ७ ॥ शकरीम्यो इदं शकरीभ्यो ॥ ८ ॥ दर्शाय० इदं दर्शाय० ॥ ९ ॥ गीर्णमासाय० इदंगोर्णमासाय० ॥ १० ॥ वृहते० इदंवृहते० ॥ ११ ॥ स्थतसय० इदं स्थतसय० ॥१२॥ ( चित्तं चेत्यादिमयापंत्राणां विचायस्वाहेति चंतुर्ध्यक्षेत्र होमहतिभर्तृष्याः ॥ नेति कन्नोद्रयः ॥ नचेपानि देवतानामानि कितार्देधंत्राधैतेच ययास्त्रातं मयोक्तच्या इति गदाधराद्यः ॥

अर्थ-( १ ) मया होमनी १२ आदुति आपनी जेनाणी पोताई होन पराक्रमनी उदय यह पोताना न्हार्योमां यहास्वीपणुं प्राप्त करेले.

भु सृतानामिश्वपतये० इदं अप्रये भृतानामिश्वपतये० ॥१ ४॥ इंद्राय ज्येष्ठानामिश्वपतये० इदमिन्द्राय ज्येष्ठानामिश्वपतये० 🚼 ॥ २॥ दक्षिणस्यामन्यपात्रे त्यागः॥ प्रणीतोदकस्परीःयमाय पृथिव्याअधिपतये० इदं यमाय पृथिव्याअधि०॥३॥ वा- 🕏 र्वन्तरिक्षस्याधियतये॰ इदं वायवेन्तरिक्षाधियतयेशाशा सूर्याय दिवोऽधियतये॰ इदं सूर्याय दिवोधियतये॰ ॥५॥। ्ट्री चंद्रमसे नतत्राणामधिपतये॰ इदं चंद्रमसे नतत्राणामधिपतये॰ ॥६॥ वृहस्पतये ब्रह्मणोऽधिपतये॰ इदं वृहस्पतये त्रह्मणोऽधिपतये ।। ७ ॥ मित्राय सत्यानामधिपतये इदं मित्राय सत्यानामधिपतये ।। ८ ॥ वरुणायापाम-अनिवर्षताना नित्यादयः पितरः विवागह इत्यंता अष्टादम् यंत्रा अभ्यातानसंत्रा ।। इति हरिहरणदारमी ॥ अनिवर्भूवाना फित्यादि सुगन्न 😤

र्वे प्रजापतये जपाय निन्द्रायञ्जूदं प्रजापतये जयाय निन्द्रायन॥१३॥अथ अभ्यातानहोमः॥ आज्येन॥ अमये

👸 पुरं त्यामः पर्यनुत्यो वपस्यामं तु दक्षिण ॥ पश्चिमे पितृत्यामं च छत्यामं वजीचरे ॥ वदक स्पर्धः ॥ इति कारिकाकारः ॥ पक्रमाधनान्ते 🎼 एक जावार्याः ॥ संसव मारानानी एतामाहुति निष्छिति ॥ तत् एके परं मृत्योसिति होमति पुननेष तस्य संसवनारान मिति गदानरः ॥ अर्थ-(१) अन्यातान संतिक १८ अब्दुर्श आकानी है नेनी स्थाग एक-पान दक्षिण दिशामा चीतुं भूकी तेना करवानी है, ए आद्धतीयो ब्रावदायी, दंदनीया, वियोग धनी नथी तेम सारी प्रमान उत्पन्न फरे है.

वंशा मिलंता द्वारणविद्यति रभ्यातान संझ इति कर्ककारिकाकारी ॥(१) दक्षिणस्यां अन्यपात्रं निपाय तन्मच्ये त्यागः ॥ त्रणितोदकं स्पूर्णेत् ॥

Z\$II

मायोपधीनामधिपतये ।। १२ ॥ सवित्रे भसवानामधिपतये इदं सवित्रे भसवानामधिपतये ॥ १३ ॥ स्टार्य 🖟 पर्यनाम्थिपतये॰ इदं स्टाय पश्चनाम्धिपतये॰॥१४॥ ऐशान्या मन्यपात्रं निधाय तन्मध्येत्यामः॥ उदकस्पर्शः॥ 🖔 त्तवष्टे रूपाणायभिषतपेञ्डदं त्वक्टे रूपाणामधिषतपेशाशभाविष्णवे पर्वतानामधिषतपेञ्डदं विष्णवे पर्वतानामधिष-तये॰॥ १६४। मरुद्वयो गणानामधिपतिभ्यो॰ इदं मरुद्रभ्यो गणानामधिपतिभ्यो॰ ॥९७ ॥ पितुभ्यः पितामहेभ्यः 🕺

चान्नसः ॥ इत्यमरे ॥

परेभ्यो बरेभ्य स्ततेभ्यस्ततामहेभ्यश्च॰ इदं पितृभ्यः पितामहेभ्यस्ततेभ्यस्ततामहेभ्यश्च० ॥ १८ ॥ दक्षि 🕏 णानयोर्भेष्ये अन्यपात्रं निधाय ॥ तन्मध्ये स्यायः ॥ उदकस्परीः ॥ एते अष्टादशमंत्राः ॥ अभ्यौतान- 🖇

तिष्ठति तिष्ठवापत्या गुरीतांजिल्सेव सः ॥ अंजलिस्थांस्त्रिया सर्वा न्याद्युखी मतिमंत्रतः ॥ मानापत्येन वीर्येन देवे नैवेतिबद्वचाः इति कारिकायां ॥ इव्यस्थाये तु वरस्य बर्धस्वं स्थामिष्ठल योगादि गदाभरादयः ॥ भ्रष्टास्तु त्रीस्योजाना इति कस्यविज्ञामणी ॥ त्यानाः पुं भूनिन

🎖 संज्ञिकाः ॥ अमिसंज्ञिकाः पंच ॥ अभये० इदममये० ॥ १ ॥ अभये० इदममये० ॥ २ ॥ अमये० इदममये० 🕏 🐉 ॥ ३ ॥ वैवस्वताय० इदं वैवस्वताय० ॥ ४ ॥ दक्षिणस्यां अन्यपात्रे त्यागः ॥ वश्वक्णोर्वस्त्रपटं प्रक्षिप्य नुर्हिण् ॥ 🎇 मृत्यवे॰इदं मृत्यवे नमम् ॥१॥ अप्रो वा सूमी त्यागः ॥ उदकं स्पृशेत ॥ अस्य साजाहोमः 🗱 । क्रमार्थः आता ्रै|शमीपलाशमिश्रान् आसादितशूर्पस्थान् लाजानंजिलनांजलानावपति ॥ तान् घृतेन अभिघार्य ॥ वद्भः दक्षिः (१) तबस्ती ववृत्रती सदैव विचिद्धतः तदो वश्वापृष्ठवी गत्ता वदक्षिणत वदद्गुस्तःस्वेनांनलिना वश्वंत्रति गृहीस्ता अविविद्धते ॥ ततः स्तर्पोः पूर्वस्यां दिश्वि स्थिता वधुवाता भ्राता वा अन्तेः पश्चिमतः आसादितं छानासुर्व वामहस्तेनादाय दक्षिणहस्तेन वयुदक्षिणपादेन 🙎 इत्रद्रपाकामयेत ॥ अर्थ-(१)अप्रि, सहिक, आहुती आएकानी छे नेनायी पोताना, समावहाठा, सर्वतीनो, प्रेम क्वे हे. ए पांच आहुती अपाया है। पत्री वृद्धमा एक अतरम्द्र राखा एक आहुती, अनिनम आपदी नेनापी अग्राल मृत्युनी भय, रहेती तपी. 🛪 हवे, व्याना होन करवी, तिमा कऱ्यानो भार, तेने बोळावी, चाटोकरी, तेना हाथमा, मातनी घाणीत सुंपद्व आपी, पूर्व दिशामा, पश्चिमने मोढे, उभी राखवी. ि पूर्व कन्यानो हाथ खोबा क्षेत्रों करावी तथा, पम जपणो, निप्ताने अरकादी कन्याने उसी राखकी, पत्री वरे पोताना ने हाथे, कन्याना || । || हाथ पकरी उत्तरम् मोडुं करी, वेउ जले उमा रेहेबुं-पठी तेमन हाथमा, कन्याना, माहये सुपदामाणी घाणी आपनी तथा तेमा उपर में रित्ती आरबु, बरे पंत्र मणी ते आहुती अग्निमा आरबी, बड़ी वर कन्याचे अफ़िनी प्रदक्षिणा कर्त्वा, मोरे मत्र मणी पेहेर्सु मंगल पर्यु एस केहेर्बु, पाछा वर

्र णपादेन दशदू माकाम्येत॥ वृस्तु मंत्रं पठेत् ॥ इति पठित्वा ॥ अश्मारोहणतोत्मेव स्थित भूयतु कन्यका ॥ दिः ٧.٨ पूर्ता नाशकत्रींस्या च्छेदोगञ्जतिचोदनात् ॥ १ ॥ इममझ्मानमासेहा मंत्रोक्त फलभागियं ॥ भवत्वसम् प्रसादाते शिवसक्तियतोऽसियत् ॥ इति पश्चिमा ॥ अर्थम्णेनमः ॥ इत्यप्ती जहोति वधः ॥ अथ वध्युरःसरः प्रदक्षिणमि

परिकामयेत् ॥ प्रथमे मंगरुं चेव ब्रह्मणःसमरणं क्रुरु॥ पितामहप्रसादाच युवां सीस्यं भविष्यति ॥ आयुष्यं कीर्ति-

おと続け

(१) टाजाहोपं समिद्धोपं पृश्चिद्दोपं तथैरच ॥ पूर्णाहुति वसोधीरां तिष्टतैव हि कारपेत् इति भास्करे ॥ कन्यपि की बोतारी मगापर आवी प्रयम प्रमाणे उमा रही, सबले विधि प्रथम प्रमाणे करी.बीजु मैगल—तथा घीजु मैगल करवुँ, पत्री चाेपा मेगल बसते प्रथम प्रमाणेकी कत्यागाहापमां सुपर्देव्ह सुपडावते त्र होमकरवो.पठी बोर्स्स मंगठफरवुँ एने मंगठफेरा कहेंग्रे,एवा ब्रह्मासावित्रीन्द्र्व इंट्राणी-ठरूपी मणवान महदिन व-पारवती-देवतांत्रे, ( इमपरमानमारोहा । सां वेहा । प्रवाद प्रवाद १ ) हेकन्या आ निसापर उमी रहे अने एनानेवी स्थिर था तथा तने शञ्चपी पीटा न

थाजी तथा तुं ताराशानुने पीडने आवापकारनो अर्थ शीलाने अडक्यानो बेदनोछे तेमन-मैगलफेरामा ( सा० में ता० प्र०१संड २ इयलार्नुपर्वृते०) वरक-न्याये उपाही कन्याये क्षत्र बोल्यो. तपाहापमारहेलीबाणी होमग्री. तेनी अर्थ-हायगांवाणीलङ् उभीरहेली कन्यामनभर्गी अप्तिमाहामकरीमागेले. हे अर्थमन् कू

तमे मारा पतिने दिवीयु करो. ते केवी के सो वर्षतुं आवरदा आपो. तेमम मारा न्यातिना मद्यायोगी बूद्धायाओ, आवी उत्तमविधिने पण वेदावाहेत ते पतो नथी. 117511

महे करवो. एप्रवाणे टामहेवना मंत्रोभणी पठी उपरना मंत्र भणी अप्रिनी प्रदक्षिणाकरवी-नेनाथी पोतानुं आयुष्य फीर्ति एक्सी सीभाग्य विगेरेनी पृद्धि-

यादी. करीना पाछ पश्चिमना उभारही-शालाने पगअरस्त्राही प्रथम्प्रमाणे भाणीलइ यंजभगी-अप्रयेनम, एनएसी होम करनी, पडी उपर प्रमाणे मंजनणी

हैं मत्यंतां रुक्षीं सीभाग्यमेव च ॥ मदक्षिण्यानया सर्वं मददाख हविर्श्वज ॥ २ ॥ प्रथम् मंगरुम् ॥ एवमनेः 🐉 प्रादक्षिण्येन परिणयनं कृत्वा ॥ अमेःपश्चात्प्र्ववत् अवस्थाय ॥ उदङ्मुखस्वांजल्टिना गृहीतवुष्वंजल्टिवत् विष्टे-🛂 त् ॥ क्रमार्या भाता यथोक्तलाजानंजली सिपति ॥ वप्रःहरादमाकामयेत् ॥ अस्मारोहणतोरमेव स्थिरीभूयख कन्यका ॥ द्विपतां नाशकर्त्री स्या च्छंदोगश्चतिचोदनात् ॥ १ ॥ इममञ्मानमारोहं मंत्रोक्त फलमागियं ॥ भव- 💱 🏭 त्वरमन् प्रसादाचे शिवशक्तियुतोऽसि यत् ॥ २ ॥ अप्रये नमः ॥ इदमत्रये नमम् ॥ इत्यमी खहोति वप्रवसे 🖫 अप्रिं प्रदक्षिणीकृत्य ॥ श्रद्धां शांतिं यशःप्रज्ञां रुक्षीं दुद्धिं वरुं प्रजां ॥ अवैधव्यं च आरोग्यं देहि मे हव्यवाः 🛚 🗱 हुन ॥ १ ॥ द्वितीये पंगलेयेवं प्रत्रपीत्रप्रदोभव ॥ जातवेदःत्रसादाचे खुवां सीख्यं भविष्यति ॥ २ 🎇 द्विती यमंगलम् ॥ एवमनेःश्रादक्षिण्येन परिणयनं ऋला ॥ अनेःपञ्चादवस्थाय॥ उदङ्मुखस्त्रांजिलना गृही- 💃 क्षेत्री बहुत अग्निनी प्रदारिणा करणी, करी भीनीक्सत पाज पोताना स्थानगर आपी उभारही शिलाने पग अस्कादी अन्याए पोताना भारना हाथमांथी हुए हुँ लड़ तेना अभवती मंत्रमणी पर्धी म पाणी भगायनमः एमकही होमकरयो, तथा उपरनो मंत्रमणी चेग्रं मंगल एक्ट चेथी प्रदारिणा करवी. ए संपदं रह तेना अवदती मंत्रमणी वर्ध म घाणी भगायनमः एमकही होमकरणे, तथा उपरनो मंत्रमणी नेतपुं मंगर एस्डे चोथी प्रदक्षिणा फरवी. ए दस्ते वस्वानातरक्रथी घाटही औराडवानो संप्रदायंके ते वस्वाना तरफर्या कोइ सौमाग्यवती ओराडे पत्री वस्कन्याये पोवाना जासनपर बेसर्ज

•ক্ষী॰ 🐉 तबष्यंजलिःवरस्तिष्ठेत् ।। कुमार्योभ्राता पूर्ववत् लाजानंजली क्षिपति ।। वषःदृशदमाकामयेत् ।। अश्मारोहणतोः 🐉 प्र॰ २ स्मेव स्थिरीमूयतु कन्यका ॥ दिपता-नाशकर्त्रीस्या च्छंदोगश्चतिचोदनात् ॥ १ ॥ इममञ्मान मारोह् मंत्रोक्त 🖇 फुलभागियं ॥ भवत्वसम् प्रसादात्ते शिवशक्तियुतोऽसि यत् ॥ २ ॥ अप्रयेनमः ॥ इदममये नमम् ॥ पूर्वयत्

प्रदक्षिणा∕।। आमेयः प्ररुपोरक्तः सर्वदेवमयो ब्ययः ॥ धूमकेतुरनाधृष्य तस्मे नित्यं नमोनमः ॥ तृतीये मंगले 🎖 योवं कृष्णभीष्मक कन्यका ॥ प्रद्यात् सुहृदःप्रीतिं समिपस्यां स्वथर्मिणीं ॥ तृतीय मंगलम् ॥ पुनः पूर्वेवत् ॥ गृहीतांजलिः वरोऽत्रतिष्टेत् ॥ इमार्यात्राता शूर्पकोणप्रदेशेन सर्वान् लाजान् इमार्याजलावावपति ॥ दशदमा-

कामयेत् ॥ अस्मारोहणतोस्मेव स्थिरीभूयतु कन्यका ॥ दिपतां नाशकत्रीस्या च्छंदोगश्चतिचोदनात् ॥ १ ॥ इममञ्मानमारोह मंत्रोक्त फलमागियं ॥ भवत्वश्मन् प्रसादात्ते शिवशक्तियुतोऽसि यत् ॥१॥ भगायनमः ॥

इदं भगाय नमम् ॥ समाचारा सूर्ष्णि चतुर्थपरिक्रमणं ॥ मंगर्छः भगवान्विष्णोर्मगर्छ गरुडध्वज ॥ मंगर्छः पु-

ण्डरीकाल मंगलायतनं इरिः ॥ सपन्नीकेभ्यो बहाविष्णुरुद्रहेदेभ्योः प्रजापतिभ्यश्च नमः ॥ इति नमस्कृत्य इति 🥇 ॥८०॥ चतुर्थमंगरुम्॥अथ पाणिग्रहणं॥ स्वासने आगत्य ॥ ततो वरो वय्त्र दक्षिणहस्तं सांग्रष्ट मुत्तानेन हस्तेन

1

(१)ओं गुभ्गापिते सीमगत्त्राय इस्तं मयापत्या जरहिर्देशा सः ॥ भगोभवेगा सानिता पुर्गन्थमेतं स्वादुर्गाईपत्याय देवाः ॥ १ ॥ ओं |िंग्री भगस्ते हस्तमग्रमीतः। सभिताः हस्तम्प्रामीतः। पत्नीत्वमसिः धर्मेषाहंगृहएतिस्तवः ॥ २॥ प्रवेषमस्तुः पोण्यामनं त्वादात् बृहस्पतिः। मथापत्या। भजावति समीव शरदः शतम् ॥ ( 1 ) हे बरानने-समूहित जेम हू सीनवाबाव ( ऐवर्ष अने सुद्रमदि सीमायनी पृद्धिपाटे ) ते ( तारो ) हत्तम् ( हाथ ) गृभ्णामि प्रहण कहं थुं. है दि ( स्वा ) है के ने ( फ्या ) पित्हें हेनीसांव ( जस्हिंहः) बुद्धानस्थाने मुखपूर्वक प्राप्त ( आस ) था. तथा है बीर! हू सीभाग्यानी बृद्धिगाटे तमारो 🜠 हाय महत्य करेंचूं. तये सारीसाथे (कारणकेंड्रंतमारीयन्तीकु.) युद्धावस्था वर्षत प्रपन्न अने अनुकूल रही आनश्री हु तपास परनी भावने प्राप्त पहुंचूं अने तमे मारा पति पत्रको प्राप्तथ्याको. (भग ) सक्क वैश्वर्येषुक्त ( अर्थमा ) न्यायकारी ( सविता ) सर्वजगतको उत्पत्तिकती

्राप्त वर्ष भार पात भावन आसप्ताकाः ( त्या ) सक्त्र एवपश्चकः ( अपभाः ) स्वायकारः ( सापतः ) स्वरागत्यः उत्पारकता ( दुर्शन्व ) अनेक्क्रकारे ममते घारक करवा परदारमा अने ( देवा ) आसम्ये सभामकरमां उपस्थितपयका विद्वानमाणसो ( गार्तस्यायः ) गृहस्याक्षम् कर्मनाश्वद्वसन्ते बादे (त्यां) तने (महाम् ) भाराप्रति (अद्व ) अर्पणकरेके आसभी आवणे परस्य वेचाइ चुक्या केये, तमे मारा अने द्वं तमारी ऐसी सैवे वैवाहे र्ण मधा छोये. अल्ले एकनोमार्न कदी भग अधियानरण-नेरवर्षकुक मही करीये. है निये ( भग. ) ऐन्त्रपंतुक्त हू ( ते ) तासे (हस्तम् ) हाथ ( अग्रशीत ) अद्यानकं हुं तथा ( तिक्रता ) धर्मयुक्तमार्गने जेरणा करनार हतारी ( इत्तम् ) हाथ ( अयधीत ) ग्रहणकरी चुनयो हु ( त्वम् ) हुं ( धर्मणा ) धर्मवंडी मारी (पानी) भार्या ( जारि ) हे अने ( अह ) हुं पर्मवंड ( तव ) तारी ( मृहचतिः ) पतितृ आयो की प्रेम पूर्वक महीने मृहना सर्वकार्यों शिद्धकरीशु अने एकबीनातु अप्रियापरण-व्यभिचासादि कुस्सितकर्यों कदी नहीकर्राष्ट्रं, नेवडे गृहता सर्वकारों क्षिद्ध पाय-उत्तमी तम संसान पाय तथा नेनावडे रैक्क्य ्रियो प्राचारा अवस्यापाण-व्यानवारार कुरिसेतक्या करी नरीकरीष्ट्री, नेवडे प्रहृता सर्वकायों क्षिद्ध पाय-उत्तेनो तम संतान पाय तथा नेनावडे रेपस्य भी सुख्ती प्राप्ती प्राय तेत्रु आवारण करीसुं है अनेव-पापहित ( बृहस्पति ) सर्वनमतना पालक परमेश्वरे ( खा ) तने (महम्म्) पाराप्रति ( अदात् ) बि॰कौ॰ हैं गृण्हीयात् ॥ मैत्रः ॥ भगोर्यमसवितुभ्यो नमः ॥ वित्तसीम्य ग्रणेर्श्वका विरस्जीवन्सर्भव ॥ इन्हेमदीये सम्रा-

्रीमिबितान्तसदा गता ॥ १ ॥ इति पाणिग्रहणं ॥ वधवरी स्वस्थाने त्राग्वेहपविश्व ब्रह्मन्वारूपः जुडु

यात् ॥ प्रजापतये नमः ॥ इदं प्रजापतये नमम् ॥ इति प्रेशिक्षण्यां त्यागुः ॥ ततो अमेरुत्तरतः उदकसंस्थान् सप्ततण्डुलपुंजाच कृत्वा ॥ वरः ॥ अद्यत्पादि० तियो प्रतिगृहीतस्वदारसिद्धपर्यं सप्ताचलपूजनं करिष्ये ॥ इस्ते अर्थकर्ता े (इयम् ) एत्तन नगतया मारी (पोष्या ) पेरण चोग्यपत्नी (अस्तु ) था. हे (प्रनावती ) उत्तमप्रमा उत्पन्न धरनारी तृ ( मयापत्या ) हेंनेतारोपति छुंन्तेत्रीसांव ( शतम् ) सो ( शरद ) शरद-कातु अथवा सोवर्षपर्यत ( सनीव ) सुरूपुर्वक प्राणधारणस्य निवनन्यतीत कर आ प्रमाणे वधूपण दरवास प्रतिहा करे के, हेम्द्रे ! मुनन सक्छ अगदुरगद्क परमेश्वरनी कृषाधी तम मने प्राप्त धवाडो. मारेमाटे आ नाप्तमा तमास वगर चीनी कीड पण पति अपान पाटनकरनार केव्यतया इप्टेंब नथी हु तमारून कर्युं करीम तेम तमेगारा चगरनीजी कोइ पण खीसाथे अयुक्त जीती मान्तुं नर्तन नहीं रास्तीस-तमे मारी साथ प्रीती अने आनदपुर्वक सो वर्ष जीवो. प्राणधारण करो. हवे पाणी प्रहणास्तिहार करवो. तेषा वरे पेताना नमणाहारेण कन्याने। नमणो हाय अंगुठासापे चत्तो मणिनय अगाहीयी पकटो उपरनोमंत्र बोर्ड्स, एना देवता मग-यम-अने सविताने देनी क्यांचेड हैं वर्णा धनवान तथा सीम्यवृत्तिवाली तथा वैद छोकराओंने प्रसमवावाली तथा रक्षणकरवाली था. अने मारा कुल्यां ंत्ही माराअंत करणनी कृती सावद कुटमा मोधपणने पाम. ए प्रमाणे पाणी सहण करपानो अर्थेत्रे. ते देवताओनी कुरावटे प्राप्त यायके. पड़ी मरकन्याये पोतानी नगामरेक्सी अक्षिमा होंग करो प्रोक्षणीमा स्याग करवो. पड़ी अक्षिमा उत्तरपा उत्तरक्षमा सातमातना दमछा करवा. तेना

अक्षतान् गृहीत्वां ॥ हिमवते नमः ॥ १ ॥ निपधाय नमः ॥ २ ॥ विंध्याय नमः ॥ ३ ॥ मारववते नमः ॥ ३ ॥ अक्षतान् गृहीत्वां ॥ हिमवते नमः ॥ १ ॥ निपधाय नमः ॥ ३ ॥ विंध्याय नमः ॥ ७ ॥ प्रतिष्ठांकृत्वा ॥ प्रतिष्ठास्विदे-्रीपारियात्रिकाय नमः ॥ ५ ॥ गंधमादनाय नमः ॥ ६ ॥ हेमकूटाय नमः ॥ ७ ॥ प्रतिष्ठांकृत्वा ॥ प्रतिष्ठासर्वदे-े दूस सोवारी रेसा गोठवी संबक्त्य करने तेवां में प्रतिग्रह करेखें कन्याने दासक सिद्धिनेगारे समापन्नेतं पूनन करुंधुं-एम कही हाथभां चीस्तालह र सोतार अनुक्रमे नोता वभावता. ते करावी आवाहन करी पतिष्ठाकरी प्रमनकरों, तथा प्रार्थना करी पूलनने संकल्पनती आर्थण करेंबु, ए प्राचीन अनल े देश्यों है. देश पुनल्फ़े खांप्रपनां मन रिवर रहेंडे नेम औरपीपियोधी प्रति केचा शीपिडे,तेम वरकत्या पण अनेक प्रकारना आनंद उह सुखपीरिवेडे. पि सत्पर्दीमां पण्डा सुक्तानो विधि एपोडे के बच्च प्रमम पोतांती जपनोषम हशानदिसाना कोणतरफ सुके. पड़ा मीजोडानो पण उपाडी जमणापमनी पाटली

ुँ मुधी सुद्दे प्रत्यो प्रमालमनी पहलाहे हान्हे भा मुक्ते. आने एक पमछुं कहेडुं एताबीश्रा छ प्रालंशे मरवां ते समयना मंत्रोबोश—केटछारु बाहाणोमातनी हैं इसकी बहाबी प्रमालना उपर मुकाबी वसारावेडे, ते स्थानवी नथी स्था सहावलन्ने पुननवर्षुके सातपुर मुकबानी हेतु रूएयोछे फेने पगले १ ( अन-मोग) २ ( तेनस्वी ) १ ( धन-ऐधर्ष ) ४ ( मननी प्रसन्नकः ) ५ ( उत्तमधना ) १ ( सर्वफतुओसरली ) ७ ( परसरनीधीत ) अने मसझतावृद्धि इत्यादि प्रशुभारते बसवार एतेक पण्डुं परंतु-प्रवास भुवता वसते देवतीए मतिहाओ करवानीठे.ते संस्कृतमूख्ये. ते एक मंत्रमणी तेनेठेडे नयस्कारकरी भीती 🖏 पा पुरुको,एम साते प्रतिहाना मंत्री यहाँहरात्रा वसक्त्याये पोताना स्थानपर वेसतुं एयद्वरवाधी देवति संसारना अनेकप्रकारना सुलीमोगवी मोलोमळनेजे.अहीं-या बीनी भाषांतर करेंशे श्रीहरेची प्रतिहात्रो सुकेबीजे ते सरहत्या गणेतो सारोजे. नर्सतिक्यम कृतमाँ छे. वानि ॥ भो सप्ताचलाः सुप्रतिष्ठिताः वस्दाः भवत ॥ प्रतिष्ठांते प्रसनं ॥ सप्ताचलेभ्यो नमः ॥ गंधं समर्पयामि ॥

सप्ताचलेभ्यो॰पुष्पं स॰ ॥ सप्ताचलेभ्यो॰भूपं स॰ ॥ सप्ताचलेभ्यो दीपं स॰ ॥ सप्ताचलेभ्यो॰ नैवेद्यं स॰ ॥ पूजा 💃 साहुण्यार्थे दक्षिणांस० ॥ त्रार्थयेत् ॥ हिमवात्रिपधो विन्ध्यो माल्यवान्पारियात्रकः ॥ गंधमादन मन्येच हेम-क्यदयो नगाः॥ प्रार्थेना पूर्वक नमस्कासन् स॰॥ अनया प्रजया सप्ताचलाः प्रीयंतां॥ वरस्तेषु वश्रप्रतिज्ञा पाठनपुरःसरमंत्रं पठित्वा ॥ वश्वा दक्षिणपादं स्पर्शयति ॥ याम्यमारभ्य उदकसंस्य मुत्तरतउत्तरं वश्रपदं आ कामयति ॥ वर्ष ॥ अथ सप्तपदाकमणं ॥ छलदुःखानि सर्वाणि त्वया सह विभज्यते ॥ यत्र त्वं तदहं तत्र प्रथमे सा ब्रवीदिदम् ॥ १ ॥ ईशेनमः ॥ विष्णवेनमः ॥ १॥ छुर्डवं स्क्षयिष्यामि आवृद्ध वालकादिकम् ॥ 🖏

च मने दिप्लुण्दस्यातुंद्रमः ॥ दापं पादमयतो न कुपीदिति ॥ सुपोधिन्याम् ॥

( ? ) अग्रेरुत्तरतः येनां वर्षु दक्षिणपादेन समुवारं परिक्रमूणं कारवतीति ॥ इतिहरगद्मपसदयः ॥ कुमार्यो दक्षिणं पार्दं गुदीत्वास्पाययती 🎖 गा८९ँ॥ स्यन्ये ॥ विष्णुस्त्यानपत्तिति पद्यवेवेष्याय केनसम्रमे ॥ इतिकक्षः ॥ वामपादस्य नाक्षमणापिति रेणुदीसितः ॥ अन्येपा माष्यकाराणां

अस्ति नास्ति च संबुष्टादितीये सा ववीदिदय् ॥ २ ॥ ऊर्जेनमः ॥ विष्णवेनमः ॥ २॥ मर्रुभक्तिस्तानित्रं सदैव मियभाषिणी ॥ भविष्यामि पदेचैव तृतीये सा ववीदिदम् ॥ ३ ॥ सयस्पोपाय नमः ॥ विष्णवेनमः ॥ हैं ॥ ३ ॥ आर्तेआर्ता भविष्यामि सुबदुःख विभागिनी ॥ तवाज्ञां पालियष्यामि कन्या तर्यपदे व्रवीत ॥ ४ ॥ 🐉 मायोभवाय नमः ॥ विष्णवेनमः ॥ ४ ॥ ऋतुकाले शुचिस्ताता ऋषिडण्यामि त्वया सह ॥ नाहं परतरं वायां कन्या पंचपदे त्रवीत ॥ ५ ॥ पंचपशुभ्योनमः ॥ ५ ॥ इहाथ साक्षिणोविष्णु र्नच त्वां वंचिताम्पहम् ॥ उभयोः श्रितिस्त्यन्ता कन्या पष्ठपदे त्रवीत् ॥ ६ ॥ पडरायस्पोपायनमः ॥ विष्णवेनमः ॥ होमयज्ञादिकार्पेषु अवामि 🕺 है च सहायिनी ॥ धर्मार्थ कामकार्येषु कत्या सप्तपदे त्रवीस् ॥ ७ ॥ सखिभ्यो नमः ॥ विष्णवेनमः ॥ ७ ॥ आचारात कत्याभाता वरपादांछछं मृहीत्वा ॥ अवतिष्ठेत ॥ इति सप्तपदाक्रमणं ॥ प्रवेस्थापित मंगल्छंभोदक-अर्थ-( १ ) ए प्रमाणे सारामाञ्च मधीपत्र पोताना आसनपर बेसन्- केडलीकन्याचीमा बेरकन्यानी अंगुठी एकडवी जोड्ये तेने बदले कन्याना भाडयास अपूरो परदांपेंडे, तथा तेने अंपुरोदवानकी तथा पाणीज्यानकीनी रीतना रुपिया आपेडे तेमा वरपक्षिय अंपुरो पढावी कमें करावतुं पद्धी रीतना रुपीया महे कत्याना भारने आएवा ॥

क्ष वायनमः ॥ इति पंचोपचारैः संघूज्य ॥ वद्यः पश्यामीति ब्रूयात् ॥ अथ वरः दक्षिणांसस्योपरि इस्तं नीत्वा 🖏 तस्याहृदयमालभते ॥ मय तव चित्तवागम्यो नमः ॥ इति हृदयमालम्योत्ततो वश्रमुपवेश्य ॥ इत्या-नारात् ॥ वरःअनामिकात्रेण वभूशिरसि स्पृशेत् ॥ तस्याःसीमते वरः सिंदूरं ददाति ॥ वभूमृत्याप्य ॥ स्वदः

क्षिणे दर्भोपरि गोष्वपुरुपेभ्यो नमः ॥ इति मंत्रेण व धूमुपवित्रय ॥ स्विष्टकृतं जुहुयात् ॥ अमये स्विष्टकृते नमः (१) सुर्योत्रक्षेक्रनं विवाविवाहे अवतीति रेणुकारिका इरिहरी ॥ सुर्योवलेणस्यान्यथानुपपत्पाऽस्तिमि तेधुवं दर्शयती स्थानास्तिमत ग्रहणाच वृतद्भवातुवातिणां विनेव विवाहो नरामाविति गदापरः ॥ धुवमीक्षरतेत्वरुपेषणा न भवतीति कर्तः ॥ धुवभीक्षरवेति पेप इतिहरिहरगदापरी ॥

( ? ) जो धुनानी धुनाःपृथिती धुनिक्चिमदं नगत् । धुनासः पर्वतारूमे धुनासी पतिकुले इपम् ॥ जो धुनमसि धुनन्त्यापदयापि धुनेपि-वोच्ये मिपम्बं त्यादात् । बृहस्पतिर्मेषा पत्यामजानती सजीव सरदः शतम् ॥ ९ ॥

119011

अर्थ-( १ ) एसप्तरही थ्या पत्री मंगलकट्यमाथी पाणीच्ह मंत्रसणी सरक्रयानामाथार अंट्युं. हवे दहाडानालगन होयतो सूर्यनादर्शन करानवा तथा

राष्ट्रीनाहोयतो यत्याने पुत्रका दर्शन करावया. धुव देखादवानुं तालकी एटईन ठे के हेवपु अथवा वर नेम आ धुव दर अने स्थिरठे नेबीरिते आपणे 👰

नेजजाए एउनीजाना वियाचरणमां परिवर्त्त्वेभमं वालनमां स्थिर अने दृत धर्थे. १६ अमुच्य ग आवदनीत्रभयाये परिविभनस्थाना परितुं नास्योलतुं नोहरेये 💠 नेप हे तोमुर्तुनाम शिरदामी अथवा चक्र वर्षी होच तो तेतुं नाम शिवशर्मण अथवा चक्रवर्मण अथवा भगवान दासस्य इत्यादि बोलतुं नोह्ये. तेमन असी 💆 पर्ता नम्पाने कपूर, पोताई नाम प्रथमा विषक्त्यान जोटी मंत्रने पूरी बोलते। जैसके यशोदाहं शिवशर्मणस्ते इत्यादि आ नम्याये पण (अमुख्य ) पदनी 🧗 🕉 तत्वाये पतितं नाम परयन्त विमरिवटे बोल्युं अने " असी " ना मन्याये बपूतुं प्रथमानत नाम ओडी बोल्युं ! नोइपे. नेमके हे स्वामिन यशोदा (अहम्) 🕏 ुँ हुं ( अनुष्य ) पत्रवर्गीती के पद्मुख्यती अर्थाण ( पतिङ्डे ) तमाराङ्ख्या धुवा निवाङ नेवाहे आप ( धुवम् ) दृद्धनिवाय करनार मारास्थिरपति ( असि ) 🕉 जै, तेम टुं पग तमारी इंद अने स्थिरतती पाउं हे बरानते ! भेप (धौ) सूर्यनी काती अथवा विशुत् (धुवा) सूर्व अववा पृथिव्यादि कीकीमा 🕏 हिंधर-नेन (श्वित) प्रोतान। सन्दर्श (धुवा) स्पिर् नेमू इस्म आ (विश्वम्) सर्वनगत संसारप्रवाह स्वरुवना (धुवम्) स्थिरछे तथा नेम् 🕏 🕻 (श्वेरांता ) आ पर्रती (धुरास: ) वेतावा शत्यमं स्थिरंजे. तेन ( इयम् ) आ तुं मारी ( खो ) ( वितिङ्के ) माराकुलमां ( धुरा ) सर्वेदा स्विस्रहें. 🕄 १ (१) पड़ी बरेकन्याना अपणा सभे हायमुरी तथा हुरये हाथमुको मेत्रभणतो. पड़ो वरे पोतानी चौथी आंगलीवटे अन्याना मायाने अडकी तेना सेयाना हैं में पुर तान्तुं. ऋतथी तेना सीयान्यनी सुद्धि थायड़े, पड़ो सिस्टलत आहि आहुतीओंनी होम ऋत्यो, एने पूर्वविवाह कहेंडे. १ हे वयु (तुं) तारा

ुँ इदममये सिष्टकृते नमम ॥ इति पूर्वविवाहः ॥ अद्यत्यादि० कालापकर्प जन्य दोपपरिहारार्थं त्रीन् संख्याः १ (१) वध्याःसीर्पते वरः सिंदूरं ददातीति प्रयोगस्त्वाको ॥ अनामिकाप्रेण वसूत्रियसि अभिषेत्रण मिस्यन्ये ॥ चतुःश्वीकमे चतुर्थिकि । कृत्रियमिति गरं च रुद्रया तरिनेव कसेति॥ १ औं मध बते ते हृदयं दथायि मय वित्त मतुष्वित्तं ते अस्तु । मप बाचमेकमना खपस्व

मभाषदिएमा नियुनस्यु मधाम् ।

कान् प्राजापत्यान् रजतप्रत्याम्रायद्वारा अर्थकुच्छ्रपरिमितद्रव्येण अहमाचरिष्ये ॥ तेन प्राप्तकर्मणि अधिकारः | ? अं अञ्चर्गातेन गणिना प्राण सूनेण (गृक्षिना ) कमामि सत्यत्रंन्यिना मनश्र इदयं च ते ॥ १ ॥ ओं पदेवध्दृहयं तव तदम्नु े हुद्र्यं तम बहिद्दं र हरवस् सम तहर्र्त्त हुद्र्यं तन ॥ २ ॥ ओं अर्थ्न प्राप्त पहित्र र सस्तेन वधामि स्वासी ॥ ३ ॥ (१) सुमङ्गर्रासिय गृतिमाम् समेत पश्यत । सीभाग्यमस्य दस्ता यापास्तं निपरेतन ॥ १ ॥ (इययम् ) अत करण, अने, आत्माने (सम ) मारा (वित्तपतु ) चित्तने, अनुकूछ (ते ) तार्ह (चित्तं ) चित्त सर्वदा (अन्तु ) थाओ (सम ) मारी (वाचम् ) बाणीने, त् (एक मना ) एकाम चित्त ( चुपस्त्र ) सेवनकार (प्रमापति ) प्रमास पालन करनार, परमेश्वर (त्वा ) तने ( महस्म् ) मारे मोटे ( नियुननत् ) नियुक्तकरे. हे बच्च, अथवा वर, जेम, अन्ननी हाणे प्राण, अने प्राणनी सांचे अल, तथा अल अने प्राणनी, अंतरिक्ष सांचे संबंध छे, तेम (ते) तार्ह ( इट्सम् ) बदव ( च ) अने ( मनः ) मन ( च ) अने के वित्त इत्यादि, तेने ( सत्यमंथित ) सत्यतानी मांउ पडे ( यझानि ) बांगु हु. हे बर, बा, हे ब्री ( यहेतट् ) ने आ ( तब तारु हदयम् ) ( आत्मा अथवा अतः करण छे ) तत् ( ते ) मम ( मरा ) हृदयम् ( आत्मा अथवा र्शत वरणनी, हत्य प्रिय ) असु ( थाओ अने ) मम ( मारी ) यदिदम ( जाआ ) हृदयम् ( आहमा, प्राण अने मन छे, ते, ) (तारा तव

हृदयम् ) आत्मा किंगती तुरुप, प्रिय ( अस्तु ) सदा रहो ( असी ) वरे मधुतं नाम बोलतं, हे यशोदे ने ( प्राणस्य ) प्राणतं परिण करतार (पडार्विश)

उनसम्बं तल ( अन्नम् ) अन्न है ( तैन ) तेनडे ( ला ) तेने ( बन्नामि ) इट प्रीति बडे बांधुं हुं. ( १ ) हे विद्वलनते (इयं बच्चू )आरती ( सुकद्मका.)

उत्तमप्रस्थाण कारवगुणीर्था युक्त थाय तेम ( श्वाम् ) आने ( समेत ) वरो अने ( पश्यत ) जुवो एटले के ने रीते एने उत्तपप्तवनी मारी थाय तेनी

असी उक्रतीक्रो ( अस्पे ) आनेमाटे ( सीमाग्यम् ) उत्तम सोमाग्य (दला)आपी ( अथ ) पत्री ( आसाम् ) तमे पेताने पेर ( विस्तेतन ) पाउर नाव.

हृद्यं मम यदिद ९ हृदयम् मम तदस्तु हृद्यं तव ॥ २ ॥ ऑ अन्नं माणस्य पहिष ९ शस्तेन बज्ञामि त्वासी ॥ ३ ॥ (१) सुपद्गलीरिय वश्रीराम् संवत पत्रवत । सीमाग्यमस्य दत्वा वापास्तं विषरेतन ॥ १ ॥ (हयरम् ) अंत.करण, अने, आस्माने ( मम ) मारा ( वितयनु ) चित्तने, अनुकूछ ( ते ) तार्ह ( वित्त ) वित्त सर्वेदा ( अरनु ) भाओ ( मन मही ( वाचम् ) वाणीने, तृं ( एक मना ) एकाप्र पिच ( अपस्व ) सेवनकर ( प्रजापति ) प्रतातुं पास्त करमार, परमेश्वर ( त्वा ) हुने ( महाम् ) 🖟 मारे मोटे ( नियुक्तत ) नियुक्तते. हे क्यू, अथवा बर, जेम, अजवी साथे प्राण, अने प्राणनी साथे अज्ञ, तथा अज्ञ अने प्राणनी, अंतरिक्ष साथे संबंध है छे, तेम ( ते ) तारुं ( हृदयम् ) हृदय ( च ) अने ( मनः ) मन ( च ) अने ने विच इत्यादि, तेने ( सत्यमंथितः ) सत्यतानी गांठ वंड ( बन्नानि ) 🕏 बांई हुं. है पर, बा, हे की ( यदेतद ) में आ ( तब तारुं हृदयम् ) ( आत्मा अथवा अंतः करण हे ) तत् ( ते ) मम ( मारा ) हृदयम् ( आत्मा 🕏 अवरा अंत करणनी, सुल्य भिय ) अन्तु ( थाओ अने ) सम ( मारो ) यादिवम ( जेआ ) हृदयम् ( आत्मा, प्राण अने मन छे, ते, ) (तारा तय 🖔 हृदयम् ) आतमा विगेरनी तुल्प, प्रिय ( अस्तु ) तदा रहो ( असी ) वरे नधुत्तं नाम बोल्खं, हे यशोदे ने ( प्राणस्य ) प्राणतं पोषण करनार ( पडानिया) 🕏

छर्वातर्त्तां तत्व ( अनम् ) अत्र छ ( तेन ) तेनडे ( त्वा ) तने ( यप्नामि ) रह प्रीति बड़े बांधुं सुं. ( १ ) हे बिद्धन्तनी (१पं बपूः)आरमे ( सुमद्र जीः) 💸 उत्तमकरपाण कारक्रमुणोर्थ सुक्त थाय तैम ( १माम् ) आने ( समेत ) को अने ( ११यत ) जुने एटडे के ते रीते एने उत्तमसुखर्ना प्राप्ती थाय तेवां अनी उप्तर्ताहरों ( अर्थ ) आनेमारे ( सीनायम् ) उत्तम सीनाग्य (१स्वा)आपी ( अप ) पत्नी ( आत्वाम् ) समे बाताने पेर ( विगरेतन ) पास्न नात-

? भों अद्ययदेन प्रणिना प्राण मुनेष ( प्रश्निना ) प्राप्ति सत्यप्रीत्थना पनश्च हृदयं च ते ॥ १ ॥ भों यदेतव्हरयं तव उदस्तु 🔯

🍕 🖟 🖟 कान् प्राजापत्यान् रजतप्रत्याम्रायद्वारा अर्धक्रन्द्रपरिभितद्रव्येण अहमाचरिष्ये ॥ तेन प्राप्तकर्मणि

उदकपात्रे त्यागः ॥ ।। वायवे प्रायश्चित्ताय० इदं वायवे० ॥ २ ॥ सूर्याय प्रायश्चित्ताय० इदं सूर्याय०॥ ३ ॥ इंद्राय प्रायश्चित्ताय० इदं ग्रंथाय०॥ २ ॥ ततो स्थालिपाकेन १ एकाडुतिः ॥ प्रजापतये० ॥ २ ॥ ग्रंथाय० ॥ २ ॥ अस्रसा पडाहुतीनासुदकपात्रेत्यागः ॥ ततःस्थालीपाकेन १ विष्टकृते ॥ अभ्ये स्विष्टकृते० इदममये स्विष्टकृते० ॥ ।। प्रोत्पापात्रे स्थागः ॥ आज्येन नवाहुतयः ॥ अभ्यो० १ अभ्यो स्विष्टकृते० इदममये स्विष्टकृते० ॥ ।। प्रोत्पापात्रे स्थागः ॥ आज्येन नवाहुतयः ॥ अभ्यो० १ १ ॥ अभ्यो० विष्टकृते० ॥ ।। प्रोत्पापात्रे स्थागः ॥ आज्येन नवाहुतयः ॥ अभ्यो० विष्टकृते० ॥ ।।। प्रोत्पापात्रे स्थागः ॥ अज्योन स्थान्ते ।। स्वाप्यापात्रे स्थानि स्यानि स्थानि स्यानि स्थानि स्थानि

र्था कमें करीश-एमकरी गणक्तीहं पंचोरचारी पूजनकर्रा अक्षिया <sup>चर</sup> करवे.ते तथा बतो तेनी ठेकाणे छोट केवळ एकटी धरावाडे.ने ते सावामां विलक्षुल 🖔 आकतो वर्षी नेनायां दक्षामा हमडी तथा एकएकमा मन मध्या नर्था.व्याटे शास्त्रात्माणे मात्रान करवे। होय हो। देशकाणे मात्र मोहये. वर्णा ते न बने तो 🙎

मोलगार्थः। करें। तेतुं भराण करावतुं, ते अखुत्तमत्रे, यह थया पत्री प्रायधित संवर्धानी आहुतीयो पंदर आएर्या,

सिद्धिसत्तु॥ अधेत्यादि० ममास्या भाषांयाः सोमगंधर्वाग्न्युपमुक्तदोष परिहास्द्वारा श्री परमेश्वरशीत्वर्थं विवाहे-कदेशमृतं चतुर्थाकमोहं करिष्ये ॥ तत्रादी गणपतिस्मरणं करिष्ये ॥ अमी चर्र सपयित्वा प्रणीतोदकपात्रं प्रति-ग्राप्य अभिं नमस्कृत्य ॥ आुक्त्येन पंचाहृत्ययो देयाः ॥ अभये प्रायश्चित्ताय नमः ॥ इदममये नमम् ॥

```
क्षै॰र्रे इदमग्रये॰ ॥ १ ॥ बायवे॰ इदं वायवे॰ ॥ २ ॥ सूर्याय॰ इदं सू॰ ॥ ३ ॥ अभिवरुणाम्यां॰ इदमाप्रे॰ ॥ ४ ॥ 🔀
        अभिवरुणाभ्यां॰ इदममि॰ ॥ ५ ॥ ॥ अमयेअयसे॰इदममये अयसे॰ ॥ ६ ॥ वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वे-
        भ्यो देवेभ्यो मरुद्रयः स्वर्केभ्यश्चनमः ॥ इदं वरु० ॥ ७ ॥ वरुणायादित्यायादितये च० इदं वरुणाया० ॥ ८ ॥ १
       प्रजापतये॰ इदं प्रजापतये॰ ॥ ९ ॥ ततःप्रोक्षणीपात्रस्थजलस्य प्राप्तनं ॥ सैस्रवप्रारानं ॥ पवित्राभ्यां मार्जनं ॥
       अमी पवित्रमतिपत्तिः ॥ अर्थं कंसारभक्षणं ॥ ततःवधं स्थालीपाकं वरः मारायति ॥ कन्यामात्रा चलुर्वारं 🕺
      (१) अमजायां तु बन्यायां न धुंजीत कदाचन ॥ दैंगिरेमस्य गुर्स हृष्टा किम्प्रियनुश्लेखित ॥ (१) ओं, इमां त्यापिन्द्र मीद्दाः सुपुत्रां
सुभगां कुण दश्चास्यां पुन्यनाधेदी प्रतिमेकादशं कृषिस्याद्वाभाँ सन्नाही त्यशुरे मत्र सम्राही त्यश्चेत्र भागानान्दिर सम्राही भन्न सम्राही अधिदेहर्स
      (१) ३४४ प्रश्न कोन क्रीयोने आज्ञा आपेंत्रे. के हे (मीद्व ) वीर्यतेषनकरनार (इन्द्र ) पर्रोधर्ययुक्त तुं का बचूना स्वामिन् (स्वम् ) तुं रे
( इसाम् ) आनद्दे ( सुप्रशाम् ) उत्तमयुत्रवाकी (सुप्याम् ) सुरातीभाग्य भोगववाताकी (क्रुणु) कर ( अस्याम् ) आ बचुमा ( दश् ) दश ( प्रमान् ) रे
```

र् हेटोपे (रूपि ). कर मे आर्था आगळवधी सदानेत्पिचियो अधिक छोम करसो तो तमारास्तानो दुष्ट अल्पायु अने निर्दुद्ध यसे. अने तमे पण अल्पायु अने 🛊 रोगप्रस्तथ्द मसी. हे वरानने दुं ( शहारे ) मारोपिता के में तारो ससरी थायाने तेमा प्रीतिकर्रा (सम्राद्धी) प्रकाशमान चन्नवर्धी राजानी राणी समान पश्चमात

. ९वोने ( अधिह ) उत्पन्नकर, अधिक नहीं जेने है स्त्री तपण अधिककामना नहींकर दरापुत अने ( एकादशम् ) अस्यारमा ( पतिम् ) पतिने मासपह 💲

? प्रकासनं चेकडीच्या मेकपाने च भोजनं । एकत्र मगलस्तान गेकबाइनरोहणं । कुर्रन् विवाहे एतानि भवेद्विमी न दोए भागिति॥ गार्ग्यः॥ विद्याहे भार्षया सह भोजनमाहांगिए ॥ मात्रा सहोपनयने विचारे भार्षया सह । अन्यत्र सहभ्रक्तिये त्यावित्यं माध्ययाचरः इति ॥ भारतते ॥ जीबी प्रवृत्त ( संब ) था ( क्षत्राम् ) मारीभाता के जे तारर सासुवायजे तेना प्रेमञ्का भइ तेनी आज्ञामा ( सत्रार्ज्ञ ) सारीरित प्रधानान ( सव ) था ें ( मनान्वीर ) मारी केन ने तारी नजन्दाने तेमा ( सम्राही प्रीतिनाङी क्षेत्र देवृषु )मारामाइ तारा दीवर तथा नैटने तेमा पण प्रीतिनदे प्रमाशमान ( अधि-भत ) या अर्थात् सर्वर्था अविरोध पूर्वक प्रांतिवाली था.\* हवे, कसार मक्षण कतननु, तेमा, पेटार्था, कन्यानी माना, पारे भीड पार्धा आर्वा,उत्तराभि मोडे बेर्स सारा इत्तम राजमा, कसार पीरसे, पर्क, तेमा, बाखाड विगेरे राखे, पर्का, भ्रम वरे कम्पाने, प्राराच कराबद्व, तेमा, पेडे, कोडियेर्धा, चार उपरचा मुद्रो भूगी चार वसत संबादनुं ए ठेकापे कान पकटवानी स्थिम है. पूर्व कन्याये वस्त्रो कान पकटी, चार बसत सबादनु एकी नेउ जागे, पीतीना

परिवेषणं कार्यं परिवेषणानंतरं पूर्वं वसे वर्षं प्राशयति॥ प्राणेभ्योनमः ॥ १॥ अस्थिभ्यो०॥ २॥ मांसेभ्यो०॥३॥

हाथे, खांबुं, तथा सामुचे, बेउना हाथघीबाडवा तथा कप्तास्त्राधानी रीन सामा सामी आपे, तेमा, बरने,चे आपे, तेना करता,अधिक वरवाला कन्यानालाने 🖠 आपे छे पू. कंतार अक्षणनो विधि थया पठी आईँया मेतानी आवी सलोकार्ता रीत करे है. तैमा केटलाक विभास शब्दी, अन्योगन्य, एक एकना माता

थिया भाजाने कहे छे ते क्रीक नपी, शाख्यी विरुद्ध छे. मादे में डेफाणे, एकेके पोतानी प्रेम अने. अंद रूरणनी गाती नापनानी है तेना रहेकी आहि 🕺

वसंतरिकका इतमा मुकेकार्र ते बोक्जांक तेमा पेहेकावरपर्धा कन्या एमभनुत्रमे १३ श्लोकथपान्तरी मेतानांते चाठी वर्ता एकेकरुवायो बेउनयापे दक्षिणा

अत्तरी पटी केटर्लकन्यातोची रीतमात प्रमाणे रूपिया आपना क्षेत्रानीकरी देवी-तथागेरेचेताना दापानारुपियाहेवा तेनेटवासन-बंदासनकेहेर्स्ट तेमा बर्पानारे 🖠

स्वचेभ्यो० ॥ ४॥ इति मंत्रेण चतुर्वारं वर्ष प्राशयित्वा ॥ नंतरं कन्यावरं ॥ चतुर्वारं प्राशयित ॥ हस्तं प्रक्षात्याः 🐉 व चम्य ॥ मृतस्य० ब्रह्मच् अये ते वरः प्रतिमृह्मतां ॥ पश्चिमे प्रणीताविमोकः ॥ अत्रवध्रवस्योः प्रतिह्मामुत्राः पट् चाम् ॥ कृतस्य॰ ब्रह्मच् अयं ते वरः प्रतिगृह्मता ॥ पाश्चम अणातात्वनत्त्वः ॥ जान्य क्षार्थः गजाण्यं अर्थाग अर्थं हैं। शा है नीयाः ॥ ते च ॥ इस्त्रोकाः॥ छत्त वस्तृतिस्रका ॥ वर्षः अर्थः ॥ के धर्मपत्ति नस्त्रं अरथां गजाण्यं अर्थाग अर्थं हैं। 🖁 वुजने मनधी प्रमाण्युं।तिथी सदा इदयमां शुध प्रेम धारी रक्षा करुं अरध अंग गणी हुं नारी।।१।।"कुन्या" ॥ 🕏 च्यां ज्यां जसो मस त्यांहां तम साथआहुं छायारुपे अनुसरी पतिनी कहातुं।।हो दुःखके सख जरी मनमानलातुं 🕏 सेवाविषे रहि सदा पति उण गाउं ॥२ ॥ व्यरः ॥ पाले छंडंव नहिक्केश जस करे तृं बृद्धो तणां वचन नित्य शिरे धरे तृं ॥ कर्तव्य तार्रुं मनमां समजे और तृं पाखं तदा प्रणयथी बुजने और हूं ॥३॥ क्रन्ट्या ॥ पाखं छुडंव है नहिं होह धरुं जराये सेना करुं विहिल्ली विधियी सदाये ॥ इच्छशुं मले नवमले रहुं हर्पमांये स्वामी तणी थह 👸 रहं मन वाणी काये॥ ४ ॥ वरः ॥ जो तं रहे नित पतीव्रत पालनारी संसारकार्य अरखं तुं उठावनारी ॥ इवासनआप्तुवने कम्यानागोरने मद्मासन आप्तु-एवीनालने, बह्मासन इदासनहरीना सहदोते पए तेपना हेवाणे बृद्धेरेएसमहरूसि सीपेटी नणायते,

वाणी स्टब्स्थि तनताप समावनारी पार्खं गणी अधिक पाणथी प्रीयनारीसपा। कन्या ॥ भक्ती करुं प्रभुगणी पति हैं हुं तमारी स्वामीतणां चरणमां रहुं भावधारी॥वाणीवदी कड कदा नहीं हूमनारी भारत सदा मधुर वाक्य विनोद 🖁 कारी ॥६ ॥ 🔫:॥ आज्ञापरी शिरपरे सहुछखदेती संसारकार्य छखदुःख विभाग छेती ॥ एवी छलीन प्रमदा 👸 ि परतासी प्रीति पार्छ परी सञ्जन केरि रीति ॥७॥ कृत्या ॥ स्वामीतणां सुस विषे रहं पूर्ण सुसी थावो 🕺 🔋 कदी दुसी तमो थर्चु हुंय दुःस्ती ।। ए रीत नित्य छस दुःस विभागी थाऊं आज्ञा तमारी सघली 🕏 ि शिरशे नटाई ॥ ८ ॥ वरः ॥ शास्त्रानुशासन जदा कहुं पालनारी थे धर्मपत्नी पतिना पद 🐉 🖔 सेवनारी ॥ संसारबारि निधिपार उतारनारी छे धन्यजन्म मुजजो मळी धर्मनारी ॥ ९ ॥ कुल्या ॥ 🎉

🖁 यह स्नानथी ऋउथकी अतिशुद्धदेहे कीडा करुं निजपति थकी नित्य गेहे ॥ चक्षु तथा मनथकी 🐉

🔋 न गण्रं, विजाने मानूं विजा प्ररूप भात पिता समीन ॥ १० ॥ वरः ॥हूंये नहीं उग्रं तुने कदिकोइ रीते साक्षी 🐉

🖁 कर्या जगपती अतिचाहुं चिचे।। पालीस अंग गणिने तुजनेहुं पीते ते धर्मपरनी समजे निजधर्म नित्ये ।।१९।। 🐉

॥ कन्या ॥ वेली उठी पतिथकी ग्रहकार्य त्यागी यज्ञादि कार्य करवा थार्ड अर्थभागी ॥ धर्मार्थ काम 🖇 समये रहुं नित्य साथे सर्वस्वमेव अरुखं निजनाय हाथे॥१४॥ वर् कन्या॥आ समपद्य रचना महिजेह भारुखं 🕄 ते दंपती वचन सार गृहीज दाख्डं ॥ आयुष्य कीर्ति धन संतति शुद्ध आपे पापो समृत्र हरिशंकर् प्रेम थापे ॥ 🐉 ॥ १५ ॥ प्रणीतोदकेन वर्षुं मूर्धि अभिषिचति वरः ॥ मंत्रेण असिवायु सूर्य चंद्र गेघर्व प्रजापतिन्यो नमः ॥ (१) अत्राधारायतस्य स्थिते मंगळं कुर्बिरत् ॥ पतिपुत्रान्विता भन्यायतसः शुभगा अपि ॥ सीभाग्यसस्य दशुस्ता मंगळाचार पूर्वेक 🖓 मितिरेणुदीक्षिताः ॥ विवाहस्पशानयो श्रीमःमपाण मितिशुतैः ॥ अभिवादनश्रीत्रस्य निस्यं इद्धोपसेविनः ॥ पत्थारि तस्य वर्षते आयु विद्या यशो धर्छ ॥ इति पतः ॥

अर्थ-पत्रे बहाते पूर्णपत्र आपि प्रणीतानु पाणी दंपतीना साधारा छाट्युं. तयात्रर्मकराध्यानी दशणा तयामूयसीआपी आशिर्वाद छेथ-पत्रीकेटलाकक्त-

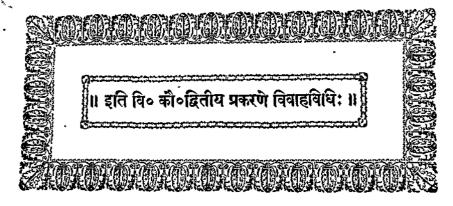
केंंंंंंंंंं । कन्याः ॥ वाणी शरीर मनथी ठगुना पतीने साक्षीकर्या वचनना कमलापतिने ॥साथे वसीस जगमां सुस्र र् ४० १ थी सुप्रीते ना क्रेश थाय कदि वर्तिश पूर्वी रीते ॥ १२॥ वृरः ॥ संसारकार्य सघलां दइने सुधारी थमार्थकाम् र् विषये बसु सहायभारी ॥ आ लोकमां सुरलोक बतावनारी मुक्ति तदा सहज दंपतिनी थनारी ॥ १३ ॥ र्

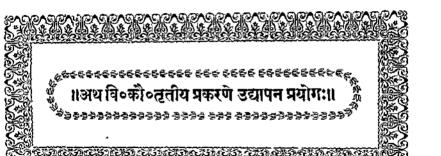
यथा कुळाचारं कुर्यात् 🛭 ततो दंवती बहमध्ये गत्वा गणपत्यादिपुरःसरं डभयोःपित्रादीर प्रणम्य 🕕 इष्टजनैः 🕺 सह क्षेत्रीयाताम्।। ततीवरः ॥ शास्त्रोक्तश्चभकाले वित्रा दत्तां वश्चं मृहीत्वा।। याने उपविश्य ॥ भंगलवाराघोष-पुरःसर्संगरुगीतपटनपरैः पुरंधीजनै राचार्यादि निभैः स्वस्तियाचेति वा सुमंगरु स्कान पटन परैश्च सहस्वग्रहः द्धारे आगत्य यथाचारं कृत्वा गृहं प्रविशेष ॥ इति श्रीजयानंदात्मज मृह्यसंकर शर्मणा विरचितायां विवाहकीम-र्था विवाहप्रयोगः समाप्तः ॥ लाचरोक्तवा.देमां मोमोर्णु करेले,तेनी रीत मेहेस्ययी करतरकयी वरनी मादा आगी कन्यानेवांस्थाकरी सामुसराना तरफता सामाना अधवा स्पिया रिवानप्रमाणे आरेंद्रे, 🧖 तथा श्रीमा सगवदाला १ण अनुकरे आदी तेतेआपे-गर्जाकस्या तरफताआदी वरने चांठीकरी प्रथमध्यसाये आपे एथयाप्रजावेड वरकस्याये परिधी चारवरततआदीची प्रदक्षिणा करकी एवो आठक्रेगल केरणवाणे. सिवास पोरबाल-श्रीमाला-क्रिकेरेसाणियाओमां तप्प सोनीपाछे,ने थवापठी वे स्रीकाव्यवती वरनातर फर्ना तेम वेकन्यातर फर्ना 👌 आंव अने बाकन्याने चांछो करी-भातकांडो परेहायेकंकुकरी पोठानाहायकोडी कन्यानानमणाकायभिक्ते के ब्रह्मासाविद्यीनुस्वातण अनेर्द्धरपार्वेदीनुं सीधाग्य

कृतस्य० ब्राह्मणेभ्यो यथोत्ताहां दक्षिणां दास्ये ॥ कृतस्य० यथा संख्याकान् ब्राह्मणान् भोजयिष्ये॥ कृतस्य० आ॰ हूं चार्याय यथोत्ताहं दक्षिणां दास्ये ॥ कृतस्य० न्यूनातिरिक्तदोष प०भूयसीं दक्षिणां०॥ आशियो गृहीत्वा अतःपरं ३

स्मार्ग मार्गाटको भारतात अस्त्राहीवरने तथाप्रत्याने परस्परमरावेजे तपागीका अगाधा कुंकुमना हाथकरं। जापामरावेजे. पत्रं वरकत्या प्रोत्यारी गर्न्य मोहरूरी उदे,पर्ज वैतानावहाँछोने परेखापी, समापंहपमा नेसन्न तथा भोजन कर्त्यु तथा तेनदिन्ते वड वर्धरत्मवानाहोय तो सारो-वार सी.थी मुहर्त- 💆 नोइ बाहते सानते जब ( स्वीयारेनवापी - रीमी मंगडे मुस्य-दुधे विक्या द्युक्त-दानी अने सोमवार उत्तर बढेहार्ड, नती वस्तते स्थामं पोताने दाते हाये 🕏 क्षन्याने नेसाडी घेरन्ड पेतानां नारणाना उपराभगाही नान्डपर वेउनणे उभारेहेर्नु अहि वरनीमाता आवीप्रधनप्रमाने वरनत्याने पेति है. तथा संपटजनारी वर्केंद्रेत तेर्वेवर कार्या मार्गावरम् नायके. ते बखते बस्ता बेनकरणादेके, तथा तेर्नु दाखुं आप्यापी घरमां नह गीत्रभयसे बेसीवंचीपवारी पूजाबरावर्दा, 🕹 पत्रा एक्त्रेमकी विगेरे सारहं प्रथमन्याणेकरी सवाता करवी. मातानी थाकहायती मातानी पूनाकरी आक्रक्त्वी एक भारतमानी मेडकणाये, खावानीति पान देन्यामार्थे तेदिश्वमो विधि करी राजीये शयन बरख-दवे वहा प्रश्री वयारेसात सुर्हत आवे न्यारे देवताओतं सरवादन कर्तु नोहये प्रश्तीन न करता-संग्री के ग्ररूपमांथी जेनारआवेजेनीमारेसवारे बर, साप्तरिमायजेन्यां नरकन्यानोडे,बान्यप्रवेशी नायजेन्नायातासरणपांचेजनणनायरतारुपियाधाराप्रमाणेलाखेजेन्यने एकेन 💸 पोर्ताये नारं एम कडेंडे. तेनायापत्र कम्यानायामांगोषनभगाडी लहनह स्यांगोरपूत्रा करावेंडे. प्रयमिवननामप्रमाणेएकीवेकी कोरही मरावेंडे. पडी कन्याना हार्ग्त विरहतेनी होरोनास्वतत्त्रेहको. तेमस्ताहाध्यो कन्याजेहे ने क्षे.पंशियोकापेके.तथ पायबाटका स्तोडाकी विप्तनेनकोठे.पंशियोकापरसर. त्यां स्पादिकारकीमा सावियोक्ताता तेनावर एकवरी तेवावर्ड भरि. तथा रू.। मुक्तिकवियरमुकी तेवावर रेहामीककडी बांबी तेनी भूजागणपतितारिके करावेडे. पत्री उर्दाने महाभाषत्रेतमा नर्तावत्तते वरवाळा.ए. पत्रो केतानेवेर व्हनायत्रे. तथा केतानेवेरवेळाथीकारके स्वीडळवर प्रथमप्रमाणेष्ट्रजारतिवरमाव्हजायके.तथा ै

कीर हैं एसहहीते तेताय,दक्षे अनुस्ये प्रणेष्ट एकहरवुं-गऊंबोधीये तेपपाणेक्टी बरवाडीकमाश्चरमां करवानी डोकया चीववीवकी नांत्वरी-गजेबरकत्या सापे हैं। बरमामत गोजवर्त पंचेपचारी गोरे पुमतरावरी,विस्रक्रमाणांके आह्या १४ क्षेत्रारी पैसावह बरकत्याने पुक्रविकीतमाहके तथा अंतरपटना ककडानी कोरडो-़





तनारकात्र २५०२म । अनुस्य आन् गरम । एत्य २५ ५५० च मानुस्य १००० । । तन्नासने उपविश्य ॥ आचम्य प्राणानायम्य ॥ पात्रे शुद्धोदकमापूर्य ॥ देशकालादीन् स्मृत्वा ॥ इस्ते जल-मादाय ॥ मम आत्मनः प्रसणोक्त फलप्रान्यर्थ करिष्यमाणकर्मणि अधिकासर्थं यथाशक्ति देहशुद्धिप्रायः माणायाची दहेत्सर्वे यच्छिरिरेऽस्वि शतकी। यथा वनगती विन्द्रः झुटकार्द्र दहर्तीयनं॥भाषायामस्तया पापं शुटकार्द्र नामसंग्रयः ॥ पावका इन दिर्द्धतं जनहोमे हिंगोत्तमाः ॥ मतिग्रहणं द्वाभ्यंति एवकः साङ्किरिव ॥ तान्मतिग्रहमान्द्रोपानः माणापामेहिंगोत्तमाः ॥ नाद्ययंतीह विद्वेसी हैं बादुमॅबानिवांबसात् ॥ त्यममूक्षिधिवास्योनि वेदोमजास्यस्तया ॥ एकैकं सप्त रात्रेण पुनाति विधिवन् छतः ॥ भाणापामेदिहत्यापं धारणाः ू भिक्ष विद्विषं ॥ त्रस्याहार वेषेष्ठोकान् योगेन परमं पर्दं ॥ नाभिन तत्पातकं कोके माणापापेन इाय्यति ॥ वर्म अर्थ काम अने सीक्ष ए चार प्रकारना साधनो छे.तेमा ने साधन करतुं होय तेमा प्रथम वारंत शुद्धिनी मत्तर हे. कारण, नेय,माणेक होरा बीगेर

रहनो क्या तेवनी खाणोमायी निकळवान कीमहने पात्र थता तथी तेमन, मुक्पोदि धातुओ क्या उपनारी शिवाय सैपूर्णताने पापती नथी वर्छ वैद्य पण है पूर्वमा रोमीने जुल्य बीरेनन करान्या पठी पीतनु ओपय आपेटे तेमन दरेक कर्पना आरंभे देह शुद्धि प्रयोग प्रथम करवानी जरूर छे. माटे आ देह है शहर प्रयोग विधिनत् शुरुषे गर्यक कारण विभाग परित्र पर्य करेला कर्मने एक मेळवी और मीक्षाक्या मळे छे-हवे नेने उचापनादि कार्यो करना छै ।

हैं। १ ॥ श्रीमणेशाय नमः ॥ अय देह्छुद्धि प्रायश्चित्त प्रयोगः ॥ प्रातहृत्थाय ॥ वर्णाश्रमधर्मकर्माणि कृत्वा ॥ सवींपहारीन ग्रहीत्वा ॥ नद्यादौ तींर्थे गत्वा ॥ कर्मभूमि संशोध्य ॥ विधिवत् स्नात्वा ॥ घोते वाससी पश्चिमय

병반

शीप्रं तं प्राप्यसे शुभं ॥ २ ॥ यद्यागतोस्पसत्येन न तं शुप्यसि कर्हिनित् ॥ एवं तैः समनुज्ञातः सर्वं त्र्यादः शेपतः ॥ ३ ॥ इति ब्रिजैः पृष्ठे मायश्चिची गोरूपयोः प्रत्येकं प्रत्याम्रायत्वेन यथाशक्ति पर्पतपुरतो निर्धाय ॥ ततः पर्पदं प्रदक्षिणीश्रत्य हृदयेन द्रयमानो धरण्यां साष्टांगं प्रणमेत ।। ततः करिन्यमाण प्रायाश्चित्ताङ्गत्वेने-सम्बाहति सम्बाहात सम्बाहात सामा ।। विपानदायतप्रापाः माणायापाः सः उच्यते ।। माणायायेन द्वार्थति गायत्रीजयनेन च ।। नारायया-सुस्मरणाय मुच्यते दुःमतिग्रहात् ॥ मतिग्रहात्मां नास्ति धाक्षणस्य विनायनं ॥ नद्यते अह्यवर्षस्यं भस्कं च प्रपत्रते ॥ तेंवे सनारवा उर्छ देह द्वादिनो साहित्य छर भटी आदि दीये जब त्या भई पूर्वननी जया साफ करी स्थान निधियत करी। आसनगर बेसी आपमन प्रा . शादम वरी दायमा पाणा च्ह अनुक कर्ष निमित्त देस्हादि प्रचीव कर्ष हु-एपमाणे संकल्पकरी कर्ता यममाने पोतानी अत करणपूर्वक करवानी सामणी

र नार्वा, देशरात स्थानामादाणो पुँठ के तयी केमपुर्वाजी तथातमारे शुकरबुठे तथा श्रुंवाचिके तेहमीने कही. एवातसायकी यममाने वीतानी सर्व हकीगम वहां, भारतवीनी प्रदक्षिण्यकी बाजरबा बाजरबीने प्राप्ता अथवा दम्यल्ड सक्का करवी

्रें श्चित्तकर्मे करिष्ये ॥ कर्ता चतुरस्त्रीनेकं वाऽष्यात्मविदं ब्राह्मणं पर्शत्वेनोपविश्यासंज्ञानः पर्शदं ब्रदक्षिणीकृत्य ॥ ई इदयेन दृयमानः साष्टांगं प्रणमेत् ॥ ततः सभ्याः पुच्छति ॥ किं ते कार्यं बदास्माकं किं वा मृगयसे नर ॥ तत्त्व-है तो बृहि तत्सर्वं सत्यं हि गतिसत्मनः ॥ १ ॥ अस्माकं चैव सर्वेगां सत्यमेव परं बर्छ ॥ यदि चेदक्षते सत्यं वि

भक्त पीतापीत सकलपातकातिपातकोपपातक ग्रन्त्वधुपातक संकरीकरण गलिनीकरणापात्रीकरण जातिभंशा कर प्रकीर्णपातकानां मध्ये संभावितानां महापातकव्यतिरिकानां पातकानां निरासार्थमत्त्रप्रहं कृत्वा प्रायश्चित्त-मुपदिशन्तु भवंतः ॥ इत्युक्ता ब्राह्मणान्प्रार्थयेत् ॥ आवहास्तंत्रपर्वतं भवद्रशमिदं जगत् ॥ यत् स्क्षः पिशाचादि सदेवासुरमानुपम् ॥ १ ॥ सर्वधर्मविवेकारो गोप्तारः सकला दिजाः ॥ मम देहस्य संशुद्धिं क्रर्वन्द्ध 🕺 द्विजसत्तमाः ॥ २ ॥ मया कृतं महाघोरं यञ्जाताह्यातिकेव्विषम् ॥ भसादः क्रियतां मह्यं श्वभानुक्षां प्रयच्छत्। ध्रमुप्याय चतुर उपनेत्र्य द्विजान क्रुमान ॥ तेवा गनुहया सर्व नायश्रितप्रवक्रयेन ॥ १ ॥ सर्वकर्षेत्र सर्वहा आग्राणाःस्यः सवर्वसः ॥ आचार्य 🕏

दं गोहपनिष्क्रयदृत्यं सम्येभ्यो दातुमहम्रतस्त ॥ नममेति दबात् ॥ ततोऽमुकगोत्रस्यामुकदासस्य मम जन्म-प्रभृतिअद्यदिनपर्यंतं द्वाताञ्चात कामाकाम सरुदसरूत्कायिकवाचिक मानसिक सांसर्गिक स्पृष्टास्पृष्ट भुक्ता-

सांदर्भं निक्तान्यया ॥ धेतुर्रधाद दिनाविभयो दक्षिणां ४। स्वरक्तितः ॥ ४ ॥ अर्रकृत्य ययात्रप्रस्या बुह्मारुंकरणे दिनात् ॥ याचे दंहमणा-प्रेन प्राथितं यथोचित् ॥ ५ ॥ . अर्थ-गोरे एकर्पद वरवो तेनेदशण अपाधी तेनीपासे यमपानने के बाइई, अधुक गोत्रनो त्यार्थ। आरंभी भारो अनुसहकरे। त्या सुर्धानु वहेनाहव.

श्रुवसंपन्न बेणार्व च कुडंबिन ॥ २ ॥ आचार्यतं पर्धिष्टं द्विजशुश्रुपणे रतं ॥ ग्रह्माहय विधिवत् देववरपूजयेच तं ॥ ३॥विधाप विष्णवं श्राद्धं 🕏

१९८॥ ।ॐ

॥ ३ ॥ पूज्येः कृतपित्रोऽहं भवेयं द्विजसत्तमेः ॥ ४ ॥ एवं संप्रार्थ्य ॥ मामजुरूण्हन्तु भवन्तः ॥ इति 🕺 भणमेत ॥ प्रशादिश्चे स्मापश्चित्तकर्ता तदाऽस्मच्छन्दस्थाने तत्राम निर्दिशेत ॥ ततस्तम्रत्याप्य तस्य शरीग्रः 🕄 व्यादि शक्तिसुत्तममध्यमादिपतांश्च विचार्य ॥ अस्मिन्यक्षेऽयं सशक्त इति निश्चित्य प्रस्तकवाचनपूर्वकं कथ-येयुः ॥ अनुवादकस्याप्रे प्रत्यामायांश्च कल्पवेयुः ॥ अस्मिन्काले प्रायश्चित्ती चंदनपुष्पादिभिः पुस्तकप्रजां 🖟 सम्बाह्यबादकप्रजां विधाय ॥ निवंधप्रजांगत्वेन यथाशक्तिद्रव्यं निधाय ॥ कृतांजलिप्रदेशे नम्नस्तिष्ठेत् ॥ अन्तः 🕏 बादकाय च पापानुसारेण निष्करूपां यथाशक्तिदाक्षिणां दद्यात ॥ तत्तोऽन्तुबादकोऽसुकदासस्य तव जन्मप्रभृति 🕄 अद्य दिनं यावज्जाताज्ञात कामाकाम सरूदसकृत कायिकवाचिक मानसिक सांसार्गिक स्पृष्टास्पृष्ट अक्ताअक्त 🕏 पीतापीत सकलपातकाविपातकोपपातक ग्रहलञ्चपातक संकरीकरण मलिनीकरणापात्रीकरण जातिश्रंशकर प्र-🎖 पान रक्षणं ॥ किंच्दिरमपं पात्रं किंचित्वात्रं तथीगयं ॥ आगमिप्यवि यत्यात्रं कत्यात्रं वार्यप्रयति ॥ ब्रह्मचारी भवेत्यात्रं पात्रंवेदस्य पारमः ॥ पात्राणामिष्वस्पारं सुद्रान्नं परएनोर्दरे ॥ इति न्यास वसिष्ठथ ॥ पश्वस्य विपरो मुको व्यापिनोपहतायये ॥ भर्तृन्यास्त्रे महाराज नत् 🕄 है देयःमतिश्रहः ॥ इति मदाभारते ।देवजानां गुरूणां च मावापितृ स्वयेव चार्रपुण्यं देयं ममलेन नापुण्यं नीदितं कचित् ॥इति नीदेपुराणे ॥पाणदः प्राप्तामीति नरोच्छराणुणं सदा ॥ पुण्यदः पुण्यमामीति कतशोध सहस्रकाः ॥ इति चन्दिपुराणे ॥ दिसन्बाऽद्दानि रिक्तायां तिथी कृतमध्याहिकः सायाहि गंगादितीर्थे गत्वा ।। स्वासनेउ०आच०अद्ये०तिथी काः क्षेत्रयागोत्रोत्पन्नस्यामुकदासस्य मम जन्मप्रभृति अद्य दिनं यावत् ज्ञाताङ्गात कामाकाम सकृदसकृत् कायिकवाचिकः क्षेत्रयायोगातं दृश्यं गृहित्वा यो प्रापंकितः ॥ भर्माभिकांक्षी यनते न प्रर्प भरूमचृते ॥१॥ प्रवस्त्रये वद्वभिरत्यायो पानिते भेतैः ॥ आर् कृते नित्यापास्तु पिद्याचा सत्त्रदेवतं ॥ इति स्वंद्रपुराणे ॥ देवद्रव्यं गुरुद्रच्यं द्रव्यं चंद्रेश्यस्य च ॥ १८विष् पतनं स्वः दान संप्रत्यभरणाद् ॥ अवकृत्य परस्वार्थं दानं यस्तु मवच्छते ॥ तर्मा मात्रे पाति यस्यायोगं स्वस्य तर्माक्ष्यः ॥ परिभुक्तम्वकातं अपयोग्नमसंस्कृतं ॥ यः भवच्छः क्षेत्रयाप्त्रभ्यं स्वयं चंद्रश्याक्ष्यः ।। परिभुक्तम्वकातं अपयोग्नमसंस्कृतं ॥ यः भवच्छः क्षेत्रयाप्त्रभ्यः ।। अवव्यव्यविष्ठाविष्ठे ।। वर्षायाप्त्रभ्याप्त्रभ्यः ।। वर्षायाभाविष्ठे अर्थ-यनमाने माह्योगीतं तथा गावनी प्रापंत्र करी करीण व्यवस्थानिकातं भविष्याभाविष्ठे ।। वर्षायाप्त्रभ्याप्त्रभ्याप्त्रभ्याप्त्रभ्याप्त्रभ्याप्त्रभ्याप्त्रभ्याप्त्रभ्याप्त्रभ्याप्त्रभ्याप्ति ।। वर्षायाप्त्रभ्याप्त्रभ्याप्त्रभ्याप्त्रभ्याप्त्रभ्याप्ति ।। वर्षायाप्त्रभ्याप्ति ।। वर्षायाप्त्रभ्याप्त्रभ्याप्त्रभ्याप्त्रभ्याप्त्रभ्याप्त्रभ्यापत्रभयापत्रभयापत्रभयापत्रभयापत्रभयापत्रभयापत्रभयापत्रभयापत्रभयापत्रभयापत्रभयापत्रभयापत्रभयापत्रभयापत्रभयापत्रभयापत्रभयापत्रभयापत्यापत्रभयापत्

उपनासकरको.

ते बोळे ते यममाने पोतानामोडायां बीडर्ड, तमा ने रुहे ते अंग्राकारकरको पत्नी प्रणामकरी बाह्योजेने नमस्कारकरी बीहर्यन कर्स, बाह्योहोयता ठ

कीर्णपातकानां मध्ये संभावितानां महापातकव्यतिरिकानां पातकानां क्षयोऽनेन पर्पद्वपादिष्टेनासुकाव्दपायश्चिते- हैं नाऽसुकप्रत्याक्षाय ( स्जतप्रत्याक्षाय ) द्वारा प्राच्योदीचांगसहितनाचिरण तव शुद्धिर्मविष्यति ॥ तेन त्वं हे कुलार्थो भविष्यसीति त्रिरुपादिरोत ॥ नतो नियेदितं प्रायश्चित्तय् ॥ भवदन्त्रग्रहः ॥ बादिमत्यंगीकृत्य सन्मानः है प्रव प्रणम्य पर्पदं विस्तृजेतु ॥ अस्मिन्नहानि शक्तेनोपनासः कार्यः ॥ इतरेण हविष्याशनं ॥ ततस्तिस्मिनन्यः है ैं रांगसहितं ) देहशुद्धप्रायश्चित्तं यथाशक्ति करिन्ये ॥ इति संकलः ॥ आरूवस्य प्रायश्चित्तस्य वपनादिप्रवाँगा- ै 👫 ित कु॰ ग्रानिकानि च पापानि ब्रह्महत्या समानि च 1) केशानाश्रित्य तिष्ठीत तस्मात् केशान्यपाम्यहं ।) १ ।। 🖇 📳 इति मंत्रेण शिखाकक्षोपस्थवर्जं नखरोमाणि वोपयित्वा ४६ स्नात्वा ४१ स्नानाशक्ती मंत्रस्नानम् ।) ततःजिञ्हो- 🧏 ति विपेश्य स्तत्वभन्नवतिष्ठते ॥ इति तैतिरित्य स्मृतौ ॥ कन्या भन्या गृहं चैन देपं यहो स्निपादिकं ॥ तदेकस्मै प्रदातव्यं न बहुज्यः कथंच- 🕏 न ॥ इत्यापन्त्रवनः ॥ बहुम्यो न प्रदेशानि गी गुँदं शवने लियः॥ विभक्त दक्षिणा होते दावारं पातवंति हि ॥ नव्यंगां रोगिणी वंध्यां नकुसां 🕹 ु मृतगरसकां ॥ नवामनां गुरूपुगां द्वाद्विमाय गाम्नरः ॥ इति न्याससूत्रे ॥ दुःसं ददावि योन्यस्य ध्ववं दुःसं स विदाति ॥ तामान्नकस्याचि-रेसं दातन्यं दुःखमीरुणा ॥ इति यमसूर्ती ॥ अथ्य प्रतिगृहितृपर्माः ॥ अक्षाण्डपुराणे ॥ ज्ञाचिः पवित्रयाणिश्र गृण्हिया दुत्तरामुखः ॥ 🎗 अभिष्ठादेवतांष्यायन् मनसा विजितेन्द्रियः क्रतोत्तरीपको नित्य मन्तर्भावकरस्तथा ।१ दातुरिष्ट मिष्ण्यायन् भगुण्डीगादछोलुदः ॥ विश्वामित्रः॥ दि

अन्यर्भितम् पर्भेत स्त्रयावद्धशिशोद्धिनः ॥ स्नातः सम्यगुपस्पृष्ट्यः मृण्हीया त्ययतः शाचिः ॥

मानसिक सांसर्गिक स्पृष्टास्पृष्टासुक्तासुक्त पीतापीत सकलपातकाविपातकोपपातक ग्ररूष्ट्रपातक संकरीकरण । मिलनीकरणापात्रीकरण जातित्रंशकर प्रकीर्णपातकानां मध्ये संभावितानां पातकानां निरासार्थं (करिष्यमाणा- १ सकत्रतोधापनकर्मण्यपिकारसिद्धवर्थं ) (श्रीप० पपंद्वपदिष्टमसुकान्द्रभायश्चित्तमसुकप्रत्यामायद्वारा प्रवीत्त- १

## १००॥ 😞 कृत्या ॥ इस्ते जलमादाय देशकालादीन् स्मृत्वा ॥ मम अस्मिन् करिष्यमाण कर्मण्यधिकारार्थ विष्णोः प्रजनार्ख्य कर्म करिन्ये ॥ शक्त्या पंचोपचारे वी पोडशोपचारेः प्रजयत् ॥ अथ सत्येशस्थापनं ॥ खेतवस्त्रोपरि तंदुरुँ 🕏 रष्टदळं छत्वा तस्मिन् ईशानादिकमेण अष्टी शक्तीनां स्थापनं ॥ अष्टदळमध्ये कर्णिकायां ताम्रमयकळशं 🕏 यथाविधि संस्थाप्य ।। कलशोपिर सुवर्णनिर्मितां विष्णोःश्रतिमां शालग्रामं वा निधाय ।। श्रीतमापक्षे अग्न्य- 🔀 त्तारणप्रविकां प्राणमतिष्ठां क्रयीत ॥ अद्येत्या॰ तिथी सम सर्वेपातकनिदृत्यर्थं सत्येशस्थापन मतिष्ठाप्रजनमहं 🕏 भेवकृत्वे राजदंदे वरनं केस पूर्वकं 11 अधिहोने च वीर्थ च वरनं उपश्चपूर्वकं 11 ततः भीरनिभिष्ठं भीतीदकेन स्नानं इति स्मानोहासादौ ।। 💠

आपस्तरः ॥ आदेवासा स्तु यः क्रयोत् जपहोम मतिग्रस् ॥ सर्वे नदाससं विद्यात् बहिगोत् च पस्कृतं ॥ पहुभायनः ॥ काषाप्रवासा कुरते व प्रवेशमातिग्रह्मा । व प्रवेशमातिग्रह्मा न भवेति ह्य्यकृत्य स्वयद्धिः ॥ गालवः ॥ इस्तमध्ये प्रस्तिपि दक्षिणाग्रह्मे न तृ ॥ प्रचेताः ॥ दक्षिणह- स्वयभ्ये ब्राह्मणस्यावयं विधे पावेषं विधे पावेषं यत्रिय मति । अर्थ-एग्रिस्यनकृति गालवेश स्नावः सम्यग्रुपस्यस्य व्यावो भौतवासस्ता। सपित्र कर्रवेष प्रति अर्थ-एग्रिस्यनकृति गरित्व । सम्यग्रह्मा कृत्यस्य विशेषा कोह्मणः । व स्वयाविक्ति गालवेश स्वयाविक्ति । सम्यग्रह्मा सम्यग्रह्मा स्वयाविक्ति । सम्यग्रह्मा सम्यग्रह्मा सम्यग्रह्मा सम्यग्रह्मा सम्यग्रह्मा । सम्यग्रह्मा सम्यग्रह्मा सम्यग्रह्मा सम्यग्रह्मा सम्यग्रह्मा । सम्यग्रह्मा सम्यग्रह्मा सम्यग्रह्मा सम्यग्रह्मा । सम्यग्रह्मा सम्यग्रह्मा सम्यग्रह्मा । सम्यग्रह्मा सम्यग्रह्मा सम्यग्रह्मा सम्यग्रह्मा । सम्यग्रह्मा सम्यग्रह्मा सम्यग्रह्मा सम्यग्रह्मा सम्यग्रह्मा । सम्यग्रह्मा सम्यग्रह्मा सम्यग्रह्मा सम्यग्रह्मा सम्यग्रह्मा । सम्यग्रह्मा सम्यग्रह्मा सम्यग्रह्मा सम्यग्रह्मा । सम्यग्रह्मा सम्यग्रह्मा सम्यग्रह्मा सम्यग्रह्मा सम्यग्रह्मा सम्यग्रह्मा सम्यग्रह्मा सम्यग्रह्मा । सम्यग्रह्मा सम्यग्रह्मा सम्यग्रह्मा । सम्यग्रह्मा सम्यग्रह्मा सम्यग्रह्मा सम्यग्रह्मा सम्यग्रह्मा सम्यग्रह्मा । सम्यग्रह्मा । सम्यग्रह्मा सम्यग्रहम्मा सम्यग्रह्मा सम्यग्रह्मा सम्यग्रहम्मा सम्यग्रहम्मा सम्यग्रहम्मा सम्यग्रहम्मा सम्यग्रहम्मा सम्यग्रहम्मा सम्यग्रहम्मा सम्यग्रह

शक्तिसमाणे द्य संकल्प करतो.

् छेखनपूर्वकं दंतान् संशोष्य ॥ द्वादशगण्डूपान् कृत्या भस्मादीनि दशविधस्नानं विधाय ॥ स्नानांगतर्पणं

🖫 च्छ इह तिष्ठ । रुविमण्ये॰रुविमणीमावाहयामि स्था॰ १ पूर्वे ।। सत्यभामां महाभागां सर्वसिद्धिप्रदायिनीम् ॥ 🕏 निकोस्तर वर्धापेतां सत्यामावाहवाप्यहम् ॥ २ ॥ सत्त्वभामे इन्सत्यभागायैन्सत्वभागा मान २ आग्नेयाम् ॥ है एग्होब धर्मवित ॥ ऑकार मुचरन प्राक्षो द्रविणं सक्तवोदकं ॥ प्रग्रीया दक्षिणे इस्ते तदन्ते स्वस्ति कितीयेत ॥ इति प्रतिग्रहणाविधिः ॥ अय 🖏 दारा विभि: ॥ द्रव्याणाः मधरावेषां देवसंभ्रयणात्रारः ॥ वाचये काळवादाय कारणार्थः भविग्रहम् ॥ दासुर्वेतः भयोषाते असुकस्ये सुरायवे ॥ 🕺 💲 हिंदुमा मितृग्दामि तदन्ते स्वस्ति कीर्तवेव ॥ हत्याव्यादाय स्मृद्धाव्यन् झाक्षाणाय च दर्शयेत् ॥ द्विभाः ॥ गृग्दीया राक्षिणेहस्ते अवस्ते स्वस्ति 餐 किर्वेषेत् ॥ मतिब्रेर दिनाःश्रेष्ठा स्वधेशने भवनि ते ॥ मतिब्रहस्य यो धर्म नजानाति दिनोषिषि ॥ व्रव्यस्तैन्यसमायुक्ती नरकं मतिपद्यते ॥ 🛧 त्रसमादुक्तः विधिक्तस्या जादाणस्य मतिग्रहे ॥ इति कमेवियाके ॥

किरिय्ये ॥ :वेतवस्रोपरि तण्डलावर्ते रष्टदलं कृत्वा ॥ ईशानादिष्यष्टशक्तीनां स्थापनम् ॥ अक्षतान्म् व्ऐशान्ये ॥ ह |आबाह्यामि देवेशी रुविमणीं कृष्णवस्त्रभाम् ॥ गदापद्मसमाञ्चकां तां समावाहयाम्यहं ॥ १ ॥ रुविमणि इहाग-

अर्थ-ज्यारे देहणादि प्रयोगारत्ये होय त्यारे पेहेलायी सीतकतावत्रं. एहालातंत्रत विधिन्ने, तेमां बोल्ली बक्ष उपत्य शीवाय संज्ञन करायत्रं, वण संग्रल- 🕏 🟅 बार्यना आरंपारा करवा होयतो प्रामापत्य संबल्पकरी तेन करवाणी चालेडे. पडी मुंडनकराबी. बावणकरी, बारकोपळाकरी स्नामकरबुं, पडी अमुक्रमे कर्म- 🕏

🙎 बरते ते देवमा एउत्तुंत्रे, स्थान करी मध्यान्हसंस्या नित्यारंगादी परवारी ब्रह्मयत्त्वपूर्वक देवज्ञसी क्षित्रमतुःयादीतुं त्ररण करी सूर्यादीने अधिआसी विष्णुपूरतन् 🙎

न संयुक्ता सर्वाभरणभूषिता ॥ मानवानां च देवानां महाभयविनाशिनी ॥ ६ ॥ मित्रवृन्दे इ० मित्रवृन्दायै० 💸 मित्रवृन्दामा॰ ॥ ६ ॥ वायव्याम् ॥ विष्णोर्भगवती भायौ सर्वविष्ठविनाशिनी ॥ हृब्यं ददामि देवेभ्यः कृष्यं 🐉 पितृस्य एव च ॥७॥ त्रक्ष्मणे इ०लक्ष्मणायै० लक्ष्मणामा० ७ उत्तरे ॥ चारुहाससमायुक्ते चारुनेत्रप्तरोभिते ॥ 🐉 चारुकेशवती देवी ह्यागच्छ चारुहासिनि ॥ ८ ॥ चारुहासिनि इ॰चारुहससिन्ये॰ चारुहासिनीमा॰ ॥ ८ ॥ मध्येकलशं संस्थाप्य तदुपरि मूर्ति निषाय ॥ इस्ते अक्षताच मृहीत्वा ॥ ऊर्व्या क्षरिससदेस्मिन्सीतचंद्रे सक- 🕏 बर्रं, पत्र इहान कोणमा संस्त कहडी पार्था वैनापर चोस्पन अधदल तेनाउपर तावानी वटहानुकी तेनाउपर सरोहा विष्णुन तथा चारे बाजुरे आउपर राणीनु स्थापकर्तः प्रतीक्षा करानी 🐝 अष्टरान्ती सहित संवेशायनम एममाणे कहीने. शोदशोषचार अथवा प्रनेषचारभी पुस्रवसमासकर्त्युः.

जाम्बूवर्ती महाभागां शुभागीं जननीं शुभाष्।|कृष्णेन संस्थितां देवीं राश्वद्भक्त्या सदाम्विकाम्।।जाम्बुवति इ० जा-

म्बुवत्यै॰जाम्बुवतीमा॰॥३॥ दक्षिणे॥सत्यासत्ये समायुक्ते ज्ञैलोक्यजननी प्रसाधर्मार्थकामदाँ चेव सत्यामावाहः 🐉

पुत्रदां धनदां चैव कार्लिदीं शुभदां सदा ॥ कालिन्दि इ०कालिन्द्ये०कालिन्दिमा० ॥ ५ ॥ पश्चिमे भद्रासने- 🕌

की० <sup>२१॥</sup>ु याम्बह्म् ॥ ४ ॥ सत्ये इ० सत्याये० सत्यामा० ४ नैर्ऋत्यां ॥ सत्याकृष्णेन संयुक्तां देवासुरविराजिताम् ॥

अष्टशक्तिवहित सत्येशाय नमः ॥ पाद्यं० अष्टशक्तिवहित सत्येशाय नमः ॥ अर्च्यं० अष्टशक्तिवहित सत्येशाय 🕃 🐉 नमः ॥ आचमनीयं० अष्टशक्तिसहित सत्येशाय नमः ॥ शुद्धोदक स्नानं० अष्टशक्तिसहित सत्येशाय नमः ॥ 🕏 🕅 वंश्वं ॰ अष्टशक्तिसहित सत्येशाय नमः ॥ वज्ञोपवीतं ॰ अष्टशक्तिसहित सत्येशाय नमः॥ गंघं ॰ अष्टशक्तिसहित 🞖 सित्वेशाय नमः ॥ पुर्णे० अष्टशक्तिसहित सत्येशाय नमः ॥ घूपं० अष्टशक्तिसहित सत्येशाय नमः ॥ दीपं० हूँ ि||अष्टशक्तिसहित सत्येशाय नमः नेवेद्यं०।। अष्टशक्तिसहित सत्येशाय नमः ।। तांबूळं० ।। अष्टशक्तिसहित सत्ये--तमोपर्व इतपुर्व झान त्रेतापुर्व स्मृत ॥ द्वापरे चादर श्रोतको दमो दान दया अस्त्री ॥ १ ॥ दानेन भोगी भवती वेषाती बद्धतेनया ॥ अहितपा 🏌 च दीर्घातु रीतियादु मैकीपण ॥ २ ॥ यतीना च वदोर्घर्ष निवयो वन्त्रासिका ॥ दानमेरु गृहस्थाना शुक्रुमा बक्तवारिणा ॥ २ ॥ पापर्रमेसपायुक्त अर्जते 🕏 र्रे निस्के नर ॥ भाषते दानमेरीक शाम भूनेद्विने छन ॥ ६ ॥ आवास अतहरूद्धस्य प्राक्षेच्योरि गरीयस् ॥ गनिरेकेन निसस्य टानमन्या विरत्तय ॥ ५ ॥ 🛠

्री दान भोगोर्डेनाश ासि सोभगतिगतयो विकस्य ॥ यो न उदावि न मुक्ते तस्य नतीया गतिर्भवति ॥ ६ ॥ इति कर्मपुराणे ॥

र्णिके ॥ तत्र त्वं सत्पया सार्वं सत्येश भव सन्निष्टे १ सत्येश इ॰सत्वेशाय॰ सत्येशमा॰ १॥ प्रतिष्ठा सर्वदेवानां हैं मित्रावरुणनिर्मिता ॥ प्रतिष्ठां तां करोम्यत्र मंडले देवतेः सह ॥१ ॥अष्टशक्तिसहितसत्येशः सुप्रतिष्ठितो वस्दो है भव ॥ अष्टशक्तिसहितसत्येशाय नमः ॥ आवाहनं समर्पयामि ॥अष्टशक्तिसहित सत्येशाय नमः ॥ आसनं०॥ है वि॰कौ॰ शाय नमः॥ प्रदक्षिणां।। अप्टशक्तिसहित सत्येशाय नमः॥ मंत्रपुष्पांजिं समर्पयामि॥ अनया प्रजया अप्टशः। किसहित सत्येशः प्रीयतां ॥ प्रायश्चित्तांगं विष्णुश्नाद्धम् ॥ विष्णो एतत्ते पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं विष्णुभित्राः॥ अक्षतान्मृहीत्वा ॥ नमस्ते देवदेवेश प्रराण ु पुरुपोत्तम ॥ इदं श्राखं हपीकेश स्तृत्वं सर्वतो दिशि॥१॥पूर्वे नारायणःपातु वारिजाक्षस्तु दक्षिणे॥शृद्धमः पश्चिमे पात बासदेव स्तथोत्तरे ॥ ऊर्च गोवर्धनो रक्षेदधस्ताच त्रिविकमः ॥ २ ॥ आयान्त्रः वैष्णवश्राद्धोपद्दाराणां प-|

वित्रतास्तु ॥ अद्योत्पा॰तियौ शायश्चित्तांगं वैष्णवश्चाद्धयहं करिष्ये॥ विष्णोः इदमासनय इदमत्र चंदनं प्रष्णं भूषं 🐉 दीपं यथादत्तं गंधादार्वनं विष्णवे नमः॥ इदं वो ज्योतिःवैष्णवश्राद्धस्यार्चनविधेःपरिप्रर्णतास्त ॥ आचम्य विष्णु-श्रीतयेऽत्रिभ्यो धिकान सुम्यान्यासणान्यजाप्तर्वकं भोजननिष्क्रयद्ववदानदारा अहमाचरामि ।। आमार्त्र

दद्यात् ॥ सुप्रोक्षितादिकरणं वैष्णवश्राद्धप्रतिष्ठासिद्धचर्थं दक्षिणां विष्णवेनमः ॥ अद्य प्रवेश्विरतवैष्णवश्राद्धस्य

अर्थ-आठपट्टराणीसहीत सत्येत्रानुं पुजनथपापठा प्रायश्चित्तना अगमृत सकल्पवेड पैय्यावशादकरच्. अहीया होमकरवानी अहरके पण घरो। नथी तेना बद्धे में बादाणने आवत् सरस्वतर्गने

तिव सिन्नियो ॥ २ ॥ नमस्त्रत्य युनःभदक्षिणां कृत्वा ॥ पापोहं पापकर्माहं पापात्मा पापसंभवः ॥ त्राहि मां युण्ड- र शिकात सर्व पापहसे हरिः॥ ३ ॥ यानिकानि च पापानि ब्रहाहत्या समानि च ॥ तानि तानि विनश्य∙िः िन्त प्रदक्षिणा पदे पदे ॥ ४ ॥ प्रनःप्रदक्षिणां कत्वा ॥ आमहास्तंत्रपर्यंतं भवद्रशमिदं जगत ॥ यक्ष रक्षपि-शाचादि सदेवासुरमातुपम् ॥ सर्वथर्म विवेक्तारो गोप्रारः सकला दिजाः ॥ मम<sup>्</sup>देहस्य ्री कुर्यन्तु द्विजसत्तमाः ॥ प्रज्यैःकृतपवित्रोऽहं भविष्याग्यनघस्तथा ॥ प्रसादःक्रियतां महां शुभानुद्धां प्रयच्छथ ॥ पुराकृतं महाघेारं ज्ञाताज्ञातं च किल्विपम् ॥ जन्मतोऽचादिनं यावत्तस्मात्यापात्प्रनाखः मामः॥ ४ ॥ द्विजाग्रे 🐉 अर्ध-नैय्यवश्राद्ध पया पत्री. जो प्रत्यक्ष गाय बाउरडों न होयतो यनमाने तेनु द्वन्य छेनु (-11) दौढ आनी हेबानी संप्रदाय चारुं है, पद्रा यममाने क्या नालीनेर छह चार प्रदक्षणा सत्येश निय्तुती करवी, नदी सोमारीतस्त्रन दक्षणास्त्र नाराणनी तथा गायनी प्रदक्षणाहरूंनी तथातेमनी स्तुतीकरवी. हिम्मा नार्टीनेर छह चार प्रदराणा सत्येश निजानी नरवी, पठी सीशरीतसमय दशणान्द्र माझणनी तथा गायनी प्रदराणाकरनी तथातेमनी स्तुतीकरवी.

परिवर्णतास्त्र ॥ ततः प्रायश्चिति गां वा सनालिकेरं गोमिधुनदृब्यं ग्रहीत्वा उत्थाय सत्येशस्य प्रदक्षिणां कृत्वा 👸 स उपविष्टवाह्मणानमस्त्रत्व प्रार्थवेत ॥ अपराधसहस्राणि रुक्षकोटिशतानि च ॥ नश्यंति तत्क्षणात्पापं सत्येश 🔯 त्वव सिन्नयो ॥ १ ॥ पुनःप्रदक्षिणां ॥ अनेक जन्म संभूतं पातकं यन्मयाऽर्जितं ॥ तत्सर्वे नाशयत्पापं सत्येशः 🕄

समर्प् ॥ इदं उपकरिपतं गोमिश्चनद्रव्यं करिष्यमाणकर्माधिकारार्थं सम्येभ्योऽहं संप्रदास्ये समर्प्य शर्णमेत् ॥ गावोममाञ्चतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः ॥ गावो मे हृदये सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहं 11₹o₹11 ॥ १ ॥ पंचगावसमुत्पन्नामध्यमाने महोद्धी ॥ तासां मध्ये हु या नन्दा तस्ये धेन्वे नमोनमः ॥ २ ॥ अदितिदेवगाता च वेदमाता च भीश्वरी ॥ धेन्ररूपेण सा देवी मम पापं ज्यपोहेल ॥ इति गोप्रार्थना ॥ अञ्चाव-हि सेरे केचिडेसादिवयोगं पठन्ति ॥ अथ हेमाद्विप्रयोगः ॥ स्नानस्त्रभाष्ये ॥ खर्ण नालिकेर

वुळसी तिल यवाक्षताच गृहीत्वा ॥ हेमार्दि श्रुणुयात् ॥ स्वस्तिश्री समस्तजगद्वत्पत्ति स्थितिलय कारणस्थान-∰ न्तर्वीर्यस्य रक्षाशिक्षाविचक्षणस्यादिनारायणस्य प्रणतपारिजातस्याचिन्त्यापरिमितः श्वनस्याप्रीयमाणस्य ठीयमध्ये परिश्रममाणाना मनेककोटिवह्याण्डानामेकतमे व्यक्तमहदहंकार प्रथिव्यप्तेजो वाय्वाकाशाद्यावरणे

अर्थ-प्रार्थमा विगेरे थयापत्रा. हेमाद्रीक्षयोग मणयो गोहए तेनो अवकाश होय सी. सोहं. नारीयक, दर्भ, सुक्सी, सीक, यव,चोखा ए परीयाहुओ कहेने 😢 🔢

ब्रह्मण मणे त्यांष्ट्रचं एकाव वित्तर्थ अर्थ साथ सम्बद्धं,तेनो अवकादा न होय तो आ वर्षे सांमद्रवर्ता जल, नवी, तो अगाही उसेहा प्रायाधित भीडा

रावत्यशोकवती भोगवती सिद्धवती गान्धववती फांचनवन्त्यलकावती यशोवतीतिपुण्यपुरीप्रतिष्ठिते इन्हामि-यमनिर्ऋति वरुण बाउक्रवेरैशानादि दिक्पतिप्रतिष्ठिते लोकालोकाचल बलयिते लवणेश्वरस सुरासर्पि दिधिक्ष-रोदक उक्तसप्तार्णवपश्चिते जम्बुन्छत्र शाल्मली कुशक्तेंच शाकपुष्कराख्य सप्तदीपञ्चते इन्द्रकांस्पतामुग्रभस्ति नाग्-सींग्य गन्धर्व चारण भारतेति नवखण्डमण्डिते महेन्द्रमलय सह्यादि हिमन्हस विन्थ्यादिपारियात्राहृय सप्तकुरुप-र्वत निराजिते मातंग हिरण्यशंग माल्यकन्तः किष्किन्धिचित्रकृटादि पंचमद्दानगरसहिते हेमशेल स्थानल श्रेताचल श्रंगावतास्य महाशेलसमाधिष्ठते स्रमेरु निवधादि श्रीकृट खातकृट अअकृट चित्रकृट हिम-विन्धाचळादि सहिते हस्विषे किंपुरुपयोर्दक्षिणतो नवसहस्रविस्तीणे मळयाचळाडुत्तरतः स्वर्णप्रस्थादारभ्येन्द्रश्च-

सञ्चतेअभिमन्महात महााण्डलण्डे आधारशक्ति क्रमीनन्तोपरि प्रतिष्ठितस्थात् वितळ खुतळ तळातळ स्सातळ महातळ पाताळ सत्रपाताळ्ळोकस्पोपरीतने भूळोंक भूवळोंक स्वळोंक महळोंक जनळोकतपळोक सत्यळोक-स्यापोभागे चकवाळशेळ महावळव नागमध्यवर्तिनो महाकाळ महाफणिराजशेपस्य सहस्रफणानां मणिमण्डळ-मण्डिते ऐरावत प्रण्डरीक वामन क्रस्टढांजन पुष्पदंत सार्वभोम सुप्रतिकाख्याष्ट दिग्दन्ति शुण्डोचिम्भते अम-

कृपाञ्चजन्य सिंहल्ळकास्य नवभागात्मके महासरोरुहाकार पंचाशकोटि योजनविस्तीर्ण भारती किंपुरुप हिद्दिलावर्त क्रम्भदाश्व कर्मण हिरण्मयकेल मालास्ये नवसहस्र योजनविन्तीणे भरतसण्डे चंद्रप्रस्य शक्तिक आ-ँ वन्तिक स्मणक पाञ्चजन्य सिंहल्ल्का अशोकवत्यलंकावनी सिद्धवती मान्धर्ववत्यादि पुण्यपुरीविराजिते नव-1180811 खण्डोपरिमण्डिते सुमण्डछे भरतवर्षे भरतखण्डे कर्मभूमौ कुमारिकानाम्नि क्षेत्रे जम्ब्र्टीपे छंकाकुरक्षेत्रादि समस्त 🖔

भूमध्यरेलापाः पश्चिमदिरभागे श्रीतपतीनर्मदयोः दक्षिणतटे ऐस्वारण्य दण्डकारण्य विन्ध्यारण्य नैमिपारण्य है यहारण्य वदरिकारण्य चंवकारण्य द्वेतारण्य अर्बुदारण्य दारुकारण्य कामिकारण्येत्येकादशारण्ययुने स्वाग्यवती 🕺 कुरक्षेत्र गंगाकांबेरी यसुना सस्रवत्यादिमहानदी उण्यतीर्थ विलसिते अयोध्या मधुरामाया काशी काञ्ची अब- 🕏

न्तिका ॥ गयाद्वारावती ख्याता महाम्रक्ति प्रदस्थले ॥ सगर नगर वत्सनगर कर्मनगर स्वाग्यनगर महामान-ि सरोवराकार अमरावती सेत्रमाल लोहिताक्ष चकोर श्रीरेशलंकेलाशानामुपरि समञ्चमध्यरेखायाः पूर्वेदिरमागे 🕏

श्रीरोलपश्चिमदिरभागे कृष्णागोदावर्योक्तरेदेशे शालग्रामविश्वेशगादि सकलदेवतानां सन्निषी अस्य श्रीमञ्जल 🙌 ॥२०४

निधि मध्यमध्यासितं भुजंग भोगपत्यंक शयनस्यादि नारायणस्य लक्ष्मीपतेर्नाभिमण्डलोत्यतस्य पद्मजस्य

्री कुलिसंज्ञकानां चलुर्णाञ्चमानां मध्ये वर्तमानाष्ट्राविंशतितमे कुलियुगे प्रथमचरणे गोदावर्याः उत्तरेभागे श्रीमनूप- 🕴 विक्रमार्कात् श्रीमनुष शालीबाह्नादा यथासंस्थागमे न चान्द्रसावनसौरादि मानपर्याप्ते प्रभवादिसंवत्सराणा मन्य तमे ज्याबहारिक संबक्तरे असुकायने असुकऋतो असुकमासे असुकपक्षे असुकतिथी असुकवासरे असुक नक्षत्रे 🥉 अमुकयोगे अमुक्करणे अमुक्रगशिस्थितेचेंद्रे अमुक्राशिस्थिते श्रीसूर्ये अमुक्ताशिस्थिते देवछरी । शेपप् श्रहेपु 🕺 🖁 यथा यथा राशिस्थान स्थितेष्ठ सत्त्व एवंग्रण विशेषण विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अस्मिन्महापुण्यकाले दुस्तरे 🕺 संसारचके नानाविश्वकर्मीवेपाक विचित्रे विविधादछ विचित्रास चस्तरीति लक्षमेद्भिन्नास योनिष्ठ प्रत्येकं मने 🔏 का विद्यापरिश्रममाणस्य केनापि स्रकृताविर्भाव विशेषेणेदानिं मन्त्रज्ययोगौं द्विजादिजन्मभाषवतो ममानेकजन्मा- 🖇 भ्यासादे तजन्म मभृत्येतत्त्वणपर्यन्तं शत्यकोमारगौवन वार्षकेषु जाग्रत्त्वम सुपुत्त्यवस्थासु मनोवाकायेन्द्रिय

चतुसननस्य सकलजगत्पृष्टुः पर्सार्धदयजीविनो ब्रह्मणो दितीये परार्थे एकपंचाशत्तमे वर्षे प्रथममारी प्रथमपरे हैं प्रथम दिवसे अन्होदितीयेषामे तृतीये सहूर्ते स्थन्तस दिहात्रिशत कत्यानां मध्ये अष्टमे श्वेतवासहकत्ये स्वायं है है सुन स्वारोचिपोत्तमतामस रैसतचाक्षमास्यपण्यन्यन्तरेषु ब्यतीतेषु सत्स सप्तमेववस्वतमन्यन्तरे कृत त्रेता द्वापर है।

्री गाद्याराम च्छेदन विषमप्रयोगादि छन्दो निन्दाकरणाकृत्याकरणान्यायकरण धर्मणवित्तापहरणादि विभानरणारमो 🐉 कर्ष पर्यनेदा परापवादानृतभाषण पश्चितभेद प्रतिश्चतापदानादीनां प्रहाहत्यासमानानां पळाण्डू लश्चन गर्जपदि ै अञ्चल प्रिप्पणी मुखास्त्रादन क्षालनोदंक पान मुखनिमृतपान कपिलापयःपान यद्गोपकीत परित्याम कूटसाक्षी 🦫

अदानादीनां मवयान समानानां पितु स्वमृ मात्स्वसृत्रातुभार्या तनया भगिन्याचार्य तनया सेवन सिवभार्यो है मञ्जीता शरणागताषात्री साध्वी वर्णीत्तमां त्यज्याच गम्पागमन जनितानां छरुदास्समानानां पश्डेसेवन 🥇

प्रतिपत्त प्रश्रत्यनध्याया ध्यापनानग्नित्व पौरोहित्य देवालयासंरक्षणीकरण कृषी कर्म शित्य विद्याभ्या- 🛠

सादि जीनतानां स्वर्णस्तेयसमानानां त्राह्मणस्त्रीगमन विधवागमन श्रद्धस्त्रीगमन वेश्यागमन कन्यागमन साथा- 🐉 ॥१००

रणस्त्रीगमन वश्रगमन प्रतिलोमजानु लोमजागमन स्वस्त्रीऋतावगमन पश्चयोनिगमन मनसाभिलाप परस्त्रीनिः 🎖

🎚 हिंसन ऋष्कर्मान्वित छञ्यकपिशुन चौरपाखण्ड चाण्डाळशत्रास्थिस्पर्शन दिवामेश्रम एकादशान्न स्ततकान्नगार्ह- 🕅 तान पतितान राजापितान भिद्धकान कांस्यपात्रभोजन वटाश्वरथार्क क्रम्भीतिन्दुकपत्र मोजन 🛭 ऋणानपाकरण 🕏 ्री पर्णविक्रय परभेदन् गर्भपातन हिंसामैत्र विधान भ्रूणहत्या संकरीकरण मिळनीकरणापात्रीकरण जातिश्रेराकरणा- 🕍 🎖 वाज्ययाजन ब्राह्मणस्त्री बालगोपश्च क्रमिकिटादि जीववध मिथ्याकमुक भक्षणासाक्षीभोजन तांबुलभक्षणाहः 🐉 ँ∬खट्टारुटतोथपान देवग्रह्माह्मणाग्रेपादुकारोहण गोयान इष्भयान महिषीयान गर्दभषानोष्ट्रवान ग्राह्मण यानान्त्य 🎒 जयानाजयान भृत्याभरण स्वयामत्याग गोत्रियत्यागदुरस्थनिमंत्रण विपाशाभेदनावन्दिताशीर्वाद हृयविकय 🕏 ्टी साविकय गोविकय कन्याविकय दासीविकय राजभीतग्रह परहव्यापहरण शीचविरहित स्नानविरहितापोशानविन 🕃 र्री रहित वैश्वदेव विरहित (श्रद्धश्चेत्थंभागविरहित) भोजनसहापत्य भोजन पतितसंभापण भोजनऋमुकपात्र

्रीप्तण परस्रीस्पर्शन संभापणागभ्यागमन अभस्याभक्षणाभोज्यभोजन असेव्यसेवनालेख लेखन अश्राव्यश्रवणाहिं 🖟 स्यिहिंसनअचोष्यचोपणापेयपेयअस्पृत्यस्पर्शन परममेदिहाटन देवब्राद्धणवृत्तिस्टिट्दन भार्याविसर्जन मार्तिपत्तिः है सरकारत्मस्त्रतिश्रुविनदा ब्राह्मणनिन्दा यतिनिन्दा पर्रानन्दा द्विजभेद पित्तभेद स्वीयुव्यसेद स्थूलस्वसम्बाव ही

भोजन भाजवारपर्वदिन सत्रीभोजन गर्भिणीस्वस्तीमनोस्थाकरण कारागृह्वनिवासामेध्यनिवास नदीलंघन समुद्र स्नानादीनां पापानां परिहासर्थं मम पित्रादि समस्तपितृणां स्वस्यच पुनरावृत्तिरहित साश्वत ब्रह्मलोक फल पा 118051 प्यर्थं मदंश्यानां दशप्रवेषां दशपरेशां नस्कादुत्तरणार्थं मासोपवासादि महाव्रतानां चलापुरुपादि महादानानां च कोटिश्रणित फलप्राप्यर्थ मेहिक सकलभोगप्राप्तये धर्मार्थकाममोक्षाणां सिप्यर्थं मम च वालखिल्यादि सप्तऋ-पिमंडल पर्यंतं सर्वेशश्यपकर्पसंमिते काले रुद्रलोकनिवाससिष्यर्थं महापातकव्यतिरिक्तानां पापानां निवर्द्दणार्थं मनसोदिष्टं देहश्द्वस्त्रप्रायश्चित्तं सुवर्णतिनिष्कयमूतं मनसोदिष्टं द्रव्यं तेन भगवान् पापहा महात्रिष्णुःभी० अथ गंगादितीथं स्नानमहंकरिष्येस्नात्वा ॥इति हेमाद्रि प्रयोगः॥ अवेत्यादि० शुभपुण्यतिथी मम अनेकजन्म अर्थ-( १ ) गुरुरात्मवतां शास्ता राजा भारता दुरास्पनां । इह मध्यन्नपापानां शास्ता वैनस्ततो ययः ॥ १ ॥ विहिनस्यानताग्रानात् निरि ॥१०६ क्षस्य च सेवनात् । अनिशहारे द्रियामां नरः पतन पुच्छति ॥ २ ॥ इति कर्म विपाके ॥ अर्थ-टपर प्रमाणनी हेपादी प्रयोग करी स्तान करतु. तथा हायमा राखेलापत्रपी यगवानता मोहा आगल मुकी नमस्कार करवा. अने बचीन प्रयोग मरान्त करने. ए हेमादि प्रयोग भग पठा. देह शादि प्रयोग साम्प्रज्ञे, पांचे अनेक मकारना छे. पण अही थोहा नाणशास्त्रका छे.

भोजन मार्जायेन्छिष्ट भोजन पतितपंक्तिभोजन परस्परस्पर्शभोजनेत्यादि स्वप्रेन्द्रियनिपाताद्यप्टमी चर्र्जर्शी दिवा

go b

संमावितपापानां नाशार्थं प्रायश्चित्तमहं याचियव्ये।।असंस्यक्ळुपाः सन्ति।तेषां मध्येकेचित स्पष्टतः वस्ये।। देहाहा मद्यपः स्तेषी ग्रहतेल्पमः तस्तंसभी ॥ ५ ॥ गोवधः ब्रात्यया स्तेषं रुणानपिक्रया अनाहितािवता अपण्यविक्रयः परिवेदनम् भृतकाश्ययनाश्यापने परदार्यं पारिवित्यं वार्षुच्यं उवणिक्रया स्त्रीश्चरविद्वसञ्चवधः अशुष्क्रह- १ गुरुषा पत्राधिक्षये वेदिन्द्वः सुद्ध्यः ॥ ब्रह्मस्या सम्बेद मधीवस्यवनावनं ॥ विविष्यभक्षणं क्रम्य मुस्करें च क्वोत्तनं ॥ रक्षस्क ग्रह्मस्य सम्बेदः ॥ विदेषस्य च सर्व हि स्वर्णक्षय संगितं ॥ सर्वोभार्य क्रमारीष्ट् स्वयोः विक्रम्यक्षातिष्ट् ॥ सम्मोग्नाम् भुवन्नीष्ठ गुरुक्तस्यसंविदः ॥विद्वास्यसारं मातुः मातृज्ञानि स्नुपाविष् ॥ मातृःस्वर्तिः भगिनीं थावार्यवनयां तथा

इहंजन्मनि जन्मतोऽधदितंपावत् बालयौवन वार्धिकेषु जाग्रत्वप्रसुपुष्त्यवस्थासु वाङ्मनः कायिकृतानां बुद्धिपूर्वाः णां सकृदभ्यासविपयानां ज्ञाताङ्कात कामाकाम स्पृष्टास्पृष्ट सुक्ताभक्त पीतापीतः सरुलधुपातकोपपातकः तन्मध्ये

्र मेन्यपी एरछे पापे सांस्कराभी महत्त्वर करेला आचरणो यदाआशी तेना छप तिरस्कारभायके बाटे पापीअहकमे परिसादोना प्रमाणीयी छरवाकि, तेना है वर्ष मोदा नाना समान बीभेरेकेम्छे ते हाता माराणना छुतभी धवण करवाणी तेर्च स्पाप्त कानभद्र तेनेबस्त तेनापी छुत्तभवायके,व्यांवर्धी सानभद्रे नथी अने है विश्वासायभ्योतभी त्यारणी ते ते पापेशी सुत्तभवातुं नथी.

आञ्चार्याणि दृहितरं गर्च्छम्न गुरु तस्पगः ॥ इति विधानपारिजाते ॥

मच्छेदनं निदिवायींपजीवनं नास्तिक्यं त्रवलोपः स्रुतविक्रयः धान्यपुष्पपशुस्तेयं अयाज्ययाजनं पितृमातृ-श्चतत्यागः तहागारामविक्रयः कन्यादूपणं परिवेदकयाजने तस्यकन्याप्रदानं श्ररोरन्यत्रकोटित्यं आत्मार्थपाका-शिक्ष्या महास्त्रीनिपेवनं व्रतस्त्रोपः स्वाध्यायावि श्वतानांत्यागः वांधवत्यागः ॥ स्त्रियार्हिसयाचीपधेन जीवनं । हिंसकप्रवर्तनं । ग्रुतादिञ्यसनं । आत्मविकयः । श्रुद्दमेष्यता । हीनसस्यं । हीनमोनि निरोचनं अनाश्रमित्वं 📳 पगुत्र पुष्टता । असच्छान्नाभिगमनं भार्यादिविकयः । असत्मतिग्रहः । निंदितान्नादनं । नटादिकर्यकरणं । भाषी त्यागः तत्र यागस्य नृपवेश्य वधः शरणागत वधः रजस्वला गर्भिण्यत्रिगोत्र स्त्रीणां वधः अविज्ञात गुर्भस्य खहदश्च उरुविषये भिथ्याभिशंसनं क्रोघो त्पादन मधिक्षेपोऽसकुन्मृत्यालीकनिर्वधश्च राजगामि पेशन्यं । धरी महाद्येपः नास्तिनयादेदनिंदा कशास्त्राध्ययनेन वितंडवादेन चार्यातवेदानां 🐉 नाशम् अभस्यभवर्णं अलेह्यालेहां अचोष्याचोपणं अलाद्यालादनं अशक्तीशय्यायांस्थितः औषधादीनां 🐉 अक्षणे मातृपित्युरुणां वचनस्याकरणं अप्रति कल वतादिकरणं सहशयनासन भोजन संपर्क करणं 🕌 ॥१०७

एकादसाहात्रभक्षणं नारायणक्रयाद्यात्र भक्षणं जातकर्माद्यत्रभक्षणं सीमंतोत्रयनात्रभक्षणं घत रहिताल

🕯 पतित गीतादिश्रवणं देव ब्राह्मण इच्य हरणं आतिथ्यवज्ञा चरण गो प्रयम ताम्र तिल खलसी दर्भादीनां पाद 🐉 🥉 एपर्शनं साधनां साध्वीनां व्यथा करणं गो विकय मनुष्य विकय कन्या विकय जलदधी दुरुय पशु घृत लवणा- 🟅 🕯 🖟 दिरस विकय हेमरजसादि घातु विकय काष्ट्रगादि विकय दिवा मैश्चनं विश्वासवात करणं रजस्वला गमनं 🛚 पतित्र- 🮉 🕯 तायाः वकाद्भहणं मद्यपन्नी सेवनं चांडाकी गमनं कन्यागमनं विधवागमनं सापत्न्यमाता भगिनी द्वहिता छरुपत्नी 🎏 🕯 राजपत्नी गमनं वेश्यागमनं पस्त्रीगमनं पशुयोनिगमनं स्वदारा अकाळे गमनं अंग्रत्यया योनि विदारणं 💆 ्रीभित्रक्षीगमनं शरणांगत स्त्रीगमनं यजमानस्त्री स्वगोत्रस्त्री मात्रपित्पक्ष स्त्री गमनं पुरुपपु छदागमनं नग्नस्त्री 🕏 ्रीदर्शनं जलमध्ये सुखदर्शनं असंस्कृतभाषादि प्रयंधरचितकथा श्रवणपार्ग करणं च इद्ध ग्रह स्त्री 💈 माता पिता स्वशिश्रनां अपालनं तर्जन्या दंतशोधनं विवाहितायाः प्रनर्विवाह करणं मातापितावाक्येन 🕺 🖇 स्वस्था त्यागकरणं साधुसाञ्चीय द्वेष करणं दंपत्योः त्रतिभंगकरणं माताशिक्ष्योः वियोगकरणं गोः ි

्रीभक्षणं कुन्सिताञ्च भोजनं प्रायश्चित्ताञ्च भोजनं सूर्वोदयास्तसमये भोजनं दीपरहिताञ्च भोजनं बन्ही छू अपादप्रतापनं उरु देव दिजामिसुस पाद प्रसारणं पितृ मातृज्येष्टञ्चातरिखर्वोदीनां वचनाकरणं शरणागताप हरणं है

वतायोः वियोगकाणं लशुन गृंजन पलाण्ड् निशिद्धकृष्मांद्यदीनां भक्षणं अनाथ विधवादीनां छलेन इन्यहरणं जैन्यशाला प्रवेशः यवनशाला प्रवेशः यतिशाला मद्यचांण्डाल म्लेच्छ हिनजाती गृह प्रवेशः अतिथि देव अरु ब्राह्मणानां वृत्तिच्छेदनं विद्यागर्व करणं शवास्थी म्लेच्छचांण्डालः द्वीनजातीस्परीं अकृतस्त्रान्। भोजनं विष्मुत्रादिस्परों करप्रक्षालनाकरणं अहपीहर्षकरणं अमेष्यवस्तुस्परों स्नानाकरणं अवाच्यावाच नं अशन्दाशब्द अवणं ग्रामवन गृहतृणादि नानाविध जीवदाह करणं कडोरवाक्येन करणं आत्मस्त्राति करणं हरिहरयोः विभेदगणनं अन्यतदेवनिंदा वेदस्मृतिनाह्मणपुराण तीर्थादिनिंदा श्कसारिक भारताज मयूर चाप कपोत कुकलास श्वान शृगाल नकुल सर्प रश्चिक स्कर हरण शस्ट मार्जार नातिश्रंम कराणितः ॥ विभवीदा करणं अनावेव भव लक्षुनादी प्राणंनित्रकोटिलं धुरिसेवहुनं एतानी जातिश्रंशकराणीः ॥ सरार्श्वाप्तमुन्

इत्स्यवाविभीन महिपाणां अन्येपां च ब्राम्पारव्यपञ्चनां वपाः संकरी करणानी ॥ निश्तिम्पो धनादानं वाणिज्यं शुद्रसेवा क्रसीदजीवनं असत्य भाषण वेतान्यवाविकरणाति ॥ वहुकृपि कीटकयो केलस्थलमयो ईत्या मधातुगत भोजनं बहुक्लंच पुष्प स्तेपं अर्थयेनेतानिमल्लिन करणानी ॥ शवि मांग्रिचेंद्रग्रेलर माथ्रिचकरंत्रे च ॥

दोह करणं च कृतघीत्वं परमर्म भाषणं अनृत भाषणं कृटसाक्षी भाषणं च सेतुमंग करणं देवालय व्रत गृहयात्रा देवदर्शन श्रामविवाह चार्त्ववर्षे भंगकरणं धर्मन्याय त्राह्मण मानलंडनं च प्रतिमा खंडनं मिथ्यापवाद नडाग 🦠 महाजलाशय बाटिका कूर वारी खंडनं च बालवत खंडनं द्युत कीडा बालकीडा जलमध्ये नग्नकीडा नग्नस्तान 🚏 नमशयन ताम्रपात्रे पयपानं पालंड पेश्चनभूत मेत पिशाच मक्षस यक्षिण्यादि उन्मत्त उपासनं परवैभवेन व्यथा 🕺 करणं शाखन्यतिरेकेण त्रतबंध वृषोत्सर्ग प्रायश्चितात्र भोजनं द्रारपाल सेवकादि अपालन कर्मोद्धाटन महावृः 🕏 श्रादिछेदन सूश्मलता ग्रन्मोपिष छेदनं च निशिष्ट तिथी बारनक्षत्रयोगे मळस्मानकृत स्नानसंध्योपासनादि 餐 कर्मरुत अन्ध्यायाध्ययन अध्यापनाकृत करणं च वेदवित नैष्टिक अग्निहोत्री श्रीत्रस्मातादि कर्मवित तपस्ती ब्रह्म-

युक्त मत्कृण स्तेदज अंडज उद्गिज जरायुज नानाविष प्राणीनां हिंसाकरणं अस्नात भोजनं जिन्छष्ट भोजनं 🔯 एकादस्यादि कृत वृत्तिविध भोजनं पर्श्वपितान्त भोजनं थानमार्जासदि मुख स्पर्शे भोजनं गणात्रं ग्रणिकात्रं 🛭 🕏 कृटजान्नं स्तिकान्नं वलाकारानं अस्तेहानं एडदपि मिश्रितानं अनेवेद्यानं परकांस्थपात्रे भोजनं शिवनिर्माल्य 🎼 भक्षणं रजस्त्रस्य विवितात्र असंकल्पितात्र अमंत्रितात्र अभ्रष्टात्र अश्रद्धात्र प्रज्यात्र पतितात्र भक्षणं स्वजनियत्र 🎼

🔭 🚉 व प्रजा गुरुप्रजा ब्युतक्रमण आरमहत्या बालहत्या कीहत्या अन्यत्जातिय हत्या करणंच चर्णचर्णप्रक्षालनं अभिन्ना असाक्षी तांत्र्यभक्षणं सर उद्ध रजस्वा स्तिकाः स्पर्शनं कार्पास तण खवर्ण रोप्य ताम कास्य भी अवास असाक्षा ताइल्मवण सर छ्र रजस्यल प्राप्तमा स्वयंत्र नगात दून उत्तर सामित है। जिसके स्वयंत्र से अश्रव्या से अश्रव्या सेवा रहेत देवप्रवारहित एकादशी जन्माष्टमी शिवसंत्री समनवन्यादिए अञ्चतान्छल सक् चंद क्षिण स्वयंत्र आत्मस्वार्त मेवा रहेत देवप्रवारहित एकादशी जन्माष्टमी शिवसंत्री समनवन्यादिए अञ्चतान्छल सक् चंद क्ष्यं आत्मस्वार्त प्रतिपद्याद्यमि व्यतिपात संकांत्यादि कालेष्ठ तेलाभ्यंगकरणं प्रत्रपत्ते प्राव्य प्रत्रीयहेभोजनं क्ष्येत्रपत्रिक स्वयंत्रपत्र स्वयंत्रपत्रपत्र स्वयंत्रपत्र ेकोनमासिकादि निर्पिदान्त्रभोजनं प्रेतस्थानासन भोजनं सतकेषु दशाहान्त भोजनं ्रितिशक्षाः व्यवस्थान । विश्वति । व तिवकार अभावस्याः । विवक्षी गुनसिक सांसिर्गिकोत्पन्न इत्यादि पापोपपापानां समूळनाशाथ नरकादि भया गुनसर |मासिक अपाविक पाणासिक ने वे वे वे विवक्षा कि कि सम्बोपिकोत्पन्न इत्यादि पापोपपापानां समूळनाशाथ नरकादि भया गुनस |पूर्वाक्षनं या काविक्षाविक के के विवक्षा सम्बोपिकोत् प्रयोगाः।। सुवर्ण नाळिकेर कुश तिळ यवासताच महीत्या हेमादिभयोग

वि॰क्षी॰ हैं। चारी मरकरी निंदा करणं रजक चर्मकार तट वर्बर केवर्तक भिछ येह म्लेन्छादीनां प्रतिग्रह करणं च कार्पास लवण-है। माप लोह प्रति ग्रहणं च देवप्रतिमा यहोपवीत छुश स्त्राक्ष तुलसी माला विद्यासरस्वती पुस्तक विकय वेदविकय

र्वे क्यानिताचित्रं यातत् वित्रोराहादिलोपनात्॥स्वश्वश्च श्वश्चरितनां पादवं दन महेता॥१।।पाणिप्र हुए मारम्य स्वकर्ष परिवालनम् ॥ इंदिपाभि रतिस्त्रीणां नानाजातिषु या भवेत् ॥२॥ कमीकीदादि दहनं पङ्ति भेदादिकं तथा।।पतिश्रश्चयणाभाव गतिभेदादिकं तथा ॥ ३ ॥ स्प्रष्टास्पृष्ट मनाचारं मनसा दोपकल्पितम ॥ नाः स्तिक्यं वा स्वधमें पु परधमें पु या स्तिः ॥ २ ॥ अपूज्यपूजनं पूज्य पूजनस्य व्यतिक्रमः ॥ जन्मतोद्यदिनं यावत् कायिक वाद्यनस्तथा ॥ ५ ॥ अयुद्धबुद्धिपूर्वाणां कृतानां खल्लकर्मणां ॥ असक्दिपयाणां च ज्ञानतोऽज्ञा नतोषि वा ।। ६ ।। अकार्यकरणायच अपेयापानतोषि वा ॥ अभक्षाभक्षणचैव यन्मया पातकं कतं ॥ यकणां च

लचनांय पातकानां तथेव च ॥ ७ ॥ उपपातक युक्तानां भायश्चितं कसेम्यहम् ॥ पतिरेव ग्रुठस्त्रीणां देवतं पतिरेव ं च ॥८॥ पतिश्रश्चपणं तस्मात् स्त्रीणांधर्म सनातनः ॥ रागान्वितोपि द्वष्टोपि पिशाचै श्रीसतोपि वा ॥ ९ ॥ दरि अर्थ-आ प्रमाणेनो पुरस्को देह धुद्धि प्राथिशतको प्रयोग साथळा हाथमा राखेली वस्तु भगगानना मोडा अगळ मुकी वसरकार करवी, जी स्त्री होय तो तेते पण पत्रधी देह शद्धि प्रयोग प्ररूपतो संपद्धावी. स्त्री प्रायश्चित प्रयोग संमद्धावको. तेसा पण सीमाग्यवती तथा विधवाना में प्रकार है. तैमने ते प्रमाणे करा.

मनो वाकाय कर्मभिः ॥ श्रश्रूषा करणंचैव पत्सुसज्ञा विलेपनं ॥ ११ ॥ वालचीवन वार्धिक्ये स्वातन्त्र्या करणं 🐉

तथा !! कामास्त्रोपात भयाह्रोभाद च्छलतो भयतोपिवा ॥ १२ !। स्वमर्यादान्यतिक्रम्य परप्रंसोभि सेवनं ॥ 🕍 स्वाप्यनुतां विनायस ब्रतानां करणं तथा ॥ १३ ॥ अर्थकार्ये ममत्वं च कायकार्ये प्रागल्भता ॥ निकटस्थे सदापत्यो हरिद्रा कुंकुमादिभिः ॥ १४ ॥ संस्काराकरणार्चेव दूरस्थे करणात्तथा ॥ निर्लब्न-त्वं चना स्तीक्यं विचित्र करणात्तथा ॥ १५ ॥ आलस्यं च शुभेकार्ये निद्रा कलह मेवच ॥ भर्तविद्वेपिणी 🕄 भ्यश्च सहसंवसनंतथा ॥१६ ॥ भोजनस्यात्रदानं च पद्धतिभेदा त्तरेव च ॥ छठवाह्मणभिक्षणामातिथ्या करणातः। ेथा ॥ १७ ॥ दीनांघः कृपणानां च धुधार्ताणां तथैव च ॥ अन्नदाने विद्दीनत्वं लोभेनान्त भाषणं ॥ १८ ॥ 🕄 भर्तराज्ञा विनायम स्ववंधुभ्यः प्रदापनं ॥ भर्तराज्ञान्यतिकम्य स्वेच्छया करणंतथा ॥ १९ ॥ तपिते 🕍 क्षिविवरङ र्जलानस्य च भक्षणं ॥ भर्तिरिमोपिते तैला भ्यंग मुद्रर्तनं तथा ॥ २०॥ मण्डनानां च करणं परि- 📢 ॥२२० े धान छवाससः ॥ प्रस्मृहेषु गमनं समाजोत्सव दर्शनं ॥ २१ ॥ क्षेत्राह्ममादनात्पत्यु रागते मुदितासती ॥ त्रत्यु-

गमना करणंतथा।।केशानां रक्षणं चैव दिवार भोजनं तथा ॥ २७ ॥ पर्यहे अयनं चैव सब् ताम्बूल निसेवनात् ॥ 🎉 शरीरपोपणं चैव शैरपाया मन्नभक्षणं ॥ २८ ॥ कर्लिमादिनिशिद्धस्य दम्धानस्य च भोजनं ॥ पछाण्ड 🕏 लश्चनादीनां कृष्मांडस्य च भक्षणं ॥ २९ ॥ मस्त्रादी निषिद्धानां भक्षणं गर्भपातनं ॥ फलानां हरणंदेव ब्रह्म- 🖔 स्य हरणं तथा ॥ २० ॥ मर्तृष्मी भि स्तथामर्भ घातिनिभिस्तयैवच ॥ कुलदाभिः सुरापानं रतीभिः सहभोजनं 🕺 ॥ ३१ ॥ सुर्गंध द्रव्य हरणं कस्तुरी कुंकुमादिकं ॥ तेल दुग्ध प्रतादीनां विक्रयो फलविकयः ॥ ३२ ॥ कन्या- 🛞 विकयणंचेव दास्यादिनां चिवकयः ॥ स्सानां विकयक्षेव मधु तकस्य विकयः ॥ १३ ॥ युका मत्कूण स- 🕏 र्पाणां हिंसनं प्राणिहिंसनम् ॥ दंपत्योप्रतिभेदश्च ऋटसाक्षि स्तयेवच ॥ ३४ ॥ विवाहे विग्रकरणं तडागादि 🐉

त्यानासनार्धेश्च सन्मानाकरणात्तथा॥ २२ ॥ तांबुल व्यंजनार्धेश्च पादसंबाहनादिभिः ॥ स्रुवाह्वचनं चैव हैं शुक्षपा करणं तथा ॥ २३ ॥ तांबितायां क्रुथापत्यु सेदनं प्रति तांबनं ॥ पतिवाक्य मनाहृत्य प्रत्युक्ति करणं तथा ॥ २८ ॥ भर्तुक्रथामनाद्रत्य परेषां ग्रुणकिर्तनम् ॥ उत्सवादिशुवेषुनां श्रुवने वसनं चिरं ॥ २५ ॥ सेद्राया स्तवत्तायाः संपर्कस्वेदसापणम् ॥ भर्तृष्ठवैच शयनं पश्चाहृत्यापनं तथा ॥ २६ ॥ सृते च भर्तेरि सह 48884 मतानां करणं तथा ॥ २७ ॥ सुवर्ण रीप्प रत्नानां स्तेयो विकयमेव च ॥ सतिर्निदा सती निंदा तपस्ती 🕌 निंदनं तथा ॥ ३८ ॥ पश्चनां हिंसतंचेव देव बाह्मण निंदनं ॥ शौचाचारविद्यीनावं प्राणीनां पीडनं तथा ॥ 🕅 ३९ ॥ अपात्रेदानकरणं पात्रदेप स्तर्थेवच 🔃 श्रीमतानां भ्राधातीनां दासादीनां तथेव 👻 🔃 🕃 💈 सकोभमन्नद्गुनं च क्रांटिकाक्षेपसंखतं ॥ तीर्थपात्रा विद्दीनत्वं अनास्तिक्य मनार्जवम् ॥ ४१ ॥ स्वर्गातद्रेपकरण 🛂 मात्मघातस्त्रथेवच ॥ अप्रेपस्यो शहतन्यं अक्तेभोजन माचेरेत् ॥ ४२ ॥ उत्थानात्वर्वं मृत्याय सदातद्धितमा-🖔 चरेत ॥ कोपनंकर्हिचित्कर्यात रुप्टेत सुदिता भवेत ॥ ४३ ॥ दुःखिते बहुदुःखा च प्रोपिते मिलना-कृषा ॥ 🕏 अयमेवपरोधूमीं नारीणां परिकीर्तितः ॥ ४४ ॥ एतद्धर्मन्यपायेन रजोग्रहा चयद्भवेत ॥ पातकं खमहचैव इह

्रैं ॥ ४६ ॥ एतत्पापविश्वःयर्थं प्राजात्य त्रयंचरेत् ॥ इंद गोमिशुन द्रव्यं गंधपुष्पाद्यचितं सभ्योपविष्टभ्यो ब्राह्मणेभ्यो 🐉

वा परजन्मनि ॥ ४५ ॥ मयाकृतानि घोराणि पापानि सुबहुन्यपि ॥ एतेपां शालनार्वाय प्रायश्चित्तमहं रूणे 🙌 ॥११२।

बि॰को॰ हैं प्रभेदनं ॥ वापी क्रपतडागेषु विषप्रदेषणं तथा ॥ ३५ ॥ ज्वाळनंपरवेश्यानां सपरनीशळघातकं ॥ मिथ्याप- हैं वादकरणं वाळानां मारणं तथा ॥ ३६ ॥ गो ब्राह्मण देवानां व्रतिच्छेदन मेवच ॥ उद्यापन विहीनानां हैं।

रजत प्रत्यामायदारा अहमाचरामि तेनकरिष्यमाणकर्मण्यभिकार सिद्धिरस्तु ॥ अनेन कृतपायश्चित्तेनामुकगोत्रो-हममुकनामाहं निष्पापोभवेयमिति त्रिर्शाच्यं ॥ अहंनिष्पापो मुयासं अहं निष्पापो मुयासं अहंनिष्पापो मुयासं॥ ममदेह शुद्धि रस्तु मम देद शुद्धिरस्तु मम देह शुद्धिरस्तु ॥ अहं एतत् कर्म योग्यो भ्यासं अहं एतत् कर्म अर्थ-गौराने बस्युकार्यो स्वीवला स्वपस्थित । यपराने शुभोनदान स्वशुनलांबर कांचना ॥ १ ११ निवर्तनासि भूदाने धरादयात् द्विजातये ॥ दस्र रसोन देडेन निक्रदंबाशिवर्तिते ॥ २ ॥ दशनान्येव भोचर्ष दस्वापापैः । इति सूर्योरुण संवाद्यंपे । एकभेकेन नकेन क्षेयापश्चिते न थ । उपवासन येवायं पादकुच्छू उदाग्रताः । इति अत्रिस्मृतौ ॥ अर्थ-स्त्रीनी प्रायधिक प्रयोग थया पछी पुरुष प्रमाणे वांखेळी हाममा बस्तु नीचे भगवान पासे मुखी नमस्कार करावा. तथा संकल्पकरवी के जे वे मारी चारिक्रमाणे प्रापध्यित कर्षे तेनारी मने असुक अर्म करना आधिकार थाओ, यठी सभा दंढना दक्षिक्रम्याणे ऐसाजाहायोजा पराजगाडी सकी. . १ यगमानेरेहेबु, हु पापरमानी थयो, मारोदेहजुद्धथयोः हु आन्तर्मकरनायोग्यययो एम प्रागयस्तकेवाथी आहाणीये कहेबु, उपरामाणे पत्र प्राह्मणीने ्रे नमस्त्रास्वर्धाः उदिच्याद्गविष्णुश्राद्भ का<u>र्</u>चे,

ऽहं संप्रदास्ये ॥ ग्रह्लप्रपायानां विशोधनार्थं प्रायाश्वत्तिमहंषाचे ॥ याच्यतामिति बाह्यणोद्धयात् ॥ प्रजापत्य ई संकल्पः ॥ अधेत्यादि ॰ तिथा ममदेहशुच्यर्थंकरिष्य भाणकर्मण्यिकारार्थं यथासंख्याकान् प्राजापत्यान् ई

योग्यो भूयासं सहंएतत् कर्म योग्यो भ्यासं ॥ एवं राज नाच्छृते दिजाः ब्र्युः॥त्वं निष्पापो भूयाः त्वं निष्पापो 🕺 । त्वं एततकर्म योग्यो भव ।! त्वं एतत्कर्म योग्यो भव ॥ त्वं एतत् कर्म योग्यो भव ।। एवंबास्त्रयं द्विजमुखा च्छूत्वा सओपनिष्ट ब्राह्माणानां पादाभिवंदनं कुर्यात् ॥ अद्येत्यादि॰ प्रायश्चित्तस्योत्तराङ्गानि कीरेष्येति 🕏 🟅 संकल्य ॥ उत्तराङ्गा विष्णुश्रार्छ ॥ विष्णोएतत्तेपाद्यं पादावनेजनम् प्राक्षालनम् ॥ इदमत्र चंदनं च पुष्पम् ॥ ई ्ट्रें स्वपादों करी प्रक्षाच्याचम्य विष्णुमंत्रेणदि ग्वंघः ॥ अक्षताच गृहीत्वा ॥ नमस्ते देवदेवेश पुराण पुरुषोत्तम ॥ पातु बाधुदेवस्तथात्तरे ॥ २ ॥ आयान्तु उत्तराङ्ग वैष्णवश्राद्धोपहासणां पंवित्रतास्तु ॥ अदेत्यादि० तिथी ४ भिवा तरा महार्गव मारापण महादि भिर्वक माजापस्य मत्यान्नायाः सध्येते । तत्त्व सर्वे मायश्चितं शवस्यानुसारेण पढन्दं त्र्यन्दं सार्द्धान्दं अन्यदा पर्परोत्तमतं । मानापत्यमत्याम्नापाथ गायभ्या युत जपेन । गायभ्या विल होप सहस्रेण । हादश भाक्षण भोजनेन तीर्थ योजन यात्रया एक मोदानेत । स्वर्ण रूप्ययो निष्कं तद्द्वें तद्द्वेंन वा द्वाविशत्यपैवी गोमूल्या नामश्रास्था क्षानेत शुष्ककेश्वस्य द्वादशस्नानेन द्विगुण-्र द्वादशामात्रदानादींबैकः माजागत्य इति ॥ निष्क ( मापा ४० ) तदसक्ती द्वात्रश्रसाम्रपणाः कनिष्ठाः ॥

🕺 आमान्नेवा दद्यात सुन्नोक्षितादि करणं वैष्णवश्राद्धशतिष्ठासिध्यर्थं दक्षिणां विष्णवे० अद्यपूर्वोत्तरित उत्तरांगवैष्णः वश्राद्धविषेः परिष्र्॰ इति उत्तरांग ॥ विष्णुश्राद्धम् ॥ उत्तराङ्गागोदान द्रव्यंगृहीत्वा अद्येत्पादि॰ तिथी भागश्चित्तस्योत्तराङ्गत्तयाविहितं गोदानमत्याम्नायत्वेन यथाशिक्तगोमृत्यिनिष्कयद्भयं विष्णुरुपाय माहाणाय तुभ्य महं संप्रददे ॥ इत्युत्तरांङ्ग गोदानं ॥ आचम्य सत्येशस्य यथाशक्तया यूजनं करिष्येति संकल्प्य अष्टशक्तिसहित विकारोहं हिएमं च कार्पासं जवर्ण तथा । सन्नपान्य क्षिति भीव प्केंकं पावन स्मृतं ॥ इति गारुडे ॥ जिह्नो यव भीधूसा, सुद्रा पाणा

भावश्चित्तोत्तराङ्का वैष्णव श्राद्धमहं क्रिक्ये ॥ विष्णवे इदमासनम् ॥ इदमञ्चनंदनं पुष्पं धूपं दीपं यथादत्तं गंधार्यार्चनं विष्णवेन० इदंवीज्योतिः वैष्णवश्राद्धस्यार्चनविधेः परिपू० ११ आचम्य विष्णु शीतये त्रिभ्योषिकार खम्मान ब्राह्मणाच प्रजापूर्वकं भोजन निष्क्रय द्रव्य दान दारा अहमाचस्राम ॥

अर्थ-नेज्यकाद्ध घण पर्जा, उत्तराह्व गोदान आपर्जु, ते प्रत्यक्ष न होच के तेत्रे सूल्य परिकिषत्वेत्रु सथा अन्य गोमियुन प्रटेले वाज्यका काजही प्रत्यक्ष छेवा न होय हो व ठेकाले-।।आनी लेकाले पालजे, तेवह सकत्य करवो, तथा स्थापितसत्येरा सुर्तित.

मियगवः । तिकाक्ष सप्तभागोक्ता सप्तभान्य मुदाहुतं । इति देवयानीये ॥

वि॰का॰ ही शुचिभेवेत् ॥ १ ॥ अथ गोमयस्नानं ॥ अग्रमग्रश्चर्रतिनां औंपधीनां स्तंवने ॥ तासां दृपभपत्नीनां पवित्रं काय ्र्री शोधनं ॥ २ ॥ जन्मेरोगं च शोकं च पापं मे हरगोषय ॥ गोमयेन तु यःस्नात्वा आपाद तरु मस्तके ॥ ३ ॥ अथ पैचगन्य स्नानं ॥ एकत्रं ऋवा स्नानं ॥ गोमृत्रं गोमयं क्षीरं दधीसर्पिकुरोादकं ॥ सर्वेपाप विशुष्पर्धि पंचगव्यं प्रनात्तमां ॥ ४ ॥ अथ गोरज स्नानं ॥ गवांखरेणनिर्द्रतं खंद्रेणुगगनेगतं ॥ रजसातेन संलेपो महापातक नाशनं ॥ ५ ॥ अय धान्य स्नानं ॥ धान्यौपशीमनुष्याणां जीवनं परमं स्पृतं ॥ तेन स्नानेन देवेश मम पापंच्यपोह्नु ॥ ६ ॥ अथ फल स्नानं ॥ वनस्पति स्सोहिब्य फलपुष्पत्रतं सदा ॥ तेन स्नानेन देवेश हान माचननं होमं ग्रोजनं देववार्चनं ॥ मीट पादो न कुर्जीत स्वाध्याय पिन धर्पणं ॥ आसनारुट पादस्तु आन्वोर्वा अंघयोस्तथा ॥ कृतायास्त् क्रियायश्र श्रीद पाद स उच्यते ॥ इति आद्यायमः ॥ यज्ञन्ने शुफ्तवस्त्रेण स्थले चैकद्रवाससा ॥ जपो होमस्तथादानं तस्सर्वे निष्फळं भवेत् शतिवन्दि पुराणे ॥ होमदेवाचैनात्मास्तु क्रियास्याचमने तथा ॥ नैकवस मवर्तत द्विभदायनके जपे ॥ सच्याहद्या परिभष्ट कार्ट्येश-० धृतांचरः ॥ एकपसं त्रशाविषात् दैवपित्रे च वर्तपेत् ॥ इति गौतमस्पृतौ ॥ दमीहेना तु पासंध्या यमदानं विनोदकं ॥ असंख्यातं च यज्ञातं सत्स वै निःभयोजनं ॥ अवेश्य प्रोप्तर्णकृत्वा आरूप्य सोदकेनम् ॥ पाणिनास्त्रृष्टा दानंद्यात्। इत्यापस्तेवः ॥ सर्वीण्युदकपूर्वीणि दानानि स्थाश्रुति विहतेत् ॥ वार्यद्याद्विभक्करे दानेविश्वरयं स्मृतः ॥ सङ्घादिकहरूतथ ददायीति तयावदेत् ॥ इति वाराहपुराणे ॥

पुणपफलदं मम पापं व्यपोहतु ॥ ९ ॥ अय गंगोदकस्नानं ॥ विष्णुपादाग्रसंभुतां गंगे त्रिपथगामिनी ॥ धर्म इंद्वेति विष्याता पापं मेहरजान्ह्मी इति गंगोदकस्नानं ॥ १० ॥ वेष्णवापि सस्माऽभावेकुशोदकस्नानं ॥ कुशमूलेरिथतोत्रद्धा कुशमध्येजनार्दनः ॥ कुशाये शंकरोदेव स्तेननश्यन्तु पातकं ॥ १ ॥ ततीशुद्धोदकेन स्नात्वा ॥ इस्ते पृष्पाक्षतान् गृहीत्वा ॥ अपराधसहस्नाणि लक्षकोटी शतानि च ॥ नश्यान्ति ततस्रणात्पापं सत्येश तवप्रजनान् ॥ २ ॥ सत्येशपंचवमत्रतं लक्ष्म्यासह्जगत्पते ॥ वास्रदेवततः पूर्वे नृसिंहो दक्षिणेरिथतः ॥ ३ ॥ कपिलः पश्चिमास्ये तु वाराहश्चोत्तरे रिथतः ॥ ऊर्ध्ववम्त्रेन्युतोक्षेय एतदे ब्रह्मपंचमं ॥ १ ॥ सत्येशः

अंवर्गानुकरं कृत्व सङ्क्रंत तिळोदकं ॥ फळान्यपि च संभाय मदयात् थ्रद्धयान्वितः ॥ इतिगीतम स्पृत्वै ॥ पात्रासात्रभाने ॥ मनसायात्र-मुस्स्यि जर्रभूमा विनिक्षियत् ॥ वियते सामस्यांचे दानस्यांचे न वियते ॥ इति नास्त्रीयपुराणे ॥ दानकाळे त्रः संगाते यात्रे या सन्त्रियो

अरु ॥ अन्यविभवते द्रवा दानं पात्रे विशीपते ॥ इति पट्तिशन्यतात ॥

पुरुव्यतमनन्तर्क ।। ७ ॥ अथ औपधी स्नानं ॥ औपधी सर्व द्वश्वाणां तृपग्रत्म व्वताहुमाः ॥ दुर्वा सर्पेप हें संग्रक्ता सर्वेगिष्यः पुनाहु मां ॥ ८ ॥ अथ हिरण्य स्नानं ॥ हिरण्यगर्भ गर्भस्थं हेमज् विभावसोः ॥ अनंत् हे विकरिश्वेत्सरीसं दानुमुखतः ॥ संस्थावादे भुवं पात्रं हृज्यमादित्यदैवतं ॥ इति घीम्यः ॥ नामगोत्र समुखार्य संगटासस्य धातमनः ॥ संगदय 🔊 त्रयन्छंति कम्पादाने हु पुंखिपियति ॥ नादीमुखे विवाहे च मितामह पूर्वकं ॥ नामसंकितिपेदिहान् अभ्यत्र विज्युवेकं ॥ अर्थ-द्रप्तप्रकालु लान प्रवास्त्री शुद्ध सळकी स्वान कर्सु, पत्री फुल चोसा हायमा लड् विष्णुस्त्येशनीक्षर्यना नर्सा, प्रारंना करी भववानसर फुल चडावी 🌼 नमस्रार करवी, तथा मामण मोजननी सकरा बरवी, तथा मामणीने दक्षणा भाववाची सकरप करवी, तथा कासानापात्रमाथी घी होही आगळी बती चार बसत बहर उन्हों, पर्त्र तेमा स्थानाणु मुकी सक्त्यकरी आक्षणने आपन्न, साथा सूर्यना दर्शन करी करेडा यर्थने। सक्त्य दरी भगवानने अर्पण 💸 करवु, पठी स्वानकरी गंगानळनु धानकरी गोपीचदनादी धारणक्री स्वस्थ विसंध्य मंगळाणकार धारणक्री कर्म करवाना महथ्या वह सारा उनत 🔯 आसनपर नेसदः, एप्रमाणे देहज्ञद्विषयोग समाप्त थयो।

्ट्रैं पुष्टिं च वर्षयत् ॥ २ ॥ आज्यतेजसमुद्दिष्टं आज्यं पापहरं परं ॥ आज्येखराणामाहारोआज्येलोकाःशतिष्ठिताः है।। ३ ॥ इदं कांस्यपात्रं छतप्रस्तिं पंचस्तमसहितं स्प्येंदेवतं छायादोपनिवारणार्थं आचार्यायाहं दास्ये ॥ आज्या ्रे भावे अशक्तो स्वर्धवेक्षणं ॥ अद्यपूर्वोद्यरित॰ भवतां ब्राह्मणानां वचनात् श्रीतीर्षविष्णोः प्रसादात् प्रायश्चित्तविषे 🕯 र्यन्युनातिरिक्तं तत्सर्व परिप्रर्णतास्त्र ॥ अतः परंस्तात्वा ॥ विष्णवेनमो विष्णवेनमो विष्णवेनमः ॥ इति श्रीज-🟅 यानंदात्मज मूलर्शकररार्मणा विरचितायां विवाह कीमुद्यां ततीय मुखापनप्रकरणे देहश्रुद्धिप्रयोगः ॥ 🐉 ॥ श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीरापापुरुषोत्तमान्यां नमः ॥ श्रीपुरुषोत्तम वृतोद्यापन विधिर्छिख्यते॥ 🕯 यथालाभोपहोरण मासे चास्मिन् मलिम्छुचे ॥ प्रवेन्हि प्रातक्रयाय कृत्वा प्रवीन्हिका क्रियाः ॥१॥ गृहित्वा निय 🕏 🖁 यं पश्चात वासुदेवं हृदि स्मरन् ॥ रपवासं स नक्तं वा एक भूक्तस्तु भामिनी ॥ यःकश्चि निश्चयं ऋवा ्रै प्रीतःस्यात् कृष्णराधिका ॥ तीथें गत्वा स्नान विधिपूर्वक प्रायश्चीतं कत्वा ॥ गृहे आगत्य सर्वे उपहारान

्टै शक्तिदक्षिणां दास्ये ॥ ततोसुखावलोकनं ॥ दिन्यन्तरिक्षस्रमो वा यन्त्रे किन्विपमागतं ॥ तत्सर्वं आज्यसंस्प-द्र शीत प्रणाश सुपगच्छतु ॥ १ ॥ अलक्ष्मीर्यबदौर्भाग्यं ममगात्रे न्यवस्थितं ॥ तत्सर्वेशामयेत्याज्यं लक्ष्मीस् विक्तीः । असमे यहित्वा ॥ आसमे उपविश्य ॥ यजमानभाले तिलकं कत्वा ॥ आचम्य ॥ प्राणानायम्य ॥ शिरातंत्रध्या 🐉 ॥ नियम ग्रहणामंत्रः ॥ इस्ते गंधासत जल पुष्प प्रगीपलानि सहिरण्यानि गृहीत्वा ॥ तत्र मंत्रः ॥ 🐉

1125531

ने मनुष्यने गुजापुरुमोत्तमदेवनं अथवा कोइनणदेवनं उद्यापन करतं होए तेणे पूर्वोगाफिया कावानी अवस्थकता छे तेटल वया पडी

स्थापनकरायतुं तथा दीपस्थापन करतुं, तथा महिना सुधि में भने ते निधम छड् पाळवो, हो तेमा करेला मततुं उदारपन करतुंन मीदये 🕏 तेने मारे शासा कहैला दारामार्था असुरुक्दाओं प्रहणकरनो प्रति ते शतमा नोइता साहित्यमी शेष आपेटी छे तेना प्रमाणे अपवा 💸 राष्ट्रीयमाणे साहित्य एक्टु कर्र्यु, पत्री उद्यापनना आगणे दियस सहयारे वेटा उटी तित्यकिया साठी परवारी, वाह्यदेवमध्वाननु ध्यान धरी नियमप-हणनी संकल्प करती, पत्री होर्पे नह आहाणते छहेने, तथा त्या स्नाविधि करि विधिन्य मायधिरक्षस्योग करती, अथवा न वने तो घेर करती ( उद्यापना। आरमवे दिनसे करवानो बाल पढी गयोडे) पत्री धेर आधासाठ्या उपहारमे ट्यू देवनो महप विभेरे सुंदर शोभाष्ट्रक करिने तथा सरणासून सुख्यी तिलक भारण

सदोपनोतिना भाज्यं सदानद्वसिक्तंत्र च ॥ विश्विकोण्युपीतिश्च यत् करोति न तत्कृतं ॥ इति काल्पायुनीतेकं श्व ॥ वस्मात् शिखावन्यना-

नन्तरं सर्व पर्मणा सुपर्वागित्वं शावव्यं ॥ विष्णोधरणोदक प्रदणा नंतरं आसने उपवित्रय ॥ इति गोविदार्वेन चंद्रिकायां ॥

में देवत प्राभाविक वणु होय तेना जीया करवामा आर्थ छे. ाल घणा लोकोना अभिपाय मळवारी अत्र स्थापरमोक्तमने प्रधान मानी देर्ग वतल्ला है तेना पुरुपात्तर मास आहे ते पेट्रेला हेमा जोवतो साहित्य तैपार करी जुरुपतिपराए जात काल उडी शोचादि निया

परवारी कींपे जह स्तान करी तथा आत क्रव्यरावारीने आक्षणीये बेाज्यका, वया तेष्रनीपाप्ते श्रीराधिकातिहत प्रकृषोत्तमदेवत कळ्या उपर

आचपत-मधर्म थः पित्रे दापः ऋग्वेदस्तैन रूप्पति ॥ यद्वितीयं यशुवेद तेन मीणाति भारत ॥ १ ॥ यत्त्वीयं सामवेदं तेन भीणाति पाडव 🕹 प्रथम वन्युनेदास्यं दसणांगुष्ठ मूक्तदः ॥ अयर्ववेदं मीणाती तेन राजन्न संशयः ॥ २ ॥ गोविंदार्चन चंद्रिकायां ॥ 🔊 वरंति पाटलार रातं आसन पार्थाने - वर्तत्वे बेस्बुं पर्जा गोरे यममानने - कपळे पाड़ो। करी, आचमन प्राप्पायम करावे। यममानना दायमा पाणी चंदन 🎉 🕯 🗫 एस दक्षिण देवादवा तया उपर छसेको मन नायमने ते बोळवी पाणी तरमाणामा मुख्य, गठि प्रकरण पेदेछाना २ पत्रपी शांतिपाठनो आरभ करीते 🖇 प्राप्त सरस्य पर्यंत फराबनो तेमा हाथमा पाणी छह चदन ५५छ दसणा सुकी केंद्रके मारादरकपायो दूरपता तथा पुत्रपोत्रादि प्रारपता तथा गोछोक वासीनी र्रे प्राप्ति मेळका हरेखा वतनु अथवा वतावारण करवा उचापन वस छउ, ए सक्तन ब्राह्मण बोडेडे. तेन्ने अर्घडे एथया पर्छा आंसकरूप करनी पडेडे ते प्रकरण है है विकास पत्रकी आरंभी प्रण्याहशक्तात प्रयोग करते। पत्री सकल्या वसप्रमाणे कर्म करते. हवे प्रवास कर्मना अप्रभुत वर्ग करते जैव्ये ते पुण्याहशास्त्र हिं पुण्या मारे ज्या प्रधान देवत मञ्ज्य कारत्य होय त्यामकादि देवीत स्थापन करवा सकल्य करते। ते थ्या पठि जावाहामचा यमगोने बीसर राजी झालणी कहे 🕏

त्या गंमाते वयाववायोह भाराणीये ते देवना स्थान यह सोपारी मुर्णसह मुक्तु तेवापर आये हनच्ही स्थापन करावचु, ए प्रयाणे ब्रह्मध्ये आरम्भ वैनायका वर्षत देवोत्त स्थापन करावु.

प्रतिप्रतिशित्तिथ मारभ्य दर्शेंचेव समापयेत्॥भासमेकं करिष्यामि त्रतं श्री प्ररुपोत्तम ॥ उपवासेन नक्तं वा एक अक्तं र करिष्यति ॥ दीषदानादविछिन्नात् प्रीयतां प्ररुपोत्तम ॥ स्नानं दानंजपं पूजां तर्पणं दिज भोजनं ॥ अस्मिनः ार्कार् हैं नमासे करिष्यामि तेन पापं व्ययोहन्त ॥ समुस्रक्षेत्यादि पठित्या ॥ अथ प्रधान संकल्पः ॥ अदेत्यादि । है प्रश्न हैं देशकार्कों संकीर्त्यरूपा, आत्मनः, पुराणोक्त फल प्राप्त्यर्थ अस्माकं सक्तदंवानां सपरिवाराणां अशेष पापक्षयार्थ हैं पुत्र पौत्रादि सस्त्री प्राप्त्यर्थ मोलोक् दक्षिण पार्श्वस्य वैक्टंड शिवपुर निवासपूर्वक गोलोकाधिप सिधकादि हैं पुत्र पौत्रादि सस्त्री प्राप्त में साम्रक्रीति स्वाप्त स्वाप

यथाराक्ति पुरुषोत्तम मास इतोद्यापनारूयं कर्म करिन्ये ॥ अथ अंग संकल्पः ॥ तदङ्गमूतं दिमक्षणं, 🕏 कल्रशासधर्न, पंचमञ्चकरणं, गणपतिप्रजनं, गणेश गौर्यादि मात्काणां स्थापनं, सांकल्पेन विधिना वैश्वदेव प्रवेक सहिरण्य नांदीश्राद्धं अर्घवंदनं त्राह्मणवरणं, सांकल्पेन विधिना वरणश्राद्धं, कलशस्यापन प्रवेक स्वस्ति पुण्याहवाचनादीनि करिष्ये ।। इत्यंगसंकब्प क्रमेण कर्म समाप्य ।। पुनः साक्षत जलमादाय अद्यत्यादि० अ स्मिच मंडले त्रह्मादि देवानां स्थापन प्रतिष्ठा प्रजामहं करिच्ये ॥ वामहस्ते असतान् गृहीत्वा ॥ अथ्र व्रह्मा-दि देवता स्थापनं ॥ मंडलमध्ये ॥ एहोहि सर्वाधिपते खोन्द्र मदीय यहो पितृदेवताभिः ॥ सर्वस्यधाता

गिणेन सार्छ गृहाण प्रजां भगव त्रपस्ते॥शासोम इहागच्छ इहतिष्ट सोमाय नमः सोमं आवाहयामि स्थापयामि ।।।। ईशाने खण्डेन्देरे।।एहाहि बहेन्यस्य सिश्चल कपाल सद्धांड धरावसार्ध्य ।। लोकेन बहेन्यर् यङ्गसिप्यै गृहाण पूजां सगवन्नमस्ते ॥ ३ ॥ ईशान इहागच्छ इहतिष्ट ईशानायनमः ईशानं आवाहचामिस्था० ॥३॥ पूर्वे इन्द्रम्॥ परेतिह सर्वामरसिद्धसाच्ये रभिन्डतो वज्रधरामरेश ॥ सविज्यमानो प्तरसांगणेन स्क्षाप्वरंनो भगवञ्चमस्ते ॥ २ ॥ 🕯 इन्द इहागच्छ इह तिष्ठ इन्द्राय नमः इन्द्रं आ०स्था० ॥ ४ ॥ आन्नेयां खण्डेन्द्री ॥ अन्निय् ॥ एह्रोहि सर्वीमस्हय्य बाह सनिप्रविरे रभितोभि अप्तम्॥ तेजोबलैलेंकाणेन सार्छ ममाध्वरं रक्ष नमोऽस्त्ततेज्ञे॥५॥अमे इहागच्छ इहः ितिष्ट ॥ अभये नमः अप्ति आ॰ स्था॰ ॥ ५ ॥ दक्षिणे यमं ॥ एहोहि वैवस्वत चर्मराज सर्वामरे रार्चित घर्ममूर्ते ॥ अध्यमाश्चमानंद श्चनामधीश शिवाय नः पाहि मसं 💍 नमस्ते ॥ ६ ॥ यम इहागच्छ इहतिष्ट ॥ यमाय नमः यमं ्री आ० स्था॰ ॥ व ।। नेहत्यां सण्डेन्दी निर्कतिम् ॥ एहोहि स्क्षो गणनायकत्वं विशाल वैताल पिशाच संघेः 🕺

स्यमित प्रभाव विशलमन्तः सततं शिवाय ॥ १ ॥ महाजिहागच्छ इह तिष्ट ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणं आवाहयामि स्थापमामि ॥ १ ॥ मंडलाहचरे सोमं ॥ एह्येहि यहीश्वर यहारक्षां विश्वत्स्व नक्षत्र गणेन सार्छं ॥ सर्वोपधिः पितुन

ममाप्यरं पाहि शुभाषिनाथ लोकेश्वरतं प्रणमामि नित्यं 🔢 ७ ॥ निर्ऋते इहागच्छ इहतिष्ट ॥ निर्ऋतये नमः 🐉 🗝 र ॥२१८० है निर्ऋति मावाहयापि० स्था० ॥ ७ ॥ पश्चीमे वरुणं ॥ एहाहि यज्ञे ममस्सणाय यादोगणेः सार्घ मपामधीश ॥ है ब्रपाधिरुट त्वमिद्दमभोमणि स्त्नप्रभा भास्वर पाशपाणे ॥ ८ ॥ वरुण इहागच्छ इहतिष्ट ॥ वरुणाय नमः वरुण 🕺 मावाह्यामि स्था० ॥ ८ ॥ वायव्यां खण्डेन्दी वायुं ॥, एहोहि यहे ममस्क्षणाय मृगाधिरुदः सहसिद्ध संघैः प्राणाधियो हृदयभुजः सहाय गृहाणपूजां भगवन्नमस्ते ॥ ९ ॥ वायो इहागच्छ इहतिष्ट वायवे नमः वास्रमावाः हयामि स्था॰॥ ९॥ वायुसोमयोर्मेश्वे भद्रे अप्टबसून ॥ एह्यहिवस्त्रीश महानिधीश रत्नाकरः सर्व सहस्रतेजाः॥ धनस्यरुपो ममयज्ञपातुं गृहाण पूजां भगवज्ञमस्ते ॥ १० भो अष्टवसवः इहागच्छत इहातिष्टत अष्टवसुभ्यो नमः 🕺 अध्वस्तावाहपामि स्था०॥ १०॥ सोमे शानयोर्मध्ये एकादश स्त्रान् ॥ एहोदि यहेश्वर भो खिश्रहल कपाल लद्माङ्ग वरेण सार्द्ध ॥ लोकेन विश्वेश्वर यज्ञसिध्यै मृहाणपूजां भगवज्ञमस्तेः ॥ ११ ॥ एकादशस्द्राः इहागच्छत इहतिष्टत प्कादशस्त्रेम्पो नमः एकादशस्त्राना० ॥ ११ ॥ इशानेन्द्रयोभेन्ये भद्रे द्वादशादित्यान् ॥ एहाहि पद्मा-इहातप्टत प्कादराध्वन्या नमः प्कादराध्वानाय ॥ ५५ ॥ इताराष्ट्रपान वर्ष ॥ ५५ ॥ इताराप्ट्रपान वर्ष ॥ सत्राव्यस्तान्त्र सूर्यशीत्रं ग्रहाण पूर्वा भगवन्नमस्ते ॥ १२ ॥ द्वादराः

्रीअश्वितो इहागच्छतम् इह तिष्टतम् ॥ अश्विग्या नमः अश्विनौ आवाहयामि स्था॰ ॥ १३ ॥ अवियमयोर्मप्ये भिन्नेःसपेतृकान्विश्वार देवार ॥ एह्येहि सर्वागर सिद्धसाध्ये रभिष्टतो वज्रधरामरेश ॥ संदीज्यमानोप्सरसांगणेन ्रीखाध्यरं नो भगवन्नमस्ते॥१थ।सर्पेनकाः विश्वदेवाः इहागच्छत् इहतिष्टन सर्पेनकविश्वभ्यो देवेभ्यो० सर्पेनकान ्रीविश्वान देवानावाहयामि स्था० ॥ १४ ॥ यम नैऋत्तरोर्मध्ये भद्रे सत्य यक्षान् ॥ एह्येहि रक्षो गणनायकत्वं 🎒 विशाल रेताल पिशाच संघैः 🛭 ममाध्यंपाहिशिवाधिनाथ लोकेश्वस्त्वं भगवन्नमस्ते 🛭 १५ 🗓 सप्तयक्षाः इहागः च्छतः इहतिष्टतः ॥ सप्तयक्षेभ्यो नमः सप्तयक्षानावाहयामि संग० ॥ १५ ॥ निर्देशतवरुणयोर्मध्ये भद्रे सर्पान ॥ 🕺 एतेतसर्पाः शिवकंट भूपा लेकोपकाराय सवं वहन्तः॥जिब्हाद्रयोपेत सुखामदीयां गृङ्णीतपूजां सुखदां नमा 🎁 वः ॥ १५ ॥ सर्पाः इहागन्छत इह तिष्टत ॥ सर्पेभ्यो नमः सर्पानाबाहयामि स्था० ॥ १६ ॥ वरुणवायवीर्मध्ये 🎇 भद्रे गन्धर्वाप्तरात ॥ आबाहवेहं छरदेवसेन्याः स्वरुपतेजो मुखपदा भासः ॥ सर्वामरेशैः परिपूर्णकामाः प्रजां

्रीदित्याः इहागच्छत इहतिष्टत द्वादशादित्येभ्यो तमः द्वादशादित्यानावाहवामि स्था० ।। १२ ।। इन्द्राग्न्योर्मप्ये शुभद्रे अश्वितो ॥ द्विभुजो देवभिषजो कर्तच्यो देवसंग्रतो ॥ तयो रोपथयः कार्यादिज्या दक्षिणहस्तयोः ॥ १३ ॥

मृहीतुं मम यत्र भूमी॥१०॥गन्धर्वापासाः इहागच्छत इहतिष्ठतः गन्धर्वाप्सरोन्यो नमः गन्धर्वाप्तसः आवाहया 🖁 मि स्था॰ ॥ १७ ॥ ब्रह्मसोमयोर्गप्ये बाणोपस्स्कंदं ॥ एहोहि देवेश्वरशंभ्रसूनो शिखिन्द्रगामिन्ध्रपंसिद्ध 📳 🧗 संबैः ॥ संस्तवमानात्मश्रुभायनित्यं गृहाण प्रजां भगवञ्चमस्ते ॥ १८ ॥ स्कन्द इहागञ्छ इहतिष्ट स्कन्दाय नमः 🎼 स्कन्दमाबाह्यामि स्था० ॥ १८ ॥ तदुत्तरतः नन्दीश्वरं ॥ एह्योह् देवेन्द्रपिनाकपाणे खण्डेन्द्रमेतिल प्रियश्चा 🐉 🕏 वर्ण ॥ गोरीशयानेश्वर यक्षसिद्धे गृहाण प्रजां भगवत्रमस्ते ॥१९॥ नन्दीश्वर इहागच्छ इहतिष्ट नन्दीश्वराय नमः 📳 नन्दीश्वरमावाहयामि स्था॰ ॥ १९ ॥ तहुत्तरतः ॥ श्रूलमहाकाली ॥ आयात मायात सुमा त्रियस्य त्रियीम् 👭 नीन्द्रादिकसिळसेन्यो ॥ गृहणीतमेतां ममश्रूलकाली पूजां सुसीपं छुठतं नमोवास् ॥२०॥ श्रूलगहाकाली <sup>इ</sup>हाग-च्छतं इहतिष्ठतम् ॥ श्रूलमहाकालाभ्यांनमः श्रूलमहाकाली आवाह्यामि स्था॰॥ २० ॥ बहोशानयोर्गध्ये चर्छापु 🐉 दबादि सप्तकान् ॥ एहोहि देवालयविश्वमूर्ते चल्रप्रेल श्रीधर शंस्रमान्य ॥ सप्रस्तकाप्त सुवपात्रपाणे गृहाण् 👯 प्रजां भगवनमस्ते ॥ २१ ॥ दक्षाद् सप्रकाः इहागच्छत इहतिष्ठतः दक्षादिसप्तके स्पोनमः दक्षादिसप्तकानावाह 🔭 ॥१ यामि स्था॰ ॥ २१ ॥ महोन्द्रयोर्मध्ये दाप्पां (वाणोपरि ) दुर्गास् ॥ एहो हि दुर्गे दुस्तिोचनारिति प्रचण्ड

ष्णुमाबाह्यामि स्था॰ 11 २३ ॥ ब्रह्माऽगन्योर्मभ्ये बळीषु स्वथाम् ॥ सुखाय पितृन् कुळशुद्धिकर्तृन् स्वतीत्प- 🞖 लामानिहस्कनेत्रान्।।सुस्क माल्याम्बरमुपितां श्रनमामि पिठे कुल्हुद्धिहेतोः।।२४।।स्वघे इहागच्छ इहतिष्ठ स्वघायै 🐉 नमः स्वधामावाहयामि स्थानावशा ब्रह्मयमयोर्भव्ये वार्ष्या (बाणोपरि ) चृत्युरोगो ॥ आवाहयाम्यहरीग मनेक 🖁 ै विधलतणया।नानालंकारसंयुक्तं रक्तसम् विकोचनम् ॥२५॥ मृत्युरोगो इहागच्छतम् इहतिष्टतम्॥मृत्युरोगाभ्यां० मुत्सुसेगो आवाहवामि स्था॰ ॥ २५ ॥ मुद्धानैईत्तयोर्मध्ये विद्याष्ट्रा ।। गणपति ॥ एह्योहि विद्यार्थिपते छेरूद्र 🐉 मह्यादिदेवेरभिवन्यपाद।। मजास्य विद्यालय विश्वमृतें मृहाण पूर्जा भगवन्नमस्ते ॥२६॥ गणपते इहागच्छ इह- 🕏 तिष्ठ गणपतये नमः गणपनिमावाह्यामि स्था० ॥ २६ ॥ ब्रह्मवरुणयोर्मध्ये वाप्यां (बाणोपरि) अपः ॥ 🖔 एहोहि क्षेकेश्वर पारापाणे यादे।गर्णवेन्दित पादपद्म ॥ पीठेत्रदेवेश महाण प्रजा पाहित्वमस्मान भगवन 🖇

देत्योघ विनाशकारिणी ॥ उमे महेशाळे शरीरथारिणी स्थिराभवतं मम यज्ञकर्मणि ॥२२॥ दुर्गे इहागच्छ इहतिष्ठ हैं दुर्गाये नमः दुर्गामायाहयामि स्था॰ ॥ २२॥ तदुत्तस्तः ॥ विष्णुं ॥ एहाहि नीलाम्बुदमेचकस्वं श्रीवस्सवक्षःकमला है थिनाथ ॥ सर्वामरैः प्रजितपादपद्म ग्रहाण प्रजां भगवन्नमस्ते ॥ २३ ॥ विष्णो इहागच्छ इहतिष्ठ विष्णवेनमः वि- ३ ॥१२०॥ 💡 भगवत्रमस्ते ॥२८॥ मस्तः इहागच्छत इहतिष्ठत ॥ मस्त्रः आ० ॥ २८ ॥ ब्रह्मणः पादमूळे कार्णकाधः पृथिवीम् ॥ पहोहि पातालचराचरेन्द्र नागांगना किंत्रर गीयमान ॥ यक्षोनगेन्द्रामरलोकसंघेर नन्तरक्षाप्यर-

श्चभदे नगस्ते ॥ २० ॥ गंगादिनद्यः इहागच्छत इहतिष्ठत गंगादिनदीभ्योनमः गंगादिनदीः आवाहयामि स्था० 💸 ॥ ३० ॥ तहत्तरतः ॥ सप्तसागराच ॥ एहोहि यादोगणवारिधीनां गणेन पर्जन्यसहाप्सरोभिः ॥ विद्यापरे

मस्मदीयम् ॥२९ ॥ पृथिनी इहागच्छ इहतिष्ठ पृथिन्येनमः पृथिनीमानाहसामि स्था०॥ २९ ॥ तद्वत्तरतः गंगादि 🕌 नदीः ॥ एह्योहि गंगे दुरितौघनाशिनि झपाधिरुदे उदकुम्भहस्ते ॥ श्री विष्णुपादाग्छजसंभवे तं पूर्जा गृहीउ

न्द्राज्यस्मीयुमान पाहि त्वमस्मान्भगवत्रमुख्ते॥३१॥ सप्तसामगुःइहागच्छत इहतिष्ठत सप्तसामरूपोनमःसप्तसामरः 💱 नायाहयामि स्था॰ ॥ ३१ ॥ ततः कर्णिकोपिर ॥ मेरुं ॥ एहेहि कार्तस्वरूपसर्व भ्रभृतपते चन्द्रस्वी दथानः ॥ 🕏 सर्वोपधिस्थान महेन्द्रमित्र लोकत्रयावास नमोस्तु तुभ्यम् ॥३२॥भेरो इह्यगच्छ इहतिष्ठ मेर वेनमः मेरुमा० ॥३२॥

पूजेर्य प्रतिगृह्यताम् ॥३२॥ त्रिशूल इहागच्छ इहतिष्ट त्रिशूलायनमः त्रिशूलमावाहयामि स्था०॥३४॥ इन्द्रसमीपे ।।वज्रा।तप्तकाञ्चनवर्णामं वज्रं वे शस्त्रनायकम्।। आवाहयामि यज्ञेस्मिन् गृहाणेमं नमोस्तुते ।।२५।। वज्र इहागच्छ इहिंत वज्ञायनमः वज्रमाबाह्यामि स्थापयामि ॥२५॥अमिसमीपे शक्तिं॥सर्व देत्यविनाशाय सर्वकामफलप्रदे॥ 🕏 सर्वसत्वहितेशक्ते शांति यच्छ नमोस्तुते ॥२६॥ शक्ते इहागच्छ इहतिष्ठ शक्तयेनमः शक्तिमावाहयामि स्था०॥३६॥ यमसमीपे दण्डस्॥ घर्मराजस्य इस्तस्य यमस्य च सदाप्रियः॥ दण्डाग्रुथनमस्तेस्त्र सर्वसिद्धिप्रदोभव ॥३७॥ दण्ड इहागच्छ इहतिष्ठदण्डायनमः दण्डमावाह्यामि स्थापयामि॰ ॥ २७॥ निर्ऋति समीपे खड्डम् ॥ नीलजीमूः तवर्णतं तीक्ष्णदंष्ट्र हुशोदर॥ सङ्गराजनमस्तुभ्यं पूजेयं प्रतिगृह्यताम् ॥ ६८॥ सङ्ग इहागच्छ इहतिष्ठ सङ्गायनमः 🖁 सङ्गमावाहयामि स्था॰ ॥ ३८॥ वरुण समीपे पाशम् ॥ देवासिवरुणास्त्रतं दैत्यवंश विदारणं ॥ पाशमां समरे रक्ष

ततः सोमादि संनिशौ कमेण आयुधान्याबाहयेत् ॥ तद्यथा सोमसमीपे ॥ गदां ॥ निपिक्ता क्रमुदाक्षस्य नाम्ना कीमोदकी गदा॥ शांतिदा स्मरणादेव तस्यै तुभ्यं नमोनमः॥ गदे इहागच्छ इहतिष्ट ॥३३॥ गदायेनमः गदामा-वाह्यामि स्था॰ ॥ ३२ ॥ ईशान्यां त्रिश्चलम् ॥ महायोगीन्द्र हस्तस्य शंकरस्य प्रियंकरः ॥ त्रिश्चलत्वमिहागच्छ <sup>॥१२९।)</sup> ई इहतिष्ठ ॥ अंकुशायनमः अंकुशमाबाहयामि स्था० ॥ ६० ॥ तद्बाह्ये ॥ गीतमादीन् ॥ उत्तरे गीतमम् ॥ गीतमः सर्वभूताना सूपीणां च सदाप्रियः ॥ श्रीतानां कर्मणां, चेव संप्रदाय प्रवर्त्तकः ॥४१॥ गीतम इहागुच्छ इहतिष्ठ गीतमायनमः गीतगमाबाह्यामि स्था० ॥ ४१ ॥ ईशाने ॥ भरद्वाजं ॥ भरद्वाजनमस्तेस्त् सदाध्ययन तत्पर ॥ आयाहयामि यज्ञेस्मिन् प्रजेयं प्रतिगृह्यताम् ॥ ४२ ॥ भरदाज इहागच्छ इहतिष्ट भरदाजायनमः भरदाज मावाहयामि स्था॰ ॥ ४२ ॥ पूर्वे ॥ विश्वामित्रम् ॥ विश्वामित्र नमस्तुभ्यं ज्वलद्त्रि समप्रमा ॥ अध्यक्षी 🔀 कृत गायत्री तपोरुपेण संस्थितः ॥ ४३ ॥ विश्वामित्र इहागच्छ इहतिष्ठ विश्वामित्रायनमः विश्वामित्रमावाहयामि 🎏 स्था॰ ॥ ४३ ॥ आमेन्याम् ॥ कश्यपम् ॥ कश्यपः सर्वेन्होकादयः सर्वभृत दयाकरः ॥ असित्वां प्रार्थयामीश 👸 द्रजेयं प्रतिगृह्यताम् ॥४४॥ कश्यप् इहागच्छ इहतिष्ठ कश्यपायनमः ॥ कश्यपमानाह्यामि स्थार्ग। ४४ ॥ दक्षिणे 🐉 🔭 २२॥ जमदिमिष् ॥ जमदिमिर्महातेजा स्तपसा व्यलतीहतम् ॥ आवाह्यामि यज्ञेतत्युजेयं प्रतिगृहाताम् ॥ ४५ ॥ जमदिमे

अंकुरी ॥ गजप्रं परवीरप्रं परसुन्यापहारकम् ॥ गणेशस्य प्रियंनित्यमंकुशायनमोनमः ॥ २० ॥ अंकुश इहागच्छ

वि॰की॰ हैं रुजुराज नमोस्तुते ॥३९॥ पाश इहागच्छ इत्तृतिष्ठ पाशायनमः पाशमावाहयामि स्था०॥ ३९॥ वाखुसमीपे 👫 🗝 ३

है । १४८॥ अरुषती इहागच्छ इहतिष्ठ अरुषतैगमः अरुषतीमावाहपामि स्था०॥ ४८॥ तदबाह्ये प्रबोदारस्ये हैं इन्नादीन् ।। प्रवे ११ ऐन्हीम् ॥ इन्द्राणीं गजकुंभस्थां सहस्र नयनोज्वलाम् ॥ नमामि वस्तां देवीं सर्वे देवेन्म- १ क्लादीन् ।। प्रवेशः एत्हीन् ॥ इन्ह्राणीं गजकुंभस्थां सहस्र नयनोज्वलाम् ॥ नमामि वस्तां देवीं सर्वे देवेन्म- १ क्लादाम् ।। ऐन्ह्रीमावाहयामि स्था०॥ १९९१। आग्नेयाम् ॥ कीमारीम् ॥ इन्हर्मित्रः स्थाति कीमारीवेथेहि शान्ति शक्ति द्वागच्छ इहतिष्ठ कीमार्थेन्यः ॥ स्कन्धापिरुदे स्थितिप्रंगवास्यां मातः प्रसाद प्र- १ क्लिप्रंगवास्यां मातः प्रसाद प्र- १ क्लिप्रंगवास्यामे स्था०॥ ५०।। दक्षिणे जाहीम् ॥ १ विक्रपां महाभागां ब्रह्माणीं तो नमाम्यहम् ॥ ५१।। ब्राह्मि इहागच्छ ही

इह्नानच्छ इह्नतिष्ठ जमदमयेनमः जमदिममाबाहयामि स्था० ॥ ६५ ॥ नैर्श्वत्याम् ॥ वंसिष्ठम् ॥ नमस्तुम्यं वः कै सिष्याय कर्मकर्त्रेमहासुने ॥ धर्मस्याय महते लोकानां हितकारिणे ॥४६॥वसिष्ठ इह्नागच्छ इह्नतिष्ठ वसिष्ठायनमः कै वसिष्ठमाबाहयामि स्था० ॥ ४६ ॥ पश्चिमे ॥ अत्रिं ॥ अत्रथे तु नमस्तुम्यं सर्वलोक हितैषिणे ॥ तपोरुपाय कै सत्याय ब्रह्मणे मित तेजसे ॥ ४७॥ अत्रे इह्यागच्छ इह्यतिष्ठ अत्रयेनमः अत्रिमाबाहयामि स्था० ॥ ४७ ॥ वाय-व्याम् ॥ अरुन्थतीम् ॥ अरुन्थते नमस्तुभ्यं सर्वसोख्य प्रदायिनि ॥ एहिमण्डलमध्येते नमः धूजां गृह्यणमे ॥

इहतिष्ठ ॥ ग्राह्येनमः ग्राह्योमावाहयामि स्था॰ ॥ ५१ ॥ नैर्ऋत्याम् ॥ वासहीम् ॥ वासहर्षिणीं देवीं देष्ट्रोद्धः है त वसुन्यसम् ॥श्वभदां पीतवसनां वासहीं तां नमाम्यहम् ॥५२॥ वासहि इहागच्छ इहतिष्ठ वासहोनमः वासहीमा-તારવસા 🖟 वाहवामि स्था० ॥ ५२ ॥ पश्चिमे चामुण्डाम् ॥ चामुण्डा मुण्डमथनां मुण्डमाठोपशोभिताम् ॥ अट्टाट्टहा 🖡 समुदितां नमाम्यात्म विभृतये ॥ ५३ ॥ चामुण्डे इहागच्छ इहातिष्ठ चामुण्डायेनमः चामुण्डामावाहयामि स्था० ॥ ५३ ॥ यायन्यां वेष्णवीम् ॥ शंखचकगदापद्म धारिणीं कृष्णरुपिणीम् ॥ स्थितिरुपां खगेन्द्रस्थां वेष्णवीं तां ै नमाम्यहम् ॥५४॥ वैष्णवि इहागच्छ इहतिष्ठ वैष्णवैनमः वैष्णवीमावाहयामि स्था०॥५४॥उत्तरे ॥ माहेश्वरीम् ॥ माहेश्वरीं नमाम्यद्य सृष्टिसंहार कारिणीम्॥वृपारुहां श्वभां श्वभां त्रिनेत्रांवरदां शिवाम् ॥५५॥ माहेश्वरि इहागच्छ इहतिष्ट माहेर्थ्येनमः माहेश्वरीमाबाह्यामि स्था० ॥ ५५ ॥ ईशाने ॥ वैनायकीम् ॥ चतुर्श्वजां त्रिनेत्रां च सर्वोभरणसृषिताम् ॥ आवाहयामि देवेशीं पूजेयं प्रतिगृह्यताम् ॥५६॥ वैनायकि इहागच्छ इहतिष्ठ वैनायक्पेनमः वैनायकीमावाहवामि स्था॰ ॥ ५६ ॥ हस्ते अक्षतान् गृहीत्वा ।। मंत्रः ॥ प्रतिष्ठा सर्वदेवानां मित्रावरुणनि 🐉 ॥१९२॥ र्मिता ॥ प्रतिष्ठां वः करोम्यत्र मंडले देवतैः सह ॥ ब्रह्माद्यावाहितदेवाः सांगाः सपरिवासः छप्रतिष्ठिताः वस्ता

🖇 ब्रह्माचा॰ भदक्षिणां स॰ ब्रह्माचा॰ पुष्पांजलीं स॰ ॥ अनेन पूजनेन ब्रह्माचाः प्रीयंतां नमम ॥ स्वाग्ने थान्य ई सर्शि कुर्यात ।। तदुवरि सैप्यमयान्या ताम्रमया न्यथाविधिनाक्**रुशान्संस्थाप्य**ेतेषु जलादिनि उक्तपदा-्ट्रें थीदीनि विधिना निक्षिपेत् ॥ तद्यथा ॥ विश्वाधाससीती मैत्रेण भूमिं स्पृष्ट्य ॥ विश्वाधासासि धरणी शेपना गोपरि स्थिता ॥ उत्धताशिवराहेणकव्णेन शतवाहुना ॥ भूभ्ये नमः ॥ हेमरोप्यादि मंत्रेण कलज्ञस्थापनं ॥ अर्थ-उपर लब्यामाले महादितिं आगाहन स्वापन थया पद्धे, जवला हाथमां चोला ठड्वे प्रतिष्ठानी यत्र झाझणपणे पद्धे यता स्वापन करेला ्ट्रै देवताओवर चोता काली केंद्रें ( प्रतिष्ट एटले स्थितहों, पत्न जहात्वाचाहित देवेन्योनमः एवा उद्द छड् पोडगोपचरि अवना विभाषचिर यूना करवी.

भवत ब्रह्माचावाहितदेवेभ्योनमः आवाहनं समर्पवामि० ॥ ब्रह्माद्या॰आसनं स० ॥ ब्रह्माद्या०पादयोः । 🞖 पार्य स॰ ॥ त्रह्माद्या॰ हस्तयोः अर्घ्यं स॰ त्रह्माद्या॰ आचमनीयं स॰ ॥ त्रह्माद्या॰ स्नानं स॰ त्रह्माद्या॰ बस्त्रं 🖯 ट्रैं स॰ महााद्या॰ यज्ञोपवितं स॰ महााद्या॰ चंदनं स॰ ब्रह्माद्या॰ अरुंकरणार्थे अक्षतान् स॰ ब्रह्माद्या॰ पुष्पं स॰ 🔆 ग्रह्माद्या॰ पूर्प स॰ त्रह्माद्या॰ दीर्प स॰ त्रह्माद्या॰ नेवेद्यं स॰ त्रह्माद्या॰ तांबुरूं स॰ ताहुण्यार्थे दित्तिणां स॰

🍹 नकार्यातं पुनन थया पठा ने कलशो लाज्या होय तेतु तेना मंत्रो भणी विभिन्त स्वापन करवुं.

॥१९३॥ 🕄 सर्वेति मंत्रेणजलप्रस्मं ॥ जीवनं सर्वजीवानां पावनं पवनात्मकं ॥ बीजं सर्वे।पधीनां च तज्जलं पुरवास्यहम् ॥ 🕃 देवेभ्यः इतिमंत्रेण सर्वोपधा चंदनं च प्रक्षिप्य ॥ देवेभ्यः प्रवृतोजाता देवेभ्यः स्त्रियुगं प्रस् ॥ शतं तन् च या वञ् जीवनं जिवनाय च ॥ दूवें क्षमत इति मंत्रेण हुर्वं ॥ दूवें ह्यमृतसंपन्ने शतमूळे शतांडुरे ॥ शतं पातकसंहर्त्री 📳 सतमाञ्जय बर्किनी ॥ विविधं पुण्पेति मैत्रेण पंचपछवाच ॥ पुष्पं च ॥ अश्वत्योद्धंवर प्रस्त न्यूतन्यग्रीघ पछवाः ॥ पंचर्भगा इति शेकाः सर्वकर्मछ शोभनाः ॥ विविषं पुष्पसंजातं देवानां प्रीतिवर्द्धनं ॥ क्षितं यत्कार्यसंभृतं कलशे प्रक्षिपाम्यहम् ॥ धान्योपधीति मंत्रेण धान्यं ॥ धान्योपधी मनुष्याणां जीवनं परमं स्मृतं ॥ क्षितं यरकार्यसंसूतं ह कल्से प्रतिवाग्यहम् ॥ प्रगीफलेति मंत्रेण प्रगीफलं ॥ प्रगीफलमिदं दिव्यं पवित्रं पापनासनं ॥ प्रत्रपीत्रादि 🐩 फुळदं कळशे प्रक्षिपाम्यहम् ॥ हिरण्यगर्भेति हिरण्यं ॥ हिरण्यगर्भ गर्भस्यं हेमबीजं विभावसोः ॥ अनंत पुण्य 🖔 ॥१२३॥ फलदमतः शांति प्रयच्छ मे ॥ अश्वस्थानादिति मंत्रेण सप्तम्हतिका निक्षिपेत् ॥ अश्वस्थाना द्वजस्थाना द्वलीका

कि॰को॰ ु हेमरीप्यादि संसूतं ताम्रजं सुष्टदं नवं ॥ कलशं घोतकलापं छिद्रवर्णं विवर्जितं ॥ सूत्रंकार्पासेति मंत्रेण रक्त 🐉 🙃 ३ अस्त्र वेष्टनं ॥ सूतंकार्पाश संसूतं ब्रम्हणा निर्मितं यस ॥ वेनवद्धं जगरसर्थं वेष्टनं कलशस्य च ॥ जीवनं 🐉 ्ट्रीदकुंभान संस्थाप्य ॥ ततो मार्तिनां । आन्युत्तारणं कुर्यात् ॥ ततः स्वर्णभयी मूर्तीनां ताम्रपात्रे अर्थ-पूर्णपाजमुर्भात्तं कटशस्थापन थया पत्री मेंडळता बचवां प्रशानने कटश मुकवों सथा बार दिशाए ब्युह कळश गोठववा,तथा तेमना उपर रेशमी क 🕺

संगमा इदात ॥ राजदारा च गो गोषा नमृदमानीय निश्चिपेत् ॥ कनकं छिरोति मंत्रेण पंचरतं वा सुवर्णे हैं वा यथाराक्ति राप्यं निक्षिपेत ॥ कनकं छुळिरां नीलं पद्मसगंच मोक्तिकं ॥ एतानि पंचरत्नानी कलशे प्रक्षिपा-ै म्यहम् ॥ पिथानं सर्वेति मंत्रेण धान्यसहित पूर्णपात्रं ॥ पिथानं सर्व वस्तुनां सर्व कायार्थ साधनं ॥ संपूर्ण के करुशो येन पात्रं तत्करुशोप्ति ॥ इति मंत्रेण पूर्णपात्रं निधाय ॥ मंडलमध्ये ॥ प्रधान करुशं ॥ चन्नर्दिः ्रे <sub>खिचतु</sub> र्जुह कुरुशान संस्थाप्य ११ तहुपरि बोमनद्धं प्रसार्य तहुपरि यंत्रं निषाय ।। ततः मंडलपरितः त्रिंशः

🕍 कहाओ पाधरका, गर्जर संहर्क्या चारे बाकुथे ( ६० ) श्रीस घडाओ सुकस तथा तेनाउपर पक्ष सुकता. पूर्व रागापुरुपोत्तमनी तथा चारव्युहनी तथा श्रीस 🔆 💲 किया देश्ताओंटी सुरहीओ एक पात्रमां सुकर्व तथा तेनाउपर कारने दुव दहिं थी। छाण सुतर तथा दर्भ किमेरे सुद्धी अम्मुसारण पूर्वक प्राणप्रतिष्ठा करवी। 🔇 है तियां पहेंछा संकल्प करने के अमुक दोने। दूरकरण प्राणविद्या करें. छउं पत्री सुर्वीपर पाणीनीयार पाट्याकरणी आक्रमणेर्ह्यां मुची पत्री माह्मणभा

हायमां ते पात्र आपां तेनीपासे माणप्रतिष्ठा करावयी प्राणप्रतिष्ठा थया पर्जा स्तानकरावयं.

ुँ पार्श कोदंडिमिश्चद्रवमथ्यणमप्यंकुशंपंचवाणान् ॥ विभाणासुकपालं त्रिनयनविलसत् पीनवक्षो रुहाट्या देवीचा है। लिंक लार्कवर्णा भयत्त स्वत्र प्राण्याकिः परानः ॥ इति मंत्रेणाग्न्युचारणं ॥ ततः प्राण्यतिष्ठां क्रयंत् ॥ अस्यश्री श्रण्याप्ति प्राण्यातिष्ठामंत्रस्य बद्धा विष्णु महेश्वतक्ष्ययः सम्प्रति छंदांसि जगत्सृष्टिकारिणी श्राण्याक्ति देवता ॥ अं आं बीजं न्हीं शक्तिः कों किलकं आसां मूर्तिनां प्राण्यातिष्ठापने विनियोगः॥ मूर्तिषु हस्तं निधाय ॥ पटेत् ॥ आं कें व्हीं कीं ये रं लं कें वी कें वी रे लं कें की वी रे लं कें वा विवाय ॥ पटेत् ॥ असो मूर्तीनां श्राणा इह प्राणाः ॥ प्रनः ओ नहीं कीं ये रं लं कें व

ु की का पार राज्य पार का का करा ताल गाजार का का माजा रहा जा गाजा राज्य का जा ज दे शे पे से है छे से हंस: सोहं ॥ आसां मूर्तीनां जीव इह स्थित:॥ पुनः आं न्हीं को ये रे छे वे शे पे से हं छे है से हंस: सोहं ॥ आसां मूर्तीनां सर्वेन्द्रियाणि वाद्धभनस्तक्त्वसुःश्रोत्रजिह्वा ज्ञाण पाणि पाद पायूपस्थानि इहे-

मध्ये ॥ आत्मनेनमः ॥ अंतरात्मनेनमः ॥ परमात्मनेनमः॥द्वानात्मनेनमः ॥ अग्रिमंडळायनमः ॥ सोममंडळाय नमः ॥ संसत्तरपनमः ॥ संज्ञसेनमः ॥ तंतमसेनमः ॥ सर्वशंक्तिकमलासनापनमः ॥ मंद्रकाद्यावाहित देवताः वधात्वा करवा. पड़ी मंडुकादीं पुमन थ्या पड़ी वधावकारा बाना देवदासहित राषापुरुषोत्तमनुं तेपनी नमाडपर स्थापन करतुं.

छप्रतिष्टताः वरदाः भवतः ॥ भंडुकाद्यावाहीतानाम् स्त्रभोपहोर्त्वा पंचोपचारैः पूजनं ॥ पुन हेस्ते अक्षतान् गृहीत्वा पत्री में मुनियो तेमना स्थानोपर मुकाबीदेवी पत्री प्रचान देवनो पत्र कार्वी पीठपर मुकवी तथा तेमना परिवार देवताओलं स्थापन कार्युं. तेनाउपर पोक्षा

वागत्य सुलं चिरं तिष्ठन्तु नमः ॥ गर्भाधानादि षोडरा संस्कारसिध्यर्थं शोडपप्रणवान्नत्तिं करिष्ये ॥ ही इति : पोडशवारं उचरेत् ॥ अनेन पोडशसंस्कासःसंपद्यंताम् तत्॥मृर्ति पात्रं कलशोपरिस्थापद्स्वा ॥ परिवार देवतानाः वाहचेत् ॥ हस्ते अन्नतान् गृहीत्वा ॥ मंद्धकायनमः ॥ कालाभिस्टायनमः ॥ आधारशक्त्येनमः ॥ कूर्पा- 🕺 यनमः ॥ अनंतायनमः ॥ मूलप्रक्रत्यैनमः ॥ पृथिन्येनमः ॥ श्वेताद्वीपायनमः ॥ कृत्ववृक्षायनमः ॥ स्तमण्डपायनमः ॥ सिंहासनायनमः ॥ इति मध्ये ॥ भागादि दिश्च ॥ धर्मायनमः ॥ ज्ञानायनमः ॥ वैराग्याय नमः ॥ ऐश्वर्यानमः ॥ आमेयादिकोणेषु ॥ अधर्भायनमः ॥ अज्ञानायनमः॥अवैराग्यायनमः॥अनैश्वर्यायनमः॥

🔭 🦥 🛮 सध्ये 📗 राधिका सहित पुरुषोत्तमायनमः ॥ राधिकासहित पुरुषोत्तममावाहयामि स्था॰ ॥ तत्। 🧗 श्रातुर्दिश्च ॥ कलशेषु ॥ वृर्वे ॥ बाखदेवायनमः वास्रदेवमावाह्यामि स्था० ॥ दक्षिणे इलधरायनमः इलधरमाः 🚏 वाह्यामि स्था॰ पश्चिमे ॥ प्रज्ञुग्नावनमः प्रज्ञुग्नमावाह्यामि स्था॰ ॥ उत्तरे ॥ अनिरुद्धायनमः अनिरुद्धमावाहयामि 🕏 स्था॰ ॥ ततःत्रिशत कुंभोपरि सुर्ति वा नालिकेरं, निधाय ॥तदुपरि पूर्वादि कमेण देवानावाहयेत ॥ जिल्लान 🕯 वेनमः जिष्णुमा० ॥ १ ॥ विष्णवेनमः विष्णुमा० ॥ २ ॥ महाविष्णवे नमः महाविष्णुमा० ॥ ३ ॥ हरयेनमः 🎼 हिसा॰ ॥ ४ ॥ कृष्णायनमः कृष्णमा॰ ॥ ५ ॥ अयोक्षजायनमः अयोक्षजमा॰ ॥ ६ ॥ केशवायनमः केशवमा॰ ॥ ७ ॥ माधवायनमः माधवमा० ॥ ८ ॥ रामायनमः राममा० ॥ ९ ॥ अन्युतायनमः अञ्युतमा० ॥ १० ॥ पुरुषोत्तमायनमः पुरुषोत्तममा०॥ ११ ॥ गोविंदायनमः गोविंदमा०॥ १२ ॥ वामनायनमः वामनायः ॥ १३ ॥ १ श्रीशायनमः श्रीशमान॥१२॥श्रीकण्यायनमः श्रीकण्डमान॥१५॥विश्वसाक्षिणेनमःविश्वसाक्षिणमान॥१६॥नासय-🎇 णायनमः नासयणमा०॥१९०।मञ्जरिपवेनमःमञ्जरिप्रमा०॥१८॥अनिरुद्धायनमःअनिरुद्धमा॥१९॥त्रिविकमायनमः 🚏 त्रिविकममा० ॥२०॥ वासुदेवायनमःवासुदेवमा०॥२१॥जगद्योनयेनमः॥जगद्योनिमा०॥२२॥शेषतल्पगतायनमः

्री आवाह्य ॥ प्रतिष्ठा सर्वदेवानां मित्रा वरुण निर्मिता ॥ प्रतिष्ठां तां करोम्यत्र मंडले देवतेंः सह ॥ श्रीसिधकाः 🕯 सहित पुरुपोत्तमाद्यावाहित देवाः छपातिष्ठिताः वरदाःभवतः ।र प्रतिष्ठान्ते इदमंत्रचंदनं च पुष्पं ॥ श्रीसिध- 🕺 कासहित प्रकृपोत्तमाद्यावाहितदेवेश्यो नमः ॥ गंधसमर्पयामि ॥ पुष्पं० घूपं० दीपं० नेवेद्यं ॥ पंचोपचारैः वा 🐉 यथाशक्ति प्रजनं कृता ॥ प्रवेशता ब्राह्मणाश्रतुर्ज्यहज्जप विष्णुसहस्रनाम प्रकृपोत्तमसहस्रनामभिः जपंचकुर्युः ॥ १ ततो शोहशोपचरिः प्रजनमारभेत् ॥ हस्ते पुणं गृहीत्वा ॥ च्यायेत् ॥ श्रीवरस वक्षसं शांतं नीछोत्पर 🐉 ए प्रमाणे स्थान् स्थापन थया पर्न तेमनी प्रतिष्ठा करी पेटापी पेचोपचारवडे पूजा करवी पत्नी पाटकरनारा तथा जपकरनाराओने ते तेमने काम सींपर्त 🖇

पूर्वा भगशनना ध्यावपी आरंभा रातीपवार अथवा अनकावा प्रमाणे प्रज्ञानी आरंभ करकी. तथा प्रथम भगवानने ध्यान वरी। अवाहनीपचार वरी। संवभगी

आसन आपवं.

ै शेपतब्यगतमा॰ ॥ २३ ॥ संकर्पणायनमः संकर्पणमा॰ ॥ २८ ॥ मृद्युद्धायनमः प्रश्चुद्धमा॰ ॥ २५ ॥ देत्याः ० ै रपेनमः देत्यास्मि॰ ॥ २६ ॥ विश्वतोमुखायनमः विश्वतोमुखमा॰ ॥ २७ ॥ जनार्दनायनमः जनार्दनमा॰ ० । १८ ॥ २८ ॥ घराधारायनमः धराधारमा॰ ॥ २९ ॥ श्रीधरायनमः श्रीधरमा॰ ॥ २० ॥ एवंदेवाच् छंभोपरि ४

्रीनमः ॥ वामपार्थे वामनायनमः ॥ वामबाह्ये श्रीषरायनमः ॥ कंघरे हपीकेशायनमः ॥ पृष्ठे पद्मनाभायनमः ॥ 🕌 कृप्यां दामोदरायनमः ॥ एवंकृत्वा हस्तो प्रशाल्य ॥ तत्तोयं वासुदेवाय नमः ॥ इति भंत्रेण मुन्ति निक्षिपेत ॥ ुँ।। इति तिल्क धारणं ॥ अथ् माला धारणं ॥ मालां ग्रहीत्वा ॥ पात्रे निषाय ॥ तद्वपरि देवं आवाहयेत् ॥ शिहस्ते अक्षतान गृहीता ॥ प्रतिष्ठां कुर्पात् ॥ सर्वशक्ति स्वरूपिणी सिखिदात्री इहागच्छ इहतिष्ठ ॥ प्रजयेत ॥ मामुचाव् ॥ इति पायोचरावण्टे ॥ ग्रामं शांतिकरं भोक्तं रक्त वश्यकरं तथा ॥ श्रीकरं पीतमित्यादुः भेत मोलमदं शुभम् ॥ आरभ्यानामिका-पूर्वं क्ष्मादान्तं क्षिकेन्युदम् ॥ नासिकायालयो भागा नासामूकं प्रयक्षते ॥ समारभ्य सुनोमूक्यन्तराखं मकल्ययेत् ॥ दशांयुकमयाणन्तु उत्तमो-

🏥 अनुपरिका कुमदोक्ता मध्यमायुष्करी भवेतु ॥ अंगुष्ठः पुष्टिदः भोक्तस्तर्जनी मोक्तसाधनी ॥ इति पात्रे ॥ श्रीगंगे वेकटादी च श्रीकृपै द्वारके 🎗 शिभे ॥ मयाने नारसिंदादी बाराहे तुळसीचने ॥ गृहीत्वा मृत्तिकां भक्त्या विष्णुपादकरैः सद् ॥ धत्वा पुण्डाणि समिषु विष्णुसायुज्य

विसस्थलः श्रीभृमीसहित स्वात्मज्योतिर्दिप्तिकसयं सहस्रादित्यतेजसे नमोनमः ॥ नारायणायइत्यभिमंत्र्यः ॥ जलन श्रीशायिने नमः ॥ इतिजलं निक्षिप्य ॥ मधुरिएवे नमः ॥ इति संमर्छ नमो भगवते वाखुदेवाय नमः ॥ इति भिमंत्रण द्वादरास्थानेषु धारपेत् ॥ यथा ॥ ललांटे केशवायनमः ॥ उदरे नारायणायनमः॥ वसस्थले माघवाय श्रीनमः ॥ कंटकूपके गोविन्दायनमः ॥ दक्षिणकुक्षी विष्णवेनमः ॥ वाही मधुस्दनायनमः ॥ कंघरे त्रिविकमाय

१२७॥ ैं आरोग्य शोकशमनं कुरु मे माधवीपये ॥ अभिष्ट फर्लिसिज्धिं च सदादेहि हिपिपेये ॥ देवेस्त्वं निर्मितापूर्व गर्वितासि मनीर्थरेः ॥ इति मालां संप्रार्थ्य ॥ न्हीं सिद्धिदायिन्ये नमः ॥ इति मंत्रेण हस्ते गृहीत्वा ॥ महा माले महामाये सर्वशक्ति स्वरूपिणी । चतुर्वर्ग स्त्विय न्यस्तरतस्मा न्मे सिद्धिदा भवा। न्हीं नमो-भगवते वासुदेवायनमः ॥ इतिमंत्रेण केठे धारवेत इति माला धारण विधिः ॥ अथ शंखघंटा पूजनं ॥ चम्पुच्यते ॥ नवांगुळं मध्यमं स्यादष्टांगुळमदः वरं ॥ एतैरंगुळिभेदेस्तु कारपेश्र नखिः स्पृतेत् ॥ नासादिकेशपर्यते फर्श्वपुण्डं धुशीभनं ॥ मध्ये डिद्रसमायुक्तं विद्वयाद्वरियंद्वरम् ॥ वापपार्थास्थितो सब्सा दक्षिणे तु सदाभिवः ॥ मध्ये विष्णुं विज्ञानीयात् तस्माम्मध्यं च छेपयेत् ॥ अस्तातो थः क्रिया कुर्यादशुचिः पापसंयुदः ॥ गोपीचंदनसंपर्कात् पूत्ते भवति बत्सणात् ॥ अशुचिर्वाप्यसचारो महापापं समाचात् ॥ हाबिरेव अवेदित्यपूर्वियुण्डोकियो नरः ॥ धात्रीफळ्ळता माटा हुलसीकाष्ट्रसंभवा ॥ इत्यते यस्य देह मु स वै भागवती नरः ॥ 🔯 अर्थ-हरें भाषातेंनी कुम्र करवा योग्य थवा विलकतुलशीमाला भारण करवा तेनी संस्काकरी पुतन करी कहेले स्पान भारण करवा. नाले ए प्रकारनी क्षेत्र मालानी विश्व अवापश भवतनेंद्र तान विधित्न कर्यमा अरुरीयात एवा ने बांस पटा तेमले विभिन्न एनन करी. ते तेमनी जनापर स्थापन करवा.

केकी र हैं याये च तुलसीमालां समां कमललोचनां ॥ प्रसन्नां पद्मयदनां नराभय चतुर्श्वजां ॥ भगवरत्रसादिकायै नमः ॥ विक र हित मंत्रेण यथाराक्त्या प्रजयेत ॥ प्रजान्ते संप्रार्थ्यं धारयेत ॥ सीभाग्यं संतर्ति देहि धनं धान्यं चमे सदा ॥

गंधपुष्पादि क्षिपेत ॥ ततो दक्षिणहस्तेन शंखं स्पृष्टा ॥ उग्रुकांतैर्मात्काक्षरे न्यांसं क्र्यांत् ॥ यथा संहंस पंशे वं लंदे ये में भे वं फें पे ने घं दें ये ते ण दें डे ठं टं जे झें जे छे चे हैं घे गे लं के आ आं ओं एं एं हुं हुं ऋँ फं कं हुं हुं आं अः ॥ ततः हीं शिस्सेस्वाहा ॥ इति मंत्रेण शंखं जलेन प्रयेत्॥ ततो मंबन्हि-मंडलायं दशकलात्मने नमः इति मंत्रेण शंखाधार त्रिपादिकायां गंघादिना प्रजयेत ।। ततः अंअर्कमंडलाय द्वादशकलारमने नमः ॥ इति शंखपूजा ॥ ततः ॥ हीं सोममंडल्प्रय पोडशकलारमने नमः ॥ इति जले पुष्पादि 👔 🧖 क्षिपेत् ॥ ततः हीं गंगेच यमुनेचैव गोदावरि सरस्वति ॥ नर्भदे सिंधुकावेरि जलेरिमन्सित्रिपिं कुरु ॥ इत्यनेनाङ्गशमु- 🕺 ये कंडरुप्रतुटसीनरिज्नाक्षपास्त्र ये वा रुरुार्थरङे उसदुर्ध्व पुण्डाः॥ ये वाहुप्रचपरिचिन्हित्तरंखचकास्ते वैष्णवा धुननमाशु पविवर्षति॥

स्तरय वामभागे पुरस्तात त्रयस्तं त्रिकोणं मण्डलमुख्डिस्य ।। तरिमन्मंडले हीं आधारशक्तयै नमः ॥ इति मंत्रेण शंखाघारत्रिपादिकाः स्थापयेत् ॥ ततः ॥ हीं अस्त्रायफद् इतिमंत्रेण क्षालितं हीं आधार शक्तेय नमः ॥ इत्यनेन त्रिपादिकोपरि शंखं स्थापयेत् ॥ ततः हीं हृदयाय नमः ॥ इत्यनेन शंखमध्ये

अजगपि चिन्हेंरिकेतं यस्य विष्णोः परमपुरुपनाम्नां कीर्वतं यस्य वाधि ॥ ऋजुतरमपि पुंडं मस्तके यस्य कंठे सरसिनगणियास्त्र यस्य

विश्वी , ह्या सूर्यमंडला त्रिथमावाह्य ॥ ततो निजहत्वद्मात्परमात्मानं इहागच्छेत्यावाह्य ॥ ततः हीं शिलाये वीपडिति 🐉 🗝 २ गालिनीसुद्रां भदरीयेत ॥ ततस्तज्जलं हीं नेत्राम्यां वीपेडित्यनेन वीक्षयेत ॥ ततः ही कवचाय हुं इतिअवर्यंउन 💡 ॥१२८॥ है मुद्रयावछंडयेत् ॥ ततः पृडंगन्यासं क्रयात् ॥ वशा ॥ क्रीं हृद्याय नमः ॥ क्रुण्णाय शिरसे स्वाहा ॥ गोविन्दाय शिखाँये 🐉 बोपट् ॥ गोपीजनाय कवचाय हुं ॥ वहुभाय नेत्रत्रयाय बोपट् ॥ स्वाहा अस्त्रायफह् ॥ इति स्व स्व संप्रदायानु 🕍 सारेण ज्ञातन्यम् ॥ ततः न्हीं अस्त्राय फद्ध् ॥ इति दिग्यंथनं कृत्वा ॥ तदनंतरं शंखे पुष्पादिदत्वा ॥ धेतुमुद्रां प्रदर्श्यक्रचेंन जलं स्पृष्टाऽमृतवीजं सप्रणवं द्वादश वाराच् जपेत् ॥ यथा ॥ -हीं ठं-हीं दिनार्चयेत ॥ तत श्रकसुदया सम्यक् रिक्षता ॥ ततो मत्स्यसुदया आच्छादयेत ॥ ततः शंखं संस्पृशन् ॥ छू-चेन तबारुं स्पृष्टा ॥ मूलमंत्रमप्टशो जपेत ॥ ऱ्हीं नमोनारायणाय ॥ जलगायत्री यथा ॥ ऱ्हीं जलर्तिशय विदाहे 🕌 मीनपुरुषाय भीमही ॥ तन्नो विष्णुः प्रचोदयात् ॥ ततः ग्रोक्षणीपात्रे किंचित क्षिपेत् ॥ शेपेण शंखजलेन सर्व-व्रजोपकरणानि निजरागिरं च वारत्रयं मूळमंत्रेण प्रोक्षयेत् ॥ ततो गायत्रीमंत्रं पठीत्वा शंखमुद्रां प्रदर्शयेत् ॥ 🖫

नमः॥ इतिमंत्रेण शुद्धोदकेः संस्ताप्य पूजयेत ॥ शंखस्थदेवताये नमः ॥ मैधं स० ॥ पुष्पं० भूपं० दीपं है नेवेदां समर्पवामि ॥ पुष्पं गृहीत्वा प्रार्थयेत् ॥ शंखादी चंद्रदेवत्वं क्रुक्षे वरुणदेवता ॥ पृष्ठे प्रजापतिश्चेव अग्रे गंगा सरस्तती ॥ त्रेरोपये यानि तीर्थानि बाखुदेवस्य चाज्ञया ॥ शंखे तिष्ठन्ति विभेन्द्र तस्माच्छंखं प्रधुजेत् ॥ त्वं 🎖 प्रस सागरोत्पन्नो विष्णुना विष्टतः करे ।। निर्मितः सर्वदेवैश्च पांचजन्य नमोस्तु ते ।। शंखस्थदेवताभ्यो नमः ।। 🦠 प्रार्थनापूर्वकं नमस्कारं स॰ ॥ अनया प्रजया शंखस्थदेवताः श्रीयंतां नमम ॥ अथ घंटा पूजनं ॥ घंटास्थित- 🐉 🐉 गरुडाय नमः॥आवाह्यामि॥यथावकारोन यथाराक्त्या प्रजयेत्॥य्रजान्ते हस्ते पृत्वा नार्दं कुर्याते ॥सामध्वनिशसर- 🐉 🛂 स्त्वं वाहनं परमेष्टिनः॥विषयापहरोनित्यमतः शांतिं प्रयच्छमे ॥ आगमार्थन्त्रदेवानां गमनार्थत्त सक्षसाम् ॥ घण्डानादं 🏅 प्रकुर्वीत तस्याद्धण्टां प्रपूजयत्॥ इति मंत्रेण प्रार्थयेत् ॥ अनेन प्रजनेन घण्टास्थितगरुडः प्रीयतां ॥ इति शंखघण्टा- 💈 🤰 पूजनं ॥ अथ न्यासः ॥ यजमानः स्वरारीरे न्यासान् क्रयीत् ॥ केशवायनमः वामकरे ॥ नारायणायनमः 靠 🕹 दक्षिणकरे ॥ माथवायनमः वामपादे ॥ गोविंदायनमः दक्षिणपादे ॥ विष्णवेनमः वामजात्तनि ॥ 🥻

्री यथा ॥ हीं पांचजन्यायविद्महे पावमानाय धीमहि ॥ त तत्रः शंखः प्रचोदयात् ॥ इति गायत्री ॥ शंखस्थदेवताये

कायां ॥ उसगायनमः ललारे ॥ सर्वकामदायनमः शिलायां ॥ सहस्रशीर्थायनमः सर्वांगे ॥ अथ पंचाङ्ग-

कवचे ॥ जनार्दनायनमः अस्तायकद् ॥ इति वंचांगन्यासः ॥ अथ महापातकहरन्यासः ॥ रुक्षीः 🐉 👸 नारायणाऱ्यांनमः पादयोः ॥ विशात्यक्षिकेशवाभ्यांनमः जान्वोः ॥ सुनंदासंकर्षणाभ्यांनमः उवोः ॥ रुक्मिणीः 🐉 माधनाभ्यांनमः कटवोः ॥ वैष्णव्यच्युताभ्यांनमः नाभौ ॥ नारायणीगोविदाभ्यांनमः हृदि ॥ मित्रविदाह्यी-केशाभ्यांनमः केंद्रे ११ पद्मावित्रिविक्रमाभ्यांनमः हस्तयोः ॥ नार्शसेहिन्नसिंहाभ्यांनमः बाह्योः ॥ सत्यावासु-देवाभ्यांनमः मुसे ॥ कालिंदीजनार्दनाभ्यांनमः नासिकयोः ॥ कमलावामनाभ्यांनमः अश्णोः ॥ सत्याश्रीमः है ॥१२९।

हैं। ज्याभ्यांनमः ललाटे ॥ जांड्यतीश्रीधराभ्यांनमः मूर्धिन ॥ लक्ष्मण्डिधोत्तजाभ्यांनमः शिखायां ॥ नाराद्दीपदा-

॥१२९॥ 🖟 संकर्पणायनमः दक्षिणवाहुमूले ॥ वासुदेवायनमः सुत्ते ॥ प्रद्यम्नायनमः नेत्रयोः ॥ अनिरुद्धायनमः नाप्ति- 💸

न्यासः ॥ दामोदरायनमः हृदि ॥ अधोक्षजायनमः शिरसि ॥ नृसिंहायनमः शिखायाम् ॥ अच्छतायनमः 🐉

हरपेनमः दक्षिणनेत्रे ॥ ३ ॥ कृष्णायनमः वामश्रोत्रे ॥ ४ ॥ अधोक्षजायनमः दक्षिणश्रोत्रे ॥ ५ ॥ महाविष्ण-वेनमः वामबाहम् हो । ६ ॥ केशवायनमः वामकृषेरे ॥ ७ ॥ माधवायनमः वाममणिवंधे ॥ ८ ॥ शमायनमः वागांधुलिमुले ॥ ९ ॥ अच्युतायनमः वामांधुत्यये ॥ १० ॥ पुरुषोत्तमायनमः दक्षिणवाहमुले ॥ ११ ॥ गोविं- ३ दायनमः दक्षिणबाहकूपरे ॥ १२ ॥ वामनायनमः दक्षिणबाहमणिवंधे ॥ १३ ॥ श्रीशायनमः दक्षिणबाहंग्र-लीमुले ॥ १२ ॥ श्रीकण्डायनमः दक्षिणवाह्नं धल्यात्रे ॥ १५ ॥ विश्वसाक्षिणेनमः हृदि ॥ १६ ॥ नारायणाय है नमः वामपादमुरुं ॥ १७॥ मधुरिपवे नमः वामजानुनि ॥ १८॥ अनिरुद्धायनमः वामपादांग्रहिमुरुं ॥ १९॥ 🖇 त्रिविकमायनमः वामपादांग्रत्यत्रे ॥ २० ॥ वासुदेवायनमः दक्षिणपादमूले ॥ २१ ॥ जगद्योत्तयेनमः दक्षिणजा- 🌣 त्तुनि ॥ २२ ॥ शेपतत्यगतायनमः दक्षिणपादांग्रिलम्ले ॥ २३ ॥ संकर्पणायनमः दक्षिणपादांग्रत्यमे ॥ २४ ॥ अर्थेकदिशन्यासः ॥ प्रद्रमायनमः शिलायां ॥ १ ॥ दैत्याखे नमः मुखदृत्ते ॥ २ ॥ विश्वतोमुखायनमः

कष्ठदि ॥ ३ ॥ जनार्दनायनमः चित्रुके ॥ ४ ॥ धराधारायनमः हृदयादिवामांसे ॥ ५ ॥ श्रीधरायनमः हृदया- 🕺

नाभाभ्यां नमः सर्वांगे॥ अथ अंगांगन्यासः ॥ जिष्णवेनमः शिरांस ॥ १ ॥ विष्णवेनमः वामनेत्रे ॥ २॥ 💡

दिदक्षिणांशे ॥ ६ ॥ वृतनामाणहर्त्रनमः नाभौ ॥ ७॥ यशोदास्तनन्थपायनमः गुह्ये ॥ ८ ॥ मारिचघातिने नमः ॥१५०॥ 🖟 छदे ।। ८ ॥ हुस्तप्रक्षालनम् ।। ९ ॥ वकारयेनमः कटयादिवामपादातम् ।। इत्रासिप्रयायनमः कटवादिदक्षिणपा दांत ॥११ ॥ इतिएकादशन्यासः॥अथ करन्यासः॥ अंग्रष्टयोः वासुदेवायनमः॥ तजन्योः अनिरुद्धायनमः 🆠 मध्यमयोः ॥ संकर्षणायनमः ॥ अनामिकयोः ॥ पद्धन्नायनमः कनिष्ठिकयोः हृषीकेशायनमः ॥ कस्तलकरपृष्ठयोः 💸 पुरुपोत्तमायनमः॥ इतिदेहन्यासः॥ अथ देवन्यासः॥ देवान्स्पृष्ट्वा इस्तेव्वलसिदलंगृहित्वा केशवायनमः देव- 🕍 स्यवामकरे॥ नारायनमः देवस्यदक्षिणकरे ॥ माधवायनमः देवस्यवामपादे ॥ गोविंदायनमः देवस्यदक्षिणपादे ॥ विष्णवेनमः देवस्थवामजानुनि ॥ मधुस्ददनायनमः देवस्यदक्षिणजानुनि ॥ त्रिविकमायनमः देवस्यवामकट्यां ॥ देवस्य दक्षिणकटवाँ ॥ श्रीवरायनमः देवस्यनाभा ॥ इशिकेशायनमः देवस्यहृदये ॥ पदा देवस्यकंठे ॥ दामोदरायनमः देवस्यवामबाहुम्.ले ॥ संकर्पणायनमः देवस्यदक्षिणवाहुः अर्थ-एवरीते तिलक तलनी माला शस पता विभेरेत पूनन स्थापन भयापति पोताना शरीरनी शुद्धि थराने उपर रुखेला न्यासे करवा. एउले मैत्राते समाने पाताना दारीरे कहेंछे ठेहाणे हाथ अरकाडवें। तथा पेताना दारीला न्यासों थया पठी, हाथमा तुरुशी अथवा पूर्ण एक भगवानने अरकार्टी तेपने

इसिरे, ते ते स्थानना देवताओन प्राक्ल्य थवा तैमनास्थासी करवा.

उस्मायनमः देवस्यस्रस्रोटे 🔃 सर्वकामदायनमः देवस्यशिखार्या ॥ सहस्रशीर्षायनमः देवस्यसर्वांगे 🕏 ं पृष्ट्यं ॥ कान्तेन्द्रकान्तमणिमंडितकंडनालं श्रीकांतकाचनकमंडलुकर्णप्ररं ॥ दूर्वादलोत्पलखुगंधिमथामलं 🖟 सपादोदकं मुद्धरिपोः पदयोर्गृहाण ।। गंगादिसर्वतीर्थेभ्यो मया प्रार्थनयाहृतं ॥ तोयमेतत् खुलस्पर्शं पाद्यार्थं 🕏 प्रतिमृह्यताम् ॥ श्रीराधिकासहितपुरुषोत्तमायनमः पादयोः पाद्यं स० ॥ अर्ध्यं ॥ सिद्धार्थगंधकुसमाक्षतः 🕺 प्रगहुर्वातायेस्त्रं तिल्यवेरभिष्ठचपपात्रम् ॥ आधारमूर्धनि सर्मार्धतमुक्तमंत्रेस्यं गृहाण जगदीश दर्याद्रदृष्टे ॥ 🖇 नंदगोपगृहे जाता गोपिकानंदहेतवे ॥ गृहाणार्थं मया दत्तं राधया सहितो होः॥ श्रीराधिकासाहितपुरुपोत्तमा- 🖔 यनमः हस्तयोः अर्घ्यं स॰ ॥ आचमनीयं ॥ कंकोलङङ्गलदलाङ्गरालेलविंगा जातीपलामलस्मगंघि 🕏 <u>खतं सुरोरे ॥ मंत्रेण मंत्रितमिदं कलधौतद्रव्यामाचम्यतासुचितमाचमनीयमम्भः ॥ गंगाजलसमानीतं 🕺</u> स्वर्णेकलशे स्थितम् आचम्यतां हपीकेशः प्रगण पुरुषोत्तम् ॥ श्रीराधिकासहितपुरुपोत्तमायनमः ॥ आ- 🎖 चमनीयं स॰ ॥ मधुपर्कः ॥ मिश्रंदधी वृतमध् स्थितकांस्यपात्रे पूर्णे सुगंधिसल्लिलेशिभमंत्रपूर्वं ॥ इस्तं स्वहः

मूले ॥ बाह्यदेवायनमः देवस्यमुखे ॥ प्रद्यमायनमः देवस्यनेत्रयोः अनिरुद्धायनमः देवस्यनासिकायां ॥ 🏌

॥१२१॥ है स्नापयेव ॥ आनंदनिद्धन निरंजन देवदेव श्रीविश्वनाथ करुणाकर दीनवन्यो ॥ अक्त्या मन् यार्पितमनेक्छणापिवास पंचाम्रतस्नायनमेतद्वरीक्ररूव ॥ पयो दाघे पूर्व गूव्यं माक्षिकं शर्करा तथा ॥ गृहा-पेमानि द्रव्याणि राधिकानंददायक !! श्रीराधिकासहितपुरुपोत्तमायनमः ॥ पंचाप्रतस्नानं स० ॥ पृथकु । पंचाम्रतादौ पर्यःस्नानम् ॥ दिब्योपभीदयभवं नवनीतपूर्णं दिव्यामृताभिकरसं परिकामदं च ॥ स्वर्धेनुजं जगदिमिष्टमनाधिरूपं स्नानाय शुद्धमुसीक्रुरु देव दुग्धं ॥ कामधेन्तुसमुद्भुतं देविषिवितृत्विदम् ॥ पयोददामि देवेश स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।। श्रीराधिकासहित-पुरुषोत्तमायनमः।।एयः स्नानं स०।।पयःस्नानान्ते वरुणस्नानं० 💱 वरुणस्तान्ते आचमनीयं सकलप्रजार्थं अक्षतान्सः ॥ दिधस्तान् ॥ कर्प्रर छेद छमदेन्द्व करांवदान्तं मुछी प्रफुल छन्द्रमाकर कांतिकारं ॥ स्नानाय श्रद्धः स्तराज यथामळाचिस्निग्धं गृहाण दिविदान जनैकवन्धो ॥ एप्रमाणे न्यासो पया पर्गा पायानव्हः भगवतने वायोभवार करवे, तेयन अर्च्य आवन्तनेथ मधुरके एकप्रपंचामृत करा प्रथक प्रवामृत स्मान करायपु

तेमा हुण नद्मान्तु पठी पाणी नहाबनु, तथा बीजा बजाटरचारी मंबदुष्यागडी सभी करवा, पड़ी दहीं नहाबनुं तेना पण प्रवम प्रमाणे बचा उपवासी करवा,

बिन्कोः 🚼 स्तकमलांजलिना मया ते दर्च गृहाण मधुपर्कमिमं सुसरे।।दाधि श्रीदं छतं शुद्धं कपिलायाः सुनंधि चत्।।सुस्वादु 🔯 मधरं सारे मधपर्कं ग्रहाण मे ॥ श्रीराधिकासहित-प्ररुपोत्तमायनमः॥ मधपर्कं स० ॥ पंचाम्रतं एकीकृत्य

अञ्चतान् स॰ ॥ पृतस्तानं ॥ तेजोमयेन तपनद्यतिपावितेन मन्येन सर्वविधिना परमंत्रितेन ॥ वन्ही श्चतेन रसावतेन भौगामृतेन विधिना च वृतेन स्नानं ॥ नयनीतसमृत्यसं सवैसंतोपकारकम् ॥ यज्ञांग देवताहेतो छतस्तानार्थं मर्पितम् ॥ श्रीराधिकासाहेत प्रक्षोत्तमायनमः ॥ छतस्तानं स० घतस्तानान्ते वरुणस्नानं स॰ वरुणस्नानान्ते आचमनीयं स॰ सकलप्रजार्थे अक्षतान स॰ ॥ मधस्नानं॥ ३ लता रससंभवान्त मीधर्य मिष्टमचतं प्रतिमुश्रदिव्यं ॥ माणिक्यपात्र भक्तिपूर्व मंगीकुरुष्य मध्यदेव महावरिष्ठं ॥ प्रष्पसार समुद्धतं - मार्सिकेशनितं चयत् ॥ सर्वेद्धरिकरं देव मध्यस्मा नार्थं मर्पितम् ॥ श्रीराधिकासहित पुरुषोत्तमायनमः ॥ मञ्जरनानं स० मञ्जरनानान्ते वरुणरनानं स० वरुणरना ३ नान्ते आचमनीयं स॰ सकलप्रजार्थे अक्षतान स॰ ॥ शर्करास्नानं ॥ प्रुणेन्द्रसागर समुद्रवयासिनिम्ना मुक्ताफलः पर्धा रितेदरिक्सलते दरेक उपचारी करणा नोहंबे. पग तेनी आवताता न मळवाधी केवळ द्रप नहांशी ने बलत वाणी तथा एक वलत आनमनील नळ तथा

सफळा उपचारने लीधे चेदन, मुख्य, बहाया नयम्कार करवा, एम रुशे छे. ए प्रमाणे, हुध, दहीं, बीह, मध, खाद बुद्धमळवी स्नान करायी संचीपचारधी

पयसस्त समुद्भुतम् हिमादि द्रव्य योगतः ॥ दश्यानीतं मयादेव स्नानार्थं प्रतिगृह्मताम् श्री सिकासहित है पुरुषोत्तमायनमः ॥ दिथस्नानं स० ॥ दिधस्नानान्ते चरुणस्नानां० वरुणस्नानान्ते आचगनीयं० सकलप्रजाधे द्र ्रि दूता शकेंग समनोहरा ॥ मलापहारिकादिच्या स्नानार्थ प्रतिगृह्यताम् ॥ श्रीसिधिकासहित प्ररुपोत्तमायनमः ॥ श्रीसंश्रामानं स० ॥ शकेंग्रस्नानान्ते वरुणस्नानं स० वरुणस्नानान्ते आचमनीयं० ॥ सक्लप्रज्ञार्थे अक्षतान्तस० अभ्यंगस्नानं० स्रुपंपरीलं तिल्जं मनोहरं स्रुप्ताति वंपक जाति पंकजेः ॥ अन्येश्र कालोद्रवपुष्पसंग्रतं लक्ष्मी- विवास वंपक जाति पंकजेः ॥ अन्येश्र कालोद्रवपुष्पसंग्रतं लक्ष्मी- विवास वंपक वालती मोगरादिशिः ॥ वासितं स्निम्धताहेतो स्तैलं च प्रतिगृह्य- विवास ॥ श्रीसिविकासहित प्रस्तोत्तमायनमः ॥ अभ्यंगस्नानं स० आचमनीयं स० ॥ श्रास्तिक स्नानं॥ दिव्यहमे

वि॰का॰ 🖟 इव स्रथा भिकवामहिल्ला ॥ सर्वांगशोधनविधो वस्या सरारे सस्ताहि सिद्ध वरशर्करया जविष्णो ॥ इक्षरस ससुनी

न्थन समिद्धहुताशनक्षेः शुद्धोदकेः सुनिमलैश्च समुद्धृतैश्चः ॥ गोनिन्दनाथ निधिनाथ यथासुलेन स्नानं विधेहि । विधिना विधिनत मदिष्ट ॥ गंगाजल समे शीर्त नदीतीर्थ सुसंभवं ॥ स्नानं दत्तं मयाकृष्ण गृहातां नंदनंदन ॥ श्रीताधिकासहित पुरुषोत्तमायनमः ॥ शुद्धोदक स्नानं स० ॥ शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीये० ॥ देवे पात्राः । कृष्णि कार्य पृथ्व कर्ष पंष्पेष्वार पृथ्व थया रक्षे प्राप्त प्रया प्

🖁 प्रस्पोत्तमः शीयतां ॥ उत्तरे निर्मात्यं विसुज्य ॥ प्रनः प्रजयेत ॥ अभिषेकं कुर्यात् ॥ अभिषेकार्थं पात्रे 🖇 जल गंध पुष्प दुम्धादीनि क्षिपेत तेन देवस्योपरि अविच्छित्रांधारां पातयेत् 间 ब्राह्मणाः अभिपेकमंत्राः पटेयुः ॥ जितं ते पुण्डरीकास नमस्ते विश्वभावन ॥ नमस्तेस्त्रहृपीकेश महापुरुष पूर्वज ॥ १ ॥ नमो हिरण्यग र्भाय प्रधानान्यक्त रूपिणे ॥ ही ( नमो ) भगवते वासुदेवाय शुद्धन्नान विभाविने ॥ २ ॥ देवानां दानवानां च सामान्यमधिदेवतम् ॥ सर्वदा चरणदंदं त्रजामि शरणं तच ॥ ३ ॥ एकस्वमसि छोकस्य स्रष्टा संहारक सीरस्तानेन साँगामं दक्षा पिछात्रभोजनम् ॥ घृतेन स्वापयेथो मां नरी सम पुरं वजेत् ॥ स्वानं शर्कस्पा यस्तु कारयेथो समीपरि ॥ स राजा जायते कोने पुनस्कारिद्रागतः ॥ जाम्बू शंस करे भूता मेंत्रे रेतेस्त वैष्णदेः ॥ इति हरियक्तिविकासे स्कान्देच ॥ यस्त

वादयंत पण्टा वनतेपविधिन्दितास् ॥ श्ये नीरामने स्नाने पूजाकाळे विकेपने ॥ मृहे यसिन-भन्नेत्रित्यं धण्टानागारिसंयुता ॥ सर्योणां न भयं तत्र मामीविद्यत्तमुक्ष्यस् ॥ इति विष्णुपामके डामरतंभीतोध ॥

्रन्तरे कृत्वा पंचीपचाँरेः प्रजयेत ।! श्रीराधिकासहित पुरुषोत्तमाय नमः गंधं स॰ ॥ श्रीराधिकासहित पुरुषोत्तमाय नमः ॥ भाव नमः ॥ पुण्यं स॰ श्रीराधिकासहितपुरुषोत्तमाय नमः ॥ भूपं स॰ ॥ श्रीराधिकासहित पुरुषोत्तमाय नमः ॥ ६ दीपं स॰ ॥ श्रीराधिकासहित पुरुषोत्तमाय नमः ॥ नैवेद्यं स॰ ॥ अनेन पंचोपचारप्रजनेन श्रीराधिकासहित है

्स्वथा। जुभ्यक्षश्चात्तपन्ता च ग्रणमाया समावतः ॥शा ससार सागर चारमनन्त क्षरामाजनम् ॥ त्वानय सर 🧗 ण प्राप्य निस्तरन्ति मनीपिणः ॥ ५॥ न ते रुपंन चाकारी नाखुशानि न चास्पदम् ॥ तथापि पुरुपाकारी भक्ता १२३॥ है ना तं प्रकारासे ॥ ६॥ नैविकिथित्सरोक्षेते प्रत्यक्षोऽपि न कस्युचित ॥ नैविकिन्द्रिसेख्ते नचसिद्धोऽसि कस्य 🐉 चित ॥ ७ ॥ कार्याणां कारणं पूर्व वचसां वाच्यमुत्तमम् ॥ योगानां परमां सिद्धि परमं ते पदं विदुः ॥ ८ ॥ 🖫 अहं भीतोऽस्मि देवैश संसारेस्मिन्भयावहे ॥ पाहि मां पुण्डरीकाक्ष नजाने शर्मा परं ॥ ९ ॥ कालेप्यपि च स्वेंयु सर्वावस्थास चाच्यत ॥ शरीरीप गतीचापि वर्तते मे महद्रयम् ॥ १०॥ त्वत्पाद क्मलादन्यत्र मे जन्मा 🕍 💱 न्तरेप्चिप ॥ निमित्तं क्रशलस्यास्ति येनगञ्छामि सद्गति ॥ ११ ॥ विज्ञानं चदिदं प्राप्तं यदिदं ज्ञान मार्जितस् ॥ 🕺 जुन्मान्तरेपि मेदेव माभृतस्य परिक्षयः॥ १२ ॥ दुर्गताविपजातायां स्वद्गतो ये मनोरथः॥ यदिनाशं न 🕍 विदेत तावतास्मिकृतीसदा ॥ १३ ॥ नकाम कलुपं जिस मम ते पादयोः स्थितम् ॥ कामयद्वैष्णवत्वतः सर्व जन्म 🖔 मु केवलम् ॥१४॥ सर्वेषु देशकालेषु सर्वावस्थासु चान्युत्॥ किंकरोऽस्मि हृपिकेश् सूमो सूगोस्मि किङ्करः ॥१५॥ हि सु केवलम् ॥१शा सर्वेषु देशकालेषु सर्वावस्थासु चाच्युत् ॥१कस्राशस्य क्षुपकरा चर्मा चर्मा । ३६ ॥ पुरुपस्य हरेः ही इत्येवं सुनुयःस्तुत्या स्तुत्वा देयं दिने दिने ॥ किंकरोऽस्मीति चात्मानं देवायव न्यवेदयच् ॥ ३६ ॥ पुरुपस्य हरेः सूक्तं स्वर्ग्यं धन्यं यशस्त्रतं ॥ आत्मद्भानमिदं पुण्यं योगःयानमिदं परस् ॥ फलाहारो जपेत्रित्यं पश्यन्नात्मानमा

केवलभेवसूक्तं नारायणस्य चरणावभिवंद्यं वंद्यो ॥ पाठेन तेन परमेण सनातनस्य स्थानं जरामरण वर्जितमेत विष्णोः ॥ हविषात्रौ जले पुष्पै ध्यीनेन हृदये हरिम् ॥ यजन्तिसुरयोनित्यं जपेच रविमण्डले ॥ विल्वपत्रं शमीप-त्रं पत्रंभृंगारकस्य च।।मालती कुशपद्रं च सद्यस्तुष्टिं करं हरेः ।। यत्रोपपद्यते किंचित् त्वंध्पाये मनसैवत्त।।संपद्यते प्रसादानु देवदेवस्य चिक्रणः ॥ पत्रिश्च पुष्पेश्च फलेश्च तोयै स्कीतलब्धेश्च सदैव सत्सु ॥ भनत्येकलभ्ये पुरुषे **प्रराणे मुन्त्ये किमर्थं क्रियते नयत्नः ॥ इत्येवमुक्तः प्ररुपस्य विष्णो** रचीविधिर्विण्यकुमार नाग्ना ॥ मुक्त्यैक मार्गे मृतिवोधनाय दृष्टाविधानं त्विहनारदेकि ॥ नमोस्त्वनंताय सहस्र मूर्तिये सहस्रपादाक्षिशिरोरुवाहवे ॥ सह-सनामने पुरुषाय शास्त्रते सहस्रकोटीयुगवारिणे नमः ॥ अभिषेकानंतरं शुद्धोदक स्नानं ॥ गंगासियु सर-स्वती च यसना गोदावरी नर्भदा कावेरी सस्य महेन्द्रतनया चर्मण्डवती वेदिका ॥ क्षित्रा वेत्रवती महास्तरती ख्यातागयागृहकी प्रणी प्रणीजले समुद्रसहिता कुर्यात्सदा मेगलम् ॥ नानातिबीदारूतं च तोय मुब्लं मया

त्मिन ॥ फलान्य सुक्तोपवसेन्मासमद्भिश्च वर्तयेत् ॥ अरण्ये निवसेन्नित्यं जपन्निममृषि र्सुनिः ॥ रुग्मिन्निष् वर्णकाले स्नायाद्दस्त समहितः ॥ इति महार्णवोक्त पुरुषस्तकम् ॥ स्येयः सदासवित्मण्डलमध्यवतीं नारायणः सरसिजासन सन्निविष्टः ॥ केन्नुरवान्मकाकुण्डलवान्किरीटि हारी हिरण्य यवपुर्धतरांखचकः ॥ पतन्त्रयः पठति 😭 🖟 🖟 कूतं 🛚 स्नानार्थं च प्रयुच्छाम् स्वीक्रुरुष्य द्यानी्घे ॥ श्रीगाधिकासहित पुरुपोत्तमायनमः शुद्धोदक स्नानं सम ुँ पैयामि ॥ वश्चं ॥ सोवर्णतन्तु रचितानि विचित्रतानि स्थ्माणि देव तपन द्यति सन्निभानि ॥ दि-॥२२४॥ हैं ब्यानि नाथ विधिनाथ मयार्पितानि नानांवराणि परिघेहि सुखं विधेहि <u>।</u> तसकांचन वरणामं पट्टोरणं चढुलुं शुभं ॥ युग्मबस्रं गृहाणेदं परिधारय माधव ॥ श्रीराधिका सहित पुरुषोत्तमायनमः ॥

वर्षं स॰ ॥ यज्ञोपवीतं ॥ ॐ कारतत्वमयतत्त्र परीतमीशं ब्रह्मात्मभिः स्त्रिग्रणितं विहितं सवित्र्या ॥ यज्ञोः 🕏 हैं पबीत मीभुमंत्रित मात्मशक्त्या देवाधिदेव विधिवत कुरुनाथक्टे॥ दामोदर नमस्तेस्तु त्राहिमां भव सागरात्॥ ै मद्मसूत्रं सोत्तरीयं मृहाण पुरुषोत्तम् ॥ श्रीराधिका सहित पुरुषोत्तमाय नमः ॥ यज्ञोपवीतं स० ॥ यज्ञोपवीता 🎉 न्ते अचमनं ॥ अलंकारः ॥ माणिस्य मौक्तिक सुविद्वम पुष्पसम हीरेन्द्र नील मणिमेदक केतु रत्नैः ॥ नाना- 🥉 प्रकार सुशुआ भरणानि देव भक्त्या समर्पित तवो परि त्रेमयुक्तं ॥ सुकुर्ट स्वर्ण घटितं जिंडतं नव सनकैः ॥

पिच्छ छच्छ समाप्तकं गृहाण पुरुषोत्तम ॥ श्रीराधिका सहित पुरुषोत्तमाय नमः अलंकारान् स॰ ॥ कुंकुमै 🟅

अर्थ-अभीनेहना उपरना मंत्रीयी अर्थापेक करी अर्थाना उपचारी भएनाचने करी शुद्ध नळथी स्नान कराची बदाभी छुठी बदा पेहेराची तेमना स्थानके नेसाहवा, तथा यथा शक्ती, ने वरेणा मळे, ते, बेहेरावथा, ते कांइ न होय तो गुजानी माळा तथा तुल्कीनिमाळा पेहेरावथी, तथा ननीह पेरावधी.

ी श्रेष्ट चंदर्न प्रति गृह्यताम् ॥ श्रीराधिका सहित पुरुषोत्तमाय नमः गर्न्थ स० ॥ अक्षतान् ॥ रक्ताक्षता गंध 🖔 ैं विमिश्रिताश्च छ्ळाट पड़े तिलको परिश्व।। गृहाण देवेश जगन्निवास लक्ष्मीपते स्वीकुरु भालमागे ।। अक्षताश्च 🕏 ्री <del>द</del>्वरश्रेष्ठाः छंक्रमाक्ता सुरोभिताः ॥ मयानिवेदिता भक्त्या गृहाण पुरुपोत्तम ॥ श्रीराधिका सहित पुरुपोत्तमाय 🎉 ई नमः अक्षतान् स॰ ॥ पुष्पं ॥ मंदार् कल्पतरुजाति समुद्भतेश्च मछीजपा वङ्कल चंपक - पारिजातैः ॥ 🕻 लक्ष्मीपते गोक्कलाथ भवत्या तुलसीदलै विंखयामि तवाङ्गशोभां ॥ माल्यादिनि सुगन्धीनि मालस्यादिनीवै 🎖 🏅 भगो 🛭 मयाहताति प्रजार्थे पुष्पाणि प्रति ग्रह्मताम् ॥ श्रीराधिकासहित प्ररुपोत्तमाय नमः ॥ पुष्पाणि 🕂 ।। 🕏 ॥ अथाङ्कराजा ॥ हस्ते गन्यपत्रं गृहीता ॥ दक्षिणेन मंर्चयत् ॥ नंदात्मजायनमः पादौ प्रजयामि० ॥ 🖗

कुंकुमागरभीसम्बद्धसमिनिविगृहं ॥ आख्रियेद्वे सहोपासं करपकोटि वसे दिवि ॥ र ॥

यशोदास्तनंभयायनमः उल्को प्र॰ केशिस्दनायनमः जानुनी प्र॰ भुभारोत्तास्कायनमः जंचे प्र॰ अनन्तायनमः है कर्टि प्र॰ विष्णुरूप् भूपेनमः मेट्रं प्र॰ दृष्ट्राच्चायनमः नाभि प्र॰ अनिरुद्धायनमः दृद्यं प्र॰ श्रीकण्डायनमः कण्डं है

हैं चंदनं च ॥ सामेद मोदनवना निरुश्धपुर्गंथ कर्षूर छंकम छरेगम ताम्बराव्यं ॥ पुणोत्करार्चित समुरुसितं है है हि विष्णो गंध ग्रहाण सकरेषु सुगन्य बन्धो ॥ श्रीखण्डं चंदनं दिन्यं गन्धादवें सुमनोहरम् ॥ विरुपनं सुर-है

यनमः ॥ दक्षिणे चकायनमः ॥ पश्चिमे गदायेनमः ॥ उत्तरे पदायनमः ॥ पुरपाण्यादाय ॥ अभिष्ट सिद्धि मेदेहि शरणागत वत्सल ॥ भनत्या समूर्पये तुम्यं गृहाण है। ्रै प्रमेश्वर ॥ प्रथमावरणार्चन देवेभ्योनमः सर्वेषचारार्थे गृन्धं पुष्पं स॰ प्रवेदलास्त्रादक्षिण्येन ॥ पुनःअक्षतान् 🕏 गृहीत्वा ॥ रुक्मिण्येनमः ॥ सत्वभामायेनमः ॥ नामिकायेनमः ॥ कास्टियेनमः ॥ मित्रवृन्दायेनमः ॥ स्वभाणाये 🖇 नमः ॥ जाम्ब्रवत्यैनमः ॥ मुशिलिकायैनमः ॥ अंजली पुष्पाण्यादाय ॥ अभिष्टसि॰ द्वितियावरणार्चनदेवेभ्यो 🖟

नमः सर्वेषचारार्थे गर्न्थं स॰ ॥ दलाग्रे ॥ पुनः अक्षताम् गृहीत्वा ॥ वासुदेवाय नमः ॥ देववये नमः ॥ नंद- 🕺 गोपत्येनमः ॥ यशोदायेनमः ॥ बळभदाय नमः ॥ सुभद्रायेनमः ॥ गोपेभ्यो नमः ॥ गोपिकाभ्योनमः

अंजल्लो पुष्पाण्यादाय ॥ अभिष्टसिद्धि० ॥ तृतीयावस्णार्चनदेवेभ्योनमः सर्वोपचारार्थे गन्धं पुष्पं स० ॥ पूर्वे ए प्रपाणे मगवान पोताने स्थाने, बीरामेखा नोहने सच्छे अंगे चंदन करी कपाछे तिलक कंकुमनो करी तैनापर लाल चोला चोडी प्रप्प घडानना.

ष्डायनमः ॥ विश्वसाक्षिणेनमः ॥ नासयणायनमः ॥ मधुरिपवेनमः ॥ अनिरुद्धायनमः ॥ त्रिविकमाय नमः ॥ जगद्योत्तयेनमः ॥ शेषतत्यगायनमः ॥ संकर्षणायनमः ॥ प्रद्युन्नायनमः ॥ देत्याखेनमः ॥ विश्वतो मणिकांचनगुष्पाणि तथा मुक्तापयानि च ॥ गुरुसीपत्रदानस्य कलांनाहीन्व पोडशीम् ॥ १॥ गुरुसीमंत्ररीथियः कुरीद्वै पम पूत्रनं ॥ 🕺 भगवानना जोटे आवेख देवताना तेमनुं पूजन करतुं, तेमां एक परिवार बयोके तेने चंदनपुष्पख्य मंत्रमणी चडावी करीधी बीमाने बोखासहावता, एके आवरण पूना बहेंडे, ते भरापत्र भगवानकी चौनातनामधी पूनावरकी तथा तुल्ली (१०००) लावेल होय तेने सारापात्रमा मुक्के तेनाउपर पाणीऊंटी पंचोपचारधी पुमारती संदर्भ कर्ता भगवानने चडक्कों ते प्रमाणे तुलक्षी चडाव्यापूजी पुष्पनी माला तथा कराक्षावी अभील गलाल सींधूर चडाकड़े.

इन्द्रायनमः ॥ आग्नेयां अत्रयेनमः ॥ दक्षिणे यमायनमः ॥ निरूत्यां निऋतयेनमः ॥ पश्चिमे वरुणाय नमः॥ नायव्यां वायवेनमः॥ उत्तरे सोमायनमः॥ ईशान्यां ईशानायनमः ॥ ऊर्ध्वं ब्रह्मणेनमः ॥ अधः अनंतायनमः ॥ अंजलें पुष्पाण्यादाय अभिष्टसित् ॥ चतुर्थावरणार्चनेदेवेभ्यो नमः सर्वोपचासर्थे गंदंपुष्पंस० विश्वायनमः ॥ विष्णवेनमः ॥ महाविष्णवेनमः ॥ गोविंदायनमः ॥ वामनायनमः ॥ श्रीशायनमः ॥ श्रीकः

अर्थ-पढ़ी मगदानना आखा अंगनी पूना करवा डाच हाथमां चंदनदी वाडको छह माम्हण कहे ते,ते,स्थानपर चंदन चडाबबुं, ते, थया पढ़ी घोखा छह

सगर्भस्यमृहान्यायान्मृकिमावि भवेशसः ॥ २ ॥

श्रीधरायनमः ॥ अभिष्ट सि॰ ॥ अंजलोपुष्पाण्यादाय पंचमावरणार्वनदेवेभ्योनमः ॥ सर्वोपचाराथे गर्न्यं पुष्पं स० ॥ पूर्वे बज्ञायनमः ॥ शक्तयेनमः ॥ दण्डायनमः ॥ खडायनमः ॥ वाशायनमः ॥ अंकुशायनमः ॥ गदायेनमः ॥ त्रिशूलायनमः ॥ चऋायनमः ॥ पद्मायनमः ॥ अभिष्ट सि॰ अंजली पुष्पाण्यादाय ।। प्राध्यरणार्चन देवेभ्यो नमः ।। सर्वीपचारार्थे गंधं पुष्पं स॰ ॥ केशबादि चर्चार्वराति नागभिः प्रजयेत् ॥ ततो यथावकाशं सहस्रनागभिः व्रलशीद्लैः प्रजयेत् ॥ सीभाग्य

अविल्रयलालं भवश्वेतरक्तं वर्णविभासं वसनाय शोभम् ॥ स्तौ वसन्ते भियदेवृतुभ्यं गृहाण्यूजां हरिलक्षिपदिव्यं।। साभाग्य दापकं ॥ अविरेनार्चितो देव शीयतां परमेश्वर १। श्रीराधिका-सहित प्ररुपोत्तमाय नमः ॥ श्वेतचूर्णं स० ॥ रक्तचूर्णं ॥ ग्रलालं रक्तवर्णामं सर्वसंतोष खळाळेनार्चितोदेव प्रीयवां परमेश्वर ॥ श्रीसधिकासहितपुरुपोत्तभायः नमः रक्तचूर्णं स० श सिन्द्रंर कल्पितं दिव्यं हैं

धर्षं दर्शानं यदि चेत करोति मासे सहे मे अतिवल्लभे च ॥ ददापि कामानतिदल्लभानपि वर्ळ च पुष्टि सुतद्वस्थितिसु ॥ १ ॥ .

५-इप्ट- गोठ-१ साल-५-तल्ला-१ इरहे-१ नवामासि-१ विज्ञानित-४ कर्प्र-१ राय-१ गुग्गुल-ए इस बीनो अंक प्रमाणे मागल्य

एक में करीने धूप करवी. एने दशाय धूप केहे है अंतराने ॥

दीपं स॰ ॥ नेवेद्यं ॥आज्येनयुक्तं स्तपद्युतं च लेद्यं च पेयं मधुरं मनोज्ञं ॥ ब्रहाण नेवेद्य जनार्दनाच्युत श्रिया-्टें सह स्थावस्त्याणवे नमः ॥ श्रीसधिकासहितपुरुषोत्तमाय नमः ॥ नैवेद्यं स० ॥ गायत्र्या संप्रो-६घ ।। धेन्वाऽमृती कृत्य ॥ ग्रासमुद्रां प्रदर्श्य ॥ यथा ॥ श्राणायनमः ॥ अपानाय नमः ॥ समानायनमः ॥ उदानायनमः ॥ ज्यानायनमः ॥ अमृतोपस्तरणसि नमः ॥ नेवेद्यांते पूर्वापोशनं ॥ दर्शयद्भास्तुहा तु भक्तुङ्गीत्पक संनिभास् ॥ भाणादिमुद्राहस्तेन दक्षिणेन तु दर्शयेत् ॥ ९ ॥ कमदीपिकायास् ॥ कनिप्रानामिके अंगुल्यो स्वांगुष्ठ मुर्क्षा चेत स्पृत्रेचदा आधा मुद्रा स्याद् ॥ माणाय नमः ॥ तर्भनीयध्यमेचेर्त्गुष्ठ मृद्धां स्पृत्रेचदा द्विया ॥ अपानाय नमः ॥ एवं अनामिका मध्यमे चेत्स्पृत्तेचदा तृतीमा ॥ व्यानायनयः ॥ अनामिका तर्जनी मध्यमाधेत् स्पृत्तेचदा चतुर्थी ॥ उदानायनमः ॥ ता अनामिका-

हैं सर्भनी मध्यभाः कनिष्टा सहितायेव स्पृत्रेचदा पंचनीसपानायनमः ॥ इति भारद पंच रात्रे ॥

सिन्दृरं नागसंभवम् ॥सिन्दृरंणार्चितोदेव प्रीयतां परमेश्वरः ॥ श्रीराधिकासाहित पुरुषोत्तमाय नमः ॥ सिन्दृरं स० ॥ धूपं ॥ वृत्तेनयुक्तं परमं रमेश खुगन्धितं चंदन दारुकार्योः ॥ गृहाणदामोदर विश्वकाय धूपं मनोहारि दशांग- यक्तं ॥ श्रीराधिकासहित पुरुषोत्तमाय नमः धूपं स० ॥ दीपं ॥ वृत्तोक्तयत्तेत्रयनिर्मितं श्वरं चंद्रज्वलं कांचन पात्रदीपितं ॥ बाह्यंतसञ्ज्ञानतमोषहारकं लक्ष्यीपते दीपमित्रितं कुरु ॥ श्रीराधिकासहित पुरुषोत्तमाय नमः ॥

म् वासितं बहुविषैः खर्गिधिभिः ॥ स्वीक्ररूवं करुणानिधेषभो गांग मंद्य कमलालयासह ॥ श्रीराधिकासहित पुरु-

भगवानने विविदत् नवाडवा, तेमा बेहेत्त्र आवमन आपी स-पर्मा पाणी मुकी उत्तर आपमन आपी हापवीवाडी पानवी बीडी छर्चगादीमुकी आपवी तथा पान सेपपति मुक्ता तेनावर वयाराकी दक्षणा मुक्ता, दक्षणा मुक्तानुं कारण ओसुंक्पारे थयाधुं पूर्णपाय तेनजे एमपाणे थयावजे अर्था आपवानो 💸 🚻 २ ३७ बाल्जे. क्या आही नमापता समाप्रीये आक्ता योग्यारे हवे वित रामोपनासनिवित्त चदन. पुष्प, हाथना लड्ड, मगपाननी मानसीक उपनारोबेडे पुनाकरी

🐉 गंगादितीर्थाम्युलवंगेवासितं सुधाकरः श्रीधवलं करेऽपितं ॥ प्रभाकरश्चाचमनं पवित्रितं ग्रहाण लक्ष्मी स्म-णार्पितं त्रसो ॥ श्रीराधिकासहित पुरुषोत्तमाय नमः ॥ वूर्वापोशनं स० ॥ मध्येपानीयं ॥ शीतलै मधुस्मुत्तमोत्तम

<u>षोत्तमायनमः ॥ मध्ये पानीयं स० ॥ उत्तरापोशनं ॥ श्रीराधिका स० प्ररुपोत्तमाय नमः ॥ उत्तरापोशनं स० ॥</u> नेवेच शेपात् किंपित् इश्वान्यां मन्हादादि वैष्णवार्य मिक्षिपेत् तत् क्षेपं सर्वेभ्यो मदायमेत् ॥ नैवेचं तुलस्री पिश्रं इत्या कोटि विनासनं ॥

रित श्रीदचीये च भाचार दर्शे ॥

ते संदत, पूज मगवानने चहादीदेवा.

पटं। पूर पात्रमां पूप सर्वीसळगानी भगवानने नदावर्षाः, तथा दीवाकत्त्री तैमतुं दीवातुं पूतनकत्तुं तथा एक सारापात्रमां नानाप्रकारना छावेछ। मैवा भिटाइ विगेरे मुद्दी तेनारर दुलशीपत्रमुक्ती नैवेधनो संस्तर करानो, से थयापत्री गायक्रीमंक्रधी ते थाक्रीपर पाणीखांटी खानीहाथ आंखे अरकाही नगणेहाथे

स्ववदनांबर्रहे ग्रहाण ।। श्रीराधिकासहित पुरुषोत्तमायनमः ॥ फलताम्बलादियुक् बिटिकां स० ॥ दक्षिणां ॥ न्यू-नातिरिक्तः परिप्रजनं प्रतिकामः कामःभदाय कमलापतये प्रियाय ॥ नाशाय सर्वजगतां सुर्वदिताय मुदार्पण भगवते त समर्पयामि ॥ श्रीराधिकासहित पुरुपोत्तमायनमः ॥ दक्षिणां स० ॥ उर्ध्य आराजिकं ॥ रोप्यमया दिपात्रेखितकं कृत्वा ॥ दीपान्त्रज्वाल्य ॥ दिपस्थदेवताभ्यो नमः ॥ ग्रंचपुष्पं स० ॥ जयदेव जयदेव जय संधाजाने त्वदपरमधिपं रमरहरमनसापिमजाने ॥ जयदेव जयदेव जयश्री त्रिष्ठणातीत ॥ जयअधिमासाधीश सहराधापुरुपोत्तम मां तारवजगदीश ॥ जय० ॥ सधावर पुरुपोत्तम सुरस्रीयस्थामं निवासनिजगोस्रोक मोक्षपरै थामं ॥ वर्जाकुरा कमलञ्चन लांखन शुभवरणे स्पुर स्तजडीत्र वहु कांचन भरणे ॥ जय० ॥ १ ॥ पीतांवर कर्पेणतु यः ऋषीत् भवत्या चैव समा वृतः ॥ आराभिकं दिज श्रेष्ट मिवेक्षेन्माशनतकम् ॥ १ ॥ निराजनं तु यः पृत्येत् सहीयासे स्वाव्यवः॥

सप्तजन्म भविद्विमा ड्येन्से च पर्य एउँ ॥ २ ॥

अन्रतोषिधानमसि नमः ॥ श्रीराधिका॰ हस्त॰ मुख मक्षालनार्थे जलं स॰॥ श्रीराधिकास॰ करोद्रर्तनार्थे गंधं स॰ एलालवंगा कमुकें:समेतं कर्प्रस्तुक् तांबुलिपणं आस्यं ॥ तांबुलमाभोग मुखायविष्णो अहाणप्रीत्या अगवज्ञमस्ते ॥ जातीफलेन्द्र म्यननाभि सगंधीखक्तं एलालवंग सदिसरूण पूर्णे वृणं ॥ तांबुल विदिकमनेकरसंसुरेशः संकृत्यितं विक्तोर 🐉 अति संदर् शोभित कटिमागे कट्गिलका सहकिंकिणि स्तजिबत् गुगे ॥ वशस्थक वहुदीपक तदुपरि भृष्णवरणे 🐉 🗝 🤻 कीस्तुम मणिवनमाला रुक्ष्मी मणिरमणे ॥ जय॰ ॥ २॥ हास्योपेतं वदनं विवाधरयुगुरुं नेत्रे कजल भाले বা। ুঁ करत्तरी तिलकं ॥ अलकाविल बहुरंजित मुक्कृटे शिखिपुच्छं काने छंडल मुक्ता फलसह मणिएच्छं ॥ जय॰ ॥ ুঁ ॥ ३॥ तिल्कुस्रमोपमनाशं पंकज दलनयने सप्तस्वरं संवादित सुरलीवरवदने ॥ कंटे मुक्ताहार रत्नमया भरणे वक्षस्थल श्री सेवित वहुवाहुरमणे ॥ जय० ॥ १ ॥ चंपक मय वपुभाले केकुम ब्रिहि राजे सर्वांगे मणिभूपण रक्तांवर छाजें ॥ वंद्रवदन गजनामिनि कोकिल स्वरमाजे राघा रूपमनोहर अमर खुविति 🖫 लाजे ॥ जय॰ ॥ ५ ॥ एवं बुग्रलस्वरूपं राधा सह दिशुजं ध्यानं आरतिसमये कृत्वा हरिद्रिभुजं ॥ भनत्या करोति दास नीरांजन दारे अपनाशन भवमोचन तास्य भवपारं ॥ जय॰ ॥ ६ ॥ स्मरण निरांजन समये नारायण विष्णो राघापति पुरुषोत्तम वामन प्रशुक्तिष्णो ।। श्रीराधारुष्ण स्वरुपं मगहदये वसितं किंकरनागर नमामि श्री चरणे व सितं ॥ जय॰ ११ ७ ॥ शाखेन्दी वस्स्यामं त्रिभंगललिताकृतिम् ॥ नीराजयामि देवेशं राधया सहितं हरिस् ॥ १ ॥ समस्त चक्र चकेश युतोदेव नवात्मक ॥ आराजिकामिदं तुभ्यं गृहाण देवेशं राध्या सहिते हरिस् ॥ १ ॥ समस्त चक्र चक्ररा अतिद्व नवास्त्रका । जाराजनगर्व अप प्रत्याक्ष मदनुग्रह ॥ १ ॥ अंतस्तेजो बहिस्तेजो एकीकृत्य मितग्रभा ॥ त्रिधादिवं सविभाग्य क्रुळे दीपं निवेदयेत्॥॥

धिकासहित पुरुषोत्तमायनमः ॥ प्रदक्षिणां स० ॥ मंत्रपुष्णांज्ञी ॥ अंज्ञली पुरुपा**ण्यादायः ॥** तदकाण- 🐉 सरोजे मन्मथश्रंचरीको भ्रमत सत्तर्माशे प्रेमभक्त्यासरोजे ॥ भुवन विभव भोगात्तापशांत्वीपथाय हट-सुपरिपन्नां देहि भक्तिं च दास्यं ॥ १ ॥ भवजलिघ निमन्न श्चित्तमीनोमदीयो भवति सततमरिम न्योर संसार वाले कत्या ह पानीयं श्रामितं केववेपरि ॥ सक्षियौ वसते विष्णोः कररीतं सीर सागरे ॥ ? ॥ मंगळार्य माहाराज जीराजनमिनं हरे: ॥ सग्रंदाण जगन्नाय कृष्णचंद्र नपोस्तुते ॥ २ ॥ इति हरि भक्ति विलासे ॥ हुने दोक देवनी क्ष्ट्री आरती करनी नोड्ये हैं, ते पण कर्मुरक्षेत्रपूरी नोड्ये तैयतीनर्ध पण करनी योग्य है, माटे एक उत्तय पाजना सार्यायोकाडी है अभव चोला मुक्त तेनापर कर्षर सकार्या मुक्तु, तथा ते पात्रवह देवनेनोबा बाह्मणी तेनमाटे ते बखते देवनागुणी भाव छे. नेनार्था ठाकोरमी प्रसन्न

ध्यय है, आरंबी नरपानी निषि (४) पा अगारी (२) नार्था पासे (१) मोदा आगळ (७) सक्के दारीरे ए प्रमाणे आस्तीना आग्र उतारी. नीचे मुक्ती,

मंग्रलं भगवान् ।। श्रीस्थिकासहित पुरुषोत्तमाय नगः ।। नीराजनं स० ।। जलेन श्रदक्षिणी कृत्य ।। पुष्पं हैं गृहीत्वा ।। देवोपरि निक्षिपेत ॥ आत्मनाभिवंदनम् ।। इस्तप्रतालनम् ॥ प्रदक्षिणां ॥ नश्यन्तु पापानि च ये कृतानि जन्मान्तरे छरल्छन्यथ वेहजन्मनी ।। प्रदक्षिणेनेव तु माम् स्मुद्धर योगीश प्रर्णकृपया श्रुभवा है विभाष्यात् ॥ रक्ष रक्ष जगनाथ रक्षजैलोन्य रसक ॥ भक्तानुत्रहकर्तात्वं प्रदक्षिणां प्रहाणमे ॥ श्रीरा-

े कूपे ! विषयमति विनंदां सृष्टि संहार रूप मपनयतवभक्ति देहि पादारविंदे ॥ २ ॥ तव निज जन सार्थं संगमो मे |िंडी प० ३ मदीश भवड़विषयबंध च्छेदने तीक्ष्ण खड़ाः ॥ तव चरण सरोजे स्थानदाने कहेनु र्जनुषि जनुषि भक्ति देहि वादारविंदे ॥ ३ ॥ वार्लनीलांबुजाभ मतिरायकविरं स्मेखन्नांबुजं तं शहोशानं तथर्मैः कतिकतिदिवसेः स्तूयमान 🔀 वरं यत् ॥ च्यानात्साध्यं रुपिंद्रं मुंनिगणगनुर्जेः सिद्ध संघे स्साध्यं योगीदाणामर्चित्य मतिशयमनुरुं साक्षि रुपं 🕴 भजेऽहम् ॥ ४ ॥ यद्गेश्वसय देवाय तथा यद्गोद्भवाय च ॥ यद्गानां पतये नाथ गोविंदाय नमोनमः ॥ ५ ॥ जितं 🕍 🖞 ते पुणीकाक्ष नमस्ते विश्वभावने ति० श्री राधिकासहित पुरुषोत्तमाय नमः ॥ मंत्रपूष्णांजर्लि स० ॥ स्तुतिपाटः ॥ 🖏 भूगादी यस्पनाभि वियदसुर्रानल श्रंद्रस्योंच नेत्रे कर्णावासाशिरोद्यो सुलमपिदहनो यस्पवास्ते यमविधः II अंत पुत्रति विल्लोधरणामृतं पिनेत् ॥ तदुचराङ्गत्यात् ॥ येतु अपनास दिने भाक् कर्मणश्च न पिनंति ते भ्रांताः ॥ जर्छ न येपां तुरुसी विमिश्री 🔀

पादोदकं चक्रविका समुद्रवं ॥ नित्यं त्रिसंध्यं हारतेन गावं समेन्द्रते धर्मे बहिन्कृता नराः ॥ इति आन्दिक प्रदीपे ॥ विष्णाः पादोदकं पीत्या तथा तेनी चौर बातुचे पानीची भारा करवी तथा ते आरतीम प्रश्वपदी देवने चश्रवया तथा आका छेवी हाप घोषा ए आचार छे, ते करीने खोनेप्सीने

तथा तेनी चोर बाजुपे पानीनी भारा करनी तथा ते अगरतीन्त्र पुष्पप्रति देवन पश्चाया तथा अगरका जना रूप प्रति ते दास्तमां पाणी भरेरने अन्या पुष्प पुष्प वह संत्रों प्राप्तान्त्र मणाया पढी देवीपर चहानी देवा ऐने मत्र पुष्पानिक कहे छे, तथा देवनी प्रदेशमा करानी से दास्तमां पाणी भरेरने अन्या पुष्प

लड्ने कर्वाती पाल है.

्रै ते हरिं॥श्रीराधिकासहित पुरुपोत्तमायनमः॥स्तुतिपाटं स०॥विद्योषार्घः ॥न।लिकेरं॥ श्रीफलं श्रीपदं प्रोक्तं श्री 🕍 पथाद शुचि क्षंक्रमा ॥ यथाचामति संगोहात् ब्रह्मास्यां सर्विदति ॥ पादोदकं विवेशित्यं नैवेशं मक्षये द्धरेः ॥ शेषंच मस्तके प्राय इति वेदानु 🎖 चासनं ॥ बाळप्राम शिलाबेाय परित्वा यस्तु मस्तके ॥ मसेपणं मञ्जबीत झढाहास निमयते ॥ बाळप्राम शिलातोपं पिनेद्वाम करेणातु ॥ अशाना देदवं मोक्तं ज्ञानादर्दं समाधरेत् ॥ विष्णोः पादोदकं पीत्वा कोटि जम्माचनाञ्चनं ॥ तदेवाष्ट्र गुणं पापं भूमी चिंदु निपातनात् ॥ बसी, छत्र, वादुवा, बिनलो, आरसी, चामर, बिगेरे होय ते उपचारो करवानाळे, एवंशिते धरापठि समयाञ्चसर सुर्ताकरी यथादाकि जपकर्वो तथा वेनो सक्तरकरी विशेषात्र आरवा तथा आहणायीजनको सक्त्यप करते सूचर्सानी सक्त्यकरी आखणपूनन भयापत्री झान्हणीए आहारीह आपवा, करेलु कर्म

आयसे च तथा कांस्ये कांग्रे वाळांचुके तथा ॥ वधृत्य पादसक्थिकं मधतुत्वं विनिर्दिशेत् ॥ श्रीविष्णोः पादसिक्षिकं करे कृत्वा सुखे सिपेत् ॥

्रीस्थं यस्य विश्वं सुर नर खगगो भोगि गंधवेंदैर्त्ये श्चित्रं रं रम्यतेतं त्रिभुवनवपुषं विष्णुमीशं नमामि ॥ १ ॥ ्रीविश्वेश्वराय विश्वाय तथा विश्वोद्धवायच ॥ विश्वस्य पत्तये तुभ्यं गोविन्दाय नमोनमः ॥ २ । ∜ीवंदे कृष्णग्रणातीतं गोविंदमेकमक्षरं ।। नविंदे निरदस्यामं कन्दर्प सुंदरं हुरिं ।। ३ ॥ वृंदावन वनाभ्यन्तं 🕍 ससर्गंडल संस्थितम्।।लसत्तपीत पर्ट सोम्यं त्रिभंग ललिता कृर्ति।।थ।।ससेश्वरं सस्तवासं ससोलास समूलकं।।दिभुजं 🛭 ी सरलीहस्तं श्री वरसंकीर्तिमञ्खतं॥भानौमी नच घनश्यामं पीतचास समञ्जुतम्॥श्रीवत्सभासितोरस्कं राधिकासहि-

श्रीराधिकासहित पुरुपोत्तमायनमः ॥ विशेषार्थ्यस् ॥६॥ फर्छ मृहीत्वा ॥ देवदेव महादेव प्रख्योत्पत्तिकारक ॥ ग्रहाणार्च मवादत्तं राभयासहितो हरे॥श्रीसधिका सहित विशेषाच्या।३।शक्त्या जपं क्रर्यात्।। व्हीं नमो भगपते 🕺 वासुदेवाय ।। इति जपानंतरं मार्खा शिरीस निधाय ।। उह्यातिग्रह्म गोप्त्रीत्वं गृहाणास्मत् कृतं जपम् ।। सिद्धिर्भवर्ख मे देवी त्वस्रसादात्छेरेश्वरि ॥ इस्ते जलमादाय ॥ यथाज्ञानेन कृतजपाच्येन कर्मणा श्रीराधिका सहित 🕍 पुरुषोत्तमः प्रीयता ॥ इतस्य कर्मणः सांगता सिष्पर्थं आचार्यादीन् अवेत्हि भोजियव्ये ॥ पुनर्जेल मादाय ॥

कि॰की॰ 🐉 फर्ड सुसवर्धनम् ॥ श्रीफलार्च प्रदानेन प्रसीद पुरुपोत्तम ॥ श्रीसाधिकासहित पुरुपोत्तमायनमः ॥ विशेपार्घ 🧗 प्र॰ ६ े स॰ ॥ १ ॥ फर्ल गृहीत्वा ॥ देवदेव नमस्तुभ्यं पुराण पुरुपोत्तम ॥ गृहाणार्च्यं मयादत्तं राधयासहितो हरे ॥

अदत्वा पिनवे स्रेवं रीरवे नरके वसेत् ॥ अदस्या विष्यस्से नादिभ्य इति ॥ ब्रहणमंत्रः ॥ अकाछ पृत्यु इननं सर्वव्यापि विनाशनं ॥ विष्णोः पादोदकं पीत्वा श्विरसा धरपाम्पदं ॥ इति हैवाद्री माववीये ॥ या मुलेन चरणोदकं पीत्वा नैवेद्यादिकं देवस्य भक्तम विभन्प दस्वा ॥ साप-मपि भुक्त्वा सुरेक विदेश ॥ इति गोविंदार्चन चंद्रिकायां ॥ भगवानने अर्थण करतुं तथा मगवाननु चरणामृत पेळाया नापीतूं होयतो छेतु तथाराधी यमवानना समरण पूर्वक गीत वानित्र पुरसर ज्यतीत करकी, एटछेती हो। १४८

प्रथम दिवसगुरुस्य संपूर्णस्युं, पत्री बीने दिवसे सवारे पोतार्ग्र कित्यकर्म परवारी पेतान्यआसनस्र आवी बेसचुं, तथा स्थापितदेवीत्रं यथाशांकि पूनन करवुं, ते

🟅 तिल्कं कला अनेन यथानानेन यथावकाश प्रजन कृतेन गाविकासहित पुरुपोत्तमाद्यावाहित देवताः प्रीयंतां ॥ 🎖 राक्तिश्चेत ॥ गीतशास्त्र पुराणकथा श्रवणादिना सत्रिंविनयेत ॥ इति पुर्वदिवस कृत्यं ॥ दितीयेन्हि पातरु 💡 त्थाय ।। नित्यवतस्नात्वा ।। नित्यकर्म समाप्य ॥ स्वासनै उपविश्य ।। पूर्व स्थापित् गणप्त्यादिदेवतानां है रानत्या प्रजनं समाप्य स्थांडिल समीपे गत्वा उपविश्य ॥ आचम्य प्राणानायम्य ॥ अद्यत्यादि० कृतोद्यापनाङ्गभृतं है प्राप्ति भूजन्त समाप्य स्थाडल समाप्र गत्वा उपावस्य ।। ज्याचाच ना सामा अववा सप्रहस्करक्त्रों होयतो तैमनो ने प्राप्तिकारों के विकास स्थिष्टिकाम वह संकलकरकों तेना वेदसांत, एक तो स्थापनकरेल देनीनेन द्वांत आपनो अववा सप्रहस्करक्त्रों होयतो तैमनो ने प्राप्तिकारों के विकास प्रकार के विकास विकास के प्रशास्त्रों होव तेप्रमाणे तेमले होम करबोगोर्थ हो नेवज तेम विभान क्रकुंछे, मोटोपल छेजोहोवतो पेहेला प्रकरणना १४ पत्रथी प्रधानपूर्वक के

🐉 | कृतस्व॰ गोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो भृवसी दास्ये ॥ आशिर्वादः ॥ स्वस्तियाचा॰ ॥ अग्निरिव श्रुचिर्भव आदित्याइव 🕺 💈 तिजो भव ॥ विष्णुरिव श्रीमान भव बहाायुरायुर्भव आयुर्भव ॥ १ ॥ इमेश्रिये पद्महस्ते सुगंधे वसस्थले पुण्य 🛭 ै सिजायमानैः ।। प्रमोदमानै रिममन्यमानैः पुत्रैः पैत्रिवर्धतां दीर्घमायुः ।। २ ।। सभगे वरुषं वंश्वो भागमीपर्धि 🕉 | प्रत्रवीमि ॥ आकल्पाणि तनुवा शुंभमाने र्सिंपुत्रान्सततंदीर्घमायुः ॥ २ ॥ देवस्यगेहे सनयो वसन्ति देवानां | 🕺 कवयः पार्थिवासः ॥ देवा इदंगे सुमनस्यमानौ दिवि देवा वसवो दीर्घमायुः ॥ ३॥ मंत्रार्था० इत्याशिर्वादः ॥ 🖇

विकत्ति होमं करिन्ये॥तत्रादो निर्विप्रता सिन्युर्थं गणपति स्मरण प्रवेक मण्निस्थापनं करिन्ये ॥ श्रीगणेशायनमः॥ ही व० ३ सुमुखर्थेकदंतश्च कपिलो गज कर्णकः ॥ लंबोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ॥ ५सकेलुर्गणाध्यतो भालचंद्रो 🖏 ॥१४१॥ र् गजाननः ॥ ( कृतव्रताङ्गमृतं ब्रह्मल सहितमुक्त हवर्न करिष्ये ) ॥ तदङ्गमृत मद्यान्हि विहित ्र प्रथम प्रकरण स्थित गणपति प्रजनादारभ्य श्रहहोमान्तं प्रवृतित ऋला॥आचार्यः जलं गृहीत्वा ॥ यजमानानुह्रया पंच मृ संस्कारपूर्वक अत्रिप्रतिष्ठां करिष्ये ॥ दभैः परिसमुद्य त्रिवारं ॥ गोमयेनउपलिप्य त्रिवारं ॥

इसोनड हिस्य त्रिवारं ।। अनामिकांग्रहेनड'श्रत्य त्रिवारं ॥ उदकेनाभ्युष्य त्रिवारं ॥ अत्रिमुपसमाधाय ॥ इसेनड हिस्य त्रिवारं ॥ अनामिकांग्रहेनड'श्रत्य त्रिवारं ॥ उत्तरेनाभ्युष्य त्रिवारं ॥ अत्रिमुपसमाधाय ॥ इसेनड आत्माभिमुखर्मात्रं संस्थाप्य ॥ दक्षिणतो ब्रह्मासनं ॥ उत्तरतः प्रणितां संगृह्य ॥ यक्षिणकरेण जलं प्रपूर्य ॥ सुमी इसेनड ।। ब्रह्मानुद्वातः उत्तरे प्रणिता प्रणयनं ॥ वामकरेण प्रणीतां संगृह्य ॥ दक्षिणकरेण जलं प्रपूर्य ॥ सुमी हिसेन्य ॥ आहरूप्य उत्तरति ।। अहरूप्य ॥ इति गोविदार्यन चंद्रिकायां ॥

अनंते चोपवीतं च दीप दुर्चा हुराजनः ।। अमितिष्ठा सदाकायो मितिष्ठा हानिद्दा अवत् ॥ १ ॥ इति गायदायन पात्रकाया ।

पूर्णीद्वतिलागि नेहिन छह सपास करवो, यभयाने आद्यस्य माणायानकर्ता लळल्ह मेहेबुं. उत्तहीमकरुंळ्ळं. प्रांगायानिस्यरणकरी पंतर्मुसंस्कारकरी

उद्दिगनं !! प्रणीतोदकेन मोक्षणीनां प्रोक्षणं ।। आज्यस्थालिं प्रोक्षयामि॥ <del>चरुस</del>्थालिं प्रो०॥संमार्जन कुशान् प्रेर०॥ जपयमनकुशान मो० II समिधः मो० II खुर्च भो० II आज्यं भो० II तण्ड्रलान भो० II पूर्णपात्रं मो० II प्रणीताम्न्योर्मध्ये प्रोक्षणीनां निधानं।।आज्य स्थात्यामाज्य निर्वापः।।चरुस्थाल्यां तण्डलप्रक्षेपः।। तस्पीत्रःपक्षालनं ।। भर्णातोदकमार्षिच्या।दक्षिणतः आज्याधिश्रयणं॥मध्ये चरोरधिश्रयणं॥गृहीतोत्सुकेन पर्यमिकरणं॥अर्धे श्रिते चरोः सुवप्रतपनं॥संगार्जनकुरीः सुवस्य संगार्जनं॥अप्रैरमं॥मूर्छर्मूलं॥प्रणीतोद्देनगस्युक्षणं॥पुनःप्रतपनं॥देशेनिधानं ॥ अपेश्यसेविनी वंध्यां मसुधान्यो न गोभयं ॥ जीर्णायार्थेव लेपार्थ माहरेत्रतु वाहिपं ॥ इति रेणुकारिकायां ॥ अभा स्मपनत्रती इंशाडी करी हेवी तथा आसरादी आहति आपी. यजमानपासे स्यागसकरूप करावची, प्रधानहोपनी आहुति (१००००) है आपरी जोहर, ते न वने तो (१०००) अथवा (१००) तेना प्रमाणे तेना देवताओंनी (९८) अथवा (८) अथवा एक अटकमें है

एवंजिः ॥ पात्राऽसादनं ॥ पवित्रछेदनादर्भास्रयः ॥ पवित्रे द्वे प्रोसणीपात्रं ॥ आज्यस्थार्छः ॥ चरुस्थार्छः ॥ संमार्जनकृशाः पंच ॥ उपयमनकुशाः सप्त ॥ समिष स्तिसः ॥ सवः ॥ सुची ॥ आज्यं ॥ तण्डुलाः प्रूणेपात्रं ॥ अनामिकांग्रहेन द्वयोर्ग्रं छेदयेत् ॥ द्वित्राह्यं ॥ त्रिणि श्विपेत् ॥ त्रोसणीपात्रे प्रणितोदकमापिंच्य ॥ उत्पवनं

आज्योद्धासनं ॥ चरोरुद्धासनं ॥ पवित्राभ्यासुत्पवनं ॥ आज्यावेक्षणं ॥ अपद्रव्य निरसनं ॥ प्रोक्षिण्याः प्रत्युत्प-ं वर्त ॥ उपयमनक्कश ब्रहणं ॥ तिष्ठत् समिथोम्याप्याय ॥ श्रीक्षण्युदक शेषेण सपवित्रहस्तेन अग्नेः पर्युक्षणं ॥ पवित्रयोः प्रणीतासु निधानं ॥ दक्षिणं जान्वाच्य ॥ ब्रह्मन्यारूधः सुवेण जुहुयात् ॥ प्रजापतये नमः ॥ इदं० ॥ ५ ं इंद्राय नमः ॥ इदं०॥ अन्नये नमः ॥ इदं०॥ सोमाय नमः ॥ इदं०॥ वादनामानमप्रिमावाहयामि ॥ वाद े नाम्ने वैश्वानराय नमः॥ गंधं स॰ पुष्पं॰ धूपं॰ दीपं॰ नैवेद्यं॰ अनया पूजवा अगिः प्रीयतां॥त्याग संकृत्पः॥ ्रे ्रॅं इंदं संपादितं समित्ररुतिलान्यादि हविईव्यं या या यक्षमाण देवतास्ताभ्यः ताभ्यः मया परित्यक्तुं नमम II यथाः दैवतमस्त ॥ अथ प्रधानहोमः ॥ समित्तिलाज्यवरुणा वा पायसेन जुहुयात् ॥ ( ईो भगवते वासुदेवाय गुद्धामी तु पचेदशं छीकिके वापि नित्पशः ॥ यस्मित्रत्रौ पचेदशं तस्मिन्द्दोगो विधीयते ॥ इति मनुक्तेः ॥ विहानेभस परार्के मेघावि थयो प्येव माहः ॥ हेबी, प्रधाननी ( १०० न्यहर्नी (२८ ) ने परिवार देवतानी ( १ <u>)</u> तथा ब्रम्हादिनी पण ( १) प्रवीरीते ते ते कोटीना प्रत्येक्ट देवने उद्देशीने समजनु,

ूर्व तथा ओसुं क्यतिथ्युं होत तो क्या परिकृतिया क्याहुतानी होमनम पूर्वनी आहुतीया प्रमाणे करवी,

प्णवे० || ३ || हरवे० ||श| सृष्णाय० || ५ || अधीक्षजाय० || ६ || केशवाय० || ७ || माधवाय० || ८ || 🖇 समाय० ॥ ९ ॥ अन्युताय० १० ॥ पुरुषोत्तमाय० ॥ ११ ॥ गोविन्दाय० ॥१२॥ वामनाय० ॥१३॥ श्रीशाय० 🖟 ॥१४॥ श्रीकण्डाय० ॥१५॥ विश्वसाक्षिणे० ॥ १६ ॥ नारायणाय० ॥ १७ ॥ मधुरिपवे० ॥१८॥ अनिरुद्धाय० 🕏 ॥ १९ ॥ त्रिविकमाय॰ ॥ २० ॥ वासुदेवाय॰ ॥ २१ ॥ जगद्योनये० ॥ २२ ॥ शेपतल्पगताय० ॥ २३ ॥ 🖟 संकर्पणाय॰ ॥ २४ ॥ प्रह्ममनाय॰ ॥ २५ ॥ दैत्यास्ये॰ ॥ २६ ॥ विश्वतोमुखाय॰ ॥२७॥ जनार्दनाय०॥२८॥ 🕏 : धराधाराय० ॥ २९ ॥ श्रीधराय० ॥ ३० ॥ एताः परिवारदेवताः ॥ मंडकादि देवताः ॥ मंडकाय० ॥ १ ॥ मूल- ै अन दान भागवतोक्त. पंहुकादि परिवार देवशानां स्थापनं स्वीकृतं ॥

नमः इति ) अयुतं वा सहस्रसंस्यया जुहुयात् ॥ अथया हीं श्रीराधिकासहित पुरुषोत्तमाय नमः ॥ इति सर्वे क्षेत्रं समण्य मन्नेशोक्तसंस्यया होमं समाप्य ॥ ततो परिवासदिदेवान् एकैकामाज्याहुतिं दश्चात् ॥ जनुरुर्यूहदे- हे वान् अष्टार्विशति संस्थया ॥ वानुदेवायनमः ॥ २८ ॥ १ ॥ हलप्रस्य नमः॥२८॥ श्रीहनुस्यनमः॥२८॥ है ॥ ॥ अनिरुद्धायनमः॥ २८ ॥ ४ ॥ एताज्युहदेवताः ॥ जिष्णवेनमः ॥ १ ॥ विष्णवेन ॥ २ ॥ महावि- हि

कि॰की॰ रकत्ये॰ ॥ २ ॥ आधारशक्ये॰ ॥ ३ ॥ कुर्माय॰ ॥ ३ ॥ अनंताय॰ ॥ ५ ॥ वसहाय॰ ॥ ६ ॥ पृथिव्ये॰ हैं। प्रश्ना वर्गाय॰ ॥ ५ ॥ वसहाय॰ ॥ ६ ॥ पृथिव्ये॰ हैं। प्रश्नाताय॰॥११॥ पारिजाताय॰॥१२॥ है ॥१४३॥ 🖟 स्तवेदिकाये०॥ १३ ॥ स्त्रसिंहासनाय०॥१४॥ घर्माय०॥ १५॥ ज्ञानाय०॥ १६ ॥ वैराज्याय०॥ १७ ॥ 🐉 ऐश्वर्यायः ॥ १८ ॥ अधर्मायः ॥ १९ ॥ अवैराग्यायः ॥ २० ॥ अनेश्वर्यायः ॥ २१ ॥ आनंदकंदायः ॥ २२॥ संविज्ञालाय । ।। २३ ॥ सर्वतत्वात्मकपद्माय ।। २४ ॥ प्रकृतिमयपत्रे ।। २५ ॥ विकारमयकेसरेभ्यो ।। २६ ॥ ुँ पंचाशद्वर्ण बीजाब्य कर्णिकाये०॥ २७॥ अं द्वादशकलातमने सूर्यमंडलाय० ॥ २८॥ चं पोडशकलातमनेचंद्र 🕺 मंडलाय॰ ॥ २९ ॥ मंदशकलात्मने विन्हमंडलायनमः ॥ ३०॥ सं सत्वाय॰ ॥३१॥ रं रजसे॰ ॥३२॥ तं तमसे॰ हैं। । ३३ ॥ आं आत्मने०॥ ३४ ॥ अं अंतरात्मने० ॥ ३५ ॥ एं परमात्मने० ॥ ३६ ॥ न्हीं ज्ञानात्मने० ॥ ३७ ॥ एताः मंडुकादिदेवताः ॥ ब्रह्मादि देवताः ॥ ब्रह्मणेनमः ॥ १ ॥ सोमायनमः ॥ २ ॥ ईशानाय० ॥ ३ ॥ हैं इंद्राय॰ ॥ ४ ॥ अभये॰ ॥ ४ ॥ यमाय॰ ॥ ६ ॥ निर्ऋतये॰ ॥ ७ ॥ वरुणाय॰ ॥ ६ ॥ वायवे॰ ॥ ९ ॥ अष्टव द्भारो ।। १०॥ एकादश स्ट्रेम्यो ।। ११॥ द्वादशादित्येभ्यो ।। १२ ॥ अश्विभ्यां ।। १३ ॥ विश्वेभ्यो दे-

ुँ∥भेरवे०॥ ३३ ॥ गदाँपै०॥ ३४ ॥ त्रिश्यलाय∙ ॥ ३५ ॥ वजाय०॥ ३६ ॥ शक्रंपै० ॥ ३७ ॥ दंडाय० ॥ ई र्रेशा ३८ ॥ खडाय० ॥ ३९ ॥ पाशाय० ॥ ४० ॥ अंकुशाय० ॥ ४१ ॥ गीतमाय० ॥ ४२ ॥ भरद्राजाय०॥ ४३ ॥ र् ्रीविश्वामित्रायुर्व ॥ ४४ ॥ कञ्चपायुर्व ॥४५॥ जमदरनयेव ॥४५॥ वसिष्ठायुर्व ॥४०॥ अत्रयेव ॥ ४८ ॥ अर्रथरेयेव 🖇 🕺 🛮 १९९ ॥ ऐदेरेन् । । ५० ॥ कीमार्थे । । ५१ ॥ त्राह्ये ।। ५२ ॥ वासही ।। ५३ ॥ चासंडाये ।। ५४ ॥ 🕺 🕯 विष्णव्ये - ।। ५५ ॥ माहेश्वेर्ये - १। ५६ ॥ वैनायक्ये - ॥ ५७ ॥ एताः ब्रह्मादिदेवताः ॥ ततो न्युनातिरिक्त दोपप- 🖇 🌡 (रिहारार्थं अप्रार्विशति संख्यया तिलद्रव्येण व्याहतिहोमं करिष्ये ॥ अपिन वायु सूर्येभ्यो नमः ॥२८॥ होमं समा- 🕺 🕯 👊 ॥ ज़तस्य कर्मणः सांगतासित्र्यर्थं स्थापितदेवतानां मृडाग्नेश्चोत्तर पूजनं करिप्ये ॥ इति संकल्प्य प्रजयेत् ॥ ई

्रै वेभ्यो ।। १४ ॥ सप्तयक्षेभ्यो ।। १५ ॥ नवक्रलनागेभ्यो ।। १६ ॥ गंधर्वाप्सरोभ्या ।। १७ ॥ स्कंदाय । १ ॥ १८ ॥ नंदीश्वराय ।। १९ ॥ श्रूलाय ।॥ २०॥ महाकालाय ।। ११ ॥ दक्षादि सप्तगणेभ्यो ।। १२ ॥ १ १ दुर्गीय ।। १२ ॥ विष्णवे ।॥ २४ ॥ स्वयाय ।। १२ ॥ चत्रुरोगाभ्या ।। १६ ॥ गणपत्ये ।। १७ ॥ अद्भये । १ ॥ १८ ॥ मरुद्रयो ॥ १९ ॥ पृथिये ॥ १० ॥ गंगादिनदीभ्यो ।। ११ ॥ सप्तागरेभ्यो ॥ १२ ॥ १ विश्को श्री मृह्यूग्नवे नमः ॥ गंधं पुष्पं भूपं दीपं नेवदां समर्पयामि ॥ (त्तो ग्रह्यदीनां स्थापनं इतं चेत तेपां उत्तर पूजनं हैं प्रवस् | कार्य || ) ततो गणपत्यादि स्थापित देवतानां यथा शक्ता पंचीपचारैः पूजनं क्रयात ।। स्वष्टकृद्धीमः ॥ अ ॥१४४॥ है नत्ये स्विष्टकृते नमः ॥ इदमग्नये स्विष्टकृते नमम ॥ ततो नवाहृतयः ॥ अग्नये इदम्यनये नमम ॥ ९॥ है वायवे नमः ॥ इदं वायवे० ॥ २ ॥ स्योव० इदं स्याव० ॥ ३ ॥ अग्निवरुणाभ्यां० इदमिनवरुणाभ्यां ॥ ४ ॥ ्रिं अग्निव्हणाभ्यां व्हदम्मिनवहणाभ्यां नमम् ॥ ५॥ अग्नये अयसे नमः ॥ इदमग्नये अयसे नमम् ॥ ६॥ वरुः

्रिणाप सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्धयः स्वकंभ्यो नमः ॥इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो 🕏 🐉 मरुद्रयः स्वर्केन्यश्च नमम ॥ ७ ॥ वरुणायादित्यायादित्ये च नमः ॥ इदं वरुणायादित्यायादितये च नमम्॥८॥ 🐉 🐉 प्रजापत्तये नमः ॥ इदं प्रजापतये नमम् ॥ ९॥ अथ वस्टिदानं ॥ इन्द्रादी दश दिक्पालेभ्यः साँगेभ्यः सपरिवारे 🦠 अर्थ-होमप्यापाठि मृहाप्रिना पूनन पूर्वक स्थापित देवातुं उत्तर पूनन करावा. स्विटक्षद्वीय करी नवाडुतियो आपना, तथा इन्द्रादी वशदिवपालीतु क्छी 🟅

मूकार्वा पूर्णोद्धति होमक्तावयो, छिषमं पुरामसेने तेनाउपर नालिकस्पुर्कार नेदेवत प्रधानायहोय तेनामत्रो भणी ( नीततपुण्डरीकाक्षभणी ) ने नालीकर 🕏 👸 हिम्प्युं एने पूर्णांहृति करेंटे, ते पयापाठ भीज एकसोपारी छ सुने।भरी छुतस्य तेनापरमुको ( नगोस्त्यनंतायभर्णा ० ) होनखं पठी इहाने रुद्रकलश-पासे 🕏 हे त्याच आपी. है देन इसल्डोणायाथी प्रसादद यममाननाकपाळे यरची पूर्ण मुकार्थण मुकार्थ कुशाबी सदास करची तथा बदाने पूर्णपात्र आपर्ध, तेर्माः है

महाराणां कवचं भववारणं ।। एवं देवोपघातानां शांतिर्भवति वारुणं ।। यजमानस्य ललाटादिपु कृत्वा ।। संकल्पः।। 🕏 आधाराबादि पूर्णाहृतिपर्यंतं येन येन मंत्रेण हुतं यावत् यावत् संस्थाकंद्रव्यं यस्यै यस्ये देवताये यावन्त्यो यावन्त्याः 🎉 कृतस्य॰ वहान् इदं तुभ्यमहं संप्रददे ॥ प्रणिताविमोकः ॥ गच्छ गच्छ तुरश्रेष्ठ अजासंतानवाहन ॥ यत्र ब्रह्माद् 🔯

हुतयः सा सा देवता शीयतां ॥ संस्वत्राशनं ॥ पवित्राभ्यां मार्जनं ॥ असी प्रतिपत्तिः ॥ ब्रह्मणे पूर्णपात्रदानं 🕏

भ्यः सायुर्धेभ्यः सशक्तिकेभ्यः ।। इमं यथोपनीतं वर्छि समर्पयामि॥भो इंदादिदशदिक्यालाः दिशं रक्षत वर्छि भक्षत 🐉 मां सक्रडंबं रक्षत्।। मम ग्रहे आग्रःकर्तारः प्रष्टिकर्तारः न्रष्टिकर्तारः निर्विन्नकर्तारः वस्दाः भवत्।। अनेन वलिदानेन 🕏 इद्रादि दशदिक्पालाः श्रीवंतां नमम् ॥ इतस्य कर्मणःसांगता सिष्यर्थं पूर्णाहृतिहोमं करिव्ये॥ ख़र्ची छतेन प्रस्यिता 🖇 खुबोपरि निधाय II शकादयस्तुतिभिर्वा विष्णुमंत्रैः पूर्णाद्वतिहोमं क्रयीत II ततो ईशानात् भस्म ग्रहीत्वा।। यथाशस्त्र 🕺

(मणरे॥ सेर४ चोला तेर्ड पूर्णवात्र केयायुक्त ) तेने बद्छे यममाननी श्रद्धाप्रधाणे मुकाबी अधायके, एप्रमाणेनी सचळी विधि धयाबक्ति आदिविसर्गन करावनुः 💸

🗳 वेमा प्रानुहोत्तरी एकटाकरी होमबानो मालजे १ण मनधीन करते नोर्देशते थवापत्रि पुनाकरनारना सामेरेथी चाह्यो एटले यह विगेरे आपवानो से बाल होयाते 🗘

करावी करीथी पूर्वमा स्थापन करेला देवपासे जड़ पाटलापर बेसव.

🗣 की 🆓 यो देवा स्तत्र गच्छ हुताशनः॥ यान्तु देवगणाः सर्वे प्रजामादाय मामकीम्॥इष्टकामसमृष्यर्थे पुनरागमनाय च ॥ 🦠 अप्रिं विसृज्य ॥ यथाचारं रुखा ॥ प्रणमेत् ॥ देवतानां समीपे गता गंघादिभिः प्रज्ञयित्वा ॥ आरात्रिकं है ॥१४५॥ मंत्रपुष्पांजिंहं स्तुतिपाठं बाह्यणपूजनं आचार्यादीनां दित्रणाप्रदानं तिलयात्रादिदानसंकल्पं रुखा॥रूतस्य कर्मणः है

स्य॰ इदं कांस्पपात्रं छतप्रसितं स्पेद्वस्यं स्पेलोकफलप्राप्त्यथं शास्त्रो० आ० ॥ कृतस्प॰इदं ताग्रपात्रं जलप्रसितं

हैं सांगतासिष्यर्भं ताम्रपात्रं तिलप्रस्ति खदेवतं गंधपुष्पाद्यचितं शास्त्रोक्त पुण्यफलप्राप्तये आचार्याय दास्ये ॥ इत-

मंडलं दास्यमानोपस्कर सहितं यज्ञमानोपस्कररहितं गंघपुष्पाद्यर्वितं श्रीराधिकासहित पुरुपोत्तन पदपाप्तये आचा र्याय दास्ये ॥ दानसांगतासिष्यर्थं दक्षिणां दास्ये ॥ अद्यत्यादि० मया यथाशन्ति यथामिळितोपचारहर्वेयः श्रीरा-अर्थ-स्थापितदेवोत् पर्वाप्यारे पुजनकर्ता प्रथमदिवस प्रमणि आर्तामञ्जपुरपानली स्तुतिषाठ प्रदक्षिणा नपय्पिरे करीने दानी आपगानी संबक्ष्य करते।, तेमा क्रिज्यान तालवन बरम्बान, छावटी, सुवर्ण, पुरुष, अलाकुंभ मालवुद्ध शकाण्डवीमेर दानोनी सकल्य करीने प्रत्यक्ष होय तो आपया. ने प्रत्यक्ष न होय-

💱 वरुणदेवतं शास्त्रो॰ आ॰ ॥ इतस्य॰ उमामहेश्वरवस्त्राणि गंधपुष्पाद्यचितानि शास्त्रो॰ आ॰ ॥ अनया रीत्या ॥ 🞖 [ 🖟 पदं गोदानं ॥ शैय्यादीनि दत्वा ॥ तिलकमाशीर्वादः॥ स्वस्तियाचा०॥ मंडलदानं कुर्यात् ॥ इदं सर्वतोभद्रः 🕺

प्रदीयते॥ त्रयश्चिरादप्रपांश्च शर्कसञ्चतसंयुतान् ॥ स दक्षिणान्यहं तुभ्यं कांस्यपात्रे निधाय च॥ दास्ये जनार्दनपी- 🎖 र्षे गृहाणतं द्विजोत्तम् ॥ मलमासस्तु मासानां मलिनः पापसंभवः ॥ तत्पापस्य विशुद्धवर्थं वायनं संप्रदाम्यहं ॥ 🕺 अप्रि होत्रं क्याः सार्यं बेदानां क्षेत्र पाळते ॥ आविष्यं वैभदेवय इष्ट मिस्यभिर्धायते ॥ १ ॥ वाणीकूपवडायादि देववा वीदेराणि च ॥ अप्र मदान मारामाः पूर्व मिस्यमिर्धायते ॥ इति अप्रि स्मृतौ ॥ ४५ ॥

धिकासहित पुरुषोत्तम पूजनास्येन कर्मणा श्रीगोलोकस्थित श्रीराधापुरुषोत्तमः श्रीयतां ॥ अथ पूपवायन- 🖔 दान प्रयोगः ॥ वृतिहरूपसहिताच् त्रपश्चिंशदप्रपान्कांस्यपात्रे निधाय दद्यात् ॥अथ प्रयोगः ॥अर्थेत्या॰मल-मासवृत सांगतासिष्यर्थं श्रीलक्ष्मीजनार्दनश्रीत्पर्यमप्रपवायनदानं करिष्ये ॥ तदंगभृतां ब्राह्मणप्रजां कः ॥ नमोसवः नंता॰ १ श्रीजनार्दनरूपिणे ब्राह्मणाय इदमासनं ॥ पाद्यं अर्घ्यं ॥ आचमनं ॥ गंधाःपान्तिसयादि ब्राह्मणं 🖇 संप्रुच्य ॥ वायनं हस्ते गृ॰ तत्र मंत्रः ॥ अधिमासे तु संप्राप्ते श्री जनार्दनत्तुष्टये ॥ नस्कोत्तारणार्थीय मया दानं 🎇

तो हैने निष्युबद्ध दानसंस्थ बरवो,९५ आवार्यने काप बरावया बद्ध एकगाय तथा निष्युबाको, ब्रह्माने एक गोधी तथा तेनी निष्युप आपवी तथा संड- 🕏

द्भो उपरास्पेट संस्था वर्तीय आपनु, एसमाणे आपनुं शाससंपताने. पत्र करेंबुं कमें गोलोबनासी मगवानी अर्पणकरतुं. वर्णावाळा त्रासाणीने दसाणा

वि॰को॰ हैं इदं त्रविक्रिशतसंख्यकाप्रपवायनदानं कांस्युपात्रस्थितं सदक्षिणाच्रतताङ्क्ताहितं सदस्वेष्टितं तुभ्यमहं संपददे ॥ 🐉 प्रश् ॥१४६॥ 🐉 प्रतिग्रहा॰ । प्रतिग्रण्हामि । यस्य स्मृ॰ ॥१॥ अनेन वायनदानेन श्रीजनार्दनः भी० ॥ कृतस्य मलमास॰ महान् 🦜 ्री अयं ते वर प्र॰ इति प्रणेपात्रदानं ॥ कृतस्य॰ आचार्यादीनां वस्त्र तांब्र्ळ दक्षिणादिभिः प्रजनसमत्यप्रदि इष्टजनैः ।हैं। ्रैं सह श्रुंजीतेत्यंतं प्रवेवत ॥ क्रंभसंकल्पे विशेषः ॥ कृतस्य० इमान् त्रयिक्षशत्संख्याकान् ( त्रिंशतसंख्याकान्वा ) 🕏 💡 कुंभाव पकान्तप्रस्तिान्वज्ञताञ्चलदक्षिणादिसहितान् सोभाग्य वज्ञ सहितां त्रयिद्धंशति वा (त्रिंशत) वंशपात्रीसहि- 🧍 ्री तान् नानागोत्रेभ्यो नाना नामभ्यः सपत्नीकेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्य विभज्य यथाकाले दास्ये ॥ इति विशेषः॥ 🧏 विज्वरिवानि कमीणि सफलानि भनंति हि ॥ अनर्पिवानि कमीणि भस्यनीव हुवं हविः ॥ नित्य निर्धित्तकं काम्पं यवान्यनमोक्षतापनम् ॥ ्रें विष्णोः समर्पितं सर्वं सास्त्रिकं फछदं भवेत् ॥

भएकी, तया ब्राह्मणभोत्रन भूमतिने संकलकरकी. तथा तुल्योपनल्ड समामणी ब्राह्मणोने पूरत के अहा श्रह्मणो माराध्यसमर्कायो अ में कर्म आ कर्य

हैं है ते परिपूर्ण थर्दे, एम पुरवार्था प्राक्षणोये नेहेत्र परिपूर्ण यथु पर्टी एक झारानापातमा आलपूढो मुक्ती बील पात्र उसर्दाकी तेने सुतरक्ष बाबी ते लेनार अक्षण्य पुगन करीने आगई टुने ब्रह्माइयुन करेंगे, ए निधि करने क्षेत्र की वरीने पही, यमनानने तिरक करि, आशिनीद आपनी यसमाने प्रधादल्ह ्रितिदिजाः द्वयुः ॥ इति त्रिः ॥ यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञिकयादिषु ॥ न्यूनं संपूर्णतां याति सचो है विदे तमच्युतं ॥ प्रमादात्क्ववेतां कर्म प्रच्यवेताप्यरेषु यत् ॥ स्मरणादेव तदिष्णोः संपूर्ण स्यादितिः श्चातिः ॥ स्थानसभी उटी चोतान। बढिलोने अभिनंदमकरी धोतानाकार्यभारमां प्रवेश करवी. आ प्रमाणे साधारण रीतो दरेक ज्ञानोमा चालती छस्तीहे. ने बधी 🕏 क्षातीमा पर्ना जोहर है है छखाँहे. उस वामानी झातपा वचारे अवदा ओंडाबो, ने बाछ होय, तेणे पोत बोताता रिवानी प्रवाणे करी हेचु. आ 🕏 म्य, वर्म शास्त्रपं, वथा रुवी सांधे सर्श्य थयो हो. इति श्रीनयानदात्पनमूखशकरशर्मणा विरचिताया विवाहकीमुखा तृतीय प्रकरण॥ विवाहकीमुखी समाध्यि 🕏 मगमत् ॥ शुर्म भनत् ॥ स. १९१६ आवादशुद्ध १५ शके १८३१. विष्णवेनमो विष्णवेनमो विष्णवेनमः ॥

PARTICIA EN AL PREMERTA DE LA PREMER

्री अन्यत्तर्वं प्रवेवत ॥ यथा शक्तिद्वन्यादिकेन अस्तृतं कर्मे तत्कालहीनं भक्तिहीनं श्रद्धाहीनं बाह्मणानां वचनात् |१|स्थापितदेवताप्रसादाच सर्वं परिपूर्णमस्तु ॥ भो बाह्मणाः सर्वंपरिपूर्णमस्त्विति भवेतो क्षवन्तु ॥ अस्तु परिपूर्णमि- ूर् ्भिः प्रकरंणेर्युका सेपा वैवाहकोमुदी ॥ वालानां तिमिरं हन्याहद्यान्मोदं श्रियाधिकम् ॥२॥ 💃

ेत् सामवेद कौधुमीशाखाध्यायी सूर्यनगर वास्तव्य श्रीमाली दिज जयानंदात्मज › :र मूलशंकरशमणी विरवितायां विवाहकोमुद्यां तृतीर्यं उद्यापनप्रकरणम् ॥

समाप्तोऽयं ग्रंथः ॥ '

। सर्व प्रकारना हक ग्रंथकर्चाय स्वाधीन सख्या छे। ओजा मूल्शंकर जयानंद, देसाई पोळ, सुरत.

## आ पुस्तको निचेने ठेकाणे मळशे-

रेखियाह कौमुदी:--जेमां त्रण मकरणी छे.मयम मकरणमां ग्रह्मांति जयोग,बीजा मकरणमां विवाहविधि तथा त्रीजामां पुरुषोत्तम मासनुं यतो-धापन, जेपां सपळो विधि आपवायी विधिन नहि जाणनारा पण करावी शके एम छे.

ग्रास्री येख्यभाई भवानीक्षेत्रर, सुरत-आपली रान, संस्कृत पाउशाळा.

ओजा मूळशंकर जयानंद.

२ मुरक्षाकपा—पुरुषेत्तम मासर्ग ने क्याहुं माहारम्य यशुं व गणायके तथा ते हुङ सूथी छपायक्षी 🕝 होवायी शुद्ध गुजराती साथे हाल्यां बहार पाटवायां आधा छे. कि. -- ट. --३ सतीसिमंतिनी-आयां पविभक्ति केवी उत्तम प्रकारनी छे हेर्नु अञ्चत चरित्र आववामां आध्यु छे.,आ पुरुवकं युजराती राग रामणी

ओजा मूळगेकर जयानंद, सुरत-देसाई पोळ.

४ साठी--अमां छत्रमाने इस्तेनछापकती वसते देवतीतुं जोई कुचळ रहेवायां आधीर्वादात्मक स्क्रोक आववायां आव्या छे.की.०१ट. ।०॥

ज्योतिर्वित् रणाओडकारू काशीराम, बडोदरा, अडाणीया, पितांत्ररपोळ. रा. रा. इरिभाई सोमनाथ, सुरत⊸हरिपरा.

. बुक्तेकर-व्यष्टाराम छुटंदमी, काळकादेवी, तेखवाडी पासे, संपर्दः सः रा. इछाराम सुरजराय देसाईनी गुजराबी मेस, कोट-संबर्दः

बार्ड छे सथा ते सीओ नाहीने हमेशां वांचे छे० 🌎 कि. 🕞 गुना।

##